MINISTRY OF CULTURE

GOVT. OF INDIA

Senior Fellowship Grant Scheme Financial Year - 2013-2014

FIELD : LITERATURE

SUB : FIELD : MAITHILI

File No. : CCRT/SF-3/131/2015

मैथिली संत-साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण

अवधि : 01-01-2016 से 31-01-2018 तक

(3 माह की समयावृद्धि के अन्तर्गत 30-04-2018)

(Maithili Sant-Sahityak Adhyayan O Vishleshan)

(Period 01-01-2016 से 31-01-2018)

(Three Months Extention from 31-01-2018 to 30-04-2018)

शोधकर्त्ता

दिनांक : 30-04-2018

(आमोद कुमार झा)
Enrollment No. : SF20140238
Village - Moglaha, Post - Dhamaura
Via - Babubarhi, Dist. Madhubani (Mithila)
Pin - 847224, Bihar
Email : amodjha2@gmail.com
मो. : 9433100407, 900

विषय-सूची

1.	प्रस्तावना	3-5
2.	संत साहित्यक अध्यात्मिक सिद्धान्त	6-48
3.	मैथिली संत साहित्यक उत्स	49-75
4.	मैथिली संत साहित्यक विकासमे विद्यापतिक भूमिका	76-96
5.	विद्यापतिक परवर्ती संत कवि	97-152
6.	पूर्वाञ्चलीय संत – साहित्य पर विद्यापतिक प्रभाव	153-180
7.	भक्ति आन्दोलनक मिथिलाक संत साहित्य पर प्रभाव	181-198
8.	मैथिली संत साहित्यमे राधा-कृष्णक काव्य परंपरा	199-224
9.	मैथिली संत साहित्यमे राम काव्यक परंपरा	225-246
10.	संत साहित्यमे शैव परंपरा	247-260
11.	मैथिली संत साहित्यमे शाक्त परंपरा	261-279
12.	मैथिली संत साहित्य आ सीता	280-294
13.	आधुनिक कालमे संत-साहित्यक दशा ओ दृष्टि	295-309
14.	उपसंहार	310 -312
15.	संत लोकनिक छाया चित्र	313-314

मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण

प्रस्तावना (Introducton) :-

भगवान कपिलदेव अपन माता देवहुतिसँ संतक स्वभाव प्रसंग व्याख्या करैत कहैत छथिन्ह -

तिथिक्षव: कारुणिका: सुहृद सर्वदहिनाय

अजातशत्रुव: शान्त: साधव: साधुभूषणा:

मय्य नन्येन भावने भक्ति: कुर्वन्ति ये दृढाम

मत्कृते त्यक्त कर्माण स्त्यक्तस्व जन वान्धव:

मदश्या: कथामृष्टॉ शृण्वन्ति कथयन्ति च

तपन्ति विविधास्तापा नैतान्मद्वत चेतस:

त एते साधव: साध्वी सर्वसंग विवर्जिता:

संगेस्तेष्वथ: ते प्रार्थ्य: संगदोषहरा हिते

अर्थात् जे सुख-दुखमे सहनशील, करुणापूर्ण हृदयबला, सबहक बिना कराणहुक हित करयबला, ककरो प्रति कोनो शत्रुभाव नञि राखयबला, शान्त स्वभावबला, साधु-भाव बला, साधुकें सम्मान राखयबला, हमरासँ अनन्य भावसँ सुदृढ़ि भक्ति करैछ, हमरा लेल समस्त कर्म एवं स्वजन बन्धुकें त्यागि कऽ हमर पवित्र कथाकें सुनैत अछि, हमरामे मन आ चित्त सतत लगौने रहैत अछि, एहन भक्तकें संसारक विविध ताप कोनो कष्ट नहि पहुँचा सकैत अछि। एहन सर्व-संग परित्यागी महापुरुष, संत कहबैत छथि। मनुष्यकें ओहने सत्संगक इच्छा करवाक चाही, किएक तऽ ओ आसक्तिसँ उत्पन्न होमयबला सब दोषकें हरयबला होइछ।

विद्यापति कीर्तिपताकामे सज्जनक प्रसंशा आ दुरजनक निन्दा करैत लिखैत छथि -

महुअर बुझ्झइ कुसुम रस, कब्ब कलाउ छइल्ल

सज्जन पर उआर मन, दुर्जन नाम मइल्ल

संतक परिभाषा तुलसीदास लिखैत छथि -

तुलसी संत सुअंब तरु, फूल फलहि पर हेत

इतते ये पाहन हने उतते वे फल देत।

``Now Santa is almost a technical word in vittal sampraday and means any man who is a follower of others sampradays are not sant but the followers of the varakari sampraday are sant per excellance``

(mysticism in Maharashtra by Prof. R.D. Ramadeopoona, 1993, P-83).

डॉ. वड्र्थवाल, संतकें निर्गुणपंथी वा निरगुणियाँ कहव बेसी उचित बुझलनि अछि। अज्ञेय तऽ अंशतः अनुभवगम्य वस्तुकें परमतत्व मानलनि अछि। एतय निर्गुण वा सगुण कोनो प्रश्न नहि रहि जाइत छैक।

कबीर साहेब आदि सब संत लोकनि सेहो निर्गुण एवं सगुण विलग अनिर्वचनीय नहि बुझलाह अछि।

मिथिला अनंतकालसँ अध्यात्म ओ ऋषि-मुनि-महात्मा ओ संतक देश रहल अछि। एहि पुण्यभूमिपर समय-समयपर अवतारी पुरुष जन्म लेलनि अछि। ब्रह्मज्ञानी लोककल्याणकारी सिद्ध महापुरुष संसारमे "कमल दल जल जीवन ढल-मलक" समान निर्लेप रहवाक मिथिलाक पावन धामपर संतभाव जगजाहिर अछि। अनादिकालसँ मानव सभ्यताक संगहि एतय लोक-संस्कृति संतभाव विश्व प्रसिद्ध रहल अछि। एहिठाम षड़दर्शनमे मिमांसा, न्याय, वैशेषिक आओर सांख्यदर्शनक साहित्य सृजित होइत आयल अछि। तऽ सर्वसाधारणक बीच अलिखित एक कंठसँ दोसर कंठ मे प्रवहमान लोक-वेद, लोक-परलोक, लौकिक-परलौकिक, लोकाचार-वेदाचार, सम्पूर्ण भारतीय अध्यात्मक कुंजी मिथिला रहल अछि। लोक शब्दक अर्थ जीवन-जगत प्रसंग मार्कण्डेयपुराणमे कहल गेल अछि -

वेदाच्च वैदिकाः शब्दाः। सिद्धा लोकाच्च लौकिकः।।

संत साहित्यक प्रसंग प्राक-विद्यापति कालसँ सिद्ध साहित्यमे एकर उत्स मानल जाइत अछि। संत साहित्यमे गुरू-शिष्यक परंपरा रहलैक अछि से श्लोक आदि कालसँ प्रचलित अछि-

स्वतः प्रमाण परतः प्रमाणं, कीरांगना यत्र गिरोगिरन्ति।

शिष्योपशिष्यै उपगीयमानः जानीहि तन्मण्डन मिश्रधामः।।

मैथिली साहित्यमे संत परंपराक इतिहास बेस भरल-पुरल अछि मुदा, एकर अध्ययन-अनुशीलन ओ विश्लेषण नीक जकाँ नहि भेलैक अछि। से एहि विधाकें प्रकाशमे आनल जेबाक चाही। संत कवि लोकनिमे बेसी अशिक्षितो छलाह। एहनमे हिनका सबहिक रचनामे साहित्यिकता अभाव दृष्टिगोचर होयब अवश्यंभावी मुदा, लोक शब्द ततेक प्रचलित रहैत अछि जे बुझवामे अशोकर्य नहि होइछ। यथा संत साहेबरामदास जीक ई पद -

साधुकें संगति परि गुरूक चरण धरि

आहे सजनी

हमहुँ जायब जगरनाथहि रे की

मैथिली संत साहित्यक अध्ययन अनुशीलन ओ विश्लेषण वर्तमान यांत्रिक सभ्यता, जे हमरा लोकनिक उपर हावी भेल जा रहल अछि, एहना विकट परिस्थितिमे हमर उद्देश्य भसिआयल

जा रहल, हमर मैथिली सकल संत काव्य-काव्योचित गुण वर्त्तमान युगमे जतय मानवीय मूल्यक दिनानुदिन ह्रास भऽ रहल छैक, हमर धरोहर-संत लक्ष्मीनाथ गोसाञि, लोचन, मनबोध, उमापति, लालदास, मोदलता, स्नेहलता, कनकलता, रूपलता, रामप्रिया, भवप्रीतानन्द, चंदा झा, हर्षनाथ झा, ईशनाथ झा, माधवानन्द, श्रीधर प्रसाद मिश्र, अपूछदास, रामस्नेहीदास, नमेलता, रसनिधि, नारायण भक्ति श्रीमाली, हकरू गोसाञि, मेंहीदास आदिक पारंपरिक रागभास आधारित सोहर, समदाओन, फागु, नचारी, ईश्वरियें प्रेम परक-उदासी, पराती, झूला आदि लोकानुरंजक रचनावलीक आइ एहि भौतिकवादी युगमे कतबा प्रासंगिक अछि, आदिकालसँ जोगाओल हमर संत साहित्यक इतिहास विशृंखलित भऽ रहल अछि। एहि काव्योचित उद्रेक भावकें सहेजनाइ, सकल समाजक लेल कतबा आवश्यक, से संस्कृति मंत्रालय हमरा शोध करवाक लेल आदेशित करैत अछि। हम अपन सौभाग्य बुझि रहल छी, अपन प्राचीन मानक धरोहरकें जनता जनार्दनक बीच मानबीय-मानबोचित भावकें इजोतमे अनबा लय शोध करब आवश्यक छलैक।

●●●

प्रथम् अध्याय

संत साहित्यक अध्यात्मिक सिद्धान्त

भूमिका

मिथिलाक जनमानस भक्ति रससँ आप्लावित अध्यात्मिक सिद्धान्त ओ दर्शनमे मिथिलाक भूमि अदौ कालसँ उर्वर रहल अछि। युग-युग सँ ऋषि-मुनिक संस्कृत भाषासँ उच्च कुलीन वर्गमे प्रचलित से जखन महाकवि विद्यापतिक अनुभूति मात्र सँ देसिल वयनाक संग जे मानवीयकरण भेल से मिथिला मानवीय इतिहासक एहन मोहक शब्द जे सुनिते ओ उच्चरित होइतहि एकटा स्वर्णिम पृष्ठिभूमि हृदयमे अंकित-झंकृत होमय लगैत अछि। हमर अतीत एतेक समृद्ध रहल अछि जकर क्रम विदेह राजा जनक वैदेही सीता महर्षि गौतम, याज्ञवल्क्य, कौशिक (विश्वामित्र), ऋषिश्रृंग अष्टावक्र, कपिल, कणाद, जैमिनी, ब्रह्मवादिनी, सुलभा, गार्गी आदि। मिथिलाक आदिकालीन अनुपम विभूतिसँ लऽ कऽ मध्यकालीन कुमारिलभट्ट, मंडन, वाचस्पति, ज्योतिरीश्वर, गंगेश, उदयन आ विद्यापति जेहेन शीर्ष मनीषीक स्मृति हमरा मानस पटल पर आवय लगैत अछि। मिथिला ओ मैथिलीक मध्य अविरल सदा नीराक समान प्रवाहमान एकटा परंपरा आबि रहल अछि। कतेको साधु-महात्मा अवतरित भेलाह जिनकर संयत भाव निरंतर लोक जीवन सँ दूर रहितो लोकक मंगल कामना निमित जे भावना तदनुरूप हुनक जे कार्य ओ हुनक उदात्त चरित्र अपन कतेको विघ्न बाधा सँ घेरल परंच पुण्य पथक आग्रही सात्विक निष्ठा ओ अविचल आस्थामे सतत सराबोर रहलाह अछि।

आदिकालीन भारतीय इतिहासमे आर्यावर्तक यज्ञभूमिक रूपमे मिथिला प्रसिद्ध अछि। राजा जनक कें देवकन्या सीता यज्ञस्थले सँ प्राप्त भेल रहथिन। मिथिला प्रदेशक हिन्दू धर्मी मैथिल अपन दैनिक जीवनमे पंचोदेवोपासक शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य ओ गणेशक उपासना करैत रहलाह अछि। प्रमुखतया शिव-शक्ति ओ विष्णुक उपासक रहलाह अछि। मिथिलाक अधिकांशतः लोक साकार ब्रह्म मे विश्वास रखैत अछि। तैं सर्वथा मूर्तिपूजा प्रचलित अछि।

आधुनिक युग मे सुसंस्कृति मैथिल भारतीय सामाजिक मर्यादा ओ सांस्कृतिक विशिष्टताक परिचायक छथि। गीता, रामचरित मानस, श्रीमद्‌भागवत ओ दुर्गासप्तशतीक पाठ तऽ बहुधा लोक करितहि छथि। मिथिलामे निरंतर एहन-एहन तेजोमय, सज्जन, पवित्रात्मा, भक्त सदाचारी, महात्मा सदृश बोलचालक भाषामे संत-पंडित भेलाह अछि जे सूर, तुलसी, मीरा, विद्यापति, बिन्दु जी आदिक भजन कीर्त्तन ओ कबीरक संकीर्तन साधुक निर्गुण-निराकार ब्रह्मक उपासक अपन अटूट आस्थाक संग-``**कलियुग केवल हरिगुण गाहा। गावत नर पावहि भवथाहा।**`` वैदिक युगक दृश्य हो वा वातावरणमे व्याप्त आध्यात्मिक सौरभ एहन अनुभव मानवमात्रकें आश्विन नवरात्रामे होयत जे समस्त देवी-देवता स्वर्गसँ उतरिकऽ मिथिलामे प्रवास कऽ रहल छथि। चौदहवीं शतीमे विद्यापति गीतक प्रभाव सँ मिथिलावासीक धर्मिक भावनाकें

सशक्त अभिव्यक्ति भेटलनि। अर्थात् ब्रह्मानन्द-सम्पन्न व्यक्ति जे अपन स्वाभाविक, जन्मजात, सहज लोक-संग्रही सात्विक वृतिक कारणे अपन समाज देश किंवा विश्व-मात्र कें नैतिक उदात्त चरित्र ओ अपन अनुकरणीय लोक हितकारी वृतिक पोषण कयनिहार मिथिलामे दरबज्जे-दरबज्जे भेटताह। ओ लोकनि कतेको प्रकार के प्रलोभन सँ विरत, प्राण संकटो मे राखि अपन पुण्य पथसँ विचलित नहि भेलाह अछि।

ओहू दशामे (अपन आराध्य)कें बजबैत छथि। हुनका विश्वास रहैत छनि विषमकाल मे मनक उच्छवास करैत

अब न चाही अति देर प्रभु जी
विप्र धेनु महि विकल संत जन लिबय असुरजन घेरि
आहि सुदरशनै हतौ बानासुर सोइ सुयस लेहु फेरि
नन्दनन्दन तोहि सपथ महाराजीक हरषि हेरहु एक वेरि
साहेब करुणा करय शिशु घुनि मिथिला होइछ अन्हेरि

मोनोग्राफ पेज 20

मैथिली संत लक्ष्मीनाथ गोसाइं सेहो उपर्युक्त प्रसंगमे कतेक सुन्दर वर्णन कयलनि अछि :-

मिथिला-पतिरामचंद्र कोसल रघुराई।
विप्र वेद धेनु सन्त, दुखित सकल जीवा जन्त।
मैथिल नृपज्ञानवन्त घटा छाई।।1।।

अस्तु `संत` साहित्यक परंपरा तत्वत: ओहि तात्विक रचना पद्धतिक दिस संकेत करैत अछि, जताय मानव समाजक मूल प्रवृति आश्रित होइत अछि। प्राचीन कालमे सन्त शब्दक भावना, अवस्था, विशेष विचारवान व्यक्ति अर्थहिमे प्रयुक्त होइत आबि रहल अछि। संतक जे संप्रेषणीयताक विशिष्टता जेना ओ आत्मीय संवाद प्रस्तुत करैत छथि। अखन धरि जे साक्ष्य प्राप्त भेल अछि ताहि आधार पर स्पष्ट अछि जे समस्त भारतीय साधना ओ उपासना पद्धतिक उद्भव एकहि श्रोतसँ भेल छैक। युग-युगसँ मिथिलाक महत्व अध्यात्मिक चिंतन धारा पर आधारित सतत् जनसाधरण कें प्रभावित करैत आबि रहल अछि। प्रस्तुत अछि ``संत साहित्यक अध्यात्मिक सिद्धान्तक`` क्रमिक विश्लेषण :-

संत शब्दक विश्लेषण :- संत शब्दक विश्लेषण करैत आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी ``उत्तरी भारत की संत परंपरामे` कालीदासक श्लोक उद्धृत करैत छथि :-

सन्त: परीक्ष्यन्यतरद् भजन्ते मूढ़: परप्रत्य यनैय बुद्धि:
एवं पुन: **``तं सन्त: श्रोतमर्हन्ति सद सद् व्यक्ति हेतव:``।।**

आशय बुद्धिमान, सरल, चित्त, सज्जन सदाचारी, परोपकारी भक्त साधु-महात्माक

1. सहेब राम दास मोनोग्राफ, पेज -20
2. ल.ना.गोसाईं पोथी मैथिली अकादेमी सँ प्रकाशित - डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज - 25

पर्याय मानलनि अछि। जे किछु लोक संत शब्दक शांतक रूपान्तरण मनैत छथि हुनका मते ``शं सुखं ब्रह्मानन्दात्मकं विद्यते अस्य`` अर्थात् ब्रम्हानन्द सम्पन्न व्यक्ति होमक चाही। बौध साहित्यक पाली भाषामे जे धर्मग्रंथ `धम्मपदं` मे सेहो कतेको ठाम शांतक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि। **`अधिगच्छे पदे सन्तं सङ्कारूपसमं सुखं।`[1] व, सन्तं अस्स मनहोति`[2] (तुलसी कृत रामायण सँ) `बंदो संत असज्जन चरणा। दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा।।** - एहि प्रकारें संत शब्दकें `सनोति प्रार्थितं फलं प्रयच्छति`क आधार पर सन्ति वा सन्त्य शब्दक विकृत रूप बुझल जाइत अछि। हिन्दी संत साहित्यक केन्द्रबिन्दुमें डा. सन्त नारायण उपाध्याय भर्तृहरि जे सन्त स्वयं परहिते विहिताभियोगा:` आशय सन्त परहित सुखक धारणा सँ लेपित रहैत छथि। परशुराम चतुर्वेदी आचरण प्रसंग महाभारतक आचरणलक्षणां धर्म सन्तश्चाचारलक्षणा: एहि प्रकारे - लोकानुग्रहकारी कहैत संत कें श्रेष्ठ सिद्ध करबाक प्रयास कयल गेल अछि। मिथिलाक महान संत स्नेहलता लिखैत छथि जे संतक उत्पत्ति कतयसँ होइत अछि :-

संत शिरोमणि सदा सरल चित सीताराम उपासी
रामचन्द्र शुभ नाम रामप्रिय श्रद्धा भक्ति हुलासी[3]

उपर्युक्त पदक अनुसारें संतक प्रसंगे जे लिखल अछि विद्वान लोकनिक कथनकें पुष्टि कयलनि अछि। वास्तवमे संत सरल आत्मा विहुबल भगवानक संग अपन हृदयकें तदात्म्य सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। मानवीय गुणक संग ईश्वरक उपासक बनि संसारक कल्याणक लेल कार्यरत रहैत छथि वएह संत कहबैत छथि। संत स्नेहलताक पद लोकानुग्रहकारी सिद्ध होइछ। संत शब्द अंग्रेजी भाषामे Sant सेंट शब्दक समानार्थक बुझल जाइत अछि Sant शब्द वस्तुत: लेटिन शब्द Sancio (सैशियो = पवित्र कऽ देनाइ) के आधार पर निर्मित Sanctus (सैंक्टस) शब्दसँ बनैत अछि, जकर अभिप्राय भेल `पवित्र`। आ ओ ईशाई धर्मक कतेको प्राचीन महात्माक लेल इएह पवित्रात्माक शब्दक रूपें प्रयुक्त कयल जाइत अछि। जकरा हम अखन Sant वा संत नामे अभिहित करैत छी।[4]

संत शब्दक व्युत्पत्तिविचार : संत शब्दक व्याख्या व्युत्पत्ति रूपें जे विचार कयल जाइत अछि से कहल जाय तऽ पाण्डित्येक प्रदर्शन थिकैक। विषय प्रविद्ध ई ओतेक ग्राह्य नहि, मुदा साहित्यक जे माप तौल तैं, से करब आवश्यक भेल। मैथिली भाषा-साहित्यक मध्य संत शब्दक व्याख्या एक वचनमे कयल जाइत अछि। जे सन शब्दक `अस` धातु सँ बनल अछि जे सतक् पुल्लिंग रूप जाहिमे शतृ प्रत्यय लगा कऽ प्रस्तुत कयल गेल अछि। जे शुद्ध अस्तित्व मात्रक बोध होइत अछि। ताहि लेल एहि शब्दक प्रयोग नित्य वस्तु वा परम पदक लेल प्रयुक्त होइछ। जे सतत् नित्य-निर्विकार एकरस ओ विकारहीन रूपें विद्यमान रहैत अछि, जकरा सत्य सेहो कहि सकैत छी। इएह सत्तक प्रयोग वैदिक साहित्यमे ब्रह्म वा परमात्माक लेल कयल जाइत अछि।

1. भिक्खुवग्ग गाथा -9
2. अर्हन्त बग्ग गाथा - 7
3. स्नेहलता मोनोग्राफ, पेज - 62
4.उ.भा.की संत परंपरा - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पेज -13

सदेव सौम्येदमग्न आसीदेक मेवा द्वितीयम्`[1] / आशय प्रारंभमे एकटा अद्वितीय सत् वर्तमान छल ताकरे ऋग्वेदमे एकठाम लिखल अछि -`**सुपर्णा विप्रा: कवयो वचनोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।**`[2] अस्तु क्रांतिदर्शी विप्र लोकनि ओहि अद्वितीय सत्‌क वर्णन अनेक प्रकारसँ कयलनि अछि। संत शब्दक उपर्युक्त अर्थहिमे अपभ्रंशक पुस्तक पांहुड़दोहा मे लिखल अछि - संतु णिरंजणु सोजि सिउ ताहि किज्जउअणुराउ,[3] पुन: **संतु णिरंजणु ताहि बसइ णिम्मल होइ गवेसु**`[4] आशय अहूठाम परम तत्वक रूपें मे प्रयुक्त भेल अछि। तैतिरीय उपनिषदमे सेहो कहल गेल छैक - **असन्नेव सभवति असद्ब्रहाति वेद चेत। अस्ति ब्रह्मातिचेदेद संतमेन विदुर्वधा** कहबाक तात्पर्य जे ब्रह्म पुरुष मे ब्रह्म असत् होयता तऽ स्वयं असत रहतैक, ब्रह्म जखन असत् रहतैक तऽ ब्रह्मोता सेहो हुनका सतत् असत बुझतनि। संत शब्दक व्याख्या संत साहेब रामदास - संत भगवानक संग एकाकार भऽ जाइत छथि। मैथिली साहित्यमे संत सतत अपन अराध्यकें अपना सँ पैघ मानलनि अछि, ईश्वर के श्रेष्ठ मानलनि अछि। जखन कि आन-आन भाषामे संत एवं अराध्यके समान मानलनि अछि एहि मे देखल जाओ संत गरीबदास लिखैत छथि **- साँई सरीखे संत है यामे मीन न मेष।**

संतपल्टू साहेब लिखैत छथि -

संत और राम को एक कै जानिए
दूसरा भेद ना तनिक आनै।[6]

अस्तु अहिठाम मूलत: अंतर मैथिल संत सतत् अराध्यकें श्रेष्ठ मानैत छथि, संत साहेव रामदास लिखैत छथि -

संत जगत अनन्त लुबधै भन जानिके सार
जाहि हरि अपनाय लिन्हौ तनि तेज वस्तु आसार
काम-क्रोध-मद् लोभ तृष्णा जे जन झोके भार
से जन हरि से मिलै साहेब निगम करत पुकार।[7]

साहेब रामदासक उक्तिसँ स्पष्ट अछि जे अपन अराध्यके सर्वोपरि मानलनि अछि। भागवतक अत्यंत समीप छथि तुलसीकृत रामचरित मानसकें उत्तरकांड मे लिखल अछि - **जानेसु संत अनंत समाना।** अतएव संत शब्दक विमर्श कयला संता, संकेत भेटैत अछि जे सत् रूपी परमतत्व के जे अनुभव कऽ लैत छथि आ अपन व्यक्तित्व सँ उपर उठि अपन अराध्यक प्रति तद्रुप-तादात्म्य स्थापित कऽ सत्यस्वरुप सिद्ध वस्तुक संग साक्षात्कार कऽ लैत छथि किंवा

1. छन्दोग्य उपनिषदक द्वितीय खण्ड 1 मे लिखल अछि।
2. ऋग्वेद (10-1'4-5)
3. अपभ्रंशक पोथी पाहुड़ दोहा करंजा जैन सिरिज 38
3. अपभ्रंशक पोथी पाहुड़ दोहा करंजा जैन सिरिज 94
5. वएह पाहुड़ दोहा 6 1
6. पल्टूदास जीक वाणी, पेज - 8
7. साहेब राम दास मोनोग्राफ Page 39

अपरोक्षक उपलब्धिक फलस्वरूप अखंड सत्यमे अपनाकें प्रतिष्ठित कऽ लैत छथि वा भऽ जाइत छथि वाएह संत थिकाह।

श्रीमद्भगवद्गीतामे - `संत` शब्दक जे अर्थ कयल गेल अछि - ओहि प्रसंगमे सत् शब्द ॐ तत्सत् वाक्यमे ब्रह्म दिशि निर्देश करैत अछि। मुदा एकर उपयोग अस्तित्व वा साधुताक अर्थमे भेल अछि। (ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतयः गीता 17.23) एहि प्रकारें नीक कर्मक लेल `सत्` शब्दक उपयोग कयल जाइत अछि। ओना परशुराम चतुर्वेदीक पाथी ``उत्तरी भारत की संत परंपरा``क पेज -15 मे यज्ञ, तप, व दानमे एकाग्र अर्थात् स्थिर भावना रखबाक जे तकरो `संत` कहैत छथि आ एहि निमित जे कार्य कयल जाइत अछि - ओहि कर्म कें नाम सेहो सत् थिकैक। तैं सत्य वाचन मात्रसँ संत नहि भऽ सकैत अछि। मात्र ब्रह्मनिष्ठ भऽ गेनाइ पर्याप्त नहि संतक वास्ते किछु अन्य गुणसब सेहो आवश्यक अछि। जकरा गीताक श्लोक - **सद्भावे साधुभावे च सदित्यैतत्प्रयुज्ये। प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते - 26**

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते

कर्म चैत्र तदथीयं सदित्येवाभिधीयते - 27

उपर्युक्त श्लोकक माध्यमसँ विद्वान संतक प्रसंग जे विचार कयल अछि जे संतके साधुभाव अर्थात् सर्वभूतहित सुहृदभाव, प्रशस्ति कर्म वा सत्यकार्य करबाक जे क्षमता यज्ञ, तप व दान आदि कर्म करैत रहबाक जे हुनकर प्रवृति एवं तदर्थ अर्थात् सब किछु परमेश्वरक वास्ते किंवा निष्काम भावसँ करबाक अभ्यास कहिकऽ गनाओल जा सकैत अछि। एहिमे सँ यदि यज्ञ, तप, एवं दान आदि कर्म करबाक जे प्रवृतिकें कोनो तरहें प्रशस्त कर्म करबाक क्षमतामे एकरो जोड़ि लेल जयतैक तखन मात्र चारिटा गुण शेष रहि जाइत छैक जकरा प्रसंग मे प्रमाणित कयल अछि ``**सत्कर्मकृन्मत्परमो मदक्तः संगवर्जितः। निर्बैर सर्वभूतेषु यः स मामेति पांडव।**``[1] हे पांडव जे एहि बुधिसँ कार्य करैत अछि से सब कर्म परमेश्वर के छनि, जे सत्परायण वा संगवर्जितः अछि आ सभ प्राणीक विषयमे निर्बैर रहैत छैक, वएह भक्त हमरामे मिलि जाइत अछि।`` एहि उक्तिक संग जे गुण ताहिसँ संपृक्त संतक संग एकाकार भऽ जाइत छैक जे सम्पूर्ण रूपें युक्त भऽ जाइत अछि तखन `संत` शब्दक व्याख्याक प्रमाणिकता सिद्ध होइछ।

संत शब्दक व्याख्या करैत **डॉ. रामेश्वर मिश्रा** अपन शोध प्रबंध `मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ` पोथीक पेज मे लिखैत छथि -`ब्रह्महि माहि विराजत ब्रह्महि, संतक ब्रह्म सर्वव्यापक अछि। परम सत्ताक प्रसंग लिखैत छथि जे रीवन्द्र नाथ टैगोर संत दर्शन वा शब्द पर विचार करैत कबीरक समर्थन करैत छथि यथा -

तुम जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म विचार

एहि भावकें इंगित करैत - रविन्द्रनाथ लिखैत छथि -

गानेर भीतर दिये जखन देखि भुवन खानि तखन तारे जानि

1. विद्वान श्री चतुर्वेदी अपन पोथी (पेज 15 मे) गीताक अध्याय 11 श्लोक 55

व्यापक अर्थमे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो डा. रामेश्वर मिस्रक शोध प्रवंध मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रक पेज-1 सँ 118 धरि मे संत मत ओ संत परंपराक प्रसंग जे लिखल अछि ताहिसँ स्पष्ट भेल जे ओ आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक मतसँ संपृक्त संत शब्दक व्यवहार पवित्रात्मा, परोपकारी वा सदाचारीक प्रसंग मानैत छथि। मुदा एकटा ओ स्पष्ट केलनि अछि ताहिसँ हम अपन मताक समर्थन गुरूदेवक संग रखैत छी ओ कहैत छथि जे भक्ता साहित्यमे `सगुण` तथा निर्गुण दू टा शाखा संतक प्रसंग कहैत छथि जे निर्गुण उपासक लेल `संत` शव्द रूढ़ि बनि गेल अछि, जखन कि सगुणोपासकक लेल `भक्त` शब्द प्रचलन अछि। आचार्य क्षितिमोहन सेन सेहो रवीन्द्रनाथक मत `संत` ओ `भक्त` के ओही रूपमे स्वीकार कयलनि अछि। अध्यात्मिक आधार दक्षिण मे ज्ञानदेव, नामदेव एकनाथ आ तुकाराम जे निर्गुण भक्तक लेल `संत` शब्दक व्याख्या केलनि अछि। गोविन्द दास संतक प्रसंग अभिनव जयदेवक प्रसंग इंगित करैत कहला अछि -

सन्त - सरोरूह खण्ड कइ पदुमावती सुखजनक रवि

आशय रामायणक वालकाण्ड मे गोस्वामी तुलसी लिखैत छथि -

वन्दौ सन्त समान चितु, हित अनहित नहि कोई
अंजलिगत्त सुभ सुमन जिमि समसुगन्धकर दोई।।

डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय अपन पोथी `हिन्दी सन्त साहित्य का केन्द्र विन्दु` मे सन्तक व्याख्या करैत रामचरित मानसक उत्तरकाण्ड मे उधृत करैत व्याख्या कयलनि अछि -

सन्त उदय सन्तन सुखकारी, विश्वसुखद जिमिइंदुतमारी

आशय संतक उदय निरंतर सुख प्रदान करवालय होइत छनि जेना चन्द्रमा अन्हार के दूर करतै अछि आ संसारके आनन्द प्रदान करैत अछि तहिना संतक जीवन होइत छनि। बिना कोनो भेद भावकें संपूर्ण संसार पर एकभाव रखैत छथि। अपन विशेष, विलक्षण अलौकिक पृथ्वी पर जीवमुक्त भऽ कऽ आनन्द सँ जीवन-यापन करैत संसारक कल्याण करैत छथि सएह `संत` कहबैत छथि।

संतक लक्षण : - मानीवय जीवनमे जे अपन सम्पूर्ण क्रिया-कलाप ईश्वरीय आदेश आशय निर्बैरी निष्काम भऽ कऽ महाप्रभुक प्रेम मे संलिप्त रहथि। गोविन्द दास अपन पदमे लिखैत छथि जे संतक लक्षणक प्रसंग कतेक सटीक बैसैत अछि जे संत तऽ वएह अछि जे सब किछु अपन अराध्यक प्रति समर्पण -

ए धन जौवन पुत्र परिजन एत कि अछि परतीति
कमल दल जल जीवन ढलमल / भजहु हरिपद नीति[1]

संतक परिभाषामे कहल गले अछि जे संत पूर्णतया आत्मनिष्ठ समाजमे रहैत निश्वार्थ भावसँ विश्व कल्याणक कामना सँ ईश्वरमे आत्मलीन रहैत छथि अर्थात् कथनी ओ करनी दुनूमे समानता रहैत छनि संतक लक्षणक प्रसंग कबीर कहैत छथि -

1. गोविन्द दास भजनावली, पेज - 1

निर्बैरी निहकामना साँई सेंती नेह। विषया सूंन्यरा रहे
संतन को अंग एह।[1]

रवीन्द्रनाथ टैगोर तऽ संत ओ भक्तक बीच कोनो अन्तर नहि मानलनि अछि। संगहि दक्षिणमे तऽ सेहो संत आ भक्त एक दोसर शब्दक रूढ़िये मानल गेल अछि। मिथिला मे तऽ बहुधा संत सगुण के उपासक रहल छथि तऽ भक्तरूपे स्नेहलता संतक लक्षणकें स्पष्ट करैत अपन भावक अभिव्यक्ति कयलनि अछि - `स्नेहलता` मधुरोपासनामे लिप्त अपन भाव कही संतक भक्तक लक्षण उद्धृत करैत कहैत छथि -

परपीड़ा पाप अछि पुण्य एक उपकार
स्नेह करी ओहि दीनसँ जे अनाथ लाचार
स्नेह बिना संसारमे बनत न कोनो काज
सभकेर स्नेहक स्नेह छथि स्नेही राम[2]

एहि प्रकारें स्नेहलता लोक स्नेहीलता कही तऽ कोनो अति उक्ति नहि। मध्यकालीन मैथिली संत परंपराक मध्य संतक वा कही भक्त लक्षणक प्रति उपर्युक्त रचना अनुगामी बुझाना जाइत अछि। संतक भावना सत्कर्म सद्रुप परमत्त्वमे एकांतनिष्ठ, प्राणीक प्रति शुहृदय भाव प्रदर्शित करतै विश्व कल्याणक भावानासँ ओतप्रोत सुंदरकांडमे कहल गेल अछि -

सभकै ममता ताग बटोरी।
मम पद मनहि बाँधि बरि डोरी।।
समदर्शी इच्छा कछु नाही, आदि।

वस्तुतः संत शब्दक अर्थ अत्यंत व्यापक अछि। मानवीयताक बीच एकटा सुन्दर सामंजस्य स्थापित करबाक लेल संत ओ भक्त शब्दक उपयोग बुझू तऽ मानवीयता लक्षणकें लक्षित करैत अछि।

एहि प्रकारे श्रीमद्भागवत गीता के द्वितीय अध्याय मे स्थित-प्रज्ञक नामसँ सन्तक लक्षण करैत लिखल अछि -

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पाथ मनोगतान्
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।। -55
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरूच्यते। -56
यः सर्वत्रानमिस्नेहस्तत त्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। - 57
यदा संहरते चायं कूर्मोङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थोभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। - 58

1. *कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ - 50*
2. *मोनोग्राफ पेज-65 से (स्नेहलता)*

विहाय कामान्य: सर्वान्पुमॉश्चरति नि:स्पृहा: I
निर्ममो निरहंकार: स शान्तिमधिगच्छति।। - 71

आशय जे मनुष्य अपन मनक सबटा कामना छोड़ि दैत छैक आ सतत् अपने सँ संतुष्ट भेल रहैत अछि, ओ स्थितिप्रज्ञ कहबैत अछि। जे दु:खमे उदीग्न नहि होइत छथि आ सुखक फेरमे नहि पड़ल रहैत छथि। राग, भय ओ क्रोधसँ विरत, स्थिर बुद्धि जे ककरोसँ स्नेह नहि रखैत छथि जे नीक वस्तु पयलासँ ने सुखक अनुभूति करैत छथि आ ने अधलाह वस्तु पयलासँ ने दुखक अनुभूति करैत छथि ओ भेला स्थितप्रज्ञ। जेना कछुआ अपन सब अंग भीतर समेटि लैत अछि जकर इन्द्रिय अपन वशमे रहैक ओकर बुद्धि स्थिर होइत छैक। जे अपन सब इच्छाकें छोड़ि नि:स्पृह, ममत्वहीन ओ निहंकार भय विचरण करैत अछि - ओकरे शांति प्राप्त होइत छैक, वएह शांत चितबाला पुरुष संत होइत छथि।

भगवान श्रीकृष्ण संतक लक्षण स्पष्ट करैत श्रीमद्भागवतगीताक 12म् अध्यायमे लिखलनि अछि -

सन्तुष्ट: सततं योगी - यतात्मा दृढ़निश्चय:
मय्यर्पितमनोबुद्धियो मदभक्त्:स मे प्रिय: - 14

आशय संत सतत् संतुष्टताक रूपमे रहैत छथि, संत दृढ़निश्चयी एकाग्र मन ओ बुद्धि सदरिकाल भगवानमे लिप्त रहैत छनि।

यस्मन्नोद्विजते लोको लोकान्नो द्विजते च य:
हर्षामर्णभयोद्वेगैर्मुक्तो य: स च मे प्रिय: -15

ओहेन लोक जे लोकक संग जुड़ल हो, हर्ष, भय उद्वेग आदिसँ मुक्त रहैत अछि, भगवान कहैत छथि जे ओहने लोक हमर प्रिय होइत छथि। विद्वान डॉ. संत नारायण उपाध्याय अपन पोथी `हिन्दी` संत साहित्य का केन्द्रबिन्दु के पेज 8 मे संतक लक्षण प्रसंगे स्पष्ट कयलनि अछि। महाभारत ओ समस्त पुराण आदिमे संतक विशद वर्णन भेल अछि।

संत साहेब रामदास मैथिली भाषा मे संतक लक्षणक प्रति अपन विचार इङ्गित करैत लिखैत छथि -

संत साहेबराम अनुपम रामचन्द्र चित रस
ज्ञान: भक्ति विराग संयम दया धर्म निधान

संत साहेब रामदास जे लिखलनि अछि से कही भागवत-गीता, रामायण, महाभारत ओ पुराण आदिमे जतेक जे कहल गेल अछि ताहि भावकें अपन पदमे संतक लक्षण प्रसंग उद्धृत कयलनि अछि। सम्पूर्णता रूपें भेल जे समाज मे रहितो समाजसँ निर्लिप्त, समाजक कल्याणमे जे लागल रहैत छथि जिनकामे ज्ञान, भक्ति चित्त भगवान मे लागल, आचरणमे विराग संयम, मितभाषी दया ओ धर्मक मार्ग प्रशस्त करैत जीवनकें आगू बढ़बैत रहैत छथि, ई सब जिनकामे विद्यमान रहैत छनि भगवान कहैत छथि: -

1. मोनोग्राफ मे Page -16 (साहेब रामदास)

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते
श्रद्धाना मत्परमा भक्त स्तेऽतव मे प्रिया:

एहि सम्पूर्णता सँ युक्त जिनकर विचार आ हुनक जीवनमे ई सब गुण झलकैत छनि वएह संत छथि आ वएह हमर प्रिय छथि।

उपर्युक्त संतक लक्षणकें आर स्पष्ट करैत गीता प्रेसक' सर्वकामनां विप्रमोक्ष:। सर्वकामानां विप्रमोक्ष: अर्थात् कामना, इच्छा, ईप्सासँ निबृति होयब संतक महान लक्षण अछि। संतपदपर परमात्माक भावमे अवस्थिति तन्निमित्तक सर्वकामनाक तज्जन्य नित्य-निरतशय शांतिसँ अधिकरुढ़ भेल जा सकैछ। संताक लक्षणक प्रसंग सर्वविद्वत्सम्मत् सिद्धान्त इएह अछि जे परमात्मनिष्ठा आ तज्जनित समस्त कामनाक निवृति होयब संतक लक्षण अछि। श्रुति मे सेहो स्पष्ट शब्दमे संतक लक्षण प्रसंग लिखल अछि -

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदि श्रिता:।
अथ मर्त्योऽमतो भवत्योताबदनुशासनम्।।

उपर्युक्त श्लोकक आलोक मे जखन अन्त:करण समस्त कामना समूल विनिष्ट भऽ जाइत छैक ओहि समय प्राणी मुक्ताभाव कें प्राप्त होइछ वएह वा ओही भावसँ मानव संताभावके प्राप्त कऽ लैत अछि। जतेक श्रुति अछि सबहक सारतत्व इएह चरितार्थ कयलक अछि- श्रीमद्भागवद्गीतामे `स्थितिप्रज्ञ` नामसँ, संतक लक्षणक प्रसंग व्याख्या भेल छैक यथा -

`प्रजहाति यदा कामान्

अर्थात् सब कामनासँ निबृति आशय एहि असाधरण धर्म-गुणसँ युक्त धर्मशास्त्रक संग सम्पूर्ण मिथिला ओ मैथिली भाषा-साहित्यमे अनेकानेक संतभक्तक पदार्पण भेल छनि से सम्पूर्ण भारतमे विख्यात छथि। ओ सर्वकामना सँ निबृत भऽ अपन महान गुणक कारणे अध्यात्म जगत मे प्रसिद्ध छथि - मध्यकालमे वाचस्पति मिश्र, मंडन मिश्र, ज्योतिरीश्वर, गंगेश, उदयनक संग विद्यापति, गोविन्द दास, मनबोध, चंदा झा, मुंशी रघुनंदन दास, गोसाँइ सत्यनारायण झा, संत विष्णुपुरी, संत लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, साहेब रामदास, रामस्वरूप दास, हरिकिंकर दास, परमानंद दास, जयदेव स्वामी, रामस्नेही दास, अपूछ दास, संत मेंही दास, संत सुदर्शन दास, संत गिरिवर दास, संत पंचम दास, संत सेवा दास, संत लाल मित्र, संत मंगल दास, स्नेहलता आदि संत महापुरुष भगवानक गुणातीत रूपमे संत लक्षणक विचार कयला संता उपर्युक्त उद्धृत नामक संग आर बहुतो संतक नाम उल्लेख नहि भेल अछि जे आगूक अध्याय मे सविस्तार सभक परिचय देल जाएत। जे अर्वाचीन व्यक्ति पूज्य संतक भाव कें प्राप्त करबाक लेल अपन शुद्ध हृदय सँ जे साधना कएलनि अछि वा कऽ रहल छथि ओहो गौणरूपसँ संतक श्रेणी मे अबैत छथि।

संत स्वरूप :- ओना संत अपन स्वभाव, अपन विचार, आचार-व्यवहार सँ विश्व कल्याणक भावना सँ अपन सचरित्रतासँ समाजक बीच अपन परिचय तऽ बनेने रहिते छथि।

1. संत अंक`मे संतक लक्षणक प्रसंग स्वामी तपोवनजी महाराज पेज-77 मे लिखने छथि।

मुदा विद्वान भगवान श्री कृष्ण संतक स्वरूपक प्रसंग वर्णन करैत उद्धवमहराजकें कहैत छथिन्हः-

कृपालुरकृत द्रोहस्तितिक्षुः सर्वदेहिनाम्।
सत्यसारोऽनवधात्मा समः सर्वोपकारकः।।
कामैरहतधीर्दान्तो दुःख शुचिरकिंचनः।
अनीहो मितभुक् शान्तः स्थिरो मच्छरणो मुनिः।।
अप्रमतो गभीरात्मा घृतिमन्जितषड्गुणः।
अमानी मानदः कल्पो मैत्रः कारुणिकः कविः।।[1]

जे हमर भक्त कृपाक मूर्ति होइत छथि। सब प्रकारक सुख-दुख कें प्रसन्नतापूर्वक सहन करैत ककरो सँ वैर-दुश्मनी नहि रखैत छथि, सत्यके जीवनक सार बुझैत छथि, हृदयमे कोनो पाप भावना नहि उठैत छनि, समदर्शी सबहक उपकार केनिहार, कामना कलुषित नहि रहैत छनि इन्द्रिय विजयी, कोमल स्वभाव कोनो वस्तुक प्राप्ति करबाक इच्छा नहिये रहैत छनि, परिमिति भोजन, सतत् शांत स्थिर वुद्धि, भगवान पर आश्रित, मननशील कखनहुँ प्रमादित नहि रहैत छथि, सरल-गंभीर स्वभावः धैर्यवान स्वरूप, भूख-प्यास, शोक, मोह आ जन्म-मृत्यु एहि छवो पर विजय प्राप्त केने रहैत छथि। ने मान-सम्मानक लिलसा परंच दोसराक सम्मानक लेल तत्पर रहैत, भगवत् सम्बन्धी प्रसंग के ग्राह्य करबामे निपुण, हृदयमे करुणा, भगवत-भगवानक ज्ञान पयबा लेल सदरिकाल तत्पर, यथार्थक गहीरगर ज्ञानक संग संसारमे विचरण करितो संसारक दाग कतहु नहि लगैत छनि। उपर्युक्त रूप युक्त, संत स्वरूप भेलैक।

संत व्यक्तित्व : - `संत` साहित्यक व्याख्या प्रसंग संतक ब्यक्तित्व एकटा महत्वपूर्ण प्रसंग अछि। किएक तऽ समाजक बीच तऽ कइएक प्रकारक व्यक्ति रूप-रंग-आचरण-विचारक लोक विचरण करैत जकर वर्णन सिद्ध साहित्य, विद्यापतिक रचना ``पुरुष परीक्षा`` आदि मे स्पष्ट वर्णन अछि -

काआ तरूवर पंच विडाल
चंचल चीअ पईठो काल
दिठ करिअ महासुह परिमाण
लुई भणइ गुरू पुच्छिआ जाण
सअल समाहिअ काहि करिअइ
सुख दुखेतें निचित मरि आइ,
एड़ि एउ छान्दक बान्ध करणक पाटेर आस
शुनुपाख भिति लाहुरे पास

1. श्री संत नारायण उपाध्याय अपन पोथी [हि.स.शा. का केन्द्र बिन्दुक Page 4 मे भागवतक 11/11/11/29-31 सँ उद्धृत]

भणइ लुइ आम्हे साणे दिठा
धमण चमण वेणि पण्डि बइठा।'

कायाक पाँचटा शाखा होइछ चंचल जे शाखा ताहि पर काल अर्थात् कष्ट दुख बैसल छैक, संत मतक अनुसार मानव जीवनक बाद एकटा अवास्त दुनियाँ जकरा `मोक्षक` संज्ञा देल गेल अछि, सतत तकरे लेल प्रयत्नशील से लूइपाद कहैत छथि जे घमंड सांसारिक माया-मोह (चमण) कायाक सुन्दरता (वेणी) पंडित सेहो अही कायामे बैसल छैक बुझि सकी तऽ ओहि स्थाई महासुखक कामनासँ ओहि शाखाकें दृढ़ करू सक्कत करू यदि नहि अपना सँ हुए तऽ गुरुक सम्पर्क करी हुनका पूछि कऽ ओ पंडित रूपी ज्ञानक शाखा जाहिसँ महासुखक अर्थात् मोक्षके प्राप्त करबाक लेल अग्रसर होइत छथि, सएह संतक व्यक्तित्व होइत छनि।

महाकवि विद्यापतिक रचना प्रसंग विद्वान देवकान्त झाक कहब छनि जे विद्यापतिक रचना कामधेनु सदृश्य अछि। `लेखाञ्जलि` नामक अपन पोथी मे कहैत छथि `अनुलेखाञ्जलि` अध्याय मे जे जिनका जेना अपन मनोरथ छनि अपन मनोरथ पूरा कय सकैत छथि अपन अभीष्ट पूर्ण कय सकैत छथि। व्यक्तित्व जे संत साहित्यक प्रसंग एकटा महत्वपूर्ण प्रसंग अछि। महाकवि `पुरुष-परीक्षा` नामक पोथीमे -``पुरुषार्थ चतुष्ट्यसँ उद्धृत करैत धर्म-अर्थ-काम आ मोक्ष जे चारि प्रकारक पुरुषार्थ कहि विश्लेषण भेल अछि एहि चारूकें चतुर्वर्ग कहल गेल अछि। धार्मिक पुरुषार्थक कसौटी पर चतुर्वर्ग सिद्धि पुनः त्रिविध - तात्विक, तामस ओ अनुरागी। धनिकक तीन भेद अछि - महेच्छ, मूढ़ आ वह्यवाश। कामी चारि प्रकारक - अनुकूल दक्षिण, विदग्ध आ धस्मर। मोक्ष पुनः त्रिविध अछि - निर्वन्धी निस्पृही ओ लब्धसिद्धि। महाकवि विद्यापतिक प्रौढ़कृति चतुष्कोटिक पौरुषता (धर्म, अर्थ, काम, आ मोक्ष) जे मोक्षक प्रति संत भाव सतत् प्रयत्नशील अपन साधनाक अंतिम फल विद्यापति पदावली मे **``तोहें विसरि मन तोंहें समरपल अब भेल मझु कोन काजे``** इंगित करैत, गुण-दोष विवेचन करैत ``चतुर्विध लक्षण`` निरूपित करैत हमरा लोकनिकें अजस्र प्रेरणा देलनि अछि। वास्तवमे सुखमय मानव जीवनक आलोकरत्न महाकवि ``पुरुष-परीक्षा``क रचना कय ठोस आधारशिला रखलनि अछि। संतक व्यक्तित्व प्रसंग व्याख्या करैत डॉ. सन्त ना. उपाध्याय अपन पोथी ``हिन्दी संत साहत्य का केन्द्र विन्दु` मे गंभीर भावक विवेचना करैत सूक्तिकारक आधार लय मनुखकें चारि प्रकार सँ दर्शेलनि अछि - यथा -

एके सत्यपुरूषाः परार्थघटकाः परित्यज्य ये
सामान्यास्तु पगर्थमुध्यर्ममृतः स्वार्थविरोधेन ये।।
तेय्मी मानुषराक्षसाः परहित स्वार्थाय निघनन्ति ये
ये तु ध्यन्ति निरर्थक परहितं ते के न जानीमहे।।

*1. डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय **हिन्दी सन्त साहित्य का केन्द्रबिन्दु मे पेज 2 मे** संतक व्यक्तित्वक प्रसंग मनुष्यक प्रकारक संग सुक्तिकार सँ जोड़िकऽ रवीन्द्रनाथ टैगोरक विचारसँ डॉ. सत्येन्द्रक लिखल बंगला ``साहित्यिक संक्षिप्त इतिहासक`` अध्ययन क्रममे सिद्ध लुइपाद संतक व्यक्तित्वक प्रसंग जे निम्नांकित अछि ताहिसँ सहमति जतौलनि अछि। पेज-7 मे लिखैत छथि।*

कहबाक आशय मानव मानसिकताकें अध्ययन कय सूक्तिकार मानव चरित्रकें व्याख्यायित करैत जे विद्वान डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय मानवीय प्रकारक रूपें विश्लेषण कयलनि अछि। सूक्तिकार श्लोकक परिपेक्ष्यमे एकटा सत्पुरुष होइत छथि जे अपन स्वार्थ छोड़िकऽ निरंतर दोसरक उपकारमे लागल छथि हुनका ओहिमे आनन्द अबैत छनि। दोसर प्रकारक व्यक्तिकें अपन स्वार्थ सधैत दोसरक उपकार करवामे लागल रहैत छथि जे सामान्य भेल। तेसर राक्षसी प्रवृतिक जे अपन स्वार्थ साधक लेल ककरो किछु अहित कऽ सकैत छथि। चारिम प्रकारक मनुख जे बिना कोनो कारणक दोसरक अहित करय अकल्याण करैत अछि तकरा की कहबैक? एहिठाम सिद्ध लोकनि गुरुक सम्पर्क जे कहलनि से सिद्ध लोकनिक हृदय हमरा जनैत संत भावनाक अत्यंत करीब छनि। एहिठाम गुरूक ज्ञानसँ हृदयकें उच्छ्वास प्राप्त होइत छैक, उपर्युक्त भावनाक परिवर्तन तँ गुरुएक ज्ञानसँ संभव अछि। अस्तु सूक्तिकारक कहब छनि जे संत वा सत्पुरुष सतत घुमैत-फिरैत दोसरक उपकार मे आनन्द लैत रहैत छथि। आशय -

सुजनं व्यजनं मन्ये चारू-वंश समुद्भवम्
प्रात्मानं च परिभ्राम्य परतायेनि वारशाम्।।

डॉ. उपाध्याय लिखैत छथि अपन पोथीक पेज नं. 2 मे जे सत्पुरुषक जन्म उच्च वंश, उच्चकुल उच्च बास मे होइत छनि से अपने घुमैत-फिरैत पर उपकारी बनि दोसर के सुख ओ अपन आत्मीय आनन्द लुटैत रहैत छथि। आशय संत सामान्य मानवक विचारसँ उपर उठल रहैत छथि तहिना मिथिलाक संत अत्यंत जन-सामान्य कुल-परिवारसँ अबितो साधारण जीवन -जीवैत, साहित्यक रहस्यवादी ओ चिरस्थायी आनन्दक भावनासँ कोनो सम्प्रदाय कोनो धर्म कोनो जातिमे जीबैत अपन परम तत्वकें पयबा लेल विविध देवी-देवताक पूजन-अर्चन भक्ति-भजन करैत पंचोदेवपासनाक आधार बनाय मिथिलाक संत सगुणक उपासक रहला अछि। मात्र अपन साधनाक उँच्च उद्देश्य मानव कल्याणक भावनासँ ओतप्रोत रहलाह अछि। यथा प्राचीन कालसँ लए मध्यकाल ओ अर्वाचीन कालधरि वाचस्पति, विद्यापति, संत साहेब रामदास, संत स्नेहलता, संत मेंही दास, लक्ष्मीनाथ गोसांई आदि ओहि पंखाक समान रहला अछि जे सतत घुमैत-फिरैत मुदा समाजकें कल्याण करैत रहला अछि।

रूढि अर्थमे संत शब्दक प्रयोग :- `संत` शब्दक व्यवहार करबाक प्रसंगे जे संत शब्दक ब्युउत्पत्ति दुई प्रकारे भेल होयत। `संत` आ सत् शब्दक बहुवचन भऽ सकैत अछि। जेना पाली भाषामे होइत अछि। पहिल व्युत्पत्ति सँ सन्तक अर्थ जे सत् अछि अथवा जकरा सतक अनुभूति भऽ गेल अछि यद्यपि दुनू अर्थ संतक लेल सटिक बैसैत अछि। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी `उत्तरी भारत की संत परंपरा` एवं डॉ. सन्त नारायण उपाध्यायक अपन पोथी ``हिन्दी संत साहित्यक का केन्द्र विन्दु`` मे अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे दुनू गोटे एके तरहक विचार व्यक्ति कयलनि अछि। हिनका सबहक कहब छनि जे `सन्त` शब्दक प्रयोग मध्यकाल मे महाराष्ट्रक विट्ठल वा वारकारी सम्प्रदाय अर्थात् निर्गुण भक्तक लेल `सन्त` शब्दक व्यवहार एकटा रूढ़ि जकाँ भऽ गेल

1. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाइं मैथिली अकादेमी पटना, पेज-15)

छल। उत्तरी भारत मे निर्गुण भक्त कबीर साहेबक लेल ओहि परंपराक आधार पर `संत` शब्दक प्रयोग होमय लागल। एहि परंपराक महाराष्ट्रक निर्गुण भक्त ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ ओ तुकाराम आदि लेल `संत` शब्द बुझू रुढि जकाँ प्रयोग होमय लागल। एहि शब्दक प्रयोगक प्रसंग मे परुशुराम चतुर्वेदीक पोथीक पेज नं. 16 मे प्रो. R.D. Ranade अपन पोथी Mysticism in maharastra (Poona 1933) Page 42 मे लिखैत छथि -Now `Santa` is almost a technical word in the Vitthal sampradaya and means any man who is a followers of that sampradaya. Not that the followers of other sampradaya are not `santas` but the follower`s of the varakari sampradayas are santas par excellence.

डॉ. बर्थ्वालक उदाहरण दैत पेज नं. 16 मे एहि `संतक` प्रंसग विद्वान चतुर्वेदी लिखैत छथि - ``जे वर्थवाल एहि संत के निर्गुण पंथी वा निर्गुणिया कहब बेसी उचित मानलनि अछि। आ तदनुसार हुनकर मार्गके NIRGUN SCHOOL वा निर्गुण पंथ नामसँ अभिहित कयलनि अछि।`` मुदा, `निर्गुण पंथ` शब्द सँ व्यक्त होइत अछि जे एकर अनुयायी परमतत्व के मात्र निर्गुण बुझैत छथि जे एहि प्रसंगकें वास्तविकताक विरुद्ध होइत अछि। कबीर साहेब आदि सब `संत` निर्गुण ओ सगुण सँ अलग कोनो अनिर्वचनीय व अज्ञेय, किन्तु अंशत: अनुभवगम्य वस्तुकें परम तत्त्व मानलनि अछि आ ओहि ठाम निर्गुण ओ सगुणक कोनो प्रश्न नहि रहि जाइत छैक। बुझाइत अछि जे निर्गुण पंथ शब्दक प्रयोग पहिले सगुणोपासक भक्त सम्प्रदाय सँ एकर भिन्नता देखेबाक लेल भेल छलैक। किन्तु संत-परंपरा के किछु दिन बीति गेला पर `संतमत` शब्दक प्रयोग, संभवत: विक्रम संवतक 17 वीं शताब्दीक कोनो चरणमे विशेष रूपें होमय लागल। उपर्युक्त कथन डॉ. बर्थ्वालक छनि जकर उल्लेख भेटैत अछि उत्तरी भारत की संत-परंपरा Page -16 मे।

एहन देखल जाइत अछि जे महाराष्ट्र प्रान्तमे निर्गुण सम्प्रदायक जे भक्त भेलाह हुनका लेल संत शब्दक व्यवहार एकटा रूढ़ि जेकाँ होमय लागल तहिना देखादेखी पूर्वी भारत मे सेहो निर्गुण भक्तक लेल `संत` शब्दक प्रयोग होमय लागल। मुदा संत शब्दक व्याख्या ओकर रहनी-करनी आदिक सामंजस्य ओ साधना-भेदक कारणे ज्ञान-भक्ति आ आचरणमे सूक्ष्म अंतर देखवामे अबैत अछि। संतक सद्विवेक प्रयोग विशेष, दक्ष ओ भक्तिभाव द्वारा संत परम रहस्य सँ पूर्ण परिचित अर्थात् तद्रुपताक अनुभव करय लगैत छथि, ओ तखन अंतिम लक्ष्य ओकरे मानलनि अछि। आचरण-वादक, पक्षधर अलौकिक रहनी पर विशेष बल देलनि अछि। परंच सम्पूर्ण `संत` समाजक लक्ष्य मानव जीवनक समुचित महत्व प्रदान करैत ओकर अध्यात्मिक आधार पर पुनर्निर्माण करबाक लेल एहि धराधाम पर जीवनोन्मुक्त बनिकऽ आनन्दसँ, जीवन-यापन करब आ विश्व कल्याण मे सहयोग करवाक जे धारणा सएह बुझाइत अछि। एहि प्रकारक जे सिद्धान्त तकरा `संत-मत` कहि नाम देलनि अछि। आ आदर्श संतक स्थितिमे संत-देशमे निरंतर निवास करैत अपनाकें कोनो विशेष विलक्षण परंपराक व्यक्ति स्वीकार करैत गेलाह अछि।

पूर्वांचलीय भारतक मध्य मिथिला अदौकाल सँ सगुणोपासक, शक्तिपीठ मानल गेल अछि। एतय सगुणोपासनासँ आप्लावित अध्यात्म पुरुष जिनका मोक्षक प्रति ओ समाजक दायित्व आधुनिक कालमे कीर्तन-भजन करैत मानव कल्याण करबाक साधनाक भाव भिन्न-भिन्न मुदा समाजमे कियो हुनका महात्मा, कियो, बाबाजी, मुनि तऽ कियो `संत` नाम सँ अभिहित होइत छलाह। बल्कि निर्गुण सम्प्रदायक लेल एकटा भिन्न शब्द ``गोसाईं`` नाम सेहो विशेष प्रचलित छल जे एखनो सुनबा मे अबैत अछि। मुदा सेहो कोनो अध्यात्म पुरुष लेल रूढि नामे व्यवहृत नहि भेल। एहि रूपें देखी तऽ मिथिलाक अध्यात्म जगत् कोनो एक नाम सँ प्रसिद्धि प्राप्त नहि कयलक। ब्रह्म ओ आत्माक विकास मिथिले सँ भेल आशय `ब्रह्मविद् ब्रम्हैव भवति` मिथिलाक साधना भेद ज्ञान भक्ति ओ आचरणक प्रधानताक अनुसारें भारतक अन्यान्य प्रांत सँ स्वभावत: सद्विवेक प्रयोग करबामे दक्ष अपन भक्ति-भाव सँ अलौकिक आनन्दमे मग्न जीवनोन्मुक्ताक जे भावना से अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट अछि जे पूर्णताया भिन्न छलैक आ एकटा विलक्षण परंपराक मनुख स्वीकार करैत कखनो कियो हुनका बाबाजी, मुनी-महात्मा, धर्मात्मा, भक्त, संत ओ गोसाईं नामसँ अभिहित करैत गेलाह। से कियो साधनाकार कोनो खास नाम नहि देल मुदा मत ओ सिद्धान्त भिन्न रहितो इहलौकिक जीवन मे भूतल पर विश्व कल्याणमे सहयोग दैत रहलाह।

ध्यान देबाक छैकजे मिथिलाक सभ्यता ओ संस्कृतिक मे एहिठामक कोनो धर्म सम्प्रदाय जे मानवीय-चिंतानक संग (एहि प्रदेशक उत्पत्तिक प्रसंग) अध्ययन अनुशीलनसँ स्पष्ट अछि[1] जे मिथिला अध्यात्मिक सम्प्रदाय वा सामुदायक लेल सहिष्णु तऽ छलैक परंच कोनो विशेष नाम धराय अभिहित नहि कयल गेल जे ओकर रूढ़ि वनि जाइक। तैं मिथिलामे निर्गुण सम्प्रदायक लेल संत शब्दक रूढ़ि नहि बनल छलैक। जखन कि अन्यान्य प्रदेश ओ हिन्दी साहित्यमे संत शब्द प्राय: निर्गुण मतावलम्बीक लेल रूढि बनि गेल छल।[2]

मिथिलाक संतपरंपरा पारस्परिक सम्बन्ध :- भारतीय बाङमयमे साधारणतया `संत` शब्दक व्यवहार विवेकी सज्जन, बुद्धिमान, पवित्रात्मा, परोपकारी ओ सदाचारी लेल कयल जाइत अछि।[3] स्पष्ट होइत अछि सम्पूर्ण भारतीय साधना ओ उपासना-पद्धतिक उद्भव एकहि श्रोत सँ भेल अछि। दक्षिण भारतक `संत` अध्यात्मिक साधना, नैतिक साधना उपदेश-आदेश सबटा गुरू सम्मति तें ओ बृहद् साहित्य नहि गुरु वाणी वा वचन कहल जा सकैत अछि। स्वभावत: वचनक जे ईश्वर, जीव जगत, माया ईश्वरके प्राप्त करबाक जे उपाय योग, योगक प्रक्रिया, नाद, बिन्दु, कुंडलिनी, षटचक्र, सुरति, अनहदनाद आदिक जे विवेचना से दर्शन अछि। दक्षिण प्रांत वा ई कही उत्तर प्रांतोक संत खासकऽ निर्गुण परंपरा जे संत वैराग्य धारण कय ईश्वर जीव ओ जगतक तात्विक सम्बन्ध विवेचनामे नारीकें साधनामे बाधक मानि निन्दा

1. मिथिलाक शाश्वत साधना। डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक पोथी पेज नं. 9 सँ उद्धृत अछि।
2. गोविन्द बाबूक पोथी मैथिली भाषा का विकास पेज.नं. 13 ओ उपेन्द्र ठाकुरक अंक पोथी मिथिलाक इतिहास पेंज 35
3. डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय पोथी ``संत साहित्य समझ के पेज नं. 1.... मे लिखने छथि।
4. पं. राजेश्वर झाक अपन पोथी मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य मे` पेज 1 सँ....

कयल गेल अछि। नारी सँ सतत बचबाक उपदेश देल गेल अछि। अर्थात् ईश्वर ओ जीवक बीच जे सम्बन्ध जगतक स्वरूप मायाक आवरण परिच्छन्न मुक्त भऽ ब्रह्मलीन सतत गुरुक ध्यानमे लागल रहैत छलाह। ओना एकठाम सम्पूर्ण विश्वक आध्यात्मिक संत शिरोमणि लोकनि समान रूपें पारस्परिक सम्बन्ध कायम होइत अछि ओ भेल अहिंसा, जीव दया, काम, क्रोध, मोह, लोभ मद ओ मत्सर सँ मुक्त रहबाक उपदेश आदेश लेल जाइत अछि।'

ध्यान देबाक ई छैक जे मिथिलाक संत परंपराक अध्यात्मिक सिद्धान्तिक प्रसंग बहुत रास साम्य रहितो जे धर्मपरायणता से अन्यान्य क्षेत्र ओ भारतक अन्यान्य प्रदेशो सँ सर्वथा भिन्न रहल अछि, जे तंत्रसँ प्रभावित अछि। मिथिलाक भाषा, संस्कृति ओ उपासनाक पद्धति उद्भव ओ श्रोत धार्मिक आचरण आदिक अध्ययन विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि जे मिथिला परमेश्वरक उर्वरा शक्तिक उपासनाक क्रमे अध्यात्मिक रूप जे ग्रहण कयलक से परमेश्वरक संग स्त्री रूपी शक्तिक निरूपित करैत शिव ओ शक्ति, ब्रह्म ओ माया, पुरुष ओ प्रकृति, विष्णु आओर लक्ष्मी, कृष्ण आओर राधाक रूपें मिथिलाक साधना उपासना लोकप्रिय भेल। मिथिलाक जे वैष्णव साधना से वैष्णव धर्मक सिद्धान्ताके निरूपण करैत विष्णु ओ हुनक आह्लादिनी शक्ति लक्ष्मियेक दृष्टिकोण राखि कयल गले अछि। जे साक्षात् कृष्णाकें ब्रह्म आ राधाकें हुनकर माया शक्ति मानि हुनकर प्रणयलीलाकें मायोपहीत ब्रह्मक सनातक लीलाक रूप मे - **एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय**' अर्थात आत्मसिद्धिक हेतु कयल गेल।

उपर्युक्त विवेचनासँ ई कथमपि नहि दृष्टिगोचर होइछ जे मिथिला धर्मक कट्टरता मे विश्वास करैत छल। मध्यकालीन मिथिलाक प्रसंग डॉ. उपेन्द्र ठाकुर अपन पोथी ``मिथिलाक शाश्वत साधनाक पेज नं. 46 मे लिखैत छथि`` जे विद्यापति जयदेवक कृष्णकें पूर्णता प्रदान करैत अनेक देवी-देवताक प्रशस्ति गान रचना कयने छथि। एतबे नहि लिखैत छथि इस्लामिक उत्तरोत्तर प्रभावसँ प्रभावित होमयवला अंतिम हिंदूक राज्य मिथिले छल। विद्यापतिक सम्पर्क मुसलमान सम्राट सँ सेहो छलनि एतदर्थ हुनक विचारधारा मुसलमान `संतक` मतसँ किछुओ अवश्य प्रभावित भेल होयत - जकर आभास कतहु-कतहु हुनक काव्यमे भेटैत अछि। संगहि मिथिला `सूफी` संतक प्रधान केन्द्र छलैक। विद्वान ठाकुर लिखैत छथि जे एहि एतिहासिक तथ्यक समुचित अध्ययन ओ मूल्यांकन सँ विद्यापतिक धार्मिक विचारधाराक ठोस रूप स्पष्ट होयत।

मिथिलाक संत परंपराक पारस्परिक सम्बन्ध अन्यान्य प्रदेश सँ मिला-जुलाकऽ अध्ययन ओ विश्लेषण सँ परशुराम चतुर्वेदी ``उत्तरी भारत की संत परंपरा`` मे जे पेज नं. 16 मे लिखने छथि जे उत्तर के संत फुटकर पद, वानी साखी, रमैनी अथवा कवित सवैया आदि विविध छंद आ अपन उपदेश व्यक्त मात्र कयलनि अछि। कतहु एक-आधटा प्रबंध ग्रंथ भेटय सएह बहुत। हमरा जनैत आचार्य परशुराम चतुर्वेदी उत्तरक संत लोकनिक गणना वा `संत` भावनाक ओ संतक

1. डॉ. सन्त नरायण उपाध्यायक पोथी पेज नं. 31 सँ
2.उपर्युक्त प्रसंग मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्यसँ) पेज नं. 1 एवं 2 सँ लेल गेल अछि।

रचना मिथिलाक प्रदेशमे जे संत साहित्यक विकास भेल अछि तकर विश्लेषण नहि कयलनि अछि। वैष्णव `संत` रूपमे विद्वान लोकनि मात्र `कबीर` पंथक जे पूर्वी भारतमे विकास भेल तकरहि दक्षिणक संत संग तुलना कयलनि अछि ताहि प्रसंग कही जे कबीरपंथी संत लोकनि `गुरू` धर्मा बनल छलाह। एहि संतमे प्राय: साधारण पढ़ल-लिखल व्यक्ति जएह शब्द विन्यास कय सकलाह ओ मात्र `फुटकर` पद कहल जा सकैत अछि। मिथिलाक जे संत परंपरा ताहि प्रसंग हम खण्डन करैत पूर्वी भारतक जे संत धारणा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जे अपन पोथी मे व्याख्या कयलनि अछि ताहि सँ भिन्न पंडित राजेश्वर झा अपन पोथी `मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णवक साहित्यमे` पेज 3 मे लिखैत छथि जे मिथिला नहि वरण सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारतक संत कलांतर मे एहि धार्मिक विचारधाराक प्रतिक्रिया स्वरूप बौध ओ जैन धर्मक अन्तर्गत निरीश्वरवादक स्थापना कहि नव धर्मक स्थापना भेल। कलांतर मे अही परंपरासँ प्रभावित निर्गुण प्रथाक विकास भेल होयत। दक्षिण भारत मे जे संतक परंपरा से निर्गुण प्रथा 1 सँ विक्रम् संवत 14 वीं शताब्दीक द्वितीय चरण ज्ञानदेवक पदार्पण दक्षिणमे भेल रहनि। एहि ठामसँ निर्गुणिया पंथक लेल दक्षिणमे `संत` शब्द रूढ़ि बनि गेल रहय। कबीरक पदार्पण संभवत: 15 वीं शताब्दीक अंतिम तीन चरण आ 16 वीं शताब्दीक प्रथम चरण धरि रहल। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथीक पेज नं. 17 मे लिखैत छथि कबीर अपन रचना मे `संत` नामदेवक नाम अत्यंत श्रद्धासँ लेने छथि। आशय हुनका आदर्श भक्त मानलनि अछि। एतबे नहि कबीर साहेब अपन रचना मे जयदेवक नाम सेहो आदरक संग लेने छथि। आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक अध्ययन ओ विश्लेषण सँ स्पष्ट होइत अछि जे मात्र कबीर आदि निर्गुण सम्प्रदायक संग दक्षिणक संग सम्बन्ध स्थापित कयलनि अछि। ध्यान देवाक छैक जे मिथिलाक संत परंपरा प्राय: नामदेव सँ एकसय वर्ष पूर्व विद्यापति मध्यकालीन मिथिलाक देसिल बयनाक संग वैष्णव संत लोकनि वर्ण व्यवस्था एवं जाति-पातिक भेदभाव कें मेटबैत मानवी ऐषणाक व्यापक देशकालक आवश्यकताकें समाधान करैत एकसँ एक वैष्णव साहित्यक सृजन कयल गेल। आ संगहि दक्षिण भारताक प्रसंग विशिष्टता देखबैत परशुराम चतुर्वेदी जे लिखलनि उत्तर भारताक संत प्रबंध ग्रंथ ओ दक्षिणके संत भजनानंदी एकांत ओ मूर्तिक समक्ष करताल बजाकऽ गबैत नचैत लीन रहैत छलाह। आ उत्तर भारतक संत मात्र मंडली तक सीमित छलाह, एहि प्रसंग पंडित रजेश्वर झा पोथी ``मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य`` मे खंडन करैत छथि अनुभूतियें लिखैत छथि पेज नं. 3 मे माधूर्यभावक सरसता ओ सरलताक संग पूर्वोत्तर मिथिलाक संत सनातन धर्मी वैष्णव लोकनि कृष्ण दाम्पत्यक प्रेमक चित्रण करैत मात्र रास मण्डलिये टा मे नहि कृष्णक, चारि प्रकारक भक्तिक संग (दास्य वात्सल्य, सख्य आओर कान्ता पेज 13 सँ कहल जाइत अछि जे चैतन्य महाप्रभु ओ गोविन्द दास एकांतहु मे मूर्तिक समक्ष भजन करैत-करैत अचेत भऽ जाइत छलाह। सव जनैत अछि जे चैतन्य महाप्रभु मिथिलासँ प्रभावित छलाह, विद्यापतिसँ प्रभावित छलाह। आधुनिक काल मे कतेको संत भेला जे अपन आराध्येक गुणगान ओ सजीव अनुभूतिक रूपें कीर्तन भजन करैत कठझालि बजा-बजा साहेबराम दास, भवप्रीता नन्द, स्नेहलता, लक्ष्मीनाथ गोसाईं आदि एकर ज्वलंत उदाहरण

छथि जे भावविभोर भऽ उठैत छलाह।

अस्तु भारतीय साधना उपासनामे सरल सात्विक अहिंसा परमोधर्मः मान-अपनमानक कोनो परवाहक बिना छलक्षद्म स्वार्थ सँ रहित अपन विलक्षण परंपराक संग बिना कोनो चिन्ता केने मिथिलाक संत गार्हस्थ्य जीवन मे रहि कऽ अपन साधनामे लागल सामाजिक भेदभावसँ तटस्थ भारतक अन्यान्य प्रांतसँ सम्बन्ध स्थापित करैत समाजमे समरसत्व बनबैत-जीवन निर्बाह करैत रहलाह।

मानसिक परिवर्तन (कायापलट) वा जीवनक रूप परिवर्तन :- मिथिलाक संत वा भक्त कही वा साधक प्रेम सँ भजन मे `नामक` स्मरण करैत-करैत सांसारिक जीवमे भगवानक दिव्य स्वरूप दर्शन करय लगैत छथि। ओ ईश्वरकें अपनामे आशय हृदयस्थलीमे अन्वेषण कय बाह्य आडम्बरसँ दूर, प्रेम तत्वक जखन विकास होमय लगैत छनि तखन हुनका सभमे संत जीवनक कतिपय महत्वपूर्ण संकेत दृष्टिगोचर होमय लगैत छनि।[1] मानव समुदायक भीड़ सँ निखरि ओ आ हुनक चरित्र बाहर आबि जाइत अछि आ सम्पूर्ण समाज पुनः हुनका दिश आकर्षित होमय लगैत छनि। ई जे अनुभव तकरे आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी [पेज 20 मे लिखैत छथि जे `कायापलट` संताक जीवनक एकटा अदृश्य घटना छैक जे जाहि बातके संत अपन प्रारंभिक कालमे कठिन ओ जटिल बुझैत छथि वएह समस्याक परिपूर्ण होइत अछि जे हुनका अपन संत-भक्त कालक समयमे जे गुणधुन आ काल्पनिक भेद-प्रभेदक उलझनसँ मस्तिष्क विचलित होइत रहैत छनि से कायाकल्प भेलापर ईश्वरीय दिव्य स्वरूप दर्शित होमय लगैत छनि। तखन ओ सब समस्याक समाधान स्पष्ट ओ सुधरल सन प्रतीत होइत छनि[2] जे सन्तक चरित्र कायापलट अर्थात पूर्ण रूपेण ईश्वरक विचारसँ तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कयलाक बाद ओ सदा स्थिर ओ निश्छल भेल रहैत अछि। घनाच्छन ध्रुवतारा नहि देखाइ पड़ला पर कतबो झंझावत झंझट सँ जहाजक नाविक दिशासूचक (marianpers compass) यंत्रके कारण कखनो पथ भ्रष्ट नहि भऽ पबैत अछि। तहिना सांसारिक प्रपंचसँ जे परिवर्तित भेल स्थितियोमे ओहेन दृष्टिकोण वाला महापुरुष कखनो सन्मार्ग नहि छोड़ैत अछि। एतबे नहि लिखैत छथि जे दिशासूचक यंत्र तऽ वाह्य वस्तु अछि ओकर प्रयोगमे भूल भऽ सकैत अछि मुदा भीतरसँ साधल अन्तःकरणमे एहि प्रकारक बाधा उपस्थित होयब असंभव सन प्रतीत होइछ। साधल ओ सुस्थिर उपस्थित सभ कार्य के सहज रूप दऽ कऽ विपन्न होमय सँ बचा लैत अछि। संत अपन उक्त दृष्टिकोणसँ एकान्तताके स्थिर रखबाक लेल सुमिरण ओ `नाम` स्मरणक सहायता लैत छथि। ओकर महत्त्व हुनका जीवनक लेल अत्यंत आवश्यक, वास्तविक संतक कायापलट भेला पर ओ ओहि श्रेणीमे आबि जाइत छथि जे ओ अपन बात ओ सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार करबाक अधिकारी बनि जाइत छथि। ओ संतमतकें श्रेणीमे आबि जाइत अछि। ओ जे हुनक काया कि कही शरीर ईश्वरीय भऽ जाइत छनि। एक प्रकारें विषयी भेल शरीर प्रभु वा भगवानक रूपमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

1. पोथी सहेबर मदासक सा.अ.क मोनोग्राफ पेज 13 सँ लिखल अछि

2. परशुराम चतुर्वेदीक पोथी पेज 20 एवं डॅ. सत्त नारायण उपाध्याय अपन पोथी पेज-51 मे लिखैत छथि

परम लक्ष्यक प्राप्तिक साधना-भेद-वर्ण्य-विषय भारतीय साधना ओ वैदिक साधनाक संग मिथिलाक संत साधना ओ उपासना :- साधनाक प्रसंग एवं एकर उद्देश्यक निमित अनेकानेक विचार उधृत भेल अछि। ओना हमरा जनैत अपन लक्ष्य वा उद्देश्य धरि पहुँचबाक लेल जे कोनो कार्य वा बाना घरैत अछि वा ओकरा प्राप्त करबाक लेल वा साधबाक लेल जे कोनो मार्ग अपनाओल जाइत अछि, संतक भावसँ ओकरा साधना कहल जाइत छैक। एतय शब्दक व्याख्या सँ प्रमुख संत मतक अनुसार सत्य वा परमतत्वक खोजमे जे कयल गेल भिन्न-भिन्न प्रवाह वा प्रयास से भेलैक साधना। ओ साधना निर्गुण आ सगुण दुनू भऽ सकैत अछि। अन्य कोनो जे कार्य हम सब संकेतक भावसँ बुझैत छी, सहज शब्दक संग प्रकट होइत अछि मुदा तकरा सर्वव्यापी पूर्ण रूपेण नित्य एकरससँ आत्मतत्वक संग अमर होमक लेल एहि संसारके संत क्षणभंगूर वा शांतिमूलक बुझैत छथि। मात्र मानव शरीर एहि संसारक सर्वोत्कृष्ट अंश अछि जाहिसँ अपन आभ्यांतरिक शक्तिक समुचित विकास कऽ जीवनक जीवनोमुक्त लेल पूर्णता के प्राप्त करबाक वास्ते संत सौत्साह प्रयत्नशील प्रेम एवं सदभाव प्रदर्शित करतै रहैत छथि। संतक हृदयमे भेद-भावके कृत्रिमता नहि अस्वभाविक शून्य भेल परमात्मा परमगुरू, परमसहायक वा प्रियतमक रूपें अपन हृदयमे अपनेगे रहैत छथि। अस्तु संतक साधना मे एहि प्रकारे ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोगक पूर्ण सामंजस्य अछि। एतबे नहि परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथीमे लिखैत छथि जे आवश्यकतानुसार राजयोग, हठयोग, मंत्रयोग व कुंडलिनीयोग जेहेन साधनाक उपयोग सेहो करैत छथि। से अपन अंत:करणक शुद्ध ओ निर्मल रखबाक उद्देश्यसँ हृदयक सत्य जे होइछ ओकरा सामने कोनो वाह्य आडंबर तुच्छ होइछ। सादगी ओ सदाचरण मात्र एकटा सहृदयी मानवके कसौटी थिकैक। एहि प्रकारे मैथिल संते नहि, सम्पूर्ण संसारक संत लोकनि प्रवृति ओ निवृति मार्गक बीच मध्यवर्ती सहज मार्गक अनुशरण कयल आ सम्पूर्ण संसारक कल्याण मे सतत निरत रहैत भूमि पर स्वर्गक सपना देखैत छथि।

साधनाक भेद - जेना कि देखल आ पढ़ल अछि भारतक उत्तरी प्रदेशमे वा पश्चिमी जे कोनो प्रांत होउक अध्यात्मिक जीवनक निर्माणमे अवस्थाक अनुसार साधनाक विभिन्नता अत्यंत प्राचीन कालहिसँ आबि रहल अछि। अपन संस्कारक अनुकूल जे सुभीता साधक के बुझेलनि से व्यवहार मे अनलनि तकर परिणाम भेल जे एके धर्मावलम्बी वा सम्प्रदायक कयकटा शाखा-प्रशाखा बहरायल मुदा मिथिला एकटा एहन प्रदेश जकर प्रसंगमे जे ``एहिठाम तीनटा देवता लोकके प्रेरणा दैत रहलथिन्ह से थिकाह - शिव, शक्ति ओ विष्णु मुदा अध्ययन ओ अनुशीलन सँ किछु आर सम्प्रदाय आदिक साधनाक सूचना प्राप्त भेल अछि। एहि हेतुएँ ई निष्कर्ष बहराईत अछि जे अध्यात्मिक मानसिकताक उद्गम श्रोत शिव ओ शक्ति वा कुल मिलाय मैथिल मुख्यत: पञ्चोदेव उपासक वा साधक स्मार्त छथि। जकरा लेल एके प्रकारक भक्ति साधना, अनुराग, श्रद्धा-भाव अनवरत-स्मरण, गुणगान वा कीर्तन से कखनो कऽ एना

1. डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासक पज नं. 6 मे लिखैत छथि

अनुभव रूपें प्रदर्शन करता जे योगी सदृश ध्यान लगबैत बुझेता। एहि प्रकारें **क्रियात्मक साधना** लेल मिथिलामे देखल जाइत अछि जे आवश्यकता पड़ला पर संत-शास्त्र विहित साधना ओकर छोट-छोट नियमकें निर्वाह दत्‌चित सँ करब अपन कर्तव्य बुझैत छथि। मिथिला मे एहनो उपासक वा साधक भेला अछि जे अपन कर्मक बल पर अपन जीवनके ततेक संयमित ओ सुन्दर बना लेलनि। (एहि प्रकारक साधना कें सदाचार वा सदाचारणक नाम देल गेल अछि।[1] एकरे परम धर्म साबित कयल जा रहल छैक। एहि प्रकारें सदाचार वएह अछि जकर पालन परंपरा क्रमे ब्रम्हवर्त देशक अन्तर्गत कयल जाइत अछि। जाहिसँ मनुष्य सुखपूर्वक 100 वर्षधरि जीवित रहल जा सकैत अछि। अ.2 श्लोक 18 एवं अध्याय 4 श्लोक 58) **ज्ञानमयी साधना** ई तेसर **प्रकारक साधनामे साधक बहुधा** तर्कक अवलंबन ग्रहण कय व्यवस्थित ढंग सँ अग्रसर होइत अपन अंतिम ध्येय धरि पहुँचबाक लेल सचेष्ट रहैत छथि। एंहि प्रकारे तीनू प्रकारक साधनाक जे आधार क्रमश: ज्ञान-संवेदना ओ संकल्प अछि जे मनुखक तीनटा मौलिक प्रवृत्ति तदनुसार साधनाक लेल क्रमश: ज्ञानकांड, भक्तिकांड एवं कर्मकाण्ड शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि। नोट उपर्युक्त प्रसंग परशुराम चतुर्वेदीक पोथी उ.भा. की.सं. प... पेज नं. 23 सँ उद्धृत कयल गेल अछि।

वैदिक साधना :- हमरा लोकनिक पूर्वजक जीवन अत्यंत सरल हुनकर कृत्य सेहो सोझ-साझ ओ विनीत हुनकर धार्मिक अनुष्ठानक प्रधानता मे देव-पूजन, पितृ पूजन वा यज्ञ से मात्र एहि वास्तो जे हुनकर दैनिक जीवन अबाधित प्रगतिशील आ इहलौकिक सुखमे बृद्धि होइत रहैक। मिथिलामे साधारण लोकक जीवन जादू-टोना मे सेहो विश्वास रखैत छल। संगहि मंत्रक माध्यमे रोग-ब्याधि के दूर करबाक धारणा सेहो प्रबल छल। आशय हमरा लोकनिक पूर्वज सत्य सुकृति ओ सदाचारणके परम धर्म मानैत छलाह। (जयकान्त बाबूक इतिहास मे थिलिलाक धार्मिक जीवनसँ)। **सामान्यत: वैदिक साधना :-** मिथिलाक अन्तर्गत अनन्त कालसँ मीमांसाक दर्शन मे वैदिक कर्मकाण्डक दार्शनिक आधार प्रतिष्ठित एवं प्रभावकारी रहल अछि। **``अथातो धर्म जिज्ञासा``** तात्पर्य यज्ञमूलक कर्मक अनुष्ठान जाहि सँ अर्थ, धर्म, काम आ मोक्षक चारू पुरुषार्थक सिद्धि प्राप्त होइछ, एहन मानल जाइत छैक जे मंडन मिश्रक कर्म मिमांसाक अत्यंत व्यापक अर्थमे बोध होइछ जे ने तऽ ज्ञान विरोधी आ ने ईश्वर विरोधी अछि। मीमांसाक प्रणेता जैमिनी सूत्रक अभिप्राय परब्रह्मक प्रतिपादन करब अछि। ब्रह्म प्राप्तिक साधनाक रूपमे मात्र पुण्य कर्मक वर्णन भेल अछि। वेदमे सेहो कहल गेल अछि -**``तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा: विविदिषंति यज्ञेन, दानेन तपसाऽना शकेन``** । आशय ब्रह्मज्ञानी लोक यज्ञ, दान तपसँ ब्रह्म कें बुझैत छथि ओ जनैत छथि।[2]

योग व आचरण - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी उ.भा. की. सं. परंपरा पेज 25 मे लिखैत छथि जे ज्ञानवादक संग तपो भेलापर योगमार्गक श्रीगणेश होइछ। वस्तुत:

1. मनुस्मृति मे सदाचारकें श्रुतत्युक्त स्मार्त कहल गेल अछि। अध्याय-1, श्लोक 108 एवं अध्याय-4 श्लोक 55
2. उपर्युक्त कथन मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन पेज 429 सँ उद्धृत अछि।

मिथिलाक शक्ति साधना उपर्युक्त जे आचार्यक साधना सिद्धान्त तकर उत्स तऽ मिथिले सँ भेल छैक। शिव ओ शक्तिक उपासनाक संग मिथिलाक महान सन्त ओ भक्त सदाचारणक संग गृहस्थाश्रम मे रहैत जे एहि सिद्धान्तक पालनमे संतानोत्पत्ति करैत तप एवं संयममे जीवन यापन करैत ब्रह्मलोकक अधिकारी उपासक छलाह ताहिमे प्रमुख देवातित्य, बर्धमान, मदन उपाध्याय, धीरेन्द्र उपाध्याय, गोकुल नाथ उपाध्याय आओर मिथिलेश्वर रामेश्वर सिंह। मिथिलाक साधना उपासना मिथिलाक तान्त्रिक पाग दशमी मे माटिक दुर्गा बनाय पूजन करब मातृका पूजा इष्टसँ मंत्र लेबाक प्रथाक संग अध्यात्मिक मानसिकताक उद्गम् श्रोत शिव ओ शक्ति मिथिलाक धरातल सत्य सुकृति सदाचारण परमोधर्म: जे साधनाक अनुसंधान चानन ओ सिंदुरक ठोप लगाय उच्चैठ, जनकपुर, चामुण्डा, उग्रतारा स्थान संगहि मिथिलाक शीर्ष सिद्धपीठ स्थान पर शक्तिक भक्तिमे उपासना साधनामे लागल रहलाह से कि संत ओ सब नहि छलाह, इएह मैथिल संतक विशिष्टता रहल अछि।

भक्ति साधना :- मिथिलाक भक्ति साधना यज्ञादि विरोधी आन्दोलनक प्रतिरूप तऽ नहि कहल जा सकैत अछि। जे भक्ति साधना तऽ यज्ञादि विरोधी आंदोलनक विपक्षमे खूब जोर-शोर सँ कयल गेल। एकर विपरीत मिथिलाक वैदिक कालहिसँ शिक्षाक पद्धति बदलि रहल छलैक। गुरुकुल, आचार्य कुलवासिनी छात्र अन्तेवासिनी कहबैत छलाह। आचार्य ओ छात्र देश-देशांतरक भ्रमण करैत छलाह। तत्व ज्ञानक साधना मे लागल ब्रह्म ज्ञानक प्राप्तिक लेल भागवतपुराण परंपरागत पूजा पद्धति साधनाक मार्ग बदलि रहल छलैक। मध्यकालीन युगमे इस्लामक हीन प्रभावसँ रक्षा करबाक हेतु, छिरियायल तत्वकें एक सूत्रमे बान्हवाक लेल वैष्णव समुदाय भागवत एवं ब्रह्मवैवर्त पुराणमे जाहि नैसर्गिके प्रेम सिद्धान्तके प्रतिपादित भेल तकरे आदर्श रूप देबाक प्रयास कयल गेल। फलस्वरूप भक्ति साधनाक रूपें गोपी-कृष्णक सम्बन्ध आधारित राधा-कृष्णक पदक आवरण दय ब्रह्म एवं आत्माक चिरंतन सम्बन्धके निरूपित कयल। राधा आत्माक प्रतीक ओ कृष्णकें ब्रह्मक दृष्टिएँ विद्यापतिक भक्तिक चरम दृष्टाँत कहल जा सकैत अछि। लीला-भक्तिक माध्यमे विद्यापति हरि सँ एकात्म हेवाक चेष्टा कयलनि।

भक्ति रसमे जे प्रधान तत्व मानल जाइत अछि से भेल - शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा मधुर। मधुर अथवा श्रृंगार रसमे वैष्णव मतमे मधुरतम मानल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ मिथिलाक वैष्णव कवि संस्कृत साहित्यक ऋणी छथि। जीवनक अंतिम चरणमे `हरि` के आत्म-समर्पण एहि प्रकारे भक्ति साधना भागवत धर्मक रूपमे परिवर्तित मानल आ बुझल गेलैक।[3]

ओना मिथिला मे भक्ति साधनाक महत्व खूब वेसी भेल छलैक। मध्यकालीन मिथिला सँ लऽ कऽ नवीन वर्तमान समयक संत प्राय: भक्ति रसमे अभीभूत भेल संत रूप ग्रहण करबाक कोशिश करैत छलाह। विद्यापतिक पश्चात् गोविन्द दास तऽ `नवधा भक्ति`क उल्लेख वा एहि

1. परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी उ.भा.की संत परंपरा पेज 25 पर लिखैत छथि
2. (डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक पोथी मिथिलाक शाश्वत साधना पेज 40 एवं 41 सँ)
3. परशुराम चतुर्वेदीक पाथीक पेज 25 एवं 26 सँ।

सिद्धान्तकें प्रतिपादित क भक्ति साधनाक अनुगामी आधुनिक संत चंदा झा, साहेब रामदास, स्नेहलता, लालदास आदि प्रसिद्ध रहलाह अछि।

तप, ज्ञान एवं समन्वयक साधना :- मिथिलाक विशिष्टता रहल अछि जे तप ओ ज्ञानक मननशील प्राणीक रूपें एक सँ एक साधक भेलाह। जे प्राय: यज्ञादि सँ दूर रहैत कोनो अरुप वस्तुक ध्यान-चिंतनक साधनामे निरंतर लागल रहैत छलाह। एकाग्रताक साधना अपन उँच्च आदर्शक लेल करैत छलाह। यज्ञक प्रसंगमे मिथिलाक अध्यात्म ओ संत भावनाक प्रतिकूल मानल गेल अछि। यज्ञक अनुग्राही मोक्षक मार्गमे मात्र सांसारिक दुखकें मानैत छलाह। उपनिषदक रचनाकाल मे यज्ञक अनुपयोगिता सिद्ध कयल जाय लागल। आ तकरा स्थान पर `सांख्य` दर्शनक संग ज्ञानवादक निष्ठा पर बल देल जाय लगलैक। जाहिसँ निष्काम सदाचरण ओ आस्तिक भावनाक विकास होमय लागल। भागवद्गीता कालमे जे दूटा प्रचलित साधना ज्ञानयोग आ कर्मयोग एहि दुनूमे प्रथम तऽ भेल आत्मोपासना जे चित् वा आत्मा जकरा कहबै सम्पूर्ण रूपें सांसारिक बंधन सँ मुक्त करैत निवृति मार्गके मर्यादित करैत अछि। दोसर कर्म योगक प्रसंग :-

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन:।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसऽग: समाचर[1]

उपर्युक्त श्लोकक माध्यमसँ स्पष्ट होइछ जे मानवकें कर्मयज्ञ पर ध्यान रखबाक प्रयोजन अछि। कर्मयोग दुनू मार्ग सँ अबैत अछि। आशय ज्ञानयोगक संग कर्तव्यबोध जे निष्काम भावसँ एहि भावकें आर स्पष्ट करैत भगवान शंकर कहलनि अछि **-`यज्ञो वै विष्णु: इति श्रतेर्यज्ञ ईश्वर:।** श्रीकृष्ण विष्णुक अवतार मानैत यज्ञकर्म सँ सिद्धिक प्राप्तिक बदलामे कर्म करबाक आवश्यकता पर बल देल गेल अछि।[2] अस्तु मनुष अपनाकें ईश्वर पर अर्पित कय शांत ज्ञानसँ निर्वल बनल मुदा चित अविकृत कखनहु क्षुब्ध नहि होइछ तखन इहलौकिक जीवन सुखमय बनैत छैक। जखन कोनो परिणाम पर विशेष आसक्ति रखैत छी तखन वासना भेल से कर्म पतनक दिस लऽ जाइत छैक।[3] जे उक्त साधनाक अनुसार हमरा लोकनि निष्काम भाव के संग अपन नित्यकर्म करऽ लगैत छी तखन हमरा सब एहन कोनो विकट समस्याक सामना नहि करय पड़ैत अछि।

ध्यान देबाक छैक जे भारतीय साधनाक उपर्युक्त समन्वयात्मक दृष्टि मिथिलाक साधनाक पद्धतिक प्रसंग कही तऽ अतिउक्ति नहि हेतैक जे ई सबसँ पहिले मिथिले सँ प्रारंभ भेलैक। यज्ञ-सम्बन्धी पशुबलि एवं वाह्य आडम्बर जे अध्यात्मिक कार्य मे दुरूह-परिस्थिति के देखि वेदान्तक जे आरंभ भेलैक आ एम्हर जैन-धर्म ओ बौद्ध-धर्मक नामे जे निरीश्वरबाद उठि ठाढ़ भेल जे कतिपय अनुभवक आधार पर एहि सिद्धान्तक अनीश्वरबादक प्रचार-प्रसार एहिठाम सँ आरंभ भेल जतय। शतपथब्राह्मणक रचना भेल - आशय ओ स्थान तऽ मिथिले छल विदेह

1. गीताक अध्याय 3 श्लोक 9 मे लिखल अछि
2. नोट गीताज्ञान मैथिली अनुवाद **महेन्द्र हजारी** जीक पोथी पेज 117 सँ
3.आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखैत छथि अपन पोथी उ.भा.की. संत परंपराक पेज 27

राजा जतय सर्वप्रथम समाजमे क्रांतिकारी परिवर्तन भेलैक एहि दृष्टिसँ मिथिलाक महत्व सम्पूर्ण भारतवर्ष मे अत्याधिक भेलैक। एहि प्रकारक आन्दोलन कें नेतृत्व प्रदान केनिहार भेलाह - याज्ञवल्क्य, जनक, विदेह, काशेय अजातुशत्रु, प्रबाहण, जैवलि अश्वपति केकय उद्दालक आरुणि, श्वेतकुतु, आरुणेय सत्यकाम जावाल तथा दृप्तवालाकिसन प्रबुद्ध आदि दर्शनकार अध्यात्मक एकटा नव युगक शुभारंभ मिथिलासँ भेलैक। हमर कहबाक आशय आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथीक पेज नं. 27 मे जकरा भारतीय साधनाक नाम सँ उल्लेखित कयलनि अछि। वस्तुत: ओ मिथिलाक साधनाक समन्वयात्मक रूप कहल जा सकैछ जे संतक भावकें जगबैत अछि।

प्राचीन भक्ति ओ योग साधना :- भारत वर्षमे धर्म ओ दर्शन अविभाज्य मिथिलाक इतिहास मे मानव चितंनक इतिहास जे मिथिलाक अछि एकर जे गौरवशाली आत्मज्ञानक सर्वप्रथम प्रकाश उपनिषदमे देल गेल अछि आ मोक्षक साधन रूपें आत्म ज्ञानक उपर विशेष ध्यान देल गेल अछि। उपनिषदमे कहल गेल अछि **`तरित सोकम आत्मविद`** अर्थात् आत्म तत्वक ज्ञाता शोक आदिसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। एतबे नहि **`ब्रम्हविद् ब्रम्हैव भवति।`** आशय ब्रह्मवेत्ता बस्तुत: ब्रम्हे भऽ जाइत छथि। वृहदारण्यक उपनिषदमे ऋषिक प्रार्थना छनि अमृतसँ ऋत दिश प्रेरित करु, अन्धकारसँ प्रकाश दिश लऽ चलू तथा मृत्युसँ अमरता दिश प्रेरित करू` जे संतक साधनाक मूल तत्व आ लक्ष्य तकरे विश्लेषण भेल अछि।

मिथिलाक इतिहासक पेज 59 मे उपेन्द्र ठाकुर लिखने छथि जे आत्माक ज्ञान सामान्य ज्ञानेन्द्रिय सभसँ संभव नहि अछि। प्रस्तुत सिद्धान्त ओतबे प्राचीन अछि जतेक पुरान वा प्राचीन उपनिषद सभ अछि। आत्मविषयक एहि रहस्यात्मक ग्रन्थि पर सर्वप्रथम प्रकाश वृहदारण्यक उपनिषदक यशश्वी मैथिल दार्शनिक याज्ञवल्क्य अपन पत्नी मैत्रेयी तथा गार्गी संग जे परिसंवादमे प्रकाश देने छथि। एहि आत्म तत्वक सन गूढ़ ग्रंथि पर फोकस करब उत्तरकालीन वेदान्तक विषय-वस्तु रहल अछि। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी मे पौराणिक युगक चर्चाक प्रसंग 155 विक्रम पूर्व सँ विक्रम 590 तक के समय के पौराणिक युग कहलनि अछि। डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक मिथिलाक इतिहासमे पौराणिकताक प्रसंग कमोवेश बौद्ध आ जैनक प्रादुर्भावक समयके पौराणिकताक सीमा मानल गेल अछि।

वैदिककालमे जेना परशुराम चतुर्वेदीजी अपन पोथीमे लिखैत छथि विशाल मंदिर निर्माण भेलैक। कोनो विषय-प्रसंगवस जे महापुरुषक भाँति सात्विक गुणक एतेक विस्तृत रूप दृष्टिगोचर होमय लागल जे कोनो संकट परिस्थितिवस देवता ओ भगवानक स्वभावक परिकल्पना कय एतेक धरि वर्गीकरण कयल गेल जे सम्पूर्ण संसारक श्रृजन, पालन एवं संहारक क्षमता वा सम्पूर्ण व्यवस्थाक भार मनुष भगवानक उपर सौंपि देलकनि। मिथिलामे सेहो अही प्रकारक भाव कमोवेश पसरल रहलैक। ``मुदा मिथिलाक इतिहास`` नामक पोथीमे **डॉ. उपेन्द्र ठाकुर** लिखैत छथि जे उत्तर वैदिक काल मे मिथिलाक आस्थामे उपासना ओ साधनामे पूर्ववर्ती

1. पाथी मिथिलाक इतिहास डॉ. उपन्द्र ठकुर पेज 7 सँ
2. मि. ई. उ. ठाकुर पेज 58 सँ
3.डॉ. उपेन्द्र ठाकुर अपन मिथिलाक इतिहासमे लिखलनि अछि से भाव समन्वयात्मक दृष्टिक अनुभव होइछ। पेज 58

युगक किछु समानताक संग परिवर्तन सेहो होमय लगलैक। वैदिक कर्मकाण्डक व्यापक अध्यात्मिक आंदोलन अस्तित्वमे आयल। एहि कालक जे देवता-पितर छला तिनकर प्रमखुता तऽ कम भेलै। जादू-टोना, भूत-प्रेत, मारण-मोहन-वशीकरण आदि। जनसामान्यक अंध-विश्वास पूर्ववत कायम रहल। शक्ति तंत्र, शैव आगम उपासनाक पाँच अंग पटल, पद्धति, कवच, सहस्त्रनाम ओ स्तोत्र आदि मिथिलामे कायम रहलैक। प्राचीन कालक ध्यानयोग शनैः-शनैः योग साधनामे प्रचलित होमय लागल। हठयोगक स्थान पर अनेक प्रकारक यम नियम, आसन ओ प्राणायाम के अधिक महत्व देल जाय लगलैक। सम्यक ज्ञान द्वारा परमात्मा वा ब्रह्ममे आत्माकें विलीन कय सांसारिक अस्तित्वसँ मुक्तिपर बल देल गेल। परंतु सर्वसाधारण भारतीय सहित मिथिला मे (मि.इ.पे.57) दार्शनिक धर्म बोधगम्य नहि छल। तें जनसाधारण ऋग्वेदिककालीन देवताक पूजामे सलग्न रहल जेना इन्द्र, वरुण आदि प्रमुख रहला। उपनिषदमे एकटा नवीन धर्म अस्तित्वमे आयल जे यज्ञअनुष्ठानक विरोध कयल गेल।

सदाचार अध्यात्म ओ संत जीवनक लेल एकटा महत्वपूर्ण साधना मानल गेल अछि। संत जीवनमे सदाचार कें कर्मवादक दृष्टिसँ सत्कर्मक रूप मानि धर्मक समानार्थी मानि लेल गेल अछि। **दशकं धर्म लक्षणम्** ओना बौद्ध एवं जैन मतावलम्बी लेल एकर विशेष महत्व देल गले अछि। अन्यान्य धर्ममे अपना-अपना ढंगसँ उद्धृत कयल गेल अछि। अहिंसा, निष्कामता, मनोविजय, आत्मसंयम जेहेन सदाचरण सम्बन्ध दिशि विशेष ध्यान देल गेल अछि। ओना बोधिसत्व आदर्श गुणमे चित्त शुद्धिक वास्तो खंति (क्षमा), सील (शील), पञ्ञा (प्रभा) मेत्ता (मैत्री), `सच्च`(सत्य), बिरीय (बीर्य) बोधिसत्वक आदर्श गुण मानल गेल अछि। पौराणिक युगमे सदाचार-साधना तऽ सनातन धर्मक लेल ऋग्वेद मे धर्म शब्दहिक अर्थमे व्यक्त कयल गेल अछि। **(त्रीणिपदावि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाम्यः)**। **अतो धर्माणि धारयन्**[2] घृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच इन्द्रियनिग्रह, घी, विद्या, सत्य व अक्रोध के धर्मक दसटा लक्षण बता कऽ अपनाओल गेल अछि। तकरे अन्यान्य धर्म-मतावलम्बी थोड़ बहुत मतभेदक संग अपनौलनि अछि। योग साधनाकार सदाचारक रूपें यम नियमक अन्तार्गत उपर्युक्त **दशकं धर्म लक्षणम** के एना व्यक्त कयलनि अछि - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह संतोष, तप स्वाध्याय तथा ईश्वरप्राणिधान/अस्तु ई अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट अछि जे व्यवहारिक जीवनमे सेहो सदाचरणक विशेष महत्व छैक। मीमांसाशास्त्रक अन्तर्गत वेद विहित सदाचारक विधिपूर्वक अनुष्ठानक रूपमे **`आचारः परमोधर्मः`** आशय सदाचार प्रधान कर्म बुझल जाय लागल। सदाचार समाजक स्थिति लेल परमावश्यक ओ श्रेयष्कर प्रायः सब वर्ण-धर्मजाति ओ आश्रमक लेल निरूपित कयल गेल। एहि प्रकारें स्पष्ट अछि संत कोनो जाति-धर्मसँ उपर उठल रहैत छथि।

शास्त्र विधि रचना व सुधार :- संत साहित्यक प्रसंग संत साहित्यकी समक्षमे

1. परशुराम चतुर्वेदी अपन पोथी मे पं. बल्देव उपाध्याक बौद्ध दर्शन (शारदा मंदिर बनारस 1946ई.) पृ 219.. 20 सँ
2. ऋ.1-22-18

नन्दकिशोर पाण्डेय सातम शताब्दी सँ आरंभ मानल अछि। पन्द्रहम शताब्दी मे अवैत-अवैत अपन विराट रूप धारण कS लेने छल। `संत` शास्त्र विधि साहित्य ओ शास्त्र रचना बौध, सिक्ख, जैन, योगाचार, तंत्र, हठयोग, वाममार्गी, नाथ-सम्प्रदाय, कबीर-पंथी ओ वैष्णव, शक्ति ओ शाक्त सूफीमत, रामावत् साम्प्रदाय, भक्तिवाद, इस्लाम धर्म आदि साधनाक प्रतिपादन भाषाक माध्यम द्वारा सब धर्म-सम्प्रदायक गूढ़ सिद्धान्त सबसँ परिचय होमय लगलैक। जाहि सँ सब चकित ओ मूक रहैत, मुग्ध भS गेल छलाह। ग्रंथक रचना अपन-अपन प्रवर्तक संत ओ भक्तकें वृहद् आचार व धर्मशास्त्र, भक्ति सम्वन्धी सूत्रक, संगहि योगशास्त्र, कर्मकाण्ड-तंत्रोपचार विषयक पद्धति मिथिलामे सर्वप्रथम संस्कृत भाषामे प्राप्त भेल, पश्चात् प्रकृति पुन: विद्यापतिक प्रादुर्भाव सँ, अवहट्ट पश्चात् देसिल बयना मे प्राप्त होमय लागल। संत साहित्य मध्य `संध्या भाषा` अथवा संधाभाषाक प्रयोग सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्रद मानल जाइत अछि[1]। महामहो हर प्रसाद शास्त्री एकर समर्थन कयलनि अछि। श्री शास्त्री चार्यापदक संघाभाषामे प्रतिलिपि करबौने छलाह।[2] मिथिलाक अन्तर्गत संत साहित्यक सिद्धान्तक प्रसंग विशेषत: पंचोदेवपासक छलाह तें कवीश्वरक अनुसार निर्गुण ओ निरीश्वरवादकें मिथिलामे विशेष कS एहेन संतक उपर ध्यान नहि देल गेलैक।[3] मिथिलामे एहेन धारणा बनल रहलैक जे वस्तुत: सुधार परक सिद्धान्तक अन्तर्गत प्राचीन ग्रंथक अनुसार ओकर बिनु सहायताक स्वतंत्र विचार व अनुभूतिक आधार पर जे शास्त्र-विधि छोड़ि कS जे स्वतंत्र रूपें कर्तव्य करयवला होइछ ओकरा सिद्धिक प्राप्ति नहि होइत छैक। आ ने तS सुख प्राप्त होइत छैक। आ ने उत्तम गति प्राप्ति होइत छैक। श्रीमद्भागवद्गीताक अध्याय 16 श्लोक 23 मे कहल गेल छैक :-

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकरत:
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम

उपदेशक :- संत परंपराक अन्तर्गत उपदेश के अत्यधिक महत्व रहल अछि। संसारक महापुरुष लोकनि निरंतर अपन भक्त-शिष्य ओ गृहस्थ जीवनमे जे हुनक अनुयायी, के सुखी, शान्त सरल ओ समुखमय जीवन व्यतीत करबाक वास्ते मौखिक जे बजैत अपन निर्देश भरल भावसँ जे समाजकें करबाक लेल प्रेरित करैत छलाह, से उपदेश ताहि शब्द ओ वाणीकें हुनक शिष्य लोकनि आगू चलि कS लिखि अपन समाजमे वितिरित करैत नीति वाणी ओहि सम्प्रदायक लेल कहबैत छल ओहि उपदेशमे भिन्न-भिन्न प्रकारक भावसँ प्रेरित कयल जाइत अछि। संत, महात्मा, धार्मिक सम्प्रदायक वक्ता एतS धरि उपदेश दैत छला कि राजा ओ राजनीतिक के कोन तरहें अपन राज्यक सेवा संवर्धना करबाक चाही। कहबाक तात्पर्य जे एहि उपदेश मे अपन भक्त ओ शिष्य के नियमक पालन करब सँ लS कS जीवनमे कोनो गलती-भूल भेला पर दण्ड ओ प्रायश्चित-व्यवस्था के रूपमे सेहो कहल गेल रहैत छैक। एहि प्रकारे मिथिलाक प्रसंगे कहल जाइत अछि जे शंकराचार्य शैव ओ शाक्त सँ लय सब धर्मक अनुयायी ओहि नियम परिपाटी कें लिखित रूपमे रखने रहैत छथि। ओ गुरू वाणी आदि सुरक्षित लिखित

1. डॉ. संत नारायण उपाध्याय अपन पेथीक पेज 68
2. संत साहित्यकी समझ पेज 223

रूपें धार्मिक ग्रंथ सदृश पवित्र स्थल पर राखि बुझू ओ ईश्वर सँ (कन्वेन्शनल) मानि सम्पूर्ण मानव समाजक लेल लोक मंगलकारी-सुखकारी होइत अछि। मानव जीवन मे जखन-जखन जाहि कोनो कठिन परिस्थिति मे हुनक अनुयायी, शिष्य श्रद्धापूर्वक पालन ओ गुणगान करय लगैत छथि तखन हुनक कल्याण होइत छनि।

सदगुरु - `संत` जीवनक अन्तर्गत गुरुक महत्व अपरंपार होइछ। सामान्य जीवनमे कहल जाइत अछि - **`बिनु गुरु ज्ञान न होहि।`** मानवीय जीवनक अन्तर्गत कोनहु क्षेत्रमे गुरुक महत्व सर्वविदित अछि। सांसारिक जीवन हो वा संत `भक्त` ओ महात्माक जीवन चाहे ओ कतबो अपना क्षेत्रक ज्ञानी होउथ मुदा गुरुक बिना संसारमे हुनक ओ मर्यादा कायम नहि भऽ सकैत अछि। जे -**`जस्वानुभूतिपरक अभ्याससँ`** कोनो प्रकारक पंडित चाहे ओ सगुण हो वा निर्गुण गुणज्ञ होयव अपेक्षित नहि अछि। एहि कार्यक लेल जे अत्यंत दु:साध्य मुदा आवश्यक अनुभवलब्ध प्रतिष्ठित श्रद्धेय सदगुरुक सहायता लेब आवश्यक छैक। संत जीवन मे वास्तविक पथ प्रदर्शक होयब अपन नीजी जीवनक अनुभव ओ साधनाक पर्याप्त संकेत अपन शिष्य के दैत छथि। एहन गुरुक योग्यता अपन ओहि शिष्यक सफलताक उचित मार्ग फोलि दैत छैक। गुरु तऽ दिशा सूचक यंत्र समान होइत छथि। गुरुक सत्संग जँ कोनो साधक कें नहि प्राप्त भऽ सकलनि तऽ ओ साधक पथभ्रष्ट सेहो भऽ सकैत छथि, एहन आशंका व्यक्त कयल जाइत अछि। तें शिष्य अपन गुरुमे अटूट आस्था रखैत छथि। गुरुक प्रति सतत समर्पित रहैत छथि। निर्दिष्ट मार्गक साधक अपन गुरुक कृपासँ अपना बल पर चलब प्रारंभ करैत छथि। गुरुक कृपाक बखान संत साहेब रामदासक निम्न पद -

गुरू बलिराम चरण धरि माथे साहेब हरि
अपनौलनि हे
अब तौ जरा मरण छुटि जैहें संशय-सकल
मेटौलनि हे।

संतमतमे गुरुक सान्निध्यक महिमा-गायन सर्वत्र कयल गेल अछि। कठोपनिषदमे एहि प्रसंगमे कहल गेल अछि -

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्ग पथस्तत् कवयो वदन्ति

आशय प्रेम ओ भजन-स्मरण जापसँ दीव्य स्वरूप भगवानक दर्शन गुरुक कृपासँ होइछ। गुरुक कृपासँ हृदयस्थली मे अन्वेषण करव, वाह्य आडम्बरके तिरस्कार करब संत जीवनक कतिपय तत्वक विकास गुरूक महत्वपूर्ण संकेत सँ प्राप्त होइत अछि। एहि प्रकारें वास्तविक साधक भिन्न व विजातीय अनुभव अपन गुरुक महिमासँ अन्यान्य प्रकारक भेद-भाव अपने आप नष्ट भऽ जाइत अछि, आ पारस्परिक साम्य बोध होमय लगैत अछि। अनित्य ओ

1. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी उ.भा.की संत परंपरा लिखैत छथि पेज 50

क्षणिक वस्तुक बीच रहैत शांत, सुखी सानंदसँ समाजक कल्याणक मार्ग प्रशस्त करैत भगवानक वा अपन अभीष्टक समीप चलल जाइत रहैत छथि।[1]

मिथिलाक संत परंपरा :- भारतीय संत परंपराक जे व्याख्या कयल गेल अछि ताहि प्रसंग कही तऽ `संतक` शब्दकें हिन्दीक विद्वान लोकनि मात्र निर्गुण परंपरा धरि सिमित करबाक प्रयास कयलनि अछि। जखन कि संत एकटा व्यापक शब्द जकरा निर्गुण ओ सगुणक खुट्टासँ नहि बान्हल जा सकैत छैक। कोनो सीमा मे आबद्ध करब `संत` शब्दक प्रति न्याय नहि हेतैक।[1] `हिन्दी साहित्य मे `संत` शब्द प्राय: निर्गुण संतक लेल पर्याय बनि गेल अछि।`` जखन कि मैथिली साहित्य मध्य मिथिलामे सगुणोपासक सहित निर्गुण उपासक के संत लक्षण, स्वरूप, भाव, विचार, चरित्र आदिक समग्र रूपमे देखलासँ जखन ओ शास्त्रविधि संतक परिधिमे आबि जाइत छथि तखन ओ सब संत छथि। संतक तन्मयता, संतक शिक्षा-दीक्षा, सत्संग, वैचारिक दृढ़ता एवं वैयक्तिक पवित्रताक स्वरूप जिनकामे छनि मिथिलामे हुनका सबकें खाहे ओ कोनो धर्म-जाति ओ सम्प्रदायक होथि हुनका संत बुझल जाइत छनि। हिन्दी साहित्यमे जेनाकि ``संत साहित्यिकी समझ`` मे डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय लिखैत छथि पेज 1 मे संतक परिधिमे मात्र हुनके मानल जाइत छनि जे बेद, कतेक, पोथी, पुरान, संस्कृत भाषा, मंदिर, मूर्ति के कात कऽ अपन निजक अनुभव आ साधनाकें अधिक महत्व दैत सादगी-सदाचार, निर्भीकता, त्याग धामक कमाई, गार्हस्थ जीवन मे रहिकऽ जीवन व्यतीत करैत छथि ओ संत छथि।``

मैथिली साहित्यमे आदि भाषा संस्कृतक अत्यंत महत्व अछि। मैथिली लोकभाषा विद्यापति `देशिल बयनाक` व्याख्या अवश्य कयलनि अछि। मुदा देव भाषाक प्रसंग[3] अहिठामक संत जीवन वा भक्त जीवनक व्याख्या करैत लिखल अछि - यथा

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परा
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।।6।।
तेषांमहं समुद्धती मृत्युसंसारसागरात्
भवामि नचिरात्पार्थ मूय्यावेशितचेतसाम्।।7।।

उपर्युक्त श्लोकक आलोक मे कहल जाइत अछि जे साधक अपन सम्पूर्ण कर्मादिसँ निष्ठापूर्वक शास्त्रविहीत समस्त कर्मकें हमरा पर समर्पित कऽ चितके लगौने रहैत अछि। हमरे पर परायण भऽ कें नित्य-निरंतर ध्यान-जप-चिंतन आदि समर्पित कएने रहैत अछि ओहेन भक्तक उद्धार भऽ जाइत छैक।

मैथिली साहित्यक मध्य तऽ गोविन्द दास `नवधा` भक्तिक प्रसंग जे व्याख्या कयने छथि ओ संतक जीवन लेल अपूर्व सिद्धान्त अछि। मैथिली साहित्यक निर्माता मे विद्यापतिक कनिष्ठिकापर अवैत छथि तँ गोविन्ददास अनामिका पर अस्तु मैथिली भाषा-साहित्यमे आ

1. उपर्युक्त विवरण आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक पोथी 19 एवं 20 डॉ. सं.८ ·।. उपाध्याक पोथी 50 एवं 51 तथा साहेब रामदासक मोनोग्राफ स.अ.पेज. 12 एवं 13 सँ आदि प्राप्त गेल अछि।
2.डॉ. नन्दकिशोर पाण्डय अपन पोथी **`संत साहित्य की समझ`** पेज 1 आ प्रथम वाक्यमे लिखने छथि
3.गीताक बारहम अध्यक छठम् एवं सातम् श्लोक

मिथिल प्रदेशमे संतक भाव तऽ कमोवेश सम्पूर्ण मानव मात्रमे अबैत छनि से एहि धरा-धामक विशिष्टता अछि। (गोविन्ददास भजनावलीक भूमिकासं) सिद्ध साहित्यसँ आरंभ होइत विद्यापति गोविन्द दास, चंदा झा सहित अध्यपर्यन्त धरि संतक चर्चा-परिचर्चा आगू के अध्यायमे कयल जायत।

स्मार्त सम्प्रदाय - स्मार्तक शाब्दिक अर्थ स्मृति, स्मरण वा एकरा कहवै `मोन राखब` मिथिलाक अदौ कालसँ, इतिहास साक्षी अछि अपन सभ्यता ओ संस्कृतिकें रक्षा करब अपन पुनीत कर्तव्य बुझैत आयल अछि।[1] ओना शंकराचार्य जे केरल प्रातंक नामुद्री ब्राह्मण परिवारक वंशज छलाह। अपन अल्पहि वयसमे संस्कृत भाषाक पाण्डित्य प्राप्त कय वैदिक वा श्रुति साहित्य कें स्वीकार करैत प्रायः-प्रायः सब सम्प्रदाय धर्म के जे वेद सम्मत नहि बुझेलनि खारिज कय देल। ओ खासकऽ बौध एवं जैन कें अवैदिक मानि वहिष्कार कय हिन्दू समाजक धार्मिक कही वा अध्यात्ममे एकता स्थापित करवाक पूर्ण प्रयास कयलनि। विद्वान इन्द्रनारायण झाक पोथी ``मिथिला : अन्वेषण एवं दिग्दर्शन सँ`` वैदिक साहित्यक मुकुट मणि आचार्य मंडन मिश्र` शीर्षक सँ अध्ययन-अध्यापन केला उत्तर स्पष्ट होइत अछि जे शंकराचार्य, मंडन मिश्र, कुमारिल भट्ट एवं प्रभाकर मिश्रक प्रादुर्भाव आठवीं सदी मे भेल छलनि। कहबाक आशय मिथिलाक स्मार्त सम्प्रदाय अदौकालसँ प्रसिद्ध रहल अछि। कुरीति ओ पाखण्ड अंध विश्वासक चलते हिन्दू धर्म व्यवस्था छिन्न अवस्था मे दिनानुदिन कमजोर परि रहल छल। वैदिक धर्म पतनक निम्न स्तर धरि पहुँचि गेल छलैक। तकरे प्रतिक्रिया स्वरूप ईशापूर्व छठी सदीमे बौद्ध ओ जैन धर्मक उदय भेल। सेहो मिथिले प्रदेशसँ। कलांतरमे विपथगामी होइत स्वेच्छाचारिताक शिकार बनैत चलि गेल। शंकर, मंडन कुमारिल ओ प्रभाकरक अवतरण सनातन वैदिक धर्मक पुनर्स्थापना गीताक उक्ति सत्य सन प्रतीत होइछ यथा -

`धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे` ।

ई चारि गोट धर्माचार्य अपन दैविक संस्कार एवं आसाधारण ज्ञान, ओजस्विता एवं वैदिक धर्मक ओ संत जीवी लोकनि आत्मज्ञान ओ विश्ववंधुत्वक दिव्य सिद्धान्तक व्याख्या करैत परिष्कार शुचिता, सर्वमंगल रूपें जन-जन तक पहुँचेबाक जिम्मा लेलनि आ आशाक अनुरूपें सफल भेलाह।

`स्मार्त सम्प्रदायक विकास सर्वप्रथम मिथिलाक अन्तर्गत भेलैक। मुदा अखन धरि हम ई स्पष्ट नहि कऽ सकल छलहुँ जे `स्मार्त सम्प्रदाय` कहल ककरा जाइत छैक? स्मार्त ओ भेल जे श्रुतिक आधार पर अर्थात् मूल रूपमे वैदिक साहित्यकें स्वीकार कयल जाइत` अछि। एकर प्रतिकूल जे मत ओकर खंडन आ ओकर घोर विरोध कयल जाइत अछि, हिन्दू धर्ममे एहन खासकऽ दूटा सम्प्रदायक रूपे बौध एवं जैन जे नास्तिक रूपें परिगणित कयल जाइत अछि एकर अधिकांश मत वेदक वाक्यके भिन्न-भिन्न प्रकारक मतसँ अर्थ कयल जाइत अछि। जकरा

1. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी स्मार्त सम्प्रदायक उल्लेख कयलनि अछि अपन पोथीक पेज 35 पर प्रसंग स्वामी शंकराचार्य (सं. 845 : 877)

वेद सम्मत सिद्ध कयल गेल ओकरा सिद्ध करबाक ओकर संगति ओ अन्य स्थलसँ प्रमाणित कयल गेल अछि से स्पष्ट दर्शाओल गेल छैक। एहि प्रकारे वेदक एकवाक्यता प्रतिपादित करैत एकटा नवीन मतक जे प्रवर्त्तन कयल गेलैक ओकर दार्शनिक पक्षके वेदांत आ ओकर साधना पक्षके `स्मार्त मार्ग` कहल जाइत छैक।

अनीश्वर वादी बौद्ध धर्म गौतम बुद्धक जीवनोपरांत विभिन्न संप्रदाय मे बँटि गेलैक आ कलांतरमे विपथगामी होइत चलि गेल। ओना ई सत्य जे महात्मा बुद्धक शील, प्रज्ञा, सत्य, अहिंसा एवं करुणाक जे संदेश कोनो युग वा कोनो कालमे एकर प्रासंगिकता समाप्त नहि हेतैक बल्कि वर्तमान परमाणु युगमे एकर प्रासंगिता पर बुझू आर अधिक जोर देल जा रहल अछि। बुद्धक जे सिद्धान्त कतौ ने कतौ **स्मार्त मार्ग** आ वेदांतक जे थ्योरी तकरे तोड़ि मरोरिकऽ निकालल गेल अछि। तैं शंकराचार्य के बेसी एकर विरोध भेलनि आ एतेक धरि जे नास्तिक तक कहि देने छथिन। स्मार्त-मार्ग वा दार्शनिक भावे वेदांत सिद्धान्तक अनुसार नित्य, शुद्ध, बुध, सत् एवं आनन्द स्वरूप मुक्त स्वभावसँ ब्रह्मक प्रतिपादन होइत अछि। एकर अलावा आर किछु नहि सत्य छैक एहि सिद्धान्तक आधार पर यथार्थत: ज्ञान प्राप्त कऽ लेनाइ मात्र वास्तविक रूपें मोक्ष प्राप्त करब थिकैक परञ्च ज्ञान साधनासँ पहिने आवश्यक छैक जे ओ ज्ञान साधना वेद-विहित वर्णाश्रम धर्मक पालन करैत अपन अन्त:करण शुद्धि प्राप्ति करब जे अनेक जन्मक अभ्याससँ प्राप्त कयल जाइत छैक।[1]

अध्ययन ओ अनुशीलन सँ हम इएह अनुभव करैत छी जे मिथिलाक विद्वानक ह्रदय अत्यंत विशाल होइत छनि जखन कि अन्यान्य प्रदेशक विद्वानकें मिथिलाक प्रति जे भावना संकुचित दर्शित होइत अछि। संत कृत् भावनासँ आप्लावित आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक पोथी मे शंकराचार्यक प्रसंगे मिथिलाक मंडन मिश्रक चर्चा करब सम्पूर्णताक कमी झलकैत अछि। ताकर मुख्य कारण `स्मार्त मार्ग` आ वेदान्त दर्शनक प्रसंग मात्र शंकराचार्ये टा नहि छला शंकराचार्य मिथिला आबि तात्कालीन विद्वान ओ दर्शनकार सँ सम्पर्क कयलनि तखन जा कऽ हिनक सम्पूर्णताक संग `वेदान्त` ओ स्मार्त-मार्ग साधनाक विकास भेल।[2]

मिथिलाक मंडन मिश्रक ब्रह्मसिधिक सिद्धान्त :- मिथिलाक संत साहित्य अध्ययन ओ अनुशीलनक प्रसंग मंडन मिश्रक वेद ओ उपनिषदक निहित अद्वैत दर्शनक जे विवेचन शंकराचार्य आ मंडन मिश्र अपना-अपना ढंग सँ कएलनि अछि, जे वेदांत-दर्शन होइत शंकराचार्यक `स्मार्त-सम्प्रदाय` जे एकटा साधना थिक तहिना मंडन मिश्रक अद्वैत `सिद्धान्त`के ब्रह्मसिद्धि रूपमे प्रतिष्ठित कयल गेल अछि जे इहो एकटा साधना छैक। मिथिलाक `संत` जीवनक समग्रता रूपें अध्ययन क्रममे ब्रह्मसिद्धिक सिद्धान्त भारतीय आस्तिक दर्शनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। अध्यात्मिक उपासना मे संतक कर्म एवं ज्ञान दुनूक समान महत्व छैक।

1. *परशुराम चतुर्वेदीक पोथी पेज 35 सँ।*
2. *तकर प्रमाण इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुर जीक पोथी मिथिलाक ``शास्वत साधना`` एवं ``मिथिलाक इतिहास`` संगहि विद्वान इन्द्रनारायण झाक पोथी ``मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन`` आदिक अध्ययन ओ अनुशीलन सँ अनुभव होइत अछि।*

मंडन मिश्रक वेदक उपर (कर्म एवं ज्ञानक) आधार बना मौलिक ग्रंथ ओ साहित्य श्रृजन कयल अछि तें शंकर सम्प्रदाय हिनका मीमांसक घोषित कयल, मुदा हिनकर प्रसिद्ध ग्रंथ `ब्रह्मसिधि` मे जे अद्वैत सिद्धान्त वेदांत पर श्रेष्ठ ग्रंथ मानल जाइत अछि। मुदा धर्माचार्यक बीच मतक भिन्नताक चलते वेदान्त-दर्शन पर भिन्न-भिन्न विद्वान आचार्य किछु-किछु सिद्धान्त लऽ कऽ भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय ठाढ़ कय लेलनि। ताहि मे प्रमुख रामानुजक विशिष्ट द्वैत्वबाद निम्बार्कक - द्वैताद्वैत्व (मतभेद) मधवाचार्यक द्वैत वेदान्त, वल्लभाचार्यक - शुद्धाद्वैत, चैतन्य महाप्रभुक अचिंत्य भेदाभेद वेदांत, स्वामी विवेकानन्दक `व्यवहारिक वेदान्त` एवं शंकराचार्यक रचित `ब्रह्मसूत्रभाष्य` अद्वैत सिद्धान्तक आधार पर `स्मार्त संप्रदाय` आदिक प्रतिपादन भेलैक। अस्तु वैदिक दर्शनमे सबसँ बेसी प्रतिष्ठित शंकर भेलाह।[1]

सम्प्रदायक रूप :- जहाँ धरि शंकराचार्य ओ मंडन मिश्रक सिद्धान्तक अवलोकनक क्रममे अर्थात् `वेदान्त दर्शन` ओ `स्मार्त सम्प्रदाय` ओ मंडनक `ब्रह्मसिद्धिक` सिद्धान्त वा साधनाक अन्तर्गत ब्रह्मके जे स्वरूप से बौध धर्मावलम्बी वा सम्प्रदायके शून्यबत प्रतीत होइत छलनि आ हिनका लोकनिक द्वारा जे साधु-संन्यासी ओ `संत`क जे संगठन कायम कयल गेल छल से मुदा बौद्ध धर्मक भिक्षुक समान आदर्श पर बुझाइत छलनि। हिनका लोकनिक चित शुद्धिक जे धारणा सेहो प्राय: बौद्धसँ उधार लेल बुझाइत छलनि। जखन पंचोदेव उपासना अर्थात् शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य ओ गणेशक जे अराधना करैत स्मृतिक आधार पर विहित जप, तप, व्रत उपवास, यज्ञ, दान, संस्कार-उत्सव एवं प्रायश्चितादि जे प्रत्येक मनुखक लेल परमकर्तव्य बुझल गेलैक। सम्पूर्ण भारतक जे संत धारणा से वेदान्तक जे व्याख्या भेल अछि तकर बादे प्रारंभ भेलैक। शंकराचार्य वेद सम्मत हिन्दू सम्प्रदाय शाक्त, सौर, वैष्णव तकरो बिरोध कयने छलाह। कारण ओ लोकनि वेदान्तक जे दर्शन ताहिके अनुसारे वैदिक शब्दकें वा वेदकें पाण्डित्यपूर्ण विवेचना कयने रहथि स्वानुभूतिपूर्ण स्वतंत्र विचारके ओ सब कोनो स्थान नहि दैत छलखिन आ ओकरा अपूर्ण मानैत छलाह। शंकराचार्य वेदादिके आधार मानि जे चलैत छल कोनो सम्प्रदाय ओकरा मान्यता नहि दैत छलथिन्ह। अस्तु ओ एकांगी ओ अपूर्ण मानैत छलाह। तात्कालीन समयमे धर्म-ग्रंथ पर आधारित कोनो समप्रदाय जे निजी ढंग सँ अध्यात्मक कार्य करैत छल धर्म ओ संत वा भक्तक रूप अख्तियार कएने छल एतेक तक जे सम्प्रदायिक रूपें बौद्ध एवं जैन धर्मक अनुयायी आ ओकर भक्त आदिकें अध्यात्मिक रूपें संतक योग्य नहि मानैत छलाह। फलस्वरूप एहि प्रकारक जे अध्यात्मसँ जुड़ल जे कियो छलाह एतेक तक जे बौद्ध ओ जैन धर्मक कतिपय अनुयायी एहि कालमे अपना-आपमे सुधार ओ समन्वयात्मक प्रचार-प्रसार आरंभ कय देने रहथि।[2] तात्कालीन समयमे अध्यात्म जगत शंकराचार्यकें विशेष महत्व देने छलनि। तें विभिन्न धर्मक संत लोकनि वेद-सम्मत शंकराचार्यक अनुगामी बनलाह।

1. उपर्युक्त कथन अन्वेषण एवं दिग्दर्शनक पेज 130 सँ उद्धृत अछि एवं परशुराम चतुर्वेदीक पोथी उ.भा.की.सं. परंपरा
2. मिथिलाक इतिहास एवं परशुराम चतुर्वेदीक पोथीसँ।

आत्म शुधि :- संत जीवनमे आत्मा वा चित्त कहियौक ओकरा शुद्ध राखब एक प्रकारक साधना छैक। विविध प्रकारक राग, द्वेष, मोह, ममता, कपट, कंजूस, धन-संचय माया कूटनीतिक जे धारणा से संत साधकक रास्तामे बाधक छैक आचार्य परशुराम चतुर्वेदी तीन मार्गक वर्णन अपन पोथी मे कयने छथि (1) राग-मार्ग (2) निवृत्ति-मार्ग (3) प्रवृत्ति-मार्ग। अस्तु ई अंतिम जे `प्रवृत्ति मार्गक साधनाक जे मुख्य उद्देश्य से भेल- सहज आशय, संतक प्रवृति एहन होमक चाहियनि जे हम अपन आस्तिकताक लेल कयल साधनामे बनावटी नहि, अपितु ओ हुनक प्रवृति छन्हि आ हुनक सहजावस्था छन्हि, इएह साधनाक अंतिम लक्ष्य होइत छैक आ इएह चित्त वा आत्म शुद्ध संत जीवनक जे अंतिम सहज परमार्थक आदर्श रूप होइत छैक। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखैत छथि जे -`सहज के परित्याग कऽ जे निर्वाण आशय मोक्षक सपना देखैत छथि हुनकर कोनोटा परमार्थ साधना सफल नहि भऽ सकैत छन्हि। **(सहजछनिऽजे णिब्बाण भाविउणउ परमत्थ एक्क तेसाहिउ।।3।।** किएक तऽ साधकक निज स्वभाव सँ बढ़िकऽ आर कोनो ध्येय नहि भऽ सकैत अछि, अपन लक्ष्य धरि पहुँचबाक लेल। कहवाक आशय सहजताक प्रसंग बौद्ध सिद्धक जे शब्दावली वोहि (बोधि), `जिणरअण` (जिनरत्न) महासुह (महासुख) अणुत्तर (अनूतर) जिनउर अथवा धाम `धाम` जेहन नाम धराय कहैत छथि जे एकरा प्राप्त कऽ लेनाइ भेल पुरषार्थके सिद्ध करब। संत जीवन वा संतक लेल जे सिद्धान्त सब अछि ताहिमे एकर अपार महत्व छैक एतबे नहि संत बौद्धक जे `निर्वाण` शब्द सनातनक धर्म लेल `मोक्ष` जे संतक परम लक्ष्य होइत छन्हि। अस्तु एहि सहजके जे व्यक्ति अपन जीवनमे उतारि लेत तकरा फेर एहि मार्ग मे कोनो समस्या नहि रहि जाइत छैक। सरहपादक कहब छन्हि -

चितेकेसअलबीअं भवणिब्बाणोवि जस्सविंफुरंति।
तंचिंतामणिरूअं पणमह इच्छा फलंदेति।।41।।
चिते बज्झे बज्झइ मुक्के मुक्कइ णात्थिसंदेहा।
बज्झति जेणविजड़ा लहु परिमुच्चंति तेणबि बुहा।।42।।[2]

अर्थात् चित शुद्धि संतक वास्ते बीज रूप अछि आ एहि भवसागरसँ निर्वाण वा मोक्षक गाछ अही चितसँ उत्पन्न होइत अछि। तें सरहपा कहैत छथि जे ओही चिंतामणि स्वरूपं `चित` के प्रणाम करी ओकरे शुद्धिकरणक लेल आश्रय ग्रहण करी आ वएह अभीष्ट फल प्राप्त करवा दैत छथि। बद्ध-चित्त द्वारा बंधन प्राप्त होइत अछि आ मुक्त-चित द्वारा भक्ति प्राप्ति होइत अछि। व्यवहारत: एहिमे कोनो तारतम्य नहि जे जाहि चित्तसँ जड़-जीव, बंधन-ग्रस्त, रहैत अछि, ओकरे आधार बना कऽ पंडित वा ज्ञानी (नोट - एहिठाम आचार्य परशुराम चतुर्वेदी पंडित ब्याख्या कयलनि अछि, मुदा हम ज्ञानी कहलहुँ अछि) एहि बंधनसँ शीघ्र मुक्त भऽ जाइत छथि तखन ओ चित्त-शुद्ध ओ स्थिर भऽ जाइत छैक। एहिठाम एकटा विशेष बात जे बंधनमे चित्त

1. दोहा कोष पृष्ठ-17
2.दोहा कोस पेज 24 आ. परशुराम चतुर्वेदी पोथी पेज 39

मायामे दौड़ैत रहैत छैक। आशय संत-महात्मा ओ भक्तक लेल मुक्त आत्माक प्रासंगिकता छैक - माया-मोह आदि सँ मुक्त आ अपन लक्ष्य आशय निर्वाण वा मोक्षक मार्गकें लेल स्थिर भेल।

नोट : **`वृद्धो धाबइ दहदिहंहि, मुक्कोणिच्चलठाइ।** (दोहा कोश पृष्ठ 50/24)

उपर्युक्त प्रसंग के बज्रयानाचार्य सिद्ध अनंग व्रज एना ब्याख्यायित कयने छथि :-

अनल्प संकल्प तमोमिभूतम, प्रभंजनोन्मत तडिच्चञ्च
रागादि दुर्वार मलावलिप्तम चितहि संसार मुवाचबज्री।।
प्रभास्वर कल्पनया विभुक्तं प्रहीणा रागादि मलप्रेलपं।
ग्राह्य न चपाहकमग्रसत्वं तदैव निर्वाण वरं जगाद।।

उपर्युक्त श्लोकक आधार पर कहल गेल अछि जे आत्मा वा चितमे अनेकानेक संकल्प सँ अन्हार बनल रहैत अछि। आ जखन ओ आँधी बिहारिक समान उन्मत् आ विजलीक समान चंचल ओ राग द्वेष रूपी मैल बास अंतर लिप्त रहैछ, तकरे एहिठाम संसारिक नाम देल गेल छैक। मुदा उएह जखन प्रकाश वा इजोतक कारण सम्पूर्ण कल्पना रहित होइछ, जाहिमे कोनो राग-द्वेष-भेदभाव जेहन मैल नहि पाओल जाइछ एतबे नहि, जखन ओहि विषयक ज्ञाता ज्ञेये व ज्ञानक कोनो प्रश्ने नहि रहि जाइत छैक। ताकरा श्रेष्ठ बस्तु मानल जाइत छैक। आ ओही श्रेष्ठ वस्तुकें `निर्वाणक` नाम सँ अभिहित कहल जाइत अछि।

अध्ययन-मनन सँ ई स्पष्ट होइत अछि मानवीय शरीरमे पाँच टा ज्ञानइन्द्री, पाँचटा कर्मइन्द्री तथा `मन` जकरा हम `चित` कहल अछि। कर्म इन्द्री कार्य करैत छैक, ज्ञानइन्द्री ओकर सहायक बनैत छैक। एकर सबहक नायक `मन` जे भेल चित्, जाहि सँ भगवत्प्राप्ति होइछ **मनसैवेदमाप्तव्यम्** से मनक स्वच्छता लेल वर्णाश्रम - धर्मक पालन करब आवश्यक कहल गेल अछि। अन्यथा भगवत्प्रसाद प्राप्ति, दुर्लभ अछि मनुस्मृतिमे। चारि वर्णक चर्चा अछि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र) तथा चारिटा आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास) आशय इएह भेल जे आचार-विचार रहन-सहन, आहार-विहार, शुद्ध-स्वच्छ जाहिसँ मन वा चित्तमे पवित्रता संभव छैक। जा धरि चित् वा कही मानसिक वृति प्रभुक अनुरक्ति नहि करतैक ताधरि संत जीवनक जे पराकाष्ठा भगवत्साक्षात्कार संभव नहि छैक।

सत्संग -- `संत`क जीवन मे सत्संगकें महत्व अपरिमित अछि। संत मार्ग वा भक्ति मार्ग मे सत्संगक प्रसंग मे श्रीमद्भागवत् गीतामे ओ रामायणमे यत्र-तत्र वर्णन पसरल अछि। श्रीमद्भागवत्मे वर्णित अछि -

`सत्सङ्गलल्धया भक्तया मयि मां स उपासिता। (11/11/25)

भक्ति मार्ग मे भगवत्प्रेममे सज्जनक समागम पाबि कऽ मानसिक वृति के वृद्धि होइत छैक। भगवत् साक्षात्कारक मार्ग प्रशस्त होइत छैक। सत्संगक महत्वक प्रसंग रामायण के सुंदरकांडमे दोहा चारि मे लिखल अछि -

1. भगवत्प्रेम - अंक गीता प्रेस Page 152

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग
तूल न ताहि सकल मिलि जों सुख लब सतसंग।।[1]

`संत` मार्गमे सत्संगक महत्व ``साधन सिद्धि राम पगु नेहू`` आशय जीवके सत्संग भेला पर रामक अर्थात् प्रभुक पगसँ नेह-प्रेम उपजैत छैक। भागवत गीतामे कहल गेल छैक जे मुनि, तपस्वी, ज्ञानी भक्त ओ संतक सबसँ पैघ सम्पत्ति होइत छनि श्रद्धा आ `श्रद्धाक` जे हृदयमे शनैः-शनैः विकास होइत छैक से सत्संग जखन प्राप्त होइत छैक। संत ओ भक्तक लेल ई अनिवार्य मानल गेल छैक। शास्त्र विहित संत महानुभावक कथन छनि श्री नारायण दास जी भक्तमालीक आलेख `सत्संग और श्रद्धा` भागवत्प्रेम-अंक पेज 174 मे लिखैत छथि भक्तिरसामृतसिन्धु पू.वि. 4/6-7

आदौ श्रद्धा ततः साधुसङ्गोऽथ भजन क्रिया
ततोऽनर्थनिबृतिः स्याततो निष्टा रुचिस्ततः
अथासक्तिस्ततो भावस्ततः प्रेमाऽभ्युदञ्चति
साधकानामयं प्रेम्णः प्रादुर्भावे भवेत् क्रमः

अर्थात् आमक बृक्षमे फलक आगमनक जे शुरुआत होइछ से भेल मञ्जरि क्रमिक टिकुला फेर कोशा दैत छैक आ पुनः रसोप्लावित मधुर फल आम तहिना संत-महात्मा-मुनी तपस्वी साधुक लेल श्रद्धा-सत्संग-आसक्ति-प्रेम जीवात्मा परमात्मासँ पैतृक धरोहर रूपमे श्रद्धा नामक सम्पत्ति क्रमिक प्राप्त करैत अछि। आ समाजक मध्य ओ पसरैत अछि आ समाज-सहजताक अनुभव करैत अछि।

सत्संग `संतक` लेल केहन महत्व छैक ताहि प्रसंगमे मैथिली साहित्यक मध्य नवधा भक्तिकार `संत गोविन्द दास` लिखैत छथि -

भजहु रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द
दुलह मानुष जनम सतसंग तरहए भवसिन्धु-2

कहवाक आशय जे मनुष्यक कोखिमे जन्म पायब कठिन अछि दुलर्भ अछि आ मनुष्यक जीवन के सार्थक करब सफल करबालय सत्संग अर्थात् ज्ञानी सँ संत, महात्मा भक्त सँ सम्पर्क भेलासँ एहि सांसारिक रूपी जे भवसागर जन्म-मरणक जे बन्धन रामायण मे लिखल अछि- **`जन्मत-मरण असय दुख होई`** ताहि दुखसँ मुक्त होमक वास्ते सतसंग आवश्यक अछि। एहि प्रसंग श्लोक अछि - जे सत्संग सँ एहि संसारक जे मिथ्या संबंध `ब्रह्म सत्य` जगत मिथ्या` जे सिद्धान्त तकर पुष्टि भेल अछि यथा -

सत्सङ्गात्वे निस्सङ्गत्वे निस्सङ्गत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्वं निश्चलतत्वे जीवन्मुक्तिः
(भज गोविन्द भज गोविन्दं....)

1. रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड दोहा - 4

संत जीवनमे सत्संगक महत्वकें सब धर्म-सम्प्रदाय स्वीकार कयलक अछि। सत्संग सँ एहि सांसारिक जीवनक जे मोह-ममताक जे आशंका जीवनमे रहैत अछि ताहि सँ `विमुक्त होइत छल - कपट सँ दूर होइत `संत`क जीवन मे अंतिम पड़ाव `मोक्ष` अर्थात् जन्म ओ मरणक क्रमसँ मुक्ति भेटैत छैक।

एहि प्रकारें अध्ययन ओ मनन सँ संत रामानन्दक जे सत्संगक प्रसंग पंचायुध सँ युक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, स्त्री आदिक जे स्वरूप सब भगवानक स्वरूपे मानलनि अछि। अस्तु भगवानक चरचरात्मक रूपक दर्शन करैत वैष्णव सत्पुरुषक संग रही। सत्संग के संसार सँ निष्पृह बना देबाक साधन कहलनि अछि। प्रसंगानुकूल भगवत्प्रेम-प्राप्तिक आकांक्षा रहैत अछि तऽ निष्कामभावस सँ केवल भगवानक प्रसन्नतार्थ सत्संग ओ कथा-भक्ति रस पान करैत मोहसँ निवृत्ति एवं भगवत्प्रेमक प्राप्तिक संगहि संत अपना कें सहज रूप मे पबैत छथि। सत्संग - मानवमात्रकें अध्यात्म मार्ग दिश प्रवृति करैत, भौतिक जीवनसँ मुक्त दियऽबैत अछि। माँस ओ मद्यपान भड़कीला वस्त्राभूषण, अधिक निद्रा, व्यर्थालाप, राजनीतिक आन्दोलन, सभा, मेला, प्रदर्शन दिखाबा आदिकें निषिद्ध मानल गेल अछि। मनुष्य सत्संगसँ आडम्बर शून्य, शांत, भजन पाठ, कीर्तन, प्रवचन अध्यात्म वातावरण मे अपन जे पूर्व धर्म तकर परित्याग आवश्यक नहि, जीविकाक प्रति उदासीन होयब अनिवार्य नहि। प्रत्येक अनुयायीकें संत ओ सतगुरु वा हुनक फोटो चित्रक समक्ष श्रद्धा प्रदर्शन हुनक स्पर्श व्यवहारमे आनल गेल वस्तु पवित्र उपादेय बिना तर्क-वितर्ककें अपना लेब अपन परम धर्म वुझल जाइत अछि।

अस्तु[1] सत्संगक प्रविधि सब सिद्धान्त विशुद्ध वैज्ञानिक एवं अनुभवगम्य मानल जाइत अछि। बुझी तऽ सत्संग एक प्रकारक थियोसोफिकल सोसाइटीक समान मानल गेल अछि।[2]

कीर्त्तन - अंग्रेजी साहित्यक अनुसार Singing in loud by music कीर्तनिया - One who sings in concert -कीर्ति - Fama renoun, reputation - आशय भेल जे खूब जोर सँ राग-भासक संग साज-बाजकें बजा कऽ समूहमे कियो विशेष गबैया आगू-आगू खूब ध्यान ओ भक्ति-भावसँ गवैत छथि, पुनः हुनकर गीतके सह गानमे ओही राग ओ भासकें दोहरवैत अछि ओ भेला कीर्तनियाँ आ हुनका द्वारा कयल कार्य भेल कीर्त्तन। कीर्त्तनक महात्म्य श्री मद्भागवत महापुराणमे विस्तार पूर्वक वर्णन कयल गेल अछि। सनातन धर्मक अन्तर्गत निर्गुण वा सगुण कीर्त्तन दुनूमे प्रसिद्ध अछि। ओना सगुणोपासनामे भारतक अध्यात्म साहित्य मे विशेष प्राचीनताक परिचय भेटैत अछि।

भारतीय अध्यात्म साधनाक अन्तर्गत कीर्तन`क महत्वकें सब धर्म-पंथ-शाखाक अनुयायी स्वीकार कयलनि अछि। परंच सव धर्म-पंथ ओ शाखा मे भिन्न-भिन्न पद्धतिये अपनाओल गेल अछि। कतहु कीर्तन बैस कऽ कियो धूमि-टहलि कऽ, कियो परिक्रमा द्वारा, विशेष प्रकारक अंग-

1. पं. राम टहलदासक सम्पादित पोथीमे वैष्णव मताब्ज भाष्कर सत्संगक प्रसंग मे लिखैत छथि -
`दिब्येषु देशेषु सतां प्शंग तदीयकैर्ल्मपरायणोवै (पृष्ठ-197)

2.आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक पोथी पेज 483

वस्त्रमे, कतहु साज-बाजमे भिन्नता मुदा मूल जे कीर्तन एकटाधुनकें दोहरायब आ समूहमे रहब अपन इष्टक रूप-गुण ओ हुनक कीर्तिकें बाखान करब आ। एहि प्रकारक भक्तिभावनाक माध्यमसँ अपन इष्टक संग तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करबाक साधनामे रहैत छथि, सएह भेल कीर्त्तन। भारतीय अध्यात्म जीवनमे नौ प्रकारक भक्तिक वर्णन भेटैत अछि।[1] जकर वर्णन [गोविन्द दास विद्यापति भक्तिभावनाक प्रसंग जे अभिव्यक्ति देलनि अछि जकर वर्णन आगू देल जायत मिथिलाक अध्ययन प्रसंग मे]

ओना एहि नवधा भक्तिक वर्णन भारतीय धर्म शास्त्रमे कतेको ठाम आयल अछि। भगवद्दर्शन वास्ते नवधा भक्तिरुपी गाड़ीक वर्णन आ तकर सिद्धस्त संचालकक वर्णन अछि ताहिमे कीर्त्तन भक्तिक संचालक रूपें श्री सुकदेव जी महाराजक वर्णन अबैत छैक। एहि विविध प्रेम रूपी गाड़ीक संचालक सबकें साक्षात् श्री महाप्रभुक चरणक दर्शन भेल छलनि।

सनातन धर्मक अन्तर्गत भक्ति साधनामे अंतिम जे मोक्षक भावना से सब धर्म-पंथ संप्रदाय मे समन्वित भेलैक। तकर मुख्य कारण जे भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तक अध्याय ओ विवेचना ओहि प्रकारें नहि कयल गेल जेना षडदर्शनक आचार्य केने छलाह। तकर अत्यंत सरल परिणाम भेलैक जे बादमे संत लोकनि बेसी पढ़ल-गुनल नहि भऽ कऽ किछु अर्थ ग्रहण कय अपन सम्प्रदायमे समाविष्ट भेलाह। एहि प्रसंग मे दक्षिण के संत लोकनि अपन भावनाक उत्कृष्ट रूपें अभिव्यक्ति देलनि। परिणामस्वरूप आलवार-साधना-पद्धति जे भारतक दक्षिण भाग तमिल राज्यमे विकास कयलक तिरूमल-सइ` वा भक्तिसारकें नामसँ आत्मनिवेदन रूपें कीर्तनक भक्ति रसधाराक प्रवाह शुरु भेलैक। महाराष्ट्र मे बारकरी सम्प्रदाय द्वारा परिक्रमा पद्धतिमे संकीर्तन नाम धाराक प्रवाह गतिमान भेलैक। पश्चात् गुजरातमे नरसी मेहता (1472-1538) राजस्थानमे मीराबाइ क्रमशः बंगालाक चैतन्य देव (सं. 1542-1590) फेर उड़ीसामे राय रमानन्द धारामे कीर्त्तनक प्रचार-प्रसार भेलेक।

सनातन धर्मक अन्तर्गत ज्ञानक महत्व अत्यंत आवश्यक मुदा वर्ण व्यवस्था ओ जाति व्यवस्था ततेक कठिन छलैक तें वैष्णव संत लोकनि लोकभाषाक आश्रित भेलाह। लोकभाषा लऽ कऽ धरातल पर जखन एला तखन सर्वसाधारण जनताक इच्छा अपेक्षा ओ आकांक्षाकें शांति भेटलैक। पुनः रामानुजाचार्यक जे उठाओल भावधाराक स्वामी रामानन्दक श्रोतसँ वृन्दावनक उत्कृष्ट नाम साधना साहित्य ओ धार्मिक आचरणकें पुष्ट कयलक अछि। विद्यापतिक ``देशिल बयनाक" प्रभाव ततेक उत्कृष्ट बनल जे हुनक राधा-कृष्ण ओ स्वामी रामानन्दक सीता ओ रामक उपजीब्य बनाय देश-कालक अनुरूप वैष्णव भाव धाराक प्रवाह गतिमान भेल। परिणाम सम्पूर्ण पूर्वांचल एहि शाखा-प्रशाखाकें पकड़ि जीवकें ब्राह्मरूप मानि सीता आ राम, राधा ओ कृष्णक वर्ण्यविषय बनाओल, तखन बाल-लीला सँ लय प्रणय लीलाकें कीर्त्तन एवं गीतक सरस संकीर्त्तन रससिक्त भक्तिधारामे नारी ओ पुरुष जीवनक विनोदमय रूपोत्पादक वैष्णव संत लोकनि भक्तिक रसत्वक शास्त्रीय ब्याख्या राग-भास ओ साज-बाजक संग आरंभ कयलनि।

1. गीताप्रेसक भगवत्प्रेम अंक 2003 के पेज 152 मे

अस्तु आलवारक मधुर भक्ति एवं भागवतक रास वर्णनकें योगसँ भारतक चौदहम शताब्दी मे श्रृंगार भक्तिमूलक अलौकिक तत्त्व ज्ञानक निरुपण कयल गेल। वारहम शताब्दी मे निम्बकाचार्यक राधा-कृष्ण भक्ति पर विशेष बल देने छलाह। पश्चात् जयदेवक विद्यापति समकालिने चण्डीदास द्वारा ब्रह्मानन्दक अनुभूति क्रमिक भारतीय भक्ति-साधना संकीर्त्तन मार्ग पर जे श्रृंगारक माध्यम पकरि आगू बढ़लाह से संसारक सब धर्म मे उपलब्ध अछि। से पूर्वमे बौद्ध ओ नाथ सम्प्रदाय पश्चात् सूफी पंथ मे सेहो ताकल जा सकैछ।

कीर्त्तनक महात्म्य चैतन्य महाप्रभुक समय मे पूर्वांचलमे अपन चरमोत्कर्ष पर छल। श्री चैतन्य महाप्रभु कलियुग मे संकीर्त्तनक प्रवर्तकाचार्यक रूपमे मानल जाइत छथि। रामायणमे कहल गेल अछि :-

कलियुग केवल नाम आधारा
उत्तरहि भव-नर सिंधु अपारा

ओना कीर्त्तन सहजिया सम्प्रदायमे सेहो बंगाल मे प्रसिद्धि प्राप्त कयने छल। चंडीदास एहि पन्थक महनीय साधक छलाह। चंडीदास विद्यापतिक समकालीने छलाह। बंगालमे विद्यापतिक गीतक विशिष्टता प्राप्त छलैक राधा-कृष्णक पदकें वैष्णव संत लोकनि स्वीकार कयलनि, ओहिमे ई लोकनि ततेक मंत्रमुग्धकारी भऽ गेलाह जे एकटा नव परंपरा कायम भऽ गेल आ एकटा नवीन वैष्णव काव्य भाषाक उद्भव भेल तकर नाम पड़ल ब्रजबुलि। डॉ. ग्रियर्सन, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, म.म. डॉ. उमेश मिश्र, डॉ. जयकान्त मिश्र, पं. शिवनन्दन ठाकुर, डॉ. जे सी घोष प्रभृति विद्वान ब्रजबुलिक इएह विवरण देलनि अछि।[1]

कीर्त्तनक प्रसंग ब्रजबुलि नामे कहब अछि जे चैतन्यदेवक भक्तिक परिक्रमा करैत विद्यापतिक गीत गवैत व्रजमंडल जाइत छलाह आ ओतहि सँ गीतक पद ब्रजानुकृति होइत जे रूप लेलक जकर शब्द विश्लेषण पूर्णतः मैथिली अछि रो ब्रजबुलिक कीर्तन नामे प्रसिद्ध भेल जे मैथिलीक विविध भेद मे एकटा प्रमुख भेद अछि। चैतन्यदेवक साधनामे साधु संग नाम कीर्तन निष्काम अहैतुकी भक्ति करब, राग भक्ति, वैधी भक्ति आदि कतिपय नामसँ हिनक साधना अछि। जकर विवेचन कृष्णदास कविराज चैतन्य चरितामृतमे कयने छथि। चैतन्य महाप्रभु एहि साधनामे साधु-संग, नाम-कीर्तन, भगवत श्रवण, मधुरा-वास श्रीमूर्ति सेवन ई पाँचटा प्रमुख अछि। चैतन्य महाप्रभु राग भक्तिक रागात्मिका ओ रागानुगा दू गोट भेद अछि। एकर दुनूक भेदानुभेद - **रागात्मिका** जाहिमे श्री कृष्णक नित्य जीवनक पररपर जे व्रजवारीक भक्ति जे कोनो विधि-निषेध सँ सर्वथा पृथक होइछ। प्रायः एहि प्रकारक भक्ति संकीर्त्तन ब्रजवासी करैत छथि। दोसर भेल रागानुगा - एहि मे कीर्त्तन भक्तिक ओ रूप झलकैत अछि जे कृष्णक नित्य परिकर यथा नन्द-यशोदा, गोपी-गोपक अनुगत भाव लय भक्ति करैत छथि।[2] चैतन्य महाप्रभुक परम भक्तिक सर्वोपरि लक्ष्य इएह मानैत छथि।

1. भगवतप्रम अंक गीताप्रेस वर्ष 77 संख्या 1 जनवरी, 2003 के पेज 65 म लिखल अछि
2. पं. राजेश्वर झाक पोथी मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्यक पेज -22

हरिनाम संकीर्त्तन प्रसंगमे - शांडिल्यसूत्रक वाक्य -``**नाम्नेति जैमिनी सम्भवात्**`` अर्थात् भक्ति मे नामक महत्व आ महिमा अत्यंत व्यापक अछि। नामक प्रसंग छन्दोग्य उपनिषदक छठम परिच्छेद, ऋग्वेद, सामवेद, पुराण आदिमे हरिणाम पर विषद वर्णन भेल अछि।

आसामक शंकरदेव - `नामक` महात्म्यकें अत्यंत विशिष्टता पूर्णरूपें दर्शौने छथि आ `नाम` मतक प्रतिपादक छथि। शंकरदेव एकसरनियाँ वैष्णव संतक प्रार्थना रूपें `बड़गीत` नाम सँ प्रसिद्धि कीर्त्तन नामक काव्य-वस्तु प्रतिपादित कयलनि। लिखैत छथि -

रोम विवरमहः कोटि-कोटि अण्डः
जैसन अनु-परमानि।
नन्दननन्दन कतिः नाम धरत सोहिः
तुहि लीला कोई जानि।। बड़गीत।।
राम नाम महः निखिल पुण्य रह :
उहि निगम तत्व बानी।
कलिको परमः धरम हरि नामाः
पढ़ि पुनु मंद्रम न जानि।।
सब अपराधक : बाधक साधकः
सिद्ध करू हरिनाम `राम विजय नाट।।`
देवक उपरि : राजा माधब : धरमक उपरि नाम
कोटि कल्पकः पालक नासकः डाक बोलहु राम राम।।[1]

आसामक शंकर देव सकीर्तन मे `नाम`क महत्वकें अपरिमित मानलनि अछि। चैतन्य चरितामृतसँ ज्ञात होइत अछि जे चैतन्य महाप्रभुक पूर्वहिसँ उड़ीसामे राय रामानन्द वैष्णव साधनाक तत्वसँ अवगत छलाह। कीर्तनक रागानुभक्तिक मनोहारी वर्णन भेटैत अछि। चैतन्य महाप्रभुक अनन्य भक्त सदानन्द अपन `नामचिन्तामणि पद्धतिमे` कहलनि अछि जे `कृष्ण` सँ पहिने `राधाक` नाम लेबाक चाही। वस्तुतः चैतन्य महाप्रभुकें कीर्तनक प्रवर्तक मानल जाइत छनि। बाद्ययंत्रक संग सामूहिक रूपसँ भगवानक नाम, हरिनामक संकीर्तनकें, प्रेम विह्वल भेल कलिकालक भक्ति मे संराक लेल श्रेष्ठ साधना मानल गेल अछि। ``बृहन्नार्दीय`` पुराणक ब्याख्या चरितामृत, आदि लीलीकें महात्म्य-प्रसंगे कहल गेल अछि -

कलि काले नाम रूपे कृष्ण अवतार।
नाम हैते हय सर्व जगत निस्तार।
दाढर्य लागि हरेनाम उक्ति तिनबार।
जड़ लोक बुझाइते पुनरेब कार।।[2]

एहि प्रकारें अध्ययनसँ स्पष्ट भऽ रहल अछि जे बंगालमे चंडीदास सँ वैष्णव भक्तिक

1. उपर्युक्त पद मध्यकालीन पूर्वांचल वैष्णव साहित्यक पेज-33 सँ लेल गल अछि।
2. मध्यकालीन पूर्वांचल वैष्णव साहित्यक Page -34

`नाम` संकीर्तन महात्म्य आरंभ भेल से चैतन्य महाप्रभुक संग ब्रजबुलि पद संकीर्तन रूपें बुझू एकटा साहित्यक निर्माण भेलैक। गरनहाटी रेनेती मन्दरणी एवं मनोहरशाही आदि स्थानक नामे कीर्तन प्ररिाद्धि प्राप्त कयलक। पंद्रहम शताब्दीमे रांकीर्तन विविध रूपें प्रख्यात ओ प्रभावशाली बनलैक। मानवीय समाजमे जे पसरल इत्यादि प्रकारक बिषय-वासना, लिलसा-कामना, भौतिक सुखक अभिलाषा, धन संग्रहक रोग, राग-द्वेष, राजनीति-कूटनीतिक बीच हत्या-अहं-भावना, व्यक्तिगत सुखक लेल आन्हर भेल मनुख, मानवीयताकें जखन तार-तार करबाक फिराकमे लागल रहैत अछि समाजक बीच एकसँ-एक जघन्य अपराधकें देखैत पशुवत रूप धारण केने जा रहल छैक, मानवीय जीवन गर्त दिश जा रहल अछि तखन अध्यात्मिक महापुरुष रांत रामयक रांग युगके परखलनि आ रांकीर्तन ब्यवहार पद्धतिमे राहज कोनो नेम-टेम नहि कोनो शुचि-आचार बृहद आडम्बर नहि, वैष्णव संतलोकनि `नामक आ कीर्तन संगहि-संकीर्तन नामे समाजके सद्मार्ग पर अनबाक हेतुएँ सरल-सहज मार्गकें अनुसरण करबाक लेल प्रेरित कयल। संकीर्तन प्रभावपूर्ण मंत्र मात्र -

श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द।

मिथिला अध्यात्म ओ रांतक भूमि, भारतीय रामाज ओ रांराारक राद्मार्गक द्वारि खोलि मानवताक पाठ लेल उपर्युक्त महामंत्रक उत्स भेल। जाहि सँ कोटि-कोटि मानवक कल्याण करबाक प्रयास कयल गेल।

प्रपति मार्ग - भक्त ओ संताक बिविध संप्रदायकें उल्लेख भेल अछि। जीवात्माक सम्पर्क जगतसँ `जखन होइत अछि तखन सुख-दुखक द्वन्दमे जीव अचिन्त्य भेदोभेद सिद्धान्तक खोज करैत अछि जे आनन्दक मूल उत्स कतऽसँ होइत अछि? एहि प्रसंगमे दक्षिण भारतक वैष्णव राम्प्रदाय आडबार एवं ज्ञानकांड के अनेक नियम ओ युक्तिक खंडन कयल आ भक्ति कांडक अनुसार स्मार्तक द्वारा प्रचलित एकसँ अधिक देवताक पूजनक जे प्रणाली तकरा अस्वीकार कय देल गेलैक। एकमात्र विष्णुक पूजा-अराधनाक प्रचार-प्रसार कयल गेल। उँच्च वर्गक संग शूद्रकें सेहो योग्य मानल गेलैक। प्रपति मार्गक जे विशेषता अपनाकें भगवानक शरणमे समर्पण कय हुनकर दयामात्र पर भरोस करी।

उपर्युक्त सिद्धान्त दक्षिणक आडबार भक्तक मार्फते समाजमे पसरल छलैक। प्राचीनमे तंत्रोप्रचार आ ईश्वरीय ज्ञान ओ भक्तिक दुरूह मार्गक जे आचार्य लोकनि शुरू केने छलाह आ संस्कृत भाषाकें ईश्वरीय ज्ञान ओ भक्तिक समुद्र कहने छलाह ताहिमे साधारण ओ अशिक्षित जनकें भक्तिक मार्ग पर चलबाक कोनो अधिकार नहि छलैक। समाजमे अधिकांश व्यक्ति अशिक्षिते छलाह, जीवात्माक परमात्माक गुण विशेषसँ आकृष्ट होयब तऽ स्वभाविक छलैक, परंच ब्रह्म-विशिष्ट अद्वितीय ज्ञान मात्रक आधार बना बेद-विहित कर्मानुष्ठान एवं बिविध भक्ति साधना अभ्यास सँ संभव होइछ। रामानुजाचार्य एवं आचार्य भक्त, मीमांसक कर्मकाण्डीक जे धारणा तकर रामाहार आडवार जे अपन रिाद्धान्त नामे `प्रबन्धम्` जाहिमे अशिक्षित ओ अर्ध-शिक्षित व्यक्तिक स्वनाम संग्रह अछि ताहिमे हृदयपक्षक प्रधानता देल गेल छैक। दक्षिण भारतक

एहि सिद्धान्तकेँ खूब प्रसिद्धि प्राप्त भेलैक। तकर मुख्य कारण जे आडवारक भक्त खूब शिक्षित नहि छलाह, हिनक जीवन शैली सेहो सहज ओ सरल जिनकर मुख्य साधना गीत ओ भजन धरि सिमित छलनि; जे सतत् परमात्माक ध्यान मे लीन रहैत छलाह। पुनः कलांतरमे `संत` शब्दक भाँति आडवार शब्द हिनका सबहिक लेल रूढ़ि बनि गेल। आडवार नामे प्रसिद्ध संतमे तमिल राज्यक विशेष चला-चलतीक छलैक। आडवारक लेल प्रबंधमक महत्व तामिलमे वेदक रूपें कयल जाइत अछि। आडबार भक्तिक मनोवृत आठ नौ सौ वर्ष धरि ब्याप्त रहलैक बारहवीं शताब्दीमे `आडवार भक्तक` उक्त संग्रह `प्रबन्धकम` वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा सम्पादित भेल। आडवार भक्त सहजतासंग जे संगीत ओ भजनक प्रभाव उत्तर-पूर्वांचलक राज्य पर सेहो पड़ल जकर परिणाम एहि सब राज्य यथा बंगाल, उड़ीसा, आसाम एवं बिहारक संग मिथिलामे गीत-संगीत-भजन सँ एकटा गीत संगीतक भजनक मिश्रित धारा कीर्तन वा संकीर्तनक उत्थान भेलैक। इएह संकीर्तन प्रपति मार्गक एकटा प्रमुख साधना भेल।

कलांतरमे प्रपति मार्गमे दू टा भिन्न-भिन्न भावसँ अर्थ लगाओल गेल जाहिमे एकटा वेदान्त दैसिक (सं.1325-1426) एहि अर्थक मादे मात्र एकेटा मार्ग अछि प्रपतिक जकरा ज्ञान, कर्म आदिक अभाव मे एहि मार्गक अनुसरण करबाक चाही। दोसर मतक अनुसारें प्रपतिकें एकटा निरा मार्ग मात्र नहि अपितु मनवल महामुनि (सं.1427 : 1500) कहलनि अछि जे एहि मार्गक अनुयायीकें अपन मनोवृत्ति तक निर्मित कऽ लेबाक चाही। अस्तु पहिल मत बलाकें `वार्ड कड़ाई` आ दोसर मतकें टेन कड़ाई नाम सँ प्रसिद्ध भेल अछि। अर्थात् वार्ड कड़ाईक अनुसार भक्त आ भगवानक बीच ओहने सम्बन्ध रहैछ जेना कोनो बिलाईक बच्चा अपन माताक संग सटल रहैत अछि। दोसर मत टेन कड़ाई एकर तात्पर्य भेल जे बिलाई अपन अबोध बच्चाकें अपनामे सटेने रहैत अछि। उपर्युक्त सिद्धान्तक अनुसार स्पष्ट होइत अछि जे प्रपति मार्गक जे साधना ओहि अशिक्षित संतक लेल आडवारक जे `धर्मग्रंथ प्रबन्धम` मे व्याख्या कयल गेल अछि टेन कड़ाइ साधनाक संत कोनो प्रकारक प्रयास नहि करतै छथि आ ओ सतत आश्रित रहैत छथि। जखन कि वार्ड कड़ाइ मार्गक संत साधक भगवानक संग अपनाकें जोड़ने रहैत छथि आशय टेन कड़ाइ मार्गक संतसँ वार्ड कड़ाई मार्गक संतक अपेक्षा कनेक बेसी ज्ञानी अनुभव होइत अछि।

संत साहित्यक परिभाषा एवं परिधि :- संत साहित्यक प्रसंगे कही तऽ मानवहृदय परमात्मासँ भेंट करबाक लेल सदत् ब्याकुल रहैत अछि। अपन हृदयक जे तीव्र ज्वालाकें शांत करबाक लेल मनुख कखनो प्रकृतिक कोमल नीरबता आ कौखन सम्भ्रमोत्पादक ऐश्वर्य पर तऽ कखनो अपन सुख-दुख, मान-अपमान, आशा-निराशा पर दृष्टिपात कयल, एहि रहस्यकें बुझबाक लेल यत्न कयलक तऽ खोजक क्रममे दू गोट मार्ग - काव्य आ धर्म किंवा सौन्दर्य आ सत्यक नामसँ अभिहित भेल। संत लोकनि तत्त्वदर्शी ओ लोकनि सत्यक साक्षात्कार करबाक आग्रही होइत छथि तऽ कवि सौन्दर्यान्वेषी कहबाक आशय सौन्दर्य आ सत्य एक्कहि शिक्काक दू पहलू भेलैक। एहि दुनूक साक्षात्कार भावावेश एवं जिज्ञासापूर्ण श्रद्धाक अवस्थामे होइत अछि। एहि प्रकारें देखी तऽ संत ओ कविक जीवन एक प्रकारें दृश्यक दर्शनसँ जे अनुभव ताहिसँ

आनन्द लुटवाक जे प्रक्रिया एकटा सौन्दर्यसँ तऽ दोसर सत्यसँ अपन हृदयक द्वारि खोलिकऽ अनेकानेक कोमल भावक संग मनुष्यक हृदय कही वा अन्तर्मामे प्रवेश कऽ जाइत छैक। ओहिठाम समष्टि बुद्धिक विकास होइत अछि आ अहं बुद्धिक नाश भऽ जाइत छैक। एहि प्रसंगे कही तऽ शास्त्रमे भगवानकें रसरूप कहल गेल छनि -``रसो वै स:`` एहि विचारक प्रसंगमे कहल गेल अछि जे आत्मा अथवा परमात्माक प्रति जे कोनो रसविशेषक अबाधरूपें प्रवाह होइत छैक तखन कोनो महान उपलब्धि प्राप्त होइत छैक। महान आलोचक लॉञ्जीनसकाक कहब छनि - ``हमर आत्मा कोनो महान वस्तुक सम्पर्कसँ अपने-आप स्वाभाविकसँ उपर उठि जाइत अछि आ आनन्दातिरेकसँ भरि-कऽ बुझू नाचय लगैत अछि।`` एहि रसक अनुभूति आ व्याख्या `संत` लोकनि कयलनि तऽ ओ प्रेम भेलैक आ कविक द्वारा जखन भेल तखन साहित्य कहबैत अछि।

एहि प्रकारें अध्ययन ओ अनुशीलनसँ सार्वभौम ओ अलौकिक प्रेम तथा शुद्ध साहित्यिक मूलमे जे परमार्थिक एकता ताहि प्रसंग प्राचीन ऋषि आ आलोचकक ध्यान नहि गेलनि, से नहि ओ लोकनि कवि एवं संतकें ईश्वरीय विभूति दिव्य अलौकिक भावक क्रांतिदर्शीक रूपें जे दूरस्थ वस्तुक रहस्यकें जानि कऽ वर्णन कऽ दैत छथि। ``**अमुत्र सन्निह बेत्थेत; संस्तानि पश्यसि।।**[1] वैदिक कालमे इएह क्रांतिदर्शी कवि अथवा मंत्रद्रष्टा ऋषिक वंशज सर्वोच्च कोटिक ``संत`` रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि। **ऋतस्य पन्थानमन्वेति साधु:**[2] एहि प्रकारें संसारकें असली रूपमे बुझबाक लेल आवश्यक अछि जे ओ संत तऽ हेबे करता आ संगहि ओहि संतकें कवि होयब सेहो आवश्यक छनि। कवि ओ संतकें जेना परमात्माक आज्ञा प्राप्त होइत जे भूमाक उपासना द्वारा आत्मबोधकें प्राप्त करैत छथि। कवि अपन लक्ष्यक प्राप्ति साहित्यमे चित्रकला, संगीतकला आदिक द्वारा करैत छथि आ संत अपन सिद्धि श्रद्धा-प्रेम-लोक सेवा द्वारा करैत छथि। एहि उपर्युक्त मतकें स्पष्टत: प्राचीन ग्रंथमे विश्लेषण भेल अछि।[3] उपनिषदमे कविक लक्षणक प्रसंग **-``छन्दोयोगान् विजानाति``** कहबाक भाव अछि - छन्दक प्रयोगक संग-संग मनुखक छन्द अर्थात् हृदयगत भावकें नीक जकाँ जनैत हो।`` अहि भावना कें आत्मकेन्द्रित कय - जैस्पर्सनक शब्दमे - ``काव्य हमरा अन्तास्तालक स्पर्श करैत संशयात्मक हृदयमे हलचल आनि दैत अछि किएक तऽ ओ ऋषि, महात्मा आ कविक परिपक्व अन्त:करणक चरम अभिलाषा कें रागमय रूप दैत अछि।``

``Poems touch us more deeply they move even the sceptic soul, for they give passionate form to the final longing of the develop minds of the seers, saints and peots.``

1. संत अंक विशेषांक, गीताप्रेस पेज 206,
2. ऋग्वेद 1/121/3,
3. उपनिषद।

उपनिषदमे अलौकक सिद्धान्त जकरा आगू चलिकऽ दर्शनक शाखा-प्रशाखाक रूपमे व्याख्या कयल गेल अछि, जाइत अछि - ``ई समस्त विश्व ब्रह्माक रूप छनि आ आत्मा ब्रह्म अछि।``[1] एहि भावनाक विस्तारक प्रसंगमे अन्तरात्मामे स्थापित ब्रह्मक स्वरूप अनुपम होइछ। प्राचीन भारतक संत क्रांतिदर्शी कविक प्रशंसामे डॉ. विण्टर्नीजक शब्द - ``भारतक प्राचीन तत्त्ववेत्ता जाहि सत्य ओ तत्परताक संग परमात्मतत्वक खोज कयने छथि जकरा[2] `स्वत: सिद्ध वस्तु (Thing-in-it self) कहलनि अछि - **एकमेवाद्वितीयम्**` सत अथवा आत्माक नामसँ खोज कयने छथि ओ हमरा लेल पैघ आदरक वस्तु अछि।``

What inspires us with the highest respect for these ancient thinkers of India is the earnestness and the enthusiasm with which they endeavoured to fathon the divine principle or what kant would call the ``Thing-in-itself, whether they called it ``The One`` or The Existant or the Atman.``[3]

एहि प्रकारें संत जे अपन दार्शनिक काव्यमे मानव हृदयक अनादिकालसँ अपन जिज्ञासा कें बहुत ओजस्वी शब्दमे वर्णन कयने छथि।[3] ``काव्य जगतमे उपनिषदक समान आत्माक उन्नति करयवला आ शांति प्रदान करयवला अन्य दोसर कोनो ग्रंथ नहि अछि, हमरा जीवनमे एहिसँ खूब शान्ति भेटल आ एतबे नहि मृत्युक समय सेहो अही सँ `शांति प्राप्ति होयत।``[4]

अस्तु भारतमे परमात्माक उपासनाके बाद कलांतरमे अनेक देवी-देवताक उपासना प्रचलित भऽ गेलैक, तखन संत लोकनि अपन ज्ञानयोग, कर्मयोग आ भक्ति योगक अलगे-अलगे व्यवस्था कयलनि। जखन संत लोकनि मे ई अनुभव भेलनि आ देखलनि जे हुनकर वाणी सहज रूपें जनताक कान धरि ठीकसँ नहि पहुँचैत छैक तखन ओ लोकनि साहित्यक शरण लय इतिहास पुराणकें समान अपन उपदेशक अन्तर्गत ब्यास, नारद एवं याज्ञवल्क्य आदिक रचना सदृश ईश्वरीय तत्वक विन्यास कयलनि। एकटा विद्वान कुर्म पुराणक संपादनक क्रम मे उपोदघात पुराण मे हिन्दू धर्मशास्त्र आ तन्त्रग्रंथक हिन्दू सनातक धर्मीक जीवन पर व्यापक प्रभाव छोड़ने छथि।

The purans forms an important portion of the religios literature of the Hindus and together with the Dharma Sastras and Tantras govern theiir conduct and regulate their religious observances at the presant day.``

अध्ययनक क्रम ओ समाजक अनुश्रुतिक अनुभवसँ स्पष्ट अछि जे इतिहास धर्म-ग्रंथ,

1.छान्दोग्य उपनिषद्मे 3/14
2. पाश्चात्य दार्शनिक केण्टने
3.Scho penhauer नामक आलोचक अपन ग्रंथ -``Parergaund paralipomena` मे कहने छथि,
4.It is the most satisfying and elevating reading which is possible in the poetical world it has been solace of my lite and will be the solace of any death.``

पुराण, भागवद्गीता, महाभारत आदिक जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ल छैक। आ खूब लोकप्रिय भेल अछि तकर मुख्य कारण ग्रंथक काव्यक दृष्टिसँ बहुत उँच्च ओ भाषाक प्रांजलता, अलंकारिता छन्दक झंकार, शब्द विन्यास, भावक ओजस्विता जेना दिव्य साक्षात् भगवान ओ महात्माक हृदयसँ निःसृत भेल अछि।

संत, ऋषि, कवि क्रांतिदर्शीक भीतरमे एकटा असाधरण गुण रहैत छनि जे अध्यात्मिक दिव्य अनुभवक संग विपुल शब्द विन्याससँ रचना चिरकाल धरि देश-काल सीमाकें नाँघि कऽ अन्तमे मानव जीवनक संग मिश्रित भऽ जाइत अछि। संत आ हुनक साधना ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्ति योगक तत्वदर्शी परमात्माक संदेशवाहक जतेक पाँति वा रचना सबटा संत साहित्य नहि भेलेक जे प्रायः भ्रमवश कहि देल जाइत छैक। कखनो काल संत साहित्यमे लोक साहित्यक नाम जोड़िकऽ रचनाके संत-साहित्य कहब सर्वथा अनुचित हेतैक। किएक तऽ स+हित अर्थात् साहित्यक संग भाव युक्त रचना साहित्य तऽ कहल जेतैक एहिठाम संतवाणी कें सेहो संत साहित्य कहल जेतैक। मुदा जाहि विशेष पारिभाषिक आर मर्यादित रूपमे साहित्य शब्दक प्रयोग साहित्य शास्त्रमे कयल जाइत अछि, ओहि दृष्टिसँ संत-वाणीकें संत साहित्यक कोटिमे नहि राखल जा सकैछ। साहित्य तऽ कविक कर्म होइत अछि। काव्य प्रकाशकार मम्मट साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ एवं काव्य मिमांसक राजशेखर सम्पूर्ण वाङ्गमयकें दू भागमे विभक्त कयलनि अछि - काव्य आ शास्त्र।

काव्यक प्रसंग ओकर विषय-वस्तु पर विचार-विमर्शक पश्चात् स्पष्ट अछि जे ओहिमे लक्ष्य, व्यंग्य, रसात्मक, अलंकारक, ध्वनि एवं वक्रोक्ति आश्रय आदिक विवेचन वर्णनक संग छन्द कल्पनागत विचारकें भाषामय रूपसँ जोड़ैत अछि आ इत्यादि प्रकारक विशेषणकें शान्त रसक कोटिमे रखैत सख्य, दास्य वात्सल्य माधुर्य आ शान्त एहि पाँचोक सम्बन्ध जीवात्माकें परमात्माक संगे जे स्थापित कयल जाइत अछि निर्विवाद रूपें वैदिक कालसँ लऽ कऽ अखन धरि साहित्य ओकरे कहल जाइत छैक। एहि अग्रांकित लिखित जे साहित्यिक परिधिमे स्वभावतः संतक वाणीक वर्णन नितांत असंगत प्रतीत होइत अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक अन्तर्गत मैथिली संत-साहित्य मे जाहि प्रमुख संत साहित्यक उपर विचार-विमर्श कयल जायत ताहिमे चार्यापद सिद्ध साहित्य मे सँ आरंभ कय अद्यपर्यन्त धरि जिनकर संख्या अपरिमित अछि। मुदा एतेक तऽ अबस्से जे मिथिलाक मनिषी संत जिनकर रचनाक आधार चतुष्फल प्राप्तिक निमित्त लोक संग्रही आश्रय ग्रहण कए काव्य, प्रबंध-काव्य, महाकाव्य आदिक जनसाधारण परंपरागत श्रद्धा बनल रहैक जन-मानसकें विशेष रूपसँ उद्वेलित एवं प्रभावित कयलक अछि ओहि संत-साहित्यक विश्लेषण होइत अछि।

●●●

श्रोत-ग्रंथ

1. हिन्दी संत साहित्य का केन्द्रविन्दु - डॉ. संतनारायण उपाध्याय

2. उत्तरी भारत की संत परंपरा - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

3. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय

4. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य - पं. राजेश्वर झा

5. संत-अंक विशेषांक - गीताप्रेस

6. मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन - इन्द्र नारायण झा

7. मिथिलाक इतिहास - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर

8. मिथिलाक शाश्वत साधना - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर

9. ऋषि चर्चा - श्री महेन्द्र हजारी

10. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. दुर्गानाथ झा `श्रीष`

11. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. जयकान्त मिश्र

12. वेदान्त दर्शन (ब्रह्म सूत्र) -

13. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र

14. साहेब रामदास (मनोग्राफ) - श्री शंकर झा, (सा.अ., नई दिल्ली)

15. स्नेहलता - (मोनोग्राफ) - श्री योगानन्द झा, (सा.अ., नई दिल्ली)

16. व्रतपर्वोत्सव अंक संख्या - 1 गीता प्रेस, गोरखपुर

17. भगवत्प्रेम - अंक संख्या -1 गीता प्रेस, गोरखपुर

18. चण्डी दास - सुकुमार सेन अनुवादक - गोविन्द झा

19. छन्दोग्य उपनिषद -

20. मिथिला भाषा रामायण - कवीश्वर चंदा झा

21. रामेश्वर रचित मिथिला रामायण - लालदास कृत

22. श्रीमद्भगवद्गीता - गीताप्रेस

23. योग प्रवाह - डॉ. पीताम्बर बड़थवाल

24. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - श्री सुरेन्द्र झा सुमन

25. मैथिली दशरूपक - डॉ. देवकान्त झा

26. संत कवीबरक मैथिली पदावली - डॉ. कमलाकान्त भंडारी

27. संतमत का सरभंगी सम्प्रदाय - डॉ. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद)

28. सन्तमत: साधना और सिद्धान्त - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी (सनातन धर्म प्रबोधनी कुटीर वाराणसी)

29. सिद्धो की सन्ध्या भाषा - डॉ. मंगलविहारी शरण सिन्हा

30. सन्त साहित्य के प्रेरणास्रोत - परशुराम चतुर्वेदी (प्र. राजपाल एण्ड सन्स)

31. शब्द और अर्थ : सन्त साहित्य के संदर्भ मे : - डॉ. राजदेव सिंह (प्र. नन्द किशोर एण्ड बदर्स, वाराणसी)

32. अपभ्रंश और अवहट्ट : एक अन्तर्यात्रा-डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय (प्र.चौखम्भा औरियन्टालिया, वाराणसी)

33. बबजिया बोली - राम सिनेही भजनवली

34. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य - श्री शिवकुमार मिश्र

35. बौध दर्शन - पं. बलदेव उपाध्याय

●●●

दोसर अध्याय

मैथिली संत साहित्यक उत्स

मानव राभ्यताक इतिहारामे मिथिलाक अध्यात्मिक गौरवशाली अतीतक जे विशिष्टता जगत् विदित अछि। एहिठामक सभ्यता संस्कृतिक ज्ञान जे हमरा लोकनिकें प्राप्त होइत अछि से प्राचीन धर्म-शास्त्रसँ, जाहिमे एहेन प्रतीत होइत अछि जे मानवीय धार्मिक परंपराक अन्तार्गत मिथिलामे वसनिहारे `संत` थिकाह। जेनाकि हिन्दी साहित्यकोश भाग एक मे पेज 854 पर संतक प्ररांग लिखल छैक राधारणतया पवित्रात्मा, रादाचारी राधु-महात्मा कें रोहो `रांत` कहि देल जाइत अछि। कहबाक आशय एहिठामक पवित्रभूमिमे मानवीय चिंतनधारा जे रहल अछि तकर इरिहास साक्षी अछि। वेद-उपनिषदमे प्रमाणसँ भरल-पड़ल अछि। जहिया मानव आदिम स्वरूप मे छलैक, तहिया `मिथिलाक` ऋषि-मुनिगण वैदिक ऋचा आ उपनिषदक सूक्ति आदिक रचना कय मानव जातिकें अंधकार राँ प्रकाशक दिश एकटा विकरित राभ्यताक नीव गारि देने छलाह। एहिठामक मानव चिंतनक इतिहास अत्यंत विलक्षण, धार्मिक जीवनक भूमिका भारते नहि, वरण विश्वमे अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। वैदिक कालहिसँ मिथिला शिक्षा, साहित्य, धर्म, दर्शनक प्रधान केन्द्र रहल अछि। जनक, याज्ञवल्क्य कालीन मिथिला आर्य संस्कृतिक चरमोत्कर्ष पर छलैक। जनककें तऽ अहिठामक ब्रह्मज्ञानक प्रतीक मानल जाइत छनि। हुनकाराँ ज्ञान-प्राप्तक वास्ते संसारक प्रत्येक दिशासँ ज्ञान पिपासु मिथिला अबैत छलाह, जकर अकाट्य प्रमाण अछि ``जनको वैदेह`` प्रस्तुत उक्तिसँ स्पष्ट अछि जे दूरस्थ विद्वान-जिज्ञासु ज्ञान पिपासु मिथिला बिनु आएने अपन ब्रह्म विद्याकें अपूर्ण मानैत छलाह। अस्तु मानवीय धार्मिक परंपराक प्रतीक मिथिला, भाषा-मैथिली राहित्यक अंतर्गत ``रांत-राहित्यक इतिहारा जे अति राम्पन्न अछि। जाहिमे राष्ट्रीय स्वाभिमान ओ मानव जातीय गुणकें उत्कृष्टता प्रदान करैत अछि।

भारतीय वाङमयमे बैदिक कालहिसँ मिथिलाक सनातन धार्मिक आस्था ऋग्वेदक एकेश्वरवादी जे ब्रह्मवादी प्रवृति छलनि से कोनहु खास पंथ, संप्रदाय, मत सिद्धान्त, नियम-अनुशासनसँ कहियो सम्पृक्त नै भेलाह आ ने रुचिये रखलनि। एतबे नहि एहिठामक लोक कट्टरवादिताक रोगसँ दूर, आदि कालसँ अपन लोकजीवनमे पंचोदेवोपासनाक साकार ब्रह्म विशेषमे विश्वास रखैत छलाह। मिथिलाक अतीत शास्त्र पर आधारित रहल अछि। ``अवतारवादी`` अध्यात्मिक भावना एहिठाम प्रबल अछि। आम जनता-जनार्दन अपन दैनिक जीवनमे शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य ओ गणेशक उपासना मे लागल ब्रह्मवादी पवृत्ति जे भावना से क्रमिक दृढत्तर होइत रहल। विश्व कल्याणक अस्तित्वक रक्षार्थ यज्ञादि पर विशेष महत्व देल जाइत छलैक, पश्चात् क्रमिक दुरुहतासँ आम जनता विकल भेल धर्मसँ दूर रहबाक लेल बाध्य भऽ जाइत छलैक। एहेन

स्थितिमे मानवीय धारणा निरंतर प्रवर्तनक (Enforcement) कामना करय लागल। एहनो विषम कालमे मिथिलाक सनातन धर्मिक सिद्धान्त अन्यान्य प्रदेशक सनातन धर्मक सिध्यान्तसँ भिन्न ओ महत्वपूर्ण अछि। जतय अन्यान्य प्रदेशक सनातन धर्मिक आस्था भिन्न-भिन्न पंथ, सामुदाय, सम्प्रदाय, मत ओ सिद्धान्तमे बटि गेल छलैक। ओतय मिथिलामे मैथिली साहित्य अपन धार्मिक दर्शनक अस्तित्व पर सर्वसाधारणक लेल उपनिषदक सिद्धान्तक सविस्तर प्रतिवादन कयलक। ताहिमे ब्रह्म वा आत्माक अंतर्निहित जे परमतत्व तकर उपस्थापना कयलक। यज्ञ-अनुष्ठान आदिक विरोध भेलैक। नवीन धर्मक उत्थान भेलैक। वस्तातु: इएह नवीन धर्म `उपनिषद सिद्धान्त` जे मिथिलाक छलैक से सम्पूर्ण भारत मे ``दार्शनिक धर्मक`` बोध करौलक। जकरा ``ब्राह्मण युगसँ`` सेहो अभिहित कयल गेल। धर्म-दर्शनसँ समाजमे क्रांतिकारी परिवर्तन अयलैक से कलांतरमे मुदा विभत्स रूप धारण सेहो कयलक ब्राह्मण पुरोहित वर्ग अपन सीमाकें अतिक्रमण करय लगलाह, एकर चरम परिणति मिथिलामे पुन: एकबेर बौद्धिक विद्रोह भेलैक। उपनिषदक दार्शनिक लोकनि वस्तुत: **ब्रह्म एवं आत्माक** ज्ञानकें उच्चतम स्थान दैत जीर्ण-शीर्ण धार्मिक व्यवस्थाकें बहिष्कार कयलनि। मानव चिंतनक धारामे एकटा गौरवशाली एतिहासिक अध्यायक शुभारंभ भेल। जाहिमे मिथिलाक धार्मिक, दार्शनिक विचार कें महत्वपूर्ण स्थान छैक। अहीकालमे दर्शनसँ सम्पृक्त धर्म उपनिषद् वा वेदान्त दर्शनसँ ``सांख्य`` तार्किक दर्शनक निष्पति भेलैक जकर जन्मदाता कपिल छलाह। जिनका मनोविज्ञानिकक जनक सेहो कहल जाइत छनि। कहबाक आशय वेदान्त दर्शन आ उपनिषद् सभा मिला-जुला कऽ देखल जाइत अछि जे ब्राह्मण धर्मक चरमोत्कर्ष थिकैक। विद्वान लोकनि एहि विषय पर एकमत होइत गेलाह, जे वेदान्त दर्शन जनसामान्यक लेल कठिन ओ दुर्बोध अछि।

मिथिलामे असंतोषक भावना पनपि रहल छलैक। ताहि समय ई.पू. छठम शताब्दी मे बुद्धक आविर्भाव भेल छलनि हिन्दू धर्मक उन्नायक लोकनि बौद्ध धर्म ओ दर्शनक मार्ग प्रशस्त कऽ रहल छलाह। जतय शतपथ ब्राह्मणक रचना भेल छल, ओतय बौध धर्मक उदय भेल। आशय विदेह कोसल-शाक्य जनपद धरि एकर प्रचार-प्रसार मार्ग प्रशस्त भेलैक। ओना ई बात सत्य छैक जे `वेदान्त-दर्शन` समाजसँ दूर होइत जा रहल छलैक। मिथिला दर्शनक केन्द्र छलैक। मानवीय ज्ञानक समस्त शाखा जतय पल्लवित-पुष्पित भेल जाहिठाम आत्मा-ओ-ब्रह्मक विकास उपनिषद युगमे भेलैक। जाहिठाम ``**तत् त्वं असि**`` **तरित शोकं आत्मवित्**`` तथा ``**ब्रह्म विद् ब्रम्हैव भवति**`` आदि मूल मंत्र मिथिलाक देन अछि। जकर विश्लेषण वादक दर्शनकार पंडित-विद्वान लोकनि अपना-अपना ढंगसँ कयलनि। फलत: शंकराचार्य एवं वाचस्पति आदि उद्भट दर्शनकार लोकनि अपना-अपना क्षेत्रमे कार्य करय लगलाह। ताहि समय याज्ञवल्क्य सेहो अपन वृहदारण्यक उपनिषदमे जे विचार व्यक्त कयने छथि जे कमोबेश बौध धर्म ओ दर्शनक समरूपे छलैक। जनक राजवंशक तात्कालीन राजा ``कराल`` दुराचारी छलाह मिथिलाक-राजनीतिक इतिहास तिमिराच्छन्न होमय लागल छलैक।

मिथिलाक जनक राजवंश एवं लिच्छिवि मे प्रजातंत्र छलैक। प्राचीनकालीन मिथिलाक जनक वंशक राजा अत्यंत लोकप्रिय होइत छलाह ब्राह्मण साहित्यमे हुनका ``सम्राट`` कहि सम्बोधन कयल गेल अछि। मिथिलाक वंशानुगत शासन प्रणालीक व्यवस्थाक प्रसंग डॉ. उपेन्द्र ठाकुर अपन पोथी ``मिथिलाक शाश्वत साधना`` मे Page-10 पर लिखने छथि जे ``गिलगिट`` सँ प्राप्त बौध पाण्डुलिपिमे स्पष्ट अछि जे मिथिलाक शासन व्यवस्था दुराचारी भऽ गेल छलैक। व्याकुल जनता अपन सीमान्त प्रदेश वैशाली सदृश्य गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्थाक स्थापना कयलक। सुरक्षाक भावना सँ प्रेरित शक्तिशाली `वज्जी` संघक सदस्य बनि गेलैक।[8] एहि प्रकारें देखल जाइत अछि प्राचीनमे मिथिला वा तिरहुत वैशाली राज्यमे सम्मिलित छल। जकर प्रमाण बसाठक उत्खनमे (1903-04 ई. मे) पाओल गेल अछि।[9]

एतावता अध्ययन ओ अनुशीनलसँ स्पष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि जे मिथिलामे मैथिली भाषा साहित्यक प्रगतिक पथ पर चलबाक लेल गहन अध्ययन ओ खोजक आवश्यकता छैक। जे विषय प्रविध मिथिलाक `संत साहित्यक श्रोत धर्मशास्त्र सँ होइत ``बौद्ध धर्मक`` सेहो महत्वपूर्ण स्थान छैक। विकासक अवधारणा आधुनिक कालमे प्रबल भेलैक। विश्वक विभिन्न क्षेत्रमे अध्ययन ओ अनुशीलन आरंभ भेलैक। मिथिलाक ``ब्रह्मज्ञान`` प्रसिद्ध प्राचीन संस्कृत भाषा साहित्यमे पर्याप्त उल्लेख प्राप्त होइत अछि।

प्राचीनकालसँ प्रसिद्ध मिथिला शिक्षा, साहित्य, दर्शन ओ धर्मक प्रमुख केन्द्र रहल अछि। `सन्त-काव्यक` परंपरा तत्वत: ओहि काव्य रचना पद्धति दिश संकेत करैत अछि जे मानव समाजक मूल प्रवृति पर आश्रित अछि। संसारक प्राचीन धार्मिक साहित्य काव्यमूलक उक्ति स्रोत अध्ययन ओ अनुशीलनसँ `स्पष्ट अछि मौखिक लोकगीतक पश्चात मिथिलाक ``संत सामग्री प्राप्त होइत अछि, ताहिमे सम्पूर्ण भारतीय वाङमयमे वस्तुबादी आओर रहस्यवादी परंपरामे निर्मित छठी शताब्दी ईशा पूर्व भगवान बुद्धक आविर्भाव प्राप्त होइत अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक विकासक प्रक्रियामे धर्मस्रोतसँ अबैत ``वौद्ध धर्मक `` सेहो महत्वपूर्ण स्थान छैक। विभिन्न सांगोपांग अनुशीलनसँ ग्रंथक अन्वेषण प्रारंभ भेल। ओहि क्रममे म.म. हरप्रसाद शास्त्री 1916 ई. मे नेपालक यात्रा कयलनि जाहिमे हुनका तीनटा ग्रंथ भेटलनि जकरा ओ `बौद्ध गान ओ दोहा`` नामसँ प्रकाशित कएने छथि। एहिमे (क) चार्याचर्य विनिश्चय (ख) दोहा कोष एवं (ग) डाकार्णव तीनू ग्रंथकें ओ बंगला मानलनि मुदा एहि ग्रंथ सभक रचनाकाल आठमसँ एगारहम् शताब्दी धरि मानल गेल अछि। ओहि समयमे आधुनिक भाषासभ विकासोन्मुक छलैक तें भाषा विज्ञानी लोकनि ओहिमे भारतीय पूर्वाञ्चलक प्राय: सभ भाषाक रूप पबैत छथि। एहि ग्रंथक रचैताके `सिद्ध` कहल गेलैक।[10] आधुनिक विद्वानक विविध दृष्टिकोणसँ मैथिली भाषा साहित्यमे अपभ्रंशक महत्वपूर्ण स्थान मानल गेल छैक। मैथिली साहित्यमे आदिकाल सिद्ध साहित्यसँ मानल गेल छैक। जे प्राय: मैथिली भाषा साहित्यक इतिहासकार उद्धृत करैत छथि। सिद्ध काव्यसँ तात्पर्य बौद्धक `बज्रयानी`` परंपरासँ` मानल जाइत अछि। विद्वान पंडित राहुल

सांस्कृत्यायन, डॉ. के.पी. जायसवाल, म.म. उमेश मिश्र, डॉ. नरेन्द्र नाथ दास, डॉ. सुभद्र झा, शिव नन्दन ठाकुर, प्रो. रमानाथ झा, डॉ. जयकान्त मिश्र, इतिहासकार प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, प्राचीन इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, डॉ. दुर्गानाथ झा `श्रीश` डॉ, दिनेश कुमार झा, प्रभृति विद्वान अपन तर्क प्रस्तुत कएने छथि।[12] राहुल सांस्कृत्यायन, डॉ. काशी प्रसाद जयसवाल (सातम प्राच्य विद्या सम्मेलनक सभापतिक भाषण) म.म. डॉ. उमेश मिश्र (घोघरडीहाक सम्मेलनक अध्यक्षीय भाषण), नरेन्द्र नाथ दास (मि.मि.1930-31) डॉ. सुभद्र झा (Formation of Maithili Language) आदिसँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे चर्यापदक भाषा पूर्ण रूपेन विद्वान लोकनि मैथिलीक सम्पति मानने छथि। चर्यापदक शब्द एवं वाक्य खण्डमे प्रचूर मात्रामे मैथिली भाषाक प्रयोग भेल छैक। भाषायिक तौर पर सिद्ध साहित्य एकटा सार्थक प्रमाण अछि। ओना किछु सिद्ध तऽ मिथिलाक वासी छलाह जेना भुसुक, सरह, कान्ह, कुकरी शबर लूई आदि[13] एहि ग्रंथ सभक रचनाकाल आठम् शताब्दी मानल गेल अछि। ओहि समय आधुनिक भाषा सब विकासोन्मुख छलैक। सिद्ध साहित्यक भाषा मैथिलीक अपभ्रंश ग्रंथसँ मेल खाइत अछि। सिद्ध लोकनिक प्रसंग विशेष अनुसंधानसँ स्पष्ट होइछ जे ओ लोकनि गोरखपुर सँ भागलपुर धरिक क्षेत्र छलनि। ओ लोकनि जाहि क्षेत्रके अन्तर्गत स्थान बनौलनि हुनका रचना पर ओहि क्षेत्रक भाषाक प्रभाव छलनि। सिद्ध लोकनिक रचनामे जे स्थान आदिक वर्णन प्राप्त होइत अछि से मिथिलाक भौगोलिक प्रदेशसँ मेल खाइत अछि। सिद्ध साहित्यक प्रभाव वर्णरत्नाकर पर पड़ल अछि। एतबे नहि `चार्यापद`क जे शब्द विन्यास से आधुनिक मैथिलीसँ खूब मेल खाइत अछि। सिद्ध साहित्यक प्रभाव विद्यापतिक कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका ओ महाकविक पदावली पर स्पष्ट देखल जा सकैछ। चार्यापदमे खाँटी मैथिली शब्दक प्रयोग भेल अछि। चार्यापदक भाषा पूर्णरूपेण मैथिलीक अछि मैथिली साहित्य सँ वंचित नहि कयल जा सकैत अछि।[14]

चर्यापद मे रचित पद सभ चौरासी सिद्ध जे ``वज्रयानी भिक्षु`` आदिम मध्ययुगीन भारतक धार्मिक इतिहास मे प्रख्यात छथि। सिद्ध साहित्यसँ तात्पर्य अपभ्रंश दोहाकोश, डाकार्णव एव चार्याचय विनिश्चय जे प्राप्त होइत अछि। ओ पूर्णरूपेण भक्ति ओ साम्प्रदायिक साहित्य थिक जाहिमे रहस्य ओ गूढ़ भावनाक अभिव्यक्तिक संग उलटबॉसी शैलीमे रचल गेल छैक। जाहिमे सामाजिक जीवनक परिचित वातावरणसँ लेल गेल अछि। सिद्ध साहित्यमे योग एवं तांत्रिक साधना जन्य समाधिक वर्णन भेल अछि, मुदा एहि सभमे क्रमवद्धताक अभाव छैक। तेँ पद योजनाक अभिद्या अर्थ कयलासँ पाठक आदिकेँ कुत्सित अर्थ प्रकट होइत छैक। रहस्यभावना एवं प्रतीकशैलीक अर्थ दुरुहताक कारणे एहिमे `संध्याभाषाक` प्रयोग भेल अछि।[15] ओना टीकाकारक अध्यवसायसँ स्पष्ट भेल अछि जे भाषाक क्रमिक विकाससँ मैथिली भाषा साहित्य `प्रकृति`` - मागधीसँ होइत `अपभ्रंश` द्वितीय प्रकृतिमे एवं `अवहट्ट` जाहिठाम हमर मुखभाषा विद्यापतिक कीर्ति स्पष्ट `कीर्तिलता` ओ कीर्तिपताका नामे मैथिली पूर्ण विकसित भारतीय भाषाक रूपमे दृष्टगत होइत अछि।[16]

उपर्युक्त अध्ययन ओ विवेचन करबाक हमर अभिप्राय जे सिद्ध साहित्य मैथिली साहित्यक प्राचीनतम पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि। आ विद्वान लोकनि मैथिली संत साहित्यक परंपराक आविर्भाव सिद्ध साहित्यक बज्रयानक परंपरासँ मानैत छथि। मिथिलाक अध्यात्मिक संस्कृति जे ज्ञानक व्यापक विश्लेषण भेल ताहिमे पंचोदेपोपासनाक जाहिमे ब्रह्म ज्ञानक प्रमुखता छलैक। `संत` भावनाक जे परिदृश्य मिथिलामे छलैक जाहिमे वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, जातिभेदक जे मिथक तकरा सिद्ध लोकनि मुक्तिक मार्गक लेल असंभव मानलनि तथा ओ लोकनि अन्तर्मुखी योग एवं अन्त:साधना पर विशेष जोर देलनि - सरहपा लिखैत छथि - '

पंडितसऊलसत्त बक्खाणई। देहहि बुद्धं बसंत जाणइ
अमणागमण णतेनविखढिऽअ। तोंवि णिइलज्ज हउँ पंडिअ।।

----- ------- -----

जाहि मन पबन न संचरइ, रवि ससि नहि पबेस।
तहि बट चित विराम करू, सरेहे कहिअ उदेश।।
घोर अंघारे चन्दमणि जिमि उज्जोअ करेइ।
परम महासुख एखु कणे दुरिअ अशेष हरेइ।।
जीवंतह जो नउ जरइ सो अजरामर होइ।
गुरू उपरूसे विमलमइ सो पर घण्णा कोई।।

एहि प्रकारें उपर्युक्त विवेचना करबाक जे हमर तात्पर्य से अखनो धरि विद्वान साहित्यकार आदिक बीच चोचाहंत होइते रहैत अछि। पूर्वोत्तरक साहित्यकार लोकनि सिद्ध सहित्यक प्रसंग मिथ्या टंग घीची मे पड़ल रहैत छथि। सिद्ध साहित्यक जे शब्द विन्यास तकर अध्ययन ओ मननसँ स्पष्ट अछि जे मैथिली भाषा साहित्यक ई अपभ्रंश रूप अछि। ओना पंडित राहुल सांस्कृत्यायनक कहब छनि जे भगवान बुद्ध लोकभाषाक अनुशरण करैत सिद्धक भाषाकें संध्या भाषा वा संध्या भाषामे ब्राह्मण पंडितकें खौझेवाक लेल प्रतीक प्रयोग कयल अछि।[॰]

सिद्ध साहित्यक विषय-वस्तु योगिक सिद्धान्त पर आधारित रहस्यवादक अछि। बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार अनेक रूपें होमय लागल शाखा-प्रशाखाक विस्तार होमय लगलैक `चार्यापदक` विषय परम रहस्यमय बौद्धकालीन सहजतावादक एवं रसात्मक-योगात्मक सिद्धांत पर आधारित साधना पर केन्द्रित अछि। सिद्ध साहित्यक प्रसंग संस्कृतक विद्वान सभ अनेक टीका लिखलनि अछि। डॉ. जयधारी सिंह सेहो व्याख्या कयलनि सामाजिक एवं भाषात्मक तत्वक विवेचन अवश्य कयलनि अछि मुदा ओहो एक विशेष सांकेतिक भाषा कहि एकर दुरुहताक अग्रिम विद्वानक मतकें स्वीकार कयलनि अछि। मुदा पंडित विधुशेखर शास्त्री एकरा आंतरिक वाणी (Intentional Speech) कहब एखन बेसी समर्थित भऽ गेल, वनस्पति साँझक भाषाक अपेक्षा[॰] मैथिली साहित्यमे चार्यापदक विशेष महत्व छैक संस्कृत उद्भट श्लोक अपभ्रंश वा देसिल वयनाक ओहि `पद` वनयबाक परंपराक बीच श्रृंखला जोड़ैत छैक जे प्रकृति अपभ्रंश-अवहट्ठक संग विद्यापतिक

मुखभाषा देसिल बयना मुखरित भेल अछि।

पुरान युग आ नवीन प्रकृतिक समावेश `ब्राह्मण युगक` अवसानक मार्ग खुजि गेल धर्मक दुरुहतासँ जनसाधारण उबि जेकाँ गेल छलैक। नवीन विषय-वस्तुक आगमन जे बौद्ध धर्मक रूपमे समाजक बीच प्रचारित-प्रसारित होमय लागल मौलिक सिद्धान्तमे महान अंतर होमय लागल। मुक्तिक लेल हठयोग एवं तंत्र मार्गके सर्वश्रेष्ठ कहल गेल। टीकाकार लोकनि जे व्याख्या कयल ताहिसँ ई प्रतीत होइत अछि जे सिद्ध लोकनिक वाणीमे साम्प्रदायिक स्वरूपक झलकी अबैत अछि। एहि प्रसंगके आर स्पष्ट करैत Dr. S.K. Chatterjee लिखैत छथि - The subject matter is highly mystic, centering round the esorteric doctrines and erotic and yogic theories and practices of (Later) Budhism or Sahajiyas."

एतद् कहबाक आशय संत काव्यक प्रसंग कहल गेल अछि जे सन्त काव्य भाव प्रधान होइत अछि। गंभीर सँ गंभीर भावकें सदा सर्वसाधारणक भाषामे व्यक्त करैत अछि। सन्त काव्यक वर्ण्य विषयक विशेषता होइछ, जे ओ धार्मिक एवं दार्शनिक कहल जाइछ ओहिमे परम तत्वक चर्चा अबैत अछि, वस्तुत: अज्ञेय एवं अनिवर्चनीय स्वरूपक यथासाध्य परिचय कराओल गेल रहैत अछि आ ओकरा संग जगत एवं जीवकें वास्तविक सम्बन्धक वर्णन करैत छथि। सन्त लोकनि अपन रचनामे ओहि अव्यक्त सत्ताकें विलक्षण व्यक्तित्व प्रदान करैत बुझाइत छथि। अस्तु सिद्ध काव्यमे साहित्यक वृन्त पर जनभाषाक कनोजरि छोड़लक संस्कृत भाषासँ दूर ओहिमे जनताक मनोबृतिसँ प्रेरित जे नवीन प्रयोग भेल, से सिद्ध लोकनिक जे धार्मिक भावनाक श्रृष्टि भेल अछि, सएह सिद्ध साहित्यक रूपरेखा प्रस्तुत कयलक अछि। वज्रयान` सिद्ध साहित्यक बौद्धसँ सम्बन्धित एकटा परंपरा अछि जकर अन्त: साधना किछु हठयोग पर आधारित अछि। जाहिमे संयमक ओतेक स्थान नहि रहि जाइत छैक। मुदा संत साहित्यक प्रसंग अखन धरि जतबा अध्ययन ओ अनुशीलन कयल अछि प्रसंगे कही तऽ `संत` जे सत् रूपी परमत्त्वक अनुभव कऽ लैत छथि आ अपन व्यक्तित्वसँ उपर उठिकऽ ओकरा संग तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कऽ लैत छथि, संगहि आत्मनिष्ठ होइतो समाजमे निश्वार्थ भावसँ विश्व कल्याणमे अपन धारणा ओ प्रवृत बनेने रहैत छथि, ओएह संत कहबैत छथि।

अतएव चार्यापदक जे व्याख्या भेल अछि - `चार्या` शब्दक अभिप्राय आचरणीय वा आचरण सँ कयल गेल अछि जे बोधि किंवा बुधत्व प्राप्त करबाक लेल जे पालन कयल जाइत अछि। पद शब्द पद्य कें सूचित करैत अछि जे छन्दबद्ध होमक चलते गेयत्व गुण सँ युक्त रहैत अछि, तें एकरा चार्यागीत कहल जाइत अछि। अस्तु आब गीति शब्दक प्रयोग बज्रगीति, दोहा गीति सबकें ओना म.म. हरप्रसाद शास्त्री वैष्णव कीर्तन-गानक भाँति मानलनि अछि। श्रीमद्भागवतगीतामे वर्तमान प्रमुख साधनाक प्रसंगो समन्वय द्वारा सर्पोपयोगी मार्ग निकालबाक चेष्टा कयल गेल अछि। एहि प्रसंग एहन मानल गेल अछि जे सभ प्रकारक विचार रखैवलाक लेल ई आसान होयत। गीता मे ओना कहल गेल छैक जे शास्त्र विधि छोड़िकऽ चलऽवलाकें सिद्धि नहि भेटैत छैक आ ने सुख मुदा उत्तम गति प्राप्त होइत छैक।

हमर आशय ``संत`` साहित्यक अध्ययन अनुशीलनसँ `संत सिद्धान्त सहजताक प्रतीक अछि। संतक जीवन मे सहज साधनाक वर्णन भेटैत अछि। कोनो मार्ग विशेषक प्रति आग्रह नहि रहैत अछि। ओ एक प्रकारक आचरण होइत अछि। आ ने कोनो पद्धति विशेषक प्रति कोनो नियम अछि। `संत` पवित्रात्मा सदाचारी पुरुषक रूप मानल जाइत छैक।

उपर्युक्त अध्ययन प्रसंगसँ ई स्पष्ट भऽ रहल अछि जे `सिद्ध` लोकनिक जे सिद्धान्त से ओ चित्तक सत्ताकें स्वीकार करैत छथि, संसारकें चित्तक भ्रांति मानैत छथि। सिद्ध लोकनिक रचनाक विषय-वस्तु विज्ञान वादक परमार्थ सिद्धान्त कहल गेल अछि। आशय `**अद्वयार्थोहि परमार्थः** सिद्ध लोकनिमे निम्न कथन हम उधृत करैत छी : - बौद्ध परंपरामे चौरासीटा सिद्धक वर्णन भेटल अछि जे ``**चौरासी सिद्धो का वृतान्त**`` नामक ग्रंथसँ प्राप्त होइत अछि जे तिब्बती परंपरामे व्यवस्थित अछि। पंडित राहुल सांकृत्यायन हिन्दी काव्यधारामे प्रमुख सिद्धक रचना सभकें उल्लेख कएने छथि। जे हो विषय-विषयांतरक अपेक्षा चौरासी-सिद्धक नाम उल्लेख करब आवश्यक। ई चौरासी सिद्ध हमर विषयक संग ``संत साहित्य``क प्रसंग ``बौद्ध धर्मक सम्बोधित वज्रयानी सम्प्रदायसँ संपर्कित छथि, जे चार्यापदक रचैता छलाह। एहि चौरासी सिद्धक नाम सूचीक आधार तिब्बतक शाक्य विहारक पाँच प्रधान गुरूक ग्रंथाबली अछि जे तेर्गी मठसँ छपल छैक आ खूब प्रमाणिक सिद्ध भेल अछि। यथा :-

(1) लुइपा (2) लीलापा (3) विरूपा (4) डोम्बिपा (5) शबरपा (6) सहरपा (7) कंकालीपा (8) मीनपा (9) गोरक्षपा (10) चौरंगिपा (11) वीणापा (12) शांतिपा (13) तन्तिपा (14) चमारिपा (15) खड्गपा (16) नागार्जुन (17) कण्हपा (18) कर्णरिपा वा आर्यदेव (19) थगनपा (20) नारोप (21) शालिपा (22) तिलोपा या तिल्लोपा (23) छत्तपा (24) भद्रपा (25) दोर्खधि वा दिखंडिपा (26) अजोगिपा (27) कालपा (28) धोम्मिपा (29) कंकणपा (30) कमर वा कंबलपा (31) डंगिपा (32) मदेपा (33) तंधेपा तंतेपा (34) कुकरिपा (35) कुचि वा कुसूलिपा (36) महीपा वा महिलपा (37) अचिंतिपा (38) भलह `भवपा` (39) नलिनपा (40) भुसुकपा (41) इन्द्रभूति (42) मेफोपा (43) कुमालि `कुछलिपा` (44) कमरि वा कम्पारि (45) जालन्धरपा (46) राहुलपा (47) कर्वरि, धर्मरिपा (48) धोकरिपा (49) मेदनिपा (50) पंकजपा (51) वज्रवा घंटापा (52) जोगीपा (53) चेलुकपा (54) गुंडरीपा (55) लुचिकपा (56) निर्गुणपा (57) जायनप्त (58) चर्पटी वा पचरीपा (59) चम्पकपा (60) भिखनपा (61) भलिया (62) कुमरिया (63) चवरिया (64) मणिभद्रा वा योगिनी (65) मेखलापा वा योगिनी (66) कनखलापा (67) कलकलपा (68) कंतालीवा कंथालीपा (69) छहुलि वा छहुरिपा (70) उधलि या उधारिपा (71) कपाल वा कमलपा (72) किलपा (73) सागरपा (74) सर्वभक्ष्या (75) नागबोधिपा (76) दारिकपा (77) पुतुलिपा (78) पनह वा उपानहपा (79) कोकलिपा (80) अनंगपा (81) लक्ष्मीकरापा योगिनी (82) समुदपा (83) भलि या व्यालिपा।

नोट : (चौरासी सिद्धक नाम एवं भगवाने बुद्ध आर हिन्दी काव्य लेखिका वसुन्धरा मिश्रक पोथी पेज 66 एवं 67 सँ लिखल क्रमिकताक भूलसँ मात्र 83 सिद्ध नाम भेटि रहल अछि।)

`संत` शब्दक व्याख्या ओ जे व्यक्तित्व से सब साहित्यमे ओहि सिद्धान्तकें समाने रूपमे अपनाओल जयतैक। **मैथिली संत साहित्यक उत्स**क प्रसंग जे एकटा अनुशीलनक विषय बनल अछि ताकर चर्चा मात्र हमहीं कऽ रहल छी से नहि, अपितु वेद-पुरान-गीता जे संत साहित्यक ओ सिद्धान्तक प्रसंग सबसँ प्रिय ओ प्रमाणिक ग्रंथ अछि। संत तऽ सत् रूपी परम तत्वक अनुभव करैत छथि आ अपन व्यक्तित्वसँ उपर उठिकऽ ओकरा संग तादात्मय सम्वन्ध स्थापित करैत छथि एतबे नहि आत्मनिष्ठ होइतो समाजमे रहैत निश्वार्थ भावसँ विश्व कल्याणमे अपन धारणा आ प्रवृत्त बनेने रहैत छथि। शास्त्र विहित `संत` कहबैत छथि।[1]

अतएव हम जाहि विषय प्रविधकें अध्ययन ओ विश्लेषणक दोसर अध्याय`` मैथिली संत साहित्यक पूर्व मैथिली भाषा साहित्य पर देववाणीक व्यापक प्रभाव छैलक। आ संस्कृतक प्रसंग महिकवि कहने छथि : -

`सक्कय वाणी बहुअ न भाबइ``

लोकभाषा साहित्य सजल संबलमय होइतो लोक परलोकक पथमे भ्रमित संस्कृतक अक्षय भंडार मिथिलामे जे वैदिक संस्कृत साहित्यक`` जे प्रभाव लोक-परलोकक धारणा मे[2] मैथिली भाषाक प्रगति पथ अवरूद्ध छलैक। मैथिली साहित्यक विकास श्रोत मे तऽ धर्मश्रोतक योगदान विशेष रहलैक अछि। सिद्ध लोकनिक रचनामे ``वज्रयानक`` जे सम्प्रदाय जाहिमे 84 गोट सिद्ध अपन सहजरसक उद्‌भावनाक अभिव्यक्ति कयलनि अछि। सिद्ध लोकनि ``अद्योर्थहि परमार्थ``क सिद्धान्त जाहिमे शून्य तथा अशून्य, अभाव तथा भावक अध्ययन.... भए जाइत अछि यथा उक्ति अछि -

लुइपा-भाव न होइ अभाव जाइ -
भुसुकपा-भावाभाव द्वन्दल दलिया -
कान्हपा - अवणागमणे कान्हु बिमणा भइला -
दारिकपा - अलक्ख लक्खइ चिर महासुहें -[3]

एहि उपर्युक्त पाँतिक अवलोकनसँ सिद्ध लोकनि अद्वयक सिद्धिक वास्ते चित्तक सत्ताकें स्वीकार कयलनि अछि। वैदिक ग्रंथ आत्मा-परमात्माक सत्ताक आधार मानलनि अछि, ओहिठाम सिद्ध लोकनि जगत् मिथ्याक आशय संसारक अस्तित्वकें बाह्य नहि अपितु चितगत बुझैत छथि। सिद्ध लोकनि चितगत्व सत्ताकें स्वीकार करैत छथि आ एतबे नहि बाह्य संसारकें अपन चितगत अस्तित्व मे आनय चाहैत छथि, ओ एहि वाह्य सांसारिक भ्रांतिकें अपन चित्तमे वास्तविक स्वभावक अनुवन्ध कऽ लैत छथि, ओहि समय ओ अर्थात् `सिद्ध` लोकनि स्थान-स्थान पर जगतकें चितगत सेहो कहलनि आ ओकरा अभ्यांतर एवं वाक्य भिन्नताकें भ्रांति मानि दुनूकें एकताक प्रतिपादन कयलनि अछि यथा ``तिलोपा`` स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि :-

``एहु से अप्पा एहु जगु जो परिभावइ
णिम्मल चित्त सहाव सोकि बुझ्जइ।।``[4]

अर्थात् निर्मल चित्त स्वभावसँ देखला पर इएह परिभावना होइत अछि जे आत्मा अछि सएह जगत थिकैक। आत्माक भेद करब एकटा भ्रांति अछि। ``सरपहा`` सेहो कहैत छथि :-

``पर अप्पाण म भन्ति करू सअल निरन्तर बुद्ध।``

पुन:-जिम बाहिर तिम अभ्भन्तर

चउदह भुवणे ठिअउ निरन्तर।।

आशय दुनकूँ एक बुझबाक लेल कहैत छथि जएह अभ्यंतर छथि सएह वाह्य अछि। एके तत्व चौदहो भुवनमे निरंतर स्थिति अछि। इएह तत्व चितकें निरालम्ब स्थितमे रखैत छैक। एकरा कोनो अन्य रूपमे देखब भ्रांति होयत।

उपर्युक्त वर्णनमे -`सिद्ध`क धारणाक जे अनुभव से सर्वत्र स्पष्ट अछि। मुदा सिद्धक रचना प्रसंग जे विशेष प्राय: सबठाम रहस्यवादी (mystic) वर्णन देखल जाइछ। आम धारणा इएह देखल जाइछ जे संसारक माया-मोहक त्यागक प्रसंग मोनके मूस, कतहु वीणा, कतहु हाथी आदिसँ तुलना कय रहस्यवादी रूप दर्शित करय चाहैत छथि।

सिद्धक साधना विद्वान लोकनिक कथनानुसार जे हठयोग पर आधारित छनि। ओहिमे संयमक ओतेक स्थान नहि छैक। हमरा जनैत जतवा बुद्धक सिद्धान्त अष्टांग मार्ग आर विविध नियम, ओ सम्यक दृष्टि देखाओल गेल अछि से कलांतर मे एहि धर्म ओ सिद्धिक जे सिद्धान्त सिद्ध लोकनि गढ़ला ओ `संतक` भावनाक संग मेल नहि खाइत अछि। ईशापूर्व दोसर शताब्दीमे बौद्धक पलड़ा भारी छलनि। मुदा तेसर चारिम शताब्दीमे सामन्त-ब्राह्मणक हाथमे चलि गेल। पुन: ओहिमे ``प्रौढ़-दर्शन`` आम जनताक वीच आबय लागल। ब्रह्मचर्य ओ भिक्षु जीवन पर जोड़ देमय जाय लगलैक, ढोंग बढ़य लगलैक। **पतंजलिक हठयोग जाहिसँ वज्रयान प्रभावित बुझना** गेल अछि। ओना पतंजलीक हठयोग दक्षिण मार्गी छनि। बज्रयानक मार्ग बाममार्गी जतय पञ्चमकार सिद्धान्त पर वसीभूत भऽ जाइत छनि। हिनका लोकनि विश्वास छनि -

मद्यं मासं च मीनं च मुदा मैथुन मेव च।

एते पञ्चमकारा: स्यु: मोक्षदाहि युगे-युगे।।

सिद्ध साहित्य मैथिलीक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि। सिद्धक भाषामे विद्वान सभ एकमत नहि छथि ओ लोकनि अपन-अपन चश्मासँ देखैत छथि म.म. उमेश मिश्र मिथिलाक पूर्वी भागक भाषा मानल अछि। अस्तु सिद्धक भाषाक प्रसंग जतेक तथ्यात्मक प्रमाण सब प्राप्त भेल अछि, ताहिसँ ई कहबामे कोनो तारतम्य नहि। सिद्ध काव्य मैथिलीक आदि भाषा अछि। तैं सुनीति कुमार चटर्जी चार्यापदक भाषाके मागधी अपभ्रंशक उत्तराधिकारी माललनि अछि। जे हो मैथिली भाषाक विकासक प्रक्रियामे धर्मस्रोत, सभ्यता-संस्कृति, आचार-विचार रहन-सहन, रीति-रिवाज, **जीवन प्रणालीक जे प्रक्रियामे यूरोपमे जएह महत्व युनान आ रोमक छैक सएह महत्व भारतक भूखण्ड पर मिथिलाक छैक।** विश्वक एकटा विकसित सभ्यताक प्रमाण प्राचीन मूर्ति, अभिलेख ओ वेद-पुराण पुरातात्विक स्रोतसँ प्राप्त होइत अछि। तें सिद्ध साहित्यमे संत साहित्यक भावनाक पुष्टि होइछ।

अस्तु सिद्ध साहित्यक प्रसंग तारानाथक अनुसार असंगसँ धर्मकीर्तिक समय धरि तंत्रक परंपरा गुप्त छलैक। मैथिलीक आदिकालीन भाषा सिद्धक छनि, लोकभाषा मे रचना अछि। जीवनक प्रति स्वीकारोक्ति अछि। एहिमे दू भाषाक संधिस्थल अछि तें किछु तऽ विभ्रम होयब स्वाभाविके ओना ई. पूर्व दोसर शताब्दी धरि बौद्धक पलड़ा भारी छलनि मुदा तेसर चारिम शताव्दीसँ एकर अवस्था खराब होमय लगलैक। ताहि प्रसंग कहल जाइत छैक जे छठी शताब्दी धरि हर्षक काल तक बौद्ध धर्मकें राजकीय सहायता प्राप्त होइत छलैक। पश्चात् राजकीय सहायता बंद भेला पर बौद्ध धर्मक अनुयायी लोकनिकें जीवन-यापन कठिन भऽ गेल छलनि। चारिम शताब्दीमे एक बेर फेर ब्राह्मण सामन्त सब समाज पर हाबी भऽ गेलैक परिणाम सिद्द लोकनि अपन दिङ्नाग-आ-धर्मकीर्तिक जे एक प्रौढ़ दर्शन छलैक तकरा सामने लयबाक प्रयास कयल। ताहि चकाचौंधक दुनियाँमे तंत्र-मंत्रक साधनाक मार्ग दिश प्रवृति कयलनि। सबसँ पहिने एहि प्रकारक महामुद्राक साधनामे राहुल सांकृत्यायन जीक अनुसार `सरहपाक` आधार काल छनि जे 800 सँ 1200 ई। धरि मानल जाइत अछि।

हजारी प्रसाद द्विवेदीक अनुसार सरहपाक संदेश 8 वीं शदी धरि मानलनि अछि। जे बज्रयान-महायानक संधि काल मानल गेल अछि। काल धरि राज्याश्रित बौद्धक स्थिति नीक छलनि। पाल सम्राट धरि एहि वंशमे चंद्रवंश नामक एकटा सिद्ध राजा भेलाह एहि कालमे अधिकांश सिद्धक आविर्भाव भेलनि। ओ लोकनि बिलासी होइत गेलाह क्रमिक वैदिक परंपराक प्रभाव बढ़य लगलैक पश्चात् सिद्ध लोकनि वैष्णव तथा शैव धर्मक प्रभावमे भगवानबुद्ध बोधि सत्य, तारा आदि हिन्दू धर्मक देवी देवता बनि गेलाह।[८]। पुन: अध्ययन सँ स्पष्ट होइत अछि जे `गुप्त` कालसँ प्राय; बौद्ध धर्मक ह्रास आरंभ भऽ गेल रहैक। परिणामत: सिद्ध लोकनिक मार्ग जीवन-यापन आदि प्रकारक आचार-विचार मे विकृति आवय लगलैक। हर्षवर्धन धरि उतरी भारतमे सिद्धक स्थिति प्राय: सुदृढ़ छलैक। ओहि समय उड़ीसामे राजा इन्द्रभूत छलाह जिनकर गुरु अनंग वज्र छलखिन जे स्वयं एकटा सिद्ध `अनंगपा` नामे प्रसिद्ध छलाह, जे राजा इन्द्रभूतक समयसँ पूर्वहि बौद्ध तंत्रक रचना कय चुकल छलाह। प्राप्त प्रमाणक आधार पर पश्चात् बौद्ध तंत्रक पोथीक पांडुलिपि जे संस्कृतमे लिखल अछि - हेवज्रतंत्र बज्रवाराही, क्रिया सम्मुच्य, वज्रवली, योगिनीजाल आदि सँ सिद्ध होइत अछि।

म.म. हरप्रसाद शास्त्री `सहजिया` संप्रदायक समय 9वीं शताब्दी मानलनि अछि। अध्ययन सँ ई कमोवेश स्पष्ट होइत अछि जखन सिद्द लोकनिक आर्थिक दशा विपन्न होमय लगलनि तखन ओ लोकनि विभिन्न धर्म-संप्रदायमे घूमि-फिरि जीवन-यापन करय लगलाह जे वज्रगर्भ तंत्रराजसूत्रमे वर्णित अछि। दक्षिण भारताक सम्राट वीरदत्त श्रद्धा आ विश्वासक संग अनुत्तर धर्मक शिक्षा लय महायानमे दीक्षित दाखिल भेलाह।[९]

सिद्ध साहित्य ओ सिद्धक प्रसंगमे अध्ययन ओ ओनुशीलनसँ ई स्पष्ट अछि जे ओ धार्मिक प्रवृत्तिके छलाह ताहि प्रसंगे समय कालक महत्व खूब बेसी छैक। एहि प्रसंगे राहुल

सांस्कृत्यायनक जे ओ गणना ओ वंशवृक्ष अत्यंत उपयोगी अछि। धर्मवीर भारती तारानाथक वनस्पति राहुल जीक गणना पर विशेष विश्वास रखलनि अछि।

राहुल जी मंत्रायनक विकासक समय विभाजित करैत लिखलनि अछि -

(1) सूत्र रूपमे मंत्र-ईसा पूर्व-400 सँ 100 ई.।

(2) धारणीमे मंत्र ईशा 100 सँ 400 ई.।

(3) तंत्रमंत्र - ईशा 400 सँ 700 ई.।

(4) वज्रायन - ईशा 800 सँ 1200 ई.।

मैथिली सहित्यमे संत साहित्यक प्रसंग ``वज्रायन`` शाखाक महत्व ``सिद्धसँ`` अछि। इएह सिद्ध कवि जे 84 टा सिद्धक परंपरा कायम भेल अछि। जकर सम्पूर्ण नाम पूर्वक पेज पर उल्लेखित अछि। एहि बज्रायन सिद्ध कविक समय एहि प्रकरें देल गेल अछि -"

(1) 800 ई. सँ 875 ई. धरि - सरहपा, शबरपा, लुईपा आ समकालीन।

(2) 875 सँ 925 ई. मत्स्येन्द्रनाथ और हुनकर समकालीन।

(3) 925 सँ 1000 ई.-गोरख, जालन्धरी, कन्हपा समकालीन।

(4) 1000 ई. सँ 1100 ई. -तिलोपा, नरोपा, मैत्रीपा एवं समकालीन।

सिद्ध परंपराक प्रसंगमे ``चौरासी सिद्धक वृतांत`` नामक ग्रंथसँ जाहि दू प्रकारक परंपराक परिचय प्राप्त होइत अछि, ओहिमे पहिल - कार्दियरक तंजूरक सूची आ दोसर काजीक द्वारा लिखल चक्रसंवरतंत्रक भूमिकासँ उद्धृत भेल छैक। पहिल परंपारमे पद्मबज्र-अनंगवज्र-इन्द्रभूति, भगवती, लक्ष्मीकर लीलावज्र, दरकिपा, सहजयोगिनी, चिन्ता, डोम्बी, हेरुक आदि छथि। जखनकि दोसर परम्परामे सरह, नागार्जुन, शबरीपा, लुइपा-बज्रधराटा-कच्छप-जालन्धरी-कृष्णाचार्य-गुह्यपा विजयपा-तिलोपा-नरोपा आदि छथि।

सिद्ध साहित्यक रचैता लोकनि खूब प्रतिभा सम्पन्न छलाह जे अपन अलौकिक चमत्कारसँ ई वज्रयान सम्प्रदायक अनुयायी बाममार्गी बौद्ध धर्मक विकृति रूप लय पूर्वी भारतमे विशेष प्रचलित छलैक। गोरखपुरसँ आसाम धरि आ मिथिलामे भागलपुरमे हिनका लोकनिक स्थान छलनि। नालंदा आ विक्रमशीला हिनका सबहक केन्द्रस्थल छलैक। नालंदा ओ विक्रमशील विद्यापीठ जखन बख्तियार खिलजीक आक्रमणसँ नष्ट-नाबूत भऽ गेलैक तखन सिद्ध लोकनि गंगाक अहिपार आबि समस्त क्षेत्रमे पसरि गेलाह। किछु अन्यत्र सेहो चल गेलाह। जेहो ई सिद्ध लोकनि अपन-अपन मतवादक प्रचार-प्रसार देशीभाषाक संग अपभ्रंश मिश्रित पद सबहिक रचना करय लगलाह जे मिथिलेटामे नहि अपितु, समस्त रचनाक अध्ययन अनुशीलन सँ ई भ्रांति समीचीन बुझना जाइछ जे भाषा सबहिक साम्यतासँ विभ्रम उत्पन्न होइत छैक। मुदा वास्तविकता तऽ इएह अछि जे बौद्ध सिद्धान्तके लऽ कऽ चलनिहार ``सिद्ध`` जे अपन रचना आ ओहिमे गेयता जे छलैक, जाहिमे लोकभाषाक प्रभाव आ प्रवाह ताहिसँ जे कहल गेल अछि जे संतक भाषामे सर्वसाधारणी करण होमक चाही, संतक उद्देश्य अपन रचनाक माध्यमसँ सहृदयी जनकक आकर्षणक मात्र केन्द्र

नहि, अपितु, सांसारिक प्रपंचमे पड़ल लोकक सत्यसँ परिचय करायब छैक।43 जे सिद्ध लोकनि वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, जाति-भेदक आदिक फेरमे मानव जीवनमे मुक्ति नहि प्राप्त भऽ सकैत छैक। ओ लोकनि अन्त:साधनापर, ओ अन्तर्मुखी योग पर बेसी जोर देलखिन। सरहपा लिखैत छथि--

पंडित सउलसत्त बक्खाणई। देहहि बुध बसंत जाणइ-।

अमणगमण णतेनबिखडिअ। तोंबि णिलज्जउँ

एतद् सन्त काव्यक वर्ण्य विषयक प्रसंग कहल गेल छैक, जे विशेषतर विषय धार्मिक एवं दार्शनिक होइत अछि। एहि विचार विशेष पर ध्यान केंन्द्रित करैत अनुभवसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली संत साहित्यक उत्स एतहिसँ मानल जा सकैत अछि। एहि प्रसंगमे भऽ सकैत अछि कियो कत्तहु विवाद ठाढ़ करता ताहि परिप्रेक्ष्यमे उड़िया बावाक विचार जे व्यवहारिक दृष्टिये संतके दू भागमे बाँटल जा सकैत अछि, ताहिमे एकटा ``आचार्य`` कोटि आ दोसर ``अबधूत`` कोटिक संत श्रेणी मे सिद्ध संतें रखबाक चाही। कहल गेल अछि जे अवधूत कोटिक संतक आचरण आ उपदेश अनुकरणीय नहि होइत छैक। हुनका विरले पुरुष चिन्हैत छथि। कारण हुनकामे निरपेक्षता, भगवत्परायणता, शांति, समदृष्टि, निर्ममत्व अहंकारशून्यता, द्वन्दहीनता और निष्परिग्रह आदि गुण रहैत छनि आ ओ होइत मुदा संत छथि। सिद्ध कणहपा कहैत छथि-

``लवणो जिमि पाणीहि विलिज्जइ

तिमि धरणी लइ चित्त`` ।[45]

धर्मक नाम पर हठयोग के अपन साधनाक सम्वल बनौलनि आ उठयोहिक समान `घट` के महत्व दैत छथि तें ओ सगुण वादक निकट बुझना जाइत छथि, मुदा साधनाक लेल ओ निर्गुणबादकें स्वीकार करैत छथि. जेनाकि पहिने सरहपाक उक्ति लिखने छी, जे शून्य स्थान पर पहुँच कऽ साधक महासुखक प्राप्ति करैत अछि। एहि प्रकारें घटमे ब्रह्माण्ड वा पिण्डमे अण्डक कल्पना कएकें नाद, विन्दु, सुरति, निरति आदि परिभाषित शब्दक सहायतासँ, अन्त:साधना पर विशेष जोर देल गेलैक ।[46]

उपर्युक्त अध्ययनसँ सिद्ध परंपराक जे परिचय प्राप्त भेल अछि - ताहिक्रमे सिद्ध साहित्य जाहिमे 84टा सिद्धक प्रमाण आ नाम हम पहिने पृष्टि पर लिखि देने छी। हुनका लोकनिक रचना के विधान ओ सिद्ध साहित्यक ज्ञाता लोकनि तीन भागमे विभक्त कएलनि अछि-

(1) चार्याचर्य विनिश्चय वा चार्यागीत किंवा चार्यापद

(2) दोहाकोश

(3) डाकार्णव

(1) सिद्ध साहित्य चार्याचर्य विनिश्चय-चार्यापद-चार्यागीत-मैथिली-भाषा साहित्यक प्राचीनतम लिखित परिसंवाद अछि। ओना ई बात स्पष्ट करी जे जखन बौद्ध धर्मक उत्कृष्ट धार्मिक ओ दार्शनिक चरमोत्कर्षक रूप नहि आयल छल। हमरा भाषा साहित्यमे सिद्ध लोकनिक परिचय

ओ साहित्यिक जे गतिविधि आठम शताब्दी सँ प्रारंभ होइत अछि से ``चार्यापद, सिद्ध लोकनि भक्ति ओ साम्प्रदायिक साहित्य थिक जाहिमे रहस्य ओ गुह्य भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि, जाहि पर श्रृंगारिकताक प्रगाढ़ आवरण अछि। सिद्ध साहित्यक प्रतीक ओ उलटबांसी शैलीमे रचल गेल अछि। पद सभक अधिकांश प्रतीक सामजिक जीवनक परिचित वातावरणसँ लेल गेल अछि। जाहि कारणे प्रेषणीयताक सुविधा सेहो भेल तथा लोकप्रिय सेहो भेल। एहि सिद्ध साहित्यमे योग एवं तांत्रिक साधनाजन्य समाजक चित्रण `पहेली` रूपमे अछि। पद योजना एहि प्रकारें अछि जे ओकर अभिधा अर्थ ग्रहण कयल जाइत अछि, तखन लोक मर्यादाक कुत्सित अर्थ प्रकट होइत अछि। किन्तु व्यंग्यार्थ ओकर साधनात्मके थिक। एकर रहस्य भावना एवं प्रतीक शैलीक अर्थ दुरूहताक कारणे एकरा हेतु `संध्याभाषा`क प्रयोग कयल गेल अछि। एहि पद सभक भाव पक्ष ओ कला-पक्ष दुनू सबल अछि। सिद्ध साहित्यमे श्रृंगारिता ओ रतिध्वनिक प्रधानता अछि तथा अलंकार संघटन पर सेहो जोर देल गेल अछि।[--]

सिद्ध साहित्यमे खासकऽ चार्यापदमे मिथिलाक संस्कृतिक व्यापक अभिव्यक्ति भेल अछि। वर्णरत्नाकरमे सिद्धम लोकनिक चर्चसँ सिद्ध लोकनिक मिथिला सँ निकटताक संकेत तऽ भेटितहि अछि, संगहि मिथिलाक समाजमे ओ लोकनि कतेक समादृत छलाह जे `ओनामासीध` ओही सिद्ध लोकनिक आदरक अभिव्यक्ति शुद्ध रूप ``ओम नमः सिद्धम्`` होइछ। अस्तु समाजक एक वर्गमे ``ऑजी सिद्धिरस्तु`` सँ शिक्षारम्भ होइत छल जकरा सकंत सरहपादक पदसँ प्रात होइत अछि।

चर्यापदक प्रंसग पं. मायानन्द मिश्र लिखने छथि - अपन इतिहासमे जे सिद्धक रचित वाणी सिद्ध साहित्य कहबैत अछि। हिनक कहब छनि` तैस सिद्धक पद एहिमे संकलित भेल अछि। सभक छन्द योजना विभिन्न-रागरागिनी पर आधारित रागताललयाश्रित अछि। जकर उल्लेख पदारंभके होइत अछि। एहिमे चौबीस रागक पद अछि, पद सभमे भनिताक प्रयोग सेहो भेल छैक। मैथिली काव्य साहित्यमे भक्ति ओ साम्प्रदायिक साहित्य थिक जाहिमे रहस्य गुह्य भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि जाहि पर श्रृंगारक प्रगाढ़ आवरण अछि. सिद्ध साहित्यक प्रतीक उलटबांसी रचल गेल अछि। पद सभक जे भाव से मिथिलाक सामाजिक जीवनसँ परिचित करबैत अछि। जाहिसँ प्रेषणीयताक सुविधा संग लोकप्रिय भेलैक।[*]

चर्यापदक प्रसंग ``चार्याक` शाब्दिक अर्थ आचारणीय वा आचरणसँ लेल गेल अछि। जाहिमे बोधि वा बुद्धि प्राप्तिक लेल पालन कयल जाइत अछि। पद शब्दसँ पद्यकें सूचित करैत अछि जे छन्दबद्ध होमक चलते गेयात्मक गुणसँ युक्त रहैत छैक तें एकरा चार्यागीत कहल जाइत छैक।[-] डॉ. हरप्रसाद शास्त्रीक कहब छनि जे सिद्ध पदक प्रयोग मात्र गेय रचनाक लेल कयल गेल अछि। कुक्कूरीपा जे चौरासी सिद्धमे एकटा छथि जे ``चर्या` शब्दक प्रयोग कयने छथि।[-] अस्तु चार्यागीतमे कतहु-कतहु मात्र गीति शब्दक प्रयोग भेल छैक जे बज्रगीति, दोहागीति आदिसँ म.म. हरप्रसाद शास्त्री `चार्यापद` कें वैष्णव कीर्तन गीतक भाँति मानलनि अछि।[-]

सन 1907 ई. मे म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकें नेपालमे सिद्धक पचास पदक संग्रह भेटलनि;

जकर प्रतिलिपि करबाय दस वर्षक पश्चात् वंगीय साहित्य परिषद्सँ प्रकाशित करबौने छलाह। एहिमे चार्यागीतक अतिरिक्त सहजाम्नाय पंजिका एवं कान्हपादक दोहा कोश (मेखला टीका सहित) सेहो संगृहीत छल।[52]

चार्यापदक पाठ निर्धारणक सम्बन्धमे मैथिली साहित्यक विद्वान लोकनि सेहो यथेष्ट कार्य कयने छथि यथा डॉ. उमेश मिश्र, डॉ. सुभद्र झा, डॉ. नरेन्द्रनाथ दास मुदा एहि प्रसंगमे खूब ठोस एवं प्रमाणिकताक संग कार्य छनि डॉ. हरप्रसाद शास्त्रीक जे तिब्बती रूपान्तर तकलनि आ ताहि अनुसारे पर्याप्त संशोधन कयल, एहि क्षेत्रमे डॉ. बीगचीक कार्यके कम कऽ कऽ नहि आँकल जा सकैछ। जे अखन कोलकाता वि.वि. जर्नल ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ लेटर्स (खंड30) मे चार्यापदक तिब्बती रूपांतर देलनि अछि।[53]

उपर्युक्त प्रमाण सभक आधार पर तऽ ई स्पष्ट अछि जे सिद्ध साहित्यक चार्यापद मैथिली भाषा साहित्यक अमूल्य दस्तावेज अछि। जकरा डॉ. पी.सी. वागची, डॉ. शहीदुल्ला, राहुल सांस्कृत्यायन, डॉ. जायसवाल एवं कार्डियर[54] यद्यपि बौद्ध सिद्धान्त ओ विचारधाराक प्रत्यक्ष प्रभाव मिथिलाक शिक्षित लोकनि पर तऽ नहि पड़लनि, मुदा सामान्य निम्न वर्ग पर सिद्धक खूब प्रभाव पड़लैक। मिथिलामे अखनहुँ तंत्र-मंत्रक प्रभाव अछि। जे हो सिद्ध लोकनिक इतिहास पर दृष्टिपात कयलसाँ स्पष्ट होइछ जे बौद्ध धर्म अनेक शाखा-प्रशाखामे विभक्त भऽ गेल छल। बौद्ध धर्मक प्रचारार्थ ओ शाखा (विक्रमशिला तथा नालन्दा) विद्याकेन्द्रमे रहि समस्त बिहारमे अपन मतक प्रचार करैत छला तकरे एक शाखा मिथिलामे सेहो अएलाह। सिद्ध लोकनिक विशिष्टता जे ओ जाहि कोनो स्थानमे जाइत छलाह ओतुका भाषाकें आधार वनाय अपन धर्म ओ मतकप्रचार करैत छलाह। एतबे नहि सिद्ध लोकनिक साधनाक जे विशिष्टता गुरूक महिमाक प्रमुखता। एहि साधनामे पुरुष एवं स्त्री अथवा वाह्य वा अद्वयक प्रतीक साधना छलैक। एहि साधनामे मिथुन परक साधना सेहो भेटैत अछि। संगहि गुह्य आचारक विधान सेहो अछि संगहि एहिमे जाति-वर्ण भेद नहि अछि। योग साधनामे देहके पूर्णमहत्व देल जाइत छल। मरणोपरान्त मुक्ति वा निर्वाणक अपेक्षा साधनाक द्वारा जीवन कालहिमे विभिन्न प्रकारक सिद्धि प्राप्त करब सएह उद्देश्य रहैत छल।[55]

अतएव चार्यापदक विषय-वस्तु रहस्यवादी मुदा धर्मके नवीन रूपमे रखबाक हेतु वास्तविक सौन्दर्यसँ हीन मुदा जकर अभिप्राय धार्मिक अछि। सिद्ध लोकनि तत्वदर्शी संग काव्यसौन्दार्यान्वेषी होइत छला जीवन दर्शन आ आचार व्यवस्थाक कसौटी पर कसिकऽ लिखलनि अछि। अभिनव गुप्त एकरा काव्यशैली कहलनि अछि।[56] जखनकि राहुल सांकृत्यायनजी सिद्धक कविताके कबीरक जेकाँ रूढ़ि कहलनि आ ने संकीर्ण। कहबाक आशय जे एहिमे लाखो मनुक्खकें आत्मतृप्ति प्राप्त भेलैक।[57] तें कविता तऽ अछिए मुदा हिनका साहित्यमे अत्यधिक आकर्षण कथनक जे निर्भीकता सँ संतक प्रसंग समीचीन बुझना जाइत अछि। सिद्धक साधनामे बाह्य व्यवहार हजारक हजार साधारण जनसामान्यक जे आकर्षण से तऽ संतक आचरणक प्रसंगमे जे कहल गेल छैक :-

क्वचिच्छिष्टाः क्वचिद्भ्रष्टाः क्वचिदभूतपिशाचवत्

नानारूपधरा योगी विचरन्ति महीतले - ॥

कहबाक आशय जे संत मात्र कोनो विशेष जाति वर्ग ओ सम्प्रदायमे होइत छथि से नहि ईसा आ मुहम्मद साहेब सेहो संतो छलाह। संतक जीवनमे समाजक जे महत्व ``संताजन्य शून्य समाज जीवितम्`` जे सिद्ध लोकनि शून्यवाद वा अद्वैतवादक भावनाक संग अन्त: साधनामे शारीरिक सुख एवं महत्वकें अपन रचनाक विषय-वस्तु बनाय ज्ञान मार्गक दिश अग्रसर भेलाह। अर्थात् -

सन्तोऽनपेक्षा माचिच्चत्ता: प्रशान्ता: समदर्शिनि:
निर्ममा निरहंकारा। निर्द्वन्दा निष्परिग्रहा ॥

अस्तु, अहंकार शून्यता, शांति, समदृष्टि, निर्ममत्व, द्वन्दहीनता आदि गुणसँ समन्वित सिद्ध लेकनि संत छलाह।[६] उपर्युक्त प्रमाणक आधार पर चार्यापदकें मैथिली संत साहित्यक आदि ग्रंथ कहल जा सकैत अछि। विषय-वस्तु, भाषा आदि पर विचार कयला संता संगहि उपर्युक्त प्रमाण सभक आधार पर ई प्रसिद्ध जे चार्यापदकें महत्व पर प्रकाश दैत Dr. Jaykant Babu लिखैत छथि - ``The Caryas are important in the history of Maithili literature for constituting the link between the Sanskrit Udbhata poety and the Apabhransa cum vernacular cum Sanskrit Pada writing.``

लोचन ओ जयदेव जाहि गीति आ पद सबहक चर्चा कयने छथि तकर विकासक मूल चार्यागीत भेटैत अछि।

चर्यापदमे वर्णित रहस्यवाद एवं सहजिया मताक स्थापनाक आभास प्राप्त होइत अछि। जे संत मत ओ संतक जे सहज भाव, सहज शब्द, प्रेमके सहज स्वभाविक अभिव्यक्ति जकर आगू चलिकऽ वैष्णव सहजिया शाखाक जे मानव प्रेम सर्वोत्कृष्ट शुद्ध इश्वरीय प्रेम बनि जाइत अछि. सूफी भावना आ बंगालक बाउल सम्प्रदायक जन्म सहज उक्तिक कल्पना प्रियतमके रूपमे परिवर्तित नवीन मार्गक प्रेरणा सिद्धक सहज मार्गहिसँ लेल बुझाइत अछि। राधा-कृष्णक सहज तत्व जे प्रेम साधनाक परम ध्येय जे संतक लेल अत्यंत ऊँच्च महत्व प्रदान करैत अछि।

भावपक्ष :- चार्यापदक भावपक्षमे महासुख ओ आनन्दक अनुभूति अभिव्यक्ति प्रमुख लक्ष्य रहल अछि। सहजस्यक उद-भावना आ ओकर आश्वादन वाह्य अभिव्यक्तिसँ परे अछि। जेना सुरंगमे उड़य वल धूड़ा-माटि पुन: सुरंगमे मिलि जाइत अछि।[७] अनुभूति प्राप्त करवालय स्वयं प्रबृत्त आवश्यक छैक।[८] सहरपा एकरा अनुभवक विषय कहलनि अछि। अभिव्यक्तिक सहज भाव साधनाक वास्तविकता नायक आ नायिकाक तथागत हुनकर भगवती नैरात्मक छथिन। नायक-नायिकाक रूपमे उपाय तथा प्रज्ञा मन तथा वाक् बोधिचित तथा नैरात्मक साधक तथा महामुद्रा महारागरूपी स्थायी भावक आलंवन कयने छथि। नायिकाक रूपमे प्रज्ञा, डोम्बी, चंडाली, रजकी आदि अछि जकरा प्रबोध वागची पाँच कुलमे बटलनि अछि। डोम्बी, नटी चंडाली, रजकी एवं ब्राम्हणी एहि आधार पर पाँच स्कन्धमे बाँटल गेल अछि।[९] शून्यताके कामिनी आ बोधि चितकें ओकर नायक आ ओहि बीचक जे अपूर्णता जकर बीचमे दूतीक रूप से भेला गुरू, अतएव गुरूक महत्व जे

संत साहित्य मध्य अपूर्व जे एहिठाम विशेष रूपें लक्षित भय रहल अछि।

स्वकीया नायिकाक जे परिणयक तैयारीमे वरयात्राक साज-सज्जाक संग प्रस्थान करैत छथि जे चार्यापदक 10वाँ भाव मानल गेल अछि यथा पाँती -

भवणिब्बाणे पड़इ मॉदला / मण-पवन वेण्णि करउ कशाला

जअ-जअ दुन्दहिसदद उछ्छलिला / काण्हे डोम्बि विवाहे चलिला

सिद्धान्त : - चार्यापदमे श्रृंगार जे भक्ति रसक जे परिपाक अछि से सिद्ध सब प्रकारक संप्रदाय ओ साधनाक जे पद्यति ओहि सभमे निहित जे बुराइ ताकर खण्डन केलनि आ सहज सुखकें नैसर्गिक सुखक संज्ञा देलनि अछि। दोहाकोष एवं चार्यापदक जे प्रथम बारह दोहामे `सरह` तात्कालीन धार्मिक संप्रदाय के विचार एवं तंत्रमंत्रके खंडन केलनि अछि।

जो जसु जेण होइ सन्तुष्ठ। मोक्क कि लम्भइ झाण पविट्ठ।

किन्तह दीये किन्त णेवेज्जे/किन्तह किज्जइ मन्तहभावे।।

सिद्धक भावनाक प्रसंग अध्ययन ओ अनुशीलनसँ हुनका जे धार्मिक सिद्धान्त ताहिसँ ई स्पष्ट अछि जे भोगकें त्याज्य नहि मानलनि अछि, मुदा ओहि भोगमे आसक्तिकें त्याज्य मानलनि अछि। सरह तऽ जीवनमे बालकक समान रहबाक आदेश करैत छथि जे घर एवं जंगलकें प्रतीकक माद्यसँ कहबाक जे गृहस्थ एवं संन्यासक बीच गृहस्थ जीवन पर विशेष-बल देलनि अछि, जे संतक भाव उजागर होइत अछि/यथा सरह लिखैत छथि :-

बरगुरू वअण पतिजइ साच्चे

सरह भणइ मइ कहिअइ वाचें।

सिद्धक सिद्धान्त सतत स्पष्ट रहलनि अछि जे ओ सहजानंदक मार्गकें सर्वश्रेष्ठ मानलनि अछि। टेढ़-मेढ़ रास्तासँ नीक, सहज मार्ग के अपनेबाक लेल कहैत छथि आ से सहज मार्ग सद्‌गुरुक कृपासँ संभव छैक। कण्हपाक कहब छनि जे वेद पुराण सबटा पाकल श्री फलक समान अछि जकरा उपर भौंरा बाहरसँ उड़ैत तऽ ओकरा प्राप्त की होयतैक? सरह विभिन्न सम्प्रदाय निर्गुण ओ सगुण दुनूक विरोध कयलनि अछि। ओ कहैत छथि जे कखनो दीप जड़ौता कखनो घंटा बजेता कखनो आँखि बंद कऽ-कऽ ध्यान लगेता, पंडित पुरहित लालची होइत अछि ओ दक्षिणाक प्रेमी ताहिसँ निर्वाण नहि प्राप्त होयत। ताहि लेल माया-जाल सँ मुक्त होमक लेल सद्‌गुरु वाह्य जगतक माया-जाल मुक्ति दिया सकैत छथि। यथा पाँती अछि -

माआ जाल पसार बाँधोलि माआ हरिणी

सद्‌गुरू बोहें बूझे रे कासु काहि मी।

सिद्ध लोकनि अहंभावकें त्याज्य कहलनि अछि, जे संतक प्रारंभिक सिद्धान्त छैक। एहिठाम विद्यापतिक पाँति जे कहब छनि -

सब कर कर सम्मान सबहुँ सौ नेह बढ़ाविअ

विप्र-दीन अति दुखी सबहुँ कॉ विपति छोड़ाविअ।।

अस्तु सिद्धक जे कहब जे सहज निर्वाणक दशामे भावमोह ओ धर्मकाय के छोड़ि कऽ तथता वा शून्यतामे लीन भऽ जाइत अछि तखन करूणा एवं शून्यताक जे मेल होइत छैक ओहिठाम निर्वाण प्राप्त होइत छैक। सजहताकें त्यागि कऽ निर्वाण प्राप्त करबाक जे स्वप्न, ओकर परमार्थक साधना कहियौ सफल नहि होयतैक।[६]

कण्हपाक सिद्धान्त तऽ शांत निश्छल समाधि दिशामे जे आनन्द तकर उपमा कमल पर मकरंद जेना आनन्द प्राप्त करैत अछि, तहिना ओहो आनन्द लैत छथि। हुनक कहब छनि जे महामुद्राक दशामे वएह आनन्द प्राप्त होइत अछि जे आनन्द सहस्त्रार कमल पर भौंरा पराग सूंघबाक आनन्द लैत अछि।[७]

सिद्धक आध्यात्मिक भावमे ओहि सिद्धान्त सबहक चर्चा चार्यापदमे भेल अछि से मानवीय जीवनमे समरसता प्राप्त करबाक धारणा ओहेन होमक चाही जेना नूनमे पानि मिझरा जाइत छैक। कहबाक जे संतक साधना जीवनक दृष्टिसँ ब्रह्ममे नून-आ-पानिक समान लीन भऽ जाइत अछि. यथा - हिन्दी काव्य धारामे कण्हपा लिखने छथि -

जिमि लोण विलिज्जइ पाणिएँहि, तिम धरिणी लइ चित।

समरस जाइ तक्खणे, जइ पुणु ते सम चित -[८]

अस्तु सिद्ध लोकनिक रचनामे लोक पक्षक प्रभाव रहितहु व्यक्तिक स्थानकें महत्वपूर्ण कहल गेल अछि। धर्म साधनामे सेहो व्यक्तिक स्वतंत्रताकें संपूर्ण रूपमे देखल गेल अछि। तात्कालीन समयक धर्म सम्प्रदायमे ब्राह्मण धर्मक अनुदारताक विरूद्ध व्यापक आन्दोलन कयल गेलैक। सिद्ध लोकनि धर्मसाधनामे तात्कालीन लोक पक्षक धारणाकें प्रतिष्ठित कयल पश्चात् इएह धारणा असंस्कृत अंशके प्रतिष्ठित करवौलक। सिद्ध एकटा नितांत भिन्न प्रकारक व्यापक चिंतन धाराक नवीन सिद्धान्तके अनुरागी छलाह।

लक्ष्य : सिद्धक साधनाक लक्ष्य छलनि वैराग्यमूलक अस्वाभाविक जीवनक त्यागि कऽ महामुद्राक रूपमे गृहस्थ जीवनक उपभोगक बीच तत्वज्ञानकें सिद्ध करबाक लक्ष्य छलनि। पांडित्यपूर्ण ज्ञानक अपेक्षा भावनात्मक अनूभूतिक महत्व विशेष देलखिन। स्वस्थतृप्तिमे जीवनक पूर्ण विकास आ अध्यात्मिक मूल्यक प्रस्फुटन माननलनि अछि। सिद्ध लोकनिक एहि पाछू तर्क अछि जे विधानपूर्वक विषक उपभोग कयला पर विषय प्रभाव नष्ट भऽ जाइत छैक, तहिना भवक विधान पूर्वक विषक उपभोग कयलासँ ``भवसँ` लिप्तता नहि रहि जाइत छैक।

जिस जिस भक्खइ विसहिं पलुता

तिम भव भुंजहि भवहिण जुत्ता।[९]

अहिठाम सिद्ध लोकनिक तर्क अछि जे जहिना कॉंट के कॉंटेसँ निकालल जा सकैछ, ई जे उपभोग आ अध्यात्मिक तर्क डॉ. शशिभूषण दास गुप्ता चार्यापदक वास्तविकतामे योगाचार आर वेदान्तक समन्वय मानलनि अछि। वेदान्तसँ हिनका लोकनि संकेत अद्वैत वेदान्तक तरफ अछि। चार्यापदमे आठ महासिद्धिक उल्लेख भेल अछि। शांतिपा एहि अष्टमार्गक प्राप्तिक लेल सहज

मार्गक अनुग्रहण करबाक लेल प्रेरित करैत छथि। सिद्धक लक्ष्य क्रमिक प्रथमानंद, परमानंद, विरमानन्द आ सहजानन्द जे अंतिम महासुखक अनुभूति करबैत छैक।[71] जाहिसँ चारि प्रकारक आनन्द प्राप्त होइत छैक - कर्ममुद्रा, धर्ममुद्रा, ज्ञानमुद्रा एवं महामुद्रा[72] सिद्ध साधनाक प्रसंग बौद्ध दुखबादी-निवृतिमूलक रूप निराकरणमे सुख, आनंद, भावना आ भोगकें लक्ष्य माननलि आ तकरे प्रतिष्ठा बुझलनि।

उपर्युक्त जे सिद्ध साहित्यक अध्ययन से संतके दू टा भेद एकटा संसारी (इश्क मजाजी) आ दोसर वास्तविक (इश्क हकीकी)[73] परम प्रभुक उपर अपन तन-मन-धन न्योछावर करब आ तकर वर्णन करब अत्यंत कठिन से एहि प्रकारक साहित्यक अभिधा अर्थ कयल जायत तऽ ओ समाजक बीच एक प्रकारक घृणाक धारणा बनतैक। अस्तु आलंबन-विभाव-अनुभावक जे श्रृंगारक दुनू पक्ष संयोग आ विप्रलम्भक चित्रण चार्यापदमे संभोग-श्रृंगारक अधिकांश स्थल पर देखल जा सकैछ।

सुरनैरामणि कण्ठे लइआ महासुहे राति पोहाई। [74]

सिद्ध लोकनि चिताकें भव एवं निर्वाण दुनूक बीज कहलनि अछि। एहिसं बंधन आ निर्वाण प्रात्त होइत छैक -

चितखसम जहि समसुह पइद्ठइ इन्दीअ
तहिम दीसई।
आइ रहि अ एहु अंत रहिअ वरगुरू पाअ
अधउ कहिआ- ।।[75]

तिलोपाक भाव छनि चित्त खसम (शून्य)क रूप धारण करैत महासुखमे प्रवेश करैत अछि। आदि-अंतसँ एकरा कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक।

``भुसुकपा`` चित्त पर विजय प्राप्त करबाक लेल ओकरा मूस कहलनि अछि - ओकरा मारि देबाक लेल कहैत छथि चार्यापदमे

``मार के जोइआ मूसा पवणा``-

भुसुकपा संसारकें भ्रांति कहलनि अछि। ओ रस्सीमे साँपक शंका, एनामे आबयवला प्रतिबिम्बक समान बंध्यासुत आ वालुकासँ मिश्रित तेलक समान कहलनि अछि।[76] अस्तु काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ अहिठाम ``भ्रान्तिमान`` अलंकार अछि।

अस्तु संत साहित्यक भावसँ `सिद्ध` सवहिक प्रसंग जे अध्ययन कयल अछि जाहिमे पंचस्कन्ध, बोधिचित्त, पंचतत्व धारणा पंचस्कन्ध, देहक महत्व, महामुद्रा, महासुख, शून्यता ओ करूणा राग महाराग आदिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे भगवान बुद्धक शिक्षा, शील, सदाचार वैयक्तिक निर्माण, दर्शन आदि पर विशेष ध्यान देने छलाह मुदा बौद्ध भिक्षुणीक प्रवेशसँ कालचक्रक अभ्युदयसँ इंधन ओ आगिकें समीप रहला पर विषयभोगमे पड़ब तऽ स्वाभाविक छलैक, परंतु विद्वान तंत्रक मूल वचनमे तकैत चारिटा जे ऋधिपादक अलौककि सिद्धिकें उत्पन्न करय वाला धर्म कहल गेल छैक। दीध निकाय -``आटानाटीय सुत`` मे शांति आ सौभाग्यक लेल पूजा, गांधारी विद्या

एवं आवर्तनी विद्या पर जे मनुक्खक विश्वास वर्णित अछि। बुद्धक द्वारा उपदिष्ट अव्याकृतकें आधार पर सिद्धमे रहस्यवादक जे विकास मानल जाइत रहल अछि। कहल जाइत छैक जे बुध अपन किछु खास गुह्य उपदेश अपन खास शिष्य सिद्ध कें देने छलाह वएह सिद्ध शिष्य सब भारतीय धार्मिक परंपरामे ``तंत्र`` शब्दक विन्यास कयल जकर प्रभाव मिथिलामे अदौकाल सँ छलैक कहबाक आशय वेदकालसँ पूर्व एकर प्रचलन मिथिलामे छलैक। पहिने नाग, यक्ष, गंधर्व, अप्सरा, पुष्कर वृक्ष आदिक पूजा-अर्चना, जादू-टोना आदि तंत्र शब्द व्युत्पति तन् धातु; (तनु विस्तारे) जकर अर्थ ज्ञान विस्तारसँ लेल गेल अछि। यथा :-

``तान्त्रेय विस्तार्यते ज्ञानम् अनेन इति तन्त्रम।``

व्यापक अर्थमे शास्त्र, सिद्धान्त, अनष्ठान

विज्ञान, देवतापरक पूजा मंत्र आदिक विकास छठी शताब्दीक प्रायः बौध धर्ममे एक-एक तांत्रिक प्रवृत्तिमे प्रवेश करैत अछि। वज्रयानमे जकर खूब विकास भेलैक। किछु विद्वानक विचारमे ई छनि जे तंत्रक प्रथम विकास बौद्ध ग्रंथमे भेल अछि। बौद्ध तंत्र ब्राह्मण तंत्रक निन्दा करैत अछि। हिन्दू तंत्रमे बोधिसत्व देवता एवं देवीक पूजा कयल जाइत अछि। बौद्ध एवं हिन्दू तत्रमे प्रमुख अंतर ई अछि जे हिन्दू तंत्रमे शक्तिपूजाक केन्द्रीय स्थान अछि किन्तु बौद्धमे महाशक्तिकें माया कहल गेल अछि। वैष्णव सहजिया आ प्राचीन बौद्ध सहजिया बुझू दुनू एकटा अपन-अपन वर्ग अछि।

``सिद्धक`` प्रसंग एहन कहल जाइत अछि जे एकर स्तित्व ब्राह्मण परंपरासँ मानल जएबाक चाही। ``सिद्ध`` शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम ``अमरकोष`` मे भेल अछि। जकरा अर्थ दिव्य जातिक रूपमे भेल छैक। भारतीय चिंतन पद्धतिमे मिथिलाक चिंतन धारा निरूपित करैत संतक प्रति जे अवधारणा ताहिमे साहित्यक श्रृजणक जे हमर विषय-वस्तु भिन्न-भिन्न स्थिति संयोग द्वारा बज्रयानिक जे महायानमे ``शून्यता`` एवं ``करूणा`` क्रमशः `प्रज्ञा` एवं उपाय`` नामसँ दुनू पारस्परिक मिलिकऽ एक प्रकारें वज्र-सत्व बनि गेलैक। दुनूक अंतिम परिकल्पना शक्ति एवं शिवक मिलनक समान वज्रयानक परमसुख वा परम तत्व प्राप्त कऽ लेबाक जे बौद्ध साधनामे शैव साधनाक जे प्रवेश ताहिमे सिद्धक संग कपाल; शिव डमरू आदिक आत्मसात अवलोकितेश्वरकें महेश्वरक संज्ञा दैत हलाहलक जे कल्पना संयुक्त रूपें मिथिलामे जे दर्शन धर्म ओ अध्यात्म जिगतमे देखल जाइत अछि ताहिसँ एकटा विशेष अवधारणा पनबैत अछि जे शैव आ बौद्धक संग शक्तिक पारस्परिक समरससँ वैष्णवक विरुद्ध एकटा संयुक्त मोर्चाक आह्वान बुझना जाइत अछि।

जे हो द्वितीय नजरिमे अबैत अछि जे तात्कालीन समाज कमसँ कम एतबा शक्तिशाली तऽ छल जे कोनो परबाहि केने नवीन मार्गक अनुसरण करबामे कोनो तारतम्य नहि भेलैक। विचार स्वातंत्र्य तऽ छलैक। प्रत्येक मनुष्यमे अपन स्वतंत्र विचार रखबाक अधिकार तऽ छलैक, सम्प्रदाय आदि अपनेबाक स्वच्छंदता तऽ रहैक। तकर प्रमाण संगीतप्रियता प्रचुर मात्रा छल। अधिकांश पद चौपाई, छन्दमे लिखल गेल छैक। एहि भिति पर पश्चात् जयदेव तथा लोचन गीतिपदक रचना

कयलनि। चार्यापदमे प्रयुक्त उपमा, अनुप्रास आदिक प्रयोगसँ ई भान होइत अछि जे तात्कालीन समयक जे जनमानस से सब एहि विषय-वस्तुकें बुझैत छल। हरिण, हाथी, वीणा, मूस आदिकें मनक रूप कहि जे साधना पर जे जोर देल गेल छैक से सांस्कृतिक दृष्टिसँ विचार कएला पर बौद्धिक तत्व महत्वपूर्ण बुझा रहल अछि। ताहि समयक साहित्य रचनामे एहि सब तत्वक स्पष्ट लक्षण प्राप्त होइत अछि। सिद्ध साहित्यमे मिथिलाक तात्कालीन विचारक वास्तविक रूप देखैत छी।

हिन्दी साहित्य कोश, भाग एकसँ प्राप्त होइत अछि जे हिन्दी भाषामे सन्तकाव्यक रचना ईस्वी सन बारहवीं शताव्दीसँ आरंभ होइत अछि। मुदा मैथिली सन्त साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ पूर्णतः फरिच्छ भेल जे हमरा साहित्यमे ईस्वी सन् 800 शताब्दीसँ सन्त साहित्यक उत्स भऽ गेल छलैक। एतबे नहि जेनाकि अध्ययनसँ इहो स्पष्ट भेल अछि जे एहिमे मात्र परिनिष्ठित साहित्य मात्रक चर्चा नहि होमक चाही। विभिन्न कोशक परिभाषित व्याख्याक बाद हम एहि निष्कर्ष पर सेहो अवैत छी जे लोक जीवनक भाव जे गीतक संग अबशिष्ट प्राप्त होइत अछि ओहिमे संत साहित्यक जे अवधारणा से परिलक्षित होइत अछि। आ ओहि साहित्यक जे भरमारसे सन्त साहित्यमे राखल जाय तऽ मैथिली संत साहित्यक उत्सकें समय सीमामे बान्हब कठिन भऽ जायत। यथा लोक साहित्यमे कतहु-कतहु एहन भाव देखबामे अबैछ जे ओ सम्पूर्ण लोक जीवनक त्यागमय वातावरणमे गंभीर भावक सर्वसाधारणी करणक भाषा मे मनोरंजन मात्र करब नहि रहैत छैक, बल्कि सांसारिक प्रपंचमे पड़ल, लोककें अपन मतानुसार सत्यक मार्गसँ परिचय करायब सेहो अछि। जे चरित ओ जीवन गाथाक वर्णन करब उचित नहि बुझैत छथि। मुदा सन्त काव्यक अन्तर्गत लोकगीतक अवशिष्ट रूपमे अपन पृथक महत्व छैक। सन्त काव्यक अन्तर्गत विषय विशेषक साखी शवद अर्थात् पदक गेय होयब आवश्यक व्यक्तिगत निवेदन `जाहिमे` उद्धारक प्रधानता रहैत छैक। ओहि पदकें सन्तक `वाणी` कहबाक प्रथा छैक।82 शिष्ट साहित्यक अनुरुपमे लीलागान, ग्राम-देवता, कुल-देवता आदिक प्रति भाव-पक्षमे प्रार्थनास्वरूप, पूजा-अर्चनाक गीत-संगीतक लोरिक आ सलहेस आदिक विषयमे देखल जाओ -

कोन देव पुरुव गेलइ,
कोन देव पच्छिम गेलइ।
कोन देव दुलरा गेलइ मोरंग राज।।
दीनानाथ पुरुव गेलइ, बुधेश्वर पश्चिम गेलइ।
दुलरा सलहेश गेलइ मोरंग राज।।[83]

अस्तु साहित्य-संसारमे लोक समाजक महत्वकें सर्वोपरि मानल गेल अछि। संतक समाजिक कल्याण करब हुनक पहिल धर्म ओ कर्तव्य मानल गेल अछि। समाजमे जखन देवी - देवताक प्रयोजन भेलैक। तखन वएह लोक-देवता आशय संत रूपमे स्थापित होमय लगलाह। नायक लोकनि राम-कृष्ण, विष्णु ओ शक्तिक पूजा, व्यक्तिक पूजा, वीर पूजा आदिक गायन करैत,

आराध्यस्वरूपक गुणलीलाक गेयात्मक वर्णन करैत छथि। नायककें प्रेरणास्रोत अध्यात्मिक सांस्कृतिक विशेषता दिग्दर्शित करैत छथि। जाहिमे कर्म प्रेरणा, मनुष्यक आचार-विचार, विधि-व्यवहार, दुख-दैन्य, सुख-सम्पदा, जीवन-मरण, दया सौहार्द, नीति-चरित्र, सामंजस्य, सत्यनिष्ठा, वचन वध्यता, कर्तव्यपरायणता, शोषण-संघर्ष, भाव-विद्रोह, रीति-रेवाज, लौकिक-अलौकिक आस्था-विश्वास, श्रद्धा-अनुष्ठान, सांस्कृतिकता, अध्यात्मिकता, हास्य-व्यंग्य, हास-परिहास, श्रृंगार, करुणा, शान्त, वीर भयानक रौद्र, प्रेम-विरह आदिक कर्म सह कर्तव्यबोध दिश जखन अग्रसर होइत अछि, तखन ओ गौरव बोध लोकक प्रेरणास्रोत बनैत गेलाह।

एहि प्रकारें संत साहित्यक एहि कालमे सृजन तऽ नहिं भेलैक, धर्मशास्त्र भक्ति संबंधी सूत्र तंत्रोपपाचर विषयक पद्धति आदिक विकास नहि भेलैक मुदा प्रतिकात्मक रूपें भक्ति परक गीत, व्रत ओ सामाजिक उत्सवक गीत, विवाह ओ संस्कारक गीत, शारीरक नश्वरता, संसारक अनियतता आत्माक अमरता आदिक वर्णन निम्न पंक्तिमे देखल जाओ -

चलू कन्त ओहि देश जतय निज घर आपन
पचरंग महल देखि जुनि भूलब, ई सुख जानब निशि सपना
ई संसार फूल सिम्मर के भीतर रूइया रे सुगना।

आदि। वस्तुत: संत साहित्यक अंतर्गत श्री मद्‌भगवद्‌गीतामे `संत` शब्दक अर्थमे ऊँ तत्सत् वाक्यक भीतर ब्रह्मक निर्देश कयल जाति अछि।[1] गीतामे एकठाम कहल गेल अछि जे परमेश्वरमे एकाकार जे सत्यपरायण संगवर्जित सब प्राणीक संग निर्बैर रहैत छथि ओ हमर भक्त छथि, इएह जे विशेष गुण से `संत` स्वरूप ग्रहण करैत छथि आ लोक साहित्यक अन्तर्गत जे भाव अक्षुण्ण रहैछ ओहो एक प्रकारक ``संत-साहित्यक`` सृजन कहल जा सकैछ।

संत साहित्यमे ब्रह्मके आधार बनाओल जाइत अछि। ओ ई भेल जे महासुखक एकटा कल्पना अछि ओ सुख पयबाक वास्ते जे गतिशील रहैत छथि आ ओहि भावसँ जे नि:सृत होइछ से मिथिलामे आ मैथिली साहित्यक `संत साहित्य` कहबैत अछि। कमोवेश भारतीय साहित्यमे सेहो इएह भाव दर्शित होइत अछि।

सम्पूर्ण वाङ्‌गमयमे आधारभूत तत्व ``राम`` जे सगुण-निर्गुण संतक वास्ते सर्वव्यापक आ सिद्धक शब्द `सहज` जे संत साहित्यमे अन्यतम् स्थान ग्रहण कयलक। सरहपा सहजतामृत-रस सम्पूर्ण संसारमे व्याप्त अछि कहैत छथि -

णउ तं बाआहि गुरू कहइ, णउँ तं बुज्झइ सीस
सहजामिअ रसु सअल जगु कासु कहिज्जइ कीस[2]

संतक शक्ति सहजतामे छनि आचार्य परशुराम चतुर्वेदी संतक प्रसंग कहैत छथि जे सहज ज्ञान आनन्दक वाचक अछि। संत हृदयमे सूर्य-चंद्रक बिना ब्रह्म ज्योतिक प्रकाश परमोलब्धिक वाचक बनैत अछि। जे सिद्ध, नाथ, सनातन धर्म, सगुण ओ निर्गुण सबठाम एकरे अलख जगाओल जाइत अछि।

अतएव विद्वानक विचार छनि जे ऋग्वेद कालीन धारा लोक भाषाक माध्यम ग्रहण कय बौद्ध साहित्यमे अपन आविच्छिन्न धारा अपभ्रंश काव्यमे प्रवाहित भेल जे `संत` काव्य एहि परंपराक परिणति अछि। सिद्धक रहस्य साधना जनसाधारणक प्राचीन रूढ़ि परंपराक विरूद्ध नवीन साधनाक मार्ग छल। एहि प्रकारें साहित्य श्रृजन कय अपन विचार सर्वदा अक्षुण्ण रखलक। अत: चार्यापदक युग सांस्कृतिक दृष्टिसँ अभ्युत्थानक युग जाहिमे धार्मिक विचार अत्यधिक जोर पकड़लकैक ताहिसँ संत सम्प्रदायक विकास सिद्धे सम्प्रदाय, नाथ पंथी, सुफीक संग मुल्ला, मौलवी ओ पंडित आदि सभक विचारधारासँ उपयोगी तत्व लऽ कऽ जाति, वर्ण, वाह्य-आडम्बर, कर्मकाण्ड आदिक विरोध करैत `संत` संस्कृत शब्दमूलक शब्द सत् शब्दक धातुगत अर्थ अस्तित्व `संत` श्रुतिमे कहल गेल छैक :-

असन्नेव स भवित असद् ब्रम्होति वेद चेत
अस्ति ब्रम्होति चेद बेद सन्तमेनं ततो विदु:।।

अस्तु जे ब्रह्मक सत्ताकें बुझिगेल अत: वएह `संत` भेलाह। तें भक्तिकालसँ पूर्व साहित्यक विभिन्न रूप-सिद्ध-काव्य नाथ काव्य, जैन-काव्य, रसो-काव्य, कृष्ण-काव्य राम काव्य आदि अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक सम्पूर्ण संत साधना बौद्ध धर्मक भग्न रूप अछि। मध्यकालीन संत प्रसंग इतिहासकार आदिक कहब छनि जे ओ लोकनि सिद्धक उत्तराधिकारी रूपें मैथिली भाषा साहित्यमे संत साहित्यक विकास कयलनि।

•••

संदर्भित ग्रंथ

1. वृहदारण्य उपनिषदक तेसर अध्यायसँ - (शाश्वत साधना Page-1 लेखक - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर)।
2. मिथिलाक इतिहास : पेज-56 (लेखक उपेन्द्र ठाकुर) विशेष उपनिषद-पृष्ठ सं.73 ।
3. मिथिलाक इतिहास : पेज- 57 लेखक उपेन्द्र ठाकुर।
4. मिथिलाक इतिहास : पेज- 58 लेखक उपेन्द्र ठाकुर।
5. मिथिलाक इतिहास : पेज- 58 लेखक उपेन्द्र ठाकुर। विशेष संदर्भ - उप.पृ. 131 ।
6. मिथिलाक इतिहास : पेज- 62 लेखक उपेन्द्र ठाकुर।
7. मिथिलाक शाश्वत साधना : पेज-9 डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
8. मिथिलाक शाश्वत साधना : पेज-10 डॉ. उपेन्द्र ठाकुर
9. मिथिलाक इतिहास : पेज-5 डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
10. प्रारंभिक अध्ययन सामग्री : पेज - 3 एवं 4 ।
11. भगवान बुद्ध और हिन्दी काव्य : पेज-63 ले. वसुन्धरा मिश्रा।
12. मैथिलीक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-5 ।
13. मैथिलीक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री - पेज-5 ।
14. मैथिली साहित्यक इतिहास : (ले. डॉ. जयकान्त मिश्र) पेज-49 ।
15. मैथिली साहित्यक इतिहास : (ले. मायानन्द मिश्र) पेज-55 ।
16. मैथिली साहित्यक इतिहास : (ले. डॉ. जयकान्त मिश्र) पेज-57 ।
17. मैथिली साहित्यक इतिहास : (ले. डॉ. बालगोविन्द झा) पेज-29 ।
18. भगवान बुद्ध और हिन्दी काव्य (ले. वसुन्धरा मिश्र) पेज-63
19. मैथिली साहित्यक इतिहास : (ले. डॉ. जयकान्ता मिश्र) पेज-56 ।
20. प्राकृतपैंगलम भाग-2 (सम्पादक भोलाशंकर व्यास)।
21. प्राकृत एवं अपभ्रंश का इतिहस और उसका हिन्दी पर प्रभाव : लेखक रामसिंह, पेज-173 ।
22. मैथिली साहितयक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-10 ।
23. हिन्दी साहित्य कोश : पेज-851 एवं 852 ।
24. चार्यागीति परिचय पॉ. 35 (भ.बु.और हिन्दी काव्य मिश्र) पेज-68 ।
25. हिन्दी साहित्य कोश, पेज-854 ।
26. चार्यागीति परिचय : पृष्ठ - 35
27. चार्यापद संग्रह-द्वितीय संस्करण भूमिका, पेज-4 (भ.वु.और हिन्दी काव्य वसुन्धरा मिश्र, पेज-68 ।
28. श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय-16 संदर्भित ग्रंथ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जीक पुस्तक, पेज-30 ।

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत:
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् (श्लोक-23)

29. हिन्दी साहित्यकोश भाग-1, पेज-852।
30. मैथिली साहित्यक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री : पेज-10 ।
31. हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, पेज-854 ।
32. मैथिली काव्य पर संस्कृताक प्रभाव : डॉ. सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-14
``धर्मे हर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षम्`` ।
33. मैथिली भाषाक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-11 ।
34. मैथिली भाषाक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-11 ।
35. मैथिली भाषाक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-11 ।
36. मैथिली भाषाक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-11 ।
37. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक सिद्धान्त, पेज-53 ।
(भगवान बुद्ध और हिन्दी काव्य, पेज-77)
38. Origin and Development of Begali Language Part-1, Page-116 ।
39. मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन : लेखक - इन्द्रनारायण झा, पेज-108
40. हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य पर वौद्ध धर्म का प्रभाव, पेज-45 ।
41. सिद्ध साहित्य, पेज-38 (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता) भ.बुद्ध और हिन्दी काव्य, पेज-65, ले. बसुन्धरा मिश्र।
42. पुरातत्व निर्बधावली, पेज-137। भा.बु. और हि.का., पेज-65 ।
43. हिन्दी सा. कोश, पेज-851, भाग-1 ।
44. मै. सा.क इतिहास, पेज-29 (ले. बालगोविन्द झा व्यथित)।
45. संत अंग्क (बारह वर्षक विशेषांक) पेज-27 ।
46. मै. सा. प्रा. अध्ययन सामग्री, पेज-12।
47. मैथिली साहित्यक इतिहास : मायानन्द मिश्र, पेज- 55 एवं 56।
48. मैथिली साहित्यक इतिहास : मायानन्द मिश्र, पेज- 55।
49. चार्यागीत परिचय, पेज-35 ।
50. अइसन चर्या कुक्करि पाए गाइड, कोड़िमाझे एकुहिअहि समाइउ (हिन्दी काव्य धारा, पेज-144), भ.बु. और हि.का-68।
51. चार्या पद संग्रह द्वितीय संस्करण भूमिका 4 : भु.बु.का., पेज-68 ।
52. सन्त कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं (मै. अ.पटना) ले. डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज-19 ।
53. चार्यागीत कोश वृतिनामा (तिब्बती नार्यग संस्करण खण्ड-47।
54. मैथिली साहित्यक इतिहास - मूल अंग्रेजीक अनुवाद - डॉ. जयकान्त बाबूक, पेज-49।

55. मैथिली भाषा-साहित्यक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-12 ।
56. सिद्ध साहित्य, पेज-238 एवं 239।
57. हिन्दी काव्यधारा - राहुल सांस्कृत्यायन किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पेज-47।
58. संत अङ्क बरहवाँ वर्षक विशेषांक (कल्याण), गीताप्रेस, पेज-27।
59. बागची दोहाकोश - संकलन डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची, कोलकाता, पेज-31 ।
60. सरहपा बागची दोहा कोश, पेज-47।
61. सिद्ध साहित्यक पृष्ठ-242 ।
62. प्रेमपंचक - अद्वयवज्र संग्रह, पेज-58।
63. सरहक दोहाकोश, पेज-2 (भ.बु.और हिन्दी काव्य), पेज-91।
64. भा.बु. और हिन्दी काव्य वसुन्धरा मिश्र, पेज-93।
65. हिन्दी काव्य धारा, पेज-146।
    आगम बेम पुराणेहि पण्डिअ माण बहन्ति
    पक्क-सिरीफलें अलिअ जिम बाहे भमन्ति
    नोट (भ.बु. और हि.का., पेज-93)
66. सरह दोहाकोश, पृ.-4 एवं 5 (भ.बु.और हि.का. ले वसुन्धरा मिश्र) पेज-93।
67. सरह दोहाकोश, पृ-4, दोहा संख्या-11
68. एवंकारबीअ लइअ कुसुमिउ अरविन्दए
    महुअर रूप सुरअबीर जिंघइ न अरविन्दए-।।
    भ.बु. और हि का. धारा, पेज-94
69. भा.बु. और हिन्दी काव्य, पेज-95 ले. वसुन्धरा मिश्र।
70. हिन्दी काव्य धारा, पेज-95 ।
71. भव-मुद्धे सहल हिजग वाहिउ - तथा टीका पृ. 96
72. सिद्ध साहित्य, पृष्ठ-219।
73. संत अङ्क, गीताप्रेस, पेज-27।
74. चार्या-2 भ.बु.और हि.का., पेज-99।
75. तिलोपा दोहा कोश।
76. आइएं अनुअनाऐं जग रे भान्तिएँ सो पड़िहाइ
    रज्जू-सर्प्प देखि जो चमकिउ साँचे जिम लोअ खाइउ।
77. दीघ आटानाटीय सुत (भ.बु.और हिन्दी काव्य, पेज-100)
78. Introduction to Budhist Assoterison पेज-147
    (इन्ट्रोडक्शन टू बुद्धिस्ट एसोटेरिज्म, पेज-147)
79. भक्तिमार्गी बौद्ध धर्म - भूमिका, पेज - 14 ।

80. मध्यकालीन संत साहित्य, पेज-80 ।

81. हिन्दी सहित्य कोश, भाग-1, पेज-852 ।

82. मैथिली लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति, पेज-101 ।

83. ॐ तत्सदितिनिर्देशो ब्रह्मस्त्रिविधःस्मृतयः । गीता-17-23 ।
(नोट : आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जीक पोथी उत्तरी भारत की संत परंपरा, पेज-14)

84. नाथ सिद्धो की बाणियाँ संकलन हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ-16।

85. तेतिरीय-2 वल्ली, संत विशेषांक (गीताप्रेस), पेज-176

•••

सहायक संदर्भित ग्रंथ

(प्रस्तुत अध्यायक अध्ययन एवं अनुशीलनक क्रममे निम्नांकित ग्रंथक सूची।)

1. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. जयकान्त मिश्र।
2. मैथिली साहित्यक इरिहास - श्री दुर्गानाथ झा `श्रीश`।
3. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. वालगोविन्द झा `व्यथित`
4. मैथिली साहित्यक इतिहास - श्री मायानन्द मिश्र।
5. डॉ. नगेन्द्र नाथ उपाध्यायक - तांत्रिक बौद्धिक साधना और साहित्य एवं बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य।
6. डॉ. विद्यावती मालविवाक - बौद्ध धर्म का मध्ययुगीन संत साहित्य पर प्रभाव।
7. डॉ. धर्मभारती - सिद्ध साहित्य।
8. मैथिली भाषा और साहित्य - बिहार राष्ट्रीय परिचय, पटना।
9. नागरी प्रचारिणी पत्रिका - भाग-16 - काशी।
10. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय।
11. हिन्दी सत्य साहित्य का केन्द्रविन्दु - डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय।
12. वौद्ध धर्म और दर्शन - आचार्य नरेन्द्र देव, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1971
13. बौद्ध धर्म मीमांसा - आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा, विद्याभवन. 1973
14. बौद्ध साहित्य की सांस्कृतिक झलक - साहित्य भवन (प्राइभेट) लिमिटेड, इलाहाबाद।

•••

तेसर अध्याय

मैथिली संत साहित्यक विकासमे विद्यापतिक भूमिका

मानव ह्रदय परमात्मासँ भेंट करबाक लेल सतत् ब्याकुल रहैत अछि। ह्रदयक तीव्र ज्वालाकें शांत करबाक लेल मनुष्य कौखन प्रकृतिक कोमल निरवता, तऽ कौखन सम्भ्रोमोत्पादक ऐश्वर्यपर आ कौखन अपन सुख-दुख पर मानोपमान, आशा-निराशा पर दृष्टिपात करैत अछि आ ओहि पर विचार आ निरीक्षण कयलाक पश्चात् एकर रहस्यकें बुझबाक लेल अनन्तक खोजमे रहस्योद्घाटन करबाक जे मार्ग प्राय: मानुष तन अपनबैत अछि ताहिमे `काव्य` आ धर्म एकरे `सौन्दर्य` आ `सत्य` नामसँ अभिहित कयल जाइत अछि।

संत लोकनि ताहिमे तत्वदर्शी होइत छथि आ कवि सौन्दर्यान्वेषी मुदा दुनू एक शिक्काक दू पहलू होइछ। एहि प्रकारें संत आ कविक जीवन बुझू एके प्रकारक दृष्यकें देखबाक आ अनुभवसँ आनन्द उठेबाक लेल ओ मात्र ओहि दृष्यमात्रकें देखैत छथि, जाहिमे मात्र हुनका आनन्दक प्राप्ति होइत छनि। आ से सर्वसाधारणक बुद्धिसँ दूर, सौंदर्य आ सत्यक द्वारिकें खोलिकऽ अपन अहं जे क्षुद्र बुधिकें त्यागि कऽ संत कवि ओहि भाव राज्यमे विचरण करय लगैत छथि ओताय मानवीय भावना विशेष जागृत रहैत अछि, पार्थिव जगत्‌सँ उपर उठि भगवान आ शास्त्र जे सनातनी वा असनातनी होउथ ओ ओहि रसक आनन्द लैत - **``रसो वै स:``** ई जे रस आत्मा आ परमात्माक बीच अबाध रूपसँ जे प्रवाहित होइत रहैत अछि संतक द्वारा एकरे जखन व्याख्या कयल जाइत अछि तखन एकरा `प्रेम` कहल जाइत अछि। इएह प्रेमक जखन सार्वभौम ओ अलौकिक परमार्थिक एकताक जे संदेश तत्वदर्शी बनि परमात्माक वृक्ष बुझि अपन भाव लता-डारिमे जीवन रस, पूर्ण अभिज्ञ बनि जे रचना करैत छथि ओकर नाम पड़ैत अछि साहित्य एतद् संत साहित्यक जे परिकल्पना से देखल जाय -

धूत: कविरसि प्रचेता:, महदब्रह्म

वदिष्यति..... येन प्रणन्ति वीरुद्ध

मम्मट, विश्वनाथ आदि प्राचीन विद्वान कविक लेल लिखैत छथि ``नियतिकृतनियमरहित: **``अस्तु जैस्पर्सनक शब्दमे``**- काव्य हमरा अन्तस्तलकें स्पर्श कऽ जाइत अछि संशयात्मक ह्रदयमे हलचल कऽ जाइत किएक तऽ ऋषि महात्मा आ कविक परिपक्व अन्त:करणक चरम अभिलाषाकें रागमय रूप दैत अछि।·

भारतमे परमात्माक उपासना कलांतरमे अनेक देवी-देवताक उपासनामे प्रचलित भऽ जाइत छनि आ ओहिमे ज्ञान, योग, कर्मयोग आ भक्ति योगक अलग-अलग व्यवस्था केलनि आ जखन ई बुझेलनि जे हुनक वाणी सहजताक संग जनताक बीच नहि पहुँच रहल अछि तखन ओ लोकनि साहित्यक शरण लय काव्यकें अपन उपदेशक साधन बनौलनि आ व्यास, नारद आ याज्ञवल्क्य आदि मुनि-ऋषि, कविताकें ईश्वरीय तत्वसँ भरि देलनि। कर्मपुराणक सम्पादन करैत एकटा विद्वान उपोदघातमे लिखला जे ``पुराण हिन्दूक धार्मिक साहित्यक महत्वपूर्ण अंग थिकैक। एकर भाव बड़ पैघ दिव्य साक्षात् भगवान एवं महात्माक ह्रदयसँ निकलल अछि। अध्यात्मिक दिव्य

विपुल अनुभवक शाब्दिक रचना अपन भावी पीढ़ीक वास्ते दऽ कऽ चिरकाल धरि जीवित रहि सकैत छथि हुनकर ओ रचना अपन देश-कालक सीमा सरहदकें पार करैत अनन्तमे मिश्रित भऽ जाइत अछि। प्राचीन कालसँ संतक साधना तकरा अनुसार ज्ञानयोगी-कर्मयोगी आ भक्तियोगी कहि सकैत छी। एहि प्रसंग मे हमर विषय प्रविधमे मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषण`क`` अन्तार्गत मिथिलाक महाकवि विद्यापतिक जे दिव्य चरित्र ओ शाब्दिक रचनाक उल्लेख केने बिना नहि रहल जा सकैत अछि।

संत शब्दक प्रयोग साधारणतया कोनहु पवित्रात्मा सदाचारी पुरुषक लेल कयल जाइत अछि। कखनहुँ ई साधु-महात्मा शब्दक पर्याय बुझि लेल जाइत अछि। संतमतमे गेला पर एकर पारिभाषिक अर्थमे संत ओहि व्यक्तिक बोध करबैत अछि जे सत् रूपी परमतत्वक अनुभव कऽ लेने होइथ आ अपन व्यक्तित्वसँ उपर उठि कऽ ओहि परमतत्वक संग तद्रूपता स्थापित कऽ लेलाक बाद विशिष्ट लक्षणक अनुसार सन्त शब्दक व्यवहार ओहि आदर्श महापुरुषक लेल कयल जाइत अछि जे पूर्णतः आत्मनिष्ठ होइत समाजमे रहैत छथि, निश्वार्थ भावसँ विश्व कल्याणक प्रवृत खाहें ओ सगुण होउथ वा निर्गुण ताहिसँ कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक।' एहि प्रसंगमे कहल गेल छैक जे एहि कड़ीमे सर्वप्रथम ``गीत गोविन्दकार जयदेवक`` नाम सर्वप्रथम अबैत छनि। जे उच्च कोटिक संत ओ भगवद्‌भक्त छलाह।

अस्तु एहि प्रसंगकें आगू बढ़बैत ई कहल जा सकैत अछि जे संसारमे सब तेजस्वी, पुरुष विश्वभरिमे आनन्दक ज्योति पसारि दैत अछि आ आनन्दमे जीवनक अजस्र श्रोत बहैत रहैत छैक।'

एहि नाशवान संसारमे मानवक यश मात्र चिरस्थायी होइत छैक। ताहूमे काव्य सम्बन्धी कीर्ति तऽ अमर होइत अछि। सगुण साहित्यमे वैष्णव समाजक लेल विद्यापति कृति अमर ``पदावली`क जे मैथिली भाषा तकर पद रचना से `संत` हृदयकें भगवानसँ भेंट करबाक इच्छा प्रबल बना दैत छैक। महाकवि विद्यापतिक कोमलकान्त पदाबली मात्र मिथिलेमे नहि अपितु सम्पूर्ण भारतमे आ कि कही समस्त विश्वक साहित्यक मध्य अपन सौन्दर्यक लेल आकृष्ट कयलक। माधूर्य ओ प्रसाद गुणक कारणे हिनका महाकविक संज्ञासँ विभूषित कयल गेल अछि।

महाकवि एवं महाकाव्यक परिभाषा दैत विश्व कवि रवीन्द्रनाथ लिखैत छथि :- वर्णनानुगुणसँ जे काव्य पाठक लोकनिकें उत्तेजित कए सकैत अछि, करुणाभिभूत चकित स्तम्भित, कौतुहली तथा अप्रत्यक्षकें प्रत्यक्ष कए सकैत अछि ओ महाकाव्य थिक एवं ओकर रचैता भेलाह महाकवि।``

एतादृश ई कहबामे कोनो तारतम्य नहि जे ``कीर्तियैस्य स जीवति`` तत्रापि- **``काव्य सम्बन्धनी कीर्तिः स्थायिनीनिरपायिनी``** आशय संत साहित्यक परिधि मे प्रत्येक युगक समस्त संसारमे मानवमात्रक बीच अपन ग्रंथक प्रभावसँ अपन सात्विक निष्ठा अविचल आस्थाक परिचय दैत, एहन लोकव्रती आत्मत्यागी जे दोसरक कल्याणमे अपन समास विहीन सरस पदक अभिव्यक्तिक कलात्मकताक बीच अवान्तर कथाक गुम्फन जे उपादेयता जाहिसँ ओ एहि नाशवान संसारमे सतत् यशस्वी बनल रहैत छथि। एहन प्रतिभावान महाकविक प्रसंग संत काव्यक अन्तर्गत रखैवला रचनाकें भाव प्रधान कहल जा सकैत अछि, किएक तऽ ओकरा रचैताक ध्यान जतेक भावसौन्दर्यक दिश जाइत अछि ततेक हुनकर शब्द ओ शैलीक चमत्कारक महत्व नहि देल गेल अछि कहबाक आशय उच्चसँ-उच्च ओ गंभीर सँ गंभीर भावकें सदा सर्वसाधारणी करण कयल गेल

अछि।" एहि परिप्रेक्ष्यमे महाकवि विद्यापतिक भाव अपन ``**देसिल बयना**``मे जे जनभाषा कहल गेल अछि जे जाति-भेद, वर्ग-भेद आदिसँ विमुक्त रहैत अछि इएह तत्व जे सामान्य भावनाक संग अनन्य सम्वन्ध स्थापित करबामे सक्षम होइत अछि। संत काव्यक लेल भावक तरंगित करव आ आनन्द प्रदान करायब लिखल गेल अछि। महाकवि विद्यापति काव्यलोकमे सौन्दर्यक चित्रण, स्वाभाविक अभिव्यक्ति एतेक सुलभ होइत अछि जे प्रत्येक पाठकक हृदयमे ओहिना सन्हियाय जाइत छैक। महाकवि विद्यापतिक रचनामे हृदय एवं मस्तिष्कक छाप रहैत छैक। मावन जीवनक संग जड़ एवं चेतनकें सेहो प्रभावित करैत अछि। काव्यमे मूलत: दू पक्ष होइत छैक भाव पक्ष आ कला पक्ष। संत साहित्यक लेल जाहि विषयक प्रमुखता देल जाइत अछि ओ भेल भाव। महाकवि विद्यापतिक रचनामे भावक भंडार अछि। कवितामे भावक वएह स्थान अछि जेना शरीरमे आत्माक। तात्पर्य ई भेल जे आत्माक पतानसँ शरीरक कोनो महत्व नहि रहि जाइत छैक। भावक विहीनता काव्यकें मृत वना दैत छैक। आशय संत कवि वएह कहबैत छथि जे भावक अद्भुत सृष्टि कए ओहिमे ध्वनि, रस, अलंकार ओ अन्यान्य उपकरण सबकें बिना प्रयासहि स्वभाव बस समाविष्ट कएने रहैत छथि। एहि दृष्टिसँ महाकवि कालीदास, महाकवि विद्यापति सुर तुलसी आदि अबैत छथि। ओना हिनका सबहिक रचनामे भाव एवं कला पक्षक सामंजस्य अत्यंत निपुणताक संग कयल गेल अछि।

महाकवि विद्यापतिक रचनामे भाव एवं कलाक निर्मल धारा जे प्रवाहित भेल अछि तैं विद्वान नरेन्द्र नाथ दासेहि पर ध्यान केन्द्रित लिखैत छथि :-

``विद्यापतिक पदावली काव्यक कसीदा नहि, भावक वैभव अछि, हँ यदि कतहु जतऽ काव्यक कसीदा बनि गेल अछि, ओ कल्पनाक उर्वरताक कारणे भेल अछि ओ कविक परिश्रमक कारणे नहि।``

संसारक मनीषी प्रवर, मानव स्वभावक अन्वेषण आ विश्लेषण करय लगलाह तखन एहि निष्कर्ष पर पहुँचला जे सम्पूर्ण चेतनता मात्र तीन धाराक बीच प्रत्यक्ष होइत अछि। तर्क शक्ति, अनुभव-शक्ति एवं इच्छा-शक्ति। मानव जीवनक जतेक क्रिया-कलाप से अही तीन शक्तिक बीच राखल जयतैक। आधुनिक मनोविज्ञानमे एकरा Thinking, Feeling and Willing कहैत अछि। हमरा लोकनि अखन धरि मावन-जीवनक व्याख्या तीनटा शक्तिकें ध्यानमे राखि कऽ धर्मक विवेचना कयल गेल अछि - क्रमश: ज्ञानकाण्ड, भक्तिकाण्ड तथा कर्मकाण्ड एहि तीनूक सनातन धर्ममे किंवा संसारक कोनहु धर्ममे एहिसँ भिन्न कोनो मार्ग अथवा निष्ठा नहि भेटैत अछि।

मिथिलाक मानवीय जीवनमे अध्यात्मक महत्व आ ओकर विवेचना ``नारदक भक्ति मीमांसा`` मे सेहो भेल अछि।" कहबाक तात्पर्य जे ज्ञानकाण्ड अथाव कर्मकाण्डहिक समान भक्तिकाण्डक सेहो कोनो निश्चित एकटा मार्ग नहि छैक वा एकटा स्वरूप नहि छैक। कारण हृदयक भावुकता, भक्ति मार्गक आधार अछि। रामरत मानव रामाजमे भावक रामानता दुर्लभ अछि। जिनकर हृदयमे जेहनभावोद्रेक मधुरिमासँ विभोर आनन्द-निमग्न भऽ उठैत अछि गीतामे कहल गेल छैक ``**ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्यथैव भजाम्यहम्**`` ।

आब विषय प्रविध संत साहित्यक ग्रंथन-प्रक्रिया विस्तारपूर्वक चर्चा कयल जायत तऽ संस्कृत ग्रंथक उपर दृष्टि राखहि पड़तैक। ओना एकर कोनहु एक प्रक्रिया नहि अछि। जिनका जे रूचलनि तकर अनुसरण कयल। मुदा प्राय: संस्कृत पंडित आचार्य सवहिक जे ग्रन्थन प्रक्रिया,

मूलाधार वएह रहल अछि। ओना संस्कृतक आदि कवि वाल्मीकि प्रणीत `रामायण` सर्गबद्ध जाहिमे सात काण्ड समास विहीन पदमे लक्ष्य, व्यंग्य, रसात्मक आलंकारिक, ध्वन्यात्मक, मधुर स्वर गायन सौन्दर्य शास्त्रीय प्रथम उपलब्धि अछि।

सन्त साहित्यक कतौक विद्वान एकरा लोक साहित्यसँ जोड़ि दैत छथि, से मुदा विडम्बना अछि। ओना एकर विस्तृत विजन अछि ``स + हित`` अर्थात् सहित कहबाक आशय अछि भाव सँ युक्त रचना साहित्य वास्तवमे साहित्य कोनो एकटा खास जातिक कल्पनात्मक ओ भावाभिव्यक्तिक बौद्धिक जीवन क्रमक परिचय होइछ जे कलात्मक भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्ति कयल जाइत अछि। आ जकर विस्तृत साम्राज्यक एकटा छोट अंश कविता सेहो अछि, जे सूक्ष्म रूपें साहित्य, सम्पूर्ण गद्य-पद्यात्मक क्षेत्रमे वव्यापक रहैत अछि। राजशेखर अपन काव्य मिमांसामे सम्पूर्ण वाङमयकें दू भागमे बटलनि अछि - काव्य आ शास्त्र। एहि विभाजनक आधार पर ओ कहैत छथि जे संतक वाणी शास्त्रक अन्तर्गत राखल जा सकैत अछि। काव्य साहित्यक अन्तर्गत नहि। परंतु एहि परिपेक्ष्यमे अरस्तुक कहब छनि जे सन्तक वाणी तऽ गुरुक सम्मति शिष्य, भक्त, श्रोता उपदिष्ट वेद-वाक्य गीताक आधार पर प्रमाण वाक्य आदेश ग्रहण करैत अछि। जाहि सन्त वाणीक प्रबन्ध विचार मुख्य रूपसँ शास्त्रक रूपें व्याख्यायित करबाक जे आवश्यक मुख्य रूपसँ मिथिला मध्य जे संत साहित्यक उत्स मानल गेल अछि सिद्ध साहित्यसँ ताहिठाम सन्त सरहपा, सन्तपीपा, गोरखनाथ, कबीर आदिक संख्या अत्यल्प मुदा हिनका लोकनिक रचनाक व्याख्या आवश्यक जे हिनका भक्तकें विशेष रूपें उद्वेलित करैत अछि।[॰]आ संत प्रवृत्तिमे साहित्यक सृजन करैत छथि।

लोकाचार, लोक व्यवहार आ जगतक संग निर्लिप्त समाजमे रहि कऽ सनातन धर्मी संत सेहो परंपरागत ग्रन्थक पद्धतिकें मिथिलामे स्वीकार कयलनि। ओना सिद्ध लोकनि परंपरागत ग्रन्थक पद्धति अपनाओल मुदा मिथिलामे एकर संख्या बहुत थोड़ छलैक। मिथिलामे कबीरक महत्व, सनातन धर्मीमे, निर्गुण सम्प्रदायक प्रतिष्ठा छलैक। संत रज्जबक सर्बंगी मध्यकालक सम्पादन कलामे सर्वश्रेष्ठ अछि। मिथिलामे कमोवेश प्रभाव छलैक, अस्तु एहि प्रसंगमे सर्वंगी सम्प्रदाय बादमे लिखल जयतैक।

महाकवि विद्यापतिक पदावलीक जे ग्रन्थक पद्धति से मिथिलाक अन्तर्गत संत साहित्यक मादे सबसँ प्रमाणिक कहल जा सकैत अछि। पदावलीक जे ग्रंथन कयल गेल अछि से रागक आधार पर। कीर्तिलतामे महाकवि परंपरागत कें स्वीकार कयलनि अछि। अवहट्ट भाषामे महाकविक दू गोट पोथी अछि - कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका। पदावली मैथिली भाषा साहित्यमे संत साहित्यक ग्रंथक पद्धतिक प्रथम पोथी अछि। कीर्तिलताक निबंधन मंगलाचरणसँ भेल अछि। जाहिमे सजज्नक प्रशंसा आ दुर्जनक निंदा कयल गेल अछि। ओना सज्जन ओ दुर्जनक वंदनासँ काव्यारंभक ग्रंथक पद्धतिक परंपरा विद्यापतिक परवर्ती ओ पूर्ववर्ती दुनू कविमे देखल गेल अछि। कीर्तिलताक जे मंगलाचरणमे महाकवि अपन इष्ट अराध्य शिव एवं पार्वतीक स्मरण कएने छथि।[॰॰]

पितरूपनय मह्यं नाकनध्या मृणालं

नहि तनय मृणाल: किन्त्वसौ सर्प्पराज: ।

इति रूदति गणेशे स्मेखक्त्ते च शम्भौ

गिरिपतितनायाय: पातु कौतूहलं व: ।।[॰]

अस्तु विद्यापतिक काव्यशैली नवीन छलनि ग्रंथक पद्धति प्राचीन तैयो विश्वास छलनि जे ई काव्य लोकके प्रिय हेतनि। भले दुर्जन एकरा पसीन नहि करौक, निंदा करतैक मुदा, सज्जन एकर प्रशंसा करबे करतैक अही विश्वासक संग लिखैत छथि :-

महुअर बुज्झइ कुसुमरस कब्बकलाउ छइल्ल

सज्जन पर अआर मन, दुज्जन नाम मइल्ल।।

पारंपरिक काव्य प्रथाके मानैत मंगलाचरणक पश्चात विनयपूर्वक गर्वोक्ति महाकवि विद्यापतिक अल्पवयक लिखल रचना अछि। चारि पल्लवमे निबन्ध महाकाव्यक बजाय ई खण्ड काव्य थिकैक। कीर्तिलता यद्यपि अवहट्ट रचना छैक खण्ड काव्यमे ई गद्य ओ पद्यमय अछि। एतद् कहल गेल अछि -``काव्यं-चम्पूरित्यभिधीयते``क अनुसार एकरा `चम्पू` काव्य सेहो कहल जा सकैत अछि।[4] जे हो एहि लघु कीर्तिमे विद्यापतिक काव्य सौष्ठव बहरा कऽ आयल अछि ताहिमे छंदक - दोहा, गीतिका, रोला छप्पय आदि। प्रयोगाधिक्य दृष्टिसँ कीर्तिलतामे अलंकार आदिक संयोगसँ विशिष्ट महत्व अछि। एहि ग्रंथक आरंभ आ अंत संस्कृतक श्लोकसँ भेल अछि।

मैथिली संत साहित्यक ग्रंथन पद्धतिक प्रसंग विद्यापतिक पदावलीक महत्व सर्पोपरि अछि। पर्याप्त पाठान्तर-पाठ भेदोपभेद होइतहुँ स्पष्ट अछि जे प्राचीन पाण्डुलिपि रहितहुँ एकर संपादन मात्र ताहिटासँ नहि भेल अस्तु आम जनताक बीच गेयात्मक पद सबहक संग्रह सेहो कयल गेलैक। विद्वानक विशेष मत छनि जे महाकविक विशेष रचना लोककण्ठहिमे अखनोधरि अवस्थित अछि। ओना लोककण्ठहुक रचनाके ओकर स्वरूपके निरखल-परखल गेल अछि। विद्यापतिक रचना पदावलीमे जे अवद्ध अछि ओ सबटा राग बद्ध कऽ कऽ राखल गेल अछि। ताहिमे प्रमुख किछु रागक नाम एहि प्रकारे अछि -मालव, धनछी, मलारी, सारंगी, गोपीवल्लभ, देशरामकरीय, बसन्त, देश देशाब, शुद्धनाट, श्रीमालब, सिन्धुलासाबरी, श्री राग, शंकुकनाट, शुद्धसूहन, कामसूहन मैथिलमालब, आसावरी, केदार, बरली नाट, विभास, गर्जरी, धन्या, भीमपलाशी, कानल, मलार वितत मालब, जोगिया, शोभना धनछी, उत्तमनाट, अहिरानी माधवी बराड़ी, भठियाली एवं विजयपुर मालव।[5] महाकविक इएह राग जे विभिन्न भाव लय मुखरित भेल अछि से हिनकामे अपनत्व कायम कऽ लैत अछि।

संतक उद्येश्य जतेक अपन कृतिसँ सहृदय जनक मनोरंजन करब नहि रहैत छनि ताहिसँ कतहु बेसी सांसारिक प्रपंचमे घेरल मनुक्खक अपन मतानुसार सत्यक मार्ग पर आनब श्रेयस्कर बुझैत छथि। संत अपन अनुभूतिकें अपन रचनामे अभिव्यक्ति करैत छथि। जगतक संग जीवक वास्तविक सम्बन्धक वर्णन करैत छथि।[7] तकर तात्विक वर्णन केहेन प्रबल भावसँ अपन ``मणिमंजरी`` कृतमे महाकवि कयलनि अछि देखल जाओ :-

भरतकाव्यक सर्व कल्याणार्थ -

सन्त: सन्तु निरापदो विजयतां राजा प्रजारञ्जने

विप्रा: प्राप्तशुभोदयाश्चिरममी तिष्ठन्तु निर्ब्याकुला:।।

काले सन्तु पयोमुचो जलमुच: सर्वाश्रमाणाभियं।

शस्यै शस्यतश धरापि नितरामानन्दकन्दायताम्।।

आशय भेलैक जे राज्जन रातत आपत्ति शून्य होथु, राजा अपन प्रजाक खियाल राखथु, आशय अपन प्रजाक भावना पर विजय प्राप्त करथु, मांगलिक कार्यक प्रतिष्ठापक सतत व्याकुल शून्य रहथु, मेघ समय पर जलावृष्ट करथि, पृथ्वी अपन सम्पूर्ण आश्रमवासीक लेल धन-धान्यसँ ``प्रशस्त बनि कऽ अत्यधिक आनन्दक मूल बनथु।'' अस्तु एहि भरत वाक्यक माध्यसँ ``मणिमंजरी नाटिकाक अंत भेल अछि। एहि प्रसंग हमर मत अछि आ संगहि साहित्य कोशक माध्यमे जे व्यक्त भेल अछि ताहिसँ संतकाव्यक जे विशिष्टता कतेक समीचीन भेल अछि। ग्रन्थके पद्धति बुझू प्राचीन भेल अछि। समाजक बीच परिवारिक जीवनमे मानवीय चेतनामे अपन कोनहु कार्य अध्यात्मिक भाव सहित अपन दायित्वक निर्वहण करब शान्त भावसँ ``स्वभाविक रूपें जे समाजक कल्याण करैत छथि आ ओहि कार्यक अपना सँ बेसी समाजक कल्याणमे निहित उदात् भावक प्रधानता अपन काव्यमे सिंचित कएने रहैत छथि। महाकवि विद्यापति `देसिल बयना सब जन मिट्ठाक उक्तिक संग जे कलांतर मे सम्पूर्ण भारतक संग खासकऽ पूर्वांचल क्षेत्र बंगाल, आसाम, उड़ीसा ओ नेपाल आदिमे एना प्रचलित भेल जे जन-जन झूमि उठल। कहल जाइत अछि जे महाकविक पदावलीक प्रभावसँ बंगालक संतश्री (जिनकर हम पहिल अध्यायमे चर्चा कऽ आयल छी) चैतन्य महाप्रभु एहि पदसभकें गाबि-गाबि कऽ झूमि उठैत छलाह, नाचय लगैत छलाह। एतबे नहि एहि गीतक संग पश्चिममे वृन्दावन तक के प्रयाण कयलाह। गौड़ीय मठमे समावेश भेल आ एकर प्रभाव सूरदास तक पर खूब मनोयोग पूर्वक पड़लनि। नोट - ध्यान देबाक छैक जे बहुत रास जे संत भेला से विद्यापतिक पदसँ प्रभावित भऽ कऽ मुदा दुर्भावना पीड़ित विद्वान लोकनि विद्यापतिकें श्रृंगारिक कवि कहि अबटारबाक जे धारणा से स्वस्थ्य साहित्यक भावना सँ मेल नहि खाइएत अछि। आगू एकर प्रमाण देल जायत।

मानव हृदय वाटिकामे महाकविकें ``कोकिल'' कहल जाइत अछि, आशय मधुर ध्वनि जे काव्यक माध्यमे नि:सृत होइछ से संसारमे चिर वंसत बसा देल। हुनकर उत्कर्षक निशानी गर्वक सामग्री अछि। हुनक प्रादुर्भावसँ मैथिल समाज धन्य भेल। हुनक शुष्क भाव-विटप जखन गुञ्जायमान भेल से शताब्दियोसँ विवरण करैत भारतीय साहित्य मात्र किएक, वरण विश्वक साहित्य समुज्ज्वल भेलैक।

कविकुल - कुमुद कलाधर महाकवि विद्यापतिक मिथिलाक क्षितिज पर आगमन रो रामय भक्तिक भेल अछि। इएह उत्तरोत्तर विकासक रूपमे, सूत्र, स्मृति, पुराणादिक विशद विषय बनल अछि। मिथिलाक इतिहास ज्ञानवृद्धिक लेल प्रसिद्ध अछि तऽ कोनो समय भक्तिक लेल तऽ कहियो कर्मक जिज्ञासामे निमग्न जे मार्ग ताहिसँ सर्वसाधारणक सम्पर्क कठिन छैक एतद् सर्वसाधारण सतत् भक्तिमार्गमकें अपनऽबैत आयल अछि। ज्ञान मार्ग विद्वत समाजमे आबद्ध रहलैक अछि आ भक्तिमार्ग सर्वसाधारण लेल आप्यायित रहल छैक। भक्तिमार्गमे चिरंतन संत ओ संत साहित्यक प्रशस्यता स्वत: सिद्ध भेल अछि।

भक्तिमार्गक प्रसंग संत मत आ ओहिमे साहित्यक विभिन्न रूपक विवेचन नारद भक्ति-मीमांसा सँ जे होइत अछि से -

पूजादिष्वनुराग इति पाराशर्य्थ:

कथादिवति गर्ग्ग

आत्मरत्यविरोधेनेति शाण्डिल्य:

तदर्पिताखिलाचारताविस्मरणे परमव्याकुलतेति नारद"

उपर्युक्त श्लोकक परिप्रेक्षमे कहल जा सकैत अछि जे ज्ञानकाण्ड एवं कर्मकाण्डक भांति भक्तिकाण्डक कोनो निश्चित मार्ग वा स्वरूप नहि कायम अछि। कारण ई तऽ हृदयक भावुकता जाहि स्वरूपकें प्रतीक अवलम्बन करैत अछि ताहिमे भावोद्रेकसँ तन्मित भऽ जाइत अछि। तखन वएह भावना, स्वरूप आ प्रतीक कल्याणकारी सन प्रतीत भऽ जाइत छैक। तदनुसार माता-पिता, सखी-सखा बन्धु-स्वामी आदि रूचि वैचित्र्यक अनुसार परमात्मामे परिणति सुधासिन्धुमे कुमुदनीक समान छिटकैत जेना ब्रज-निकुंजज्जमे राधाकृष्णक अमर गीत पुलकित भऽ उठैत अछि। महाकवि तऽ युग निर्माता छथि मुदा से कहल जाइत अछि जे युग विशेषक परिस्थिति हुनका लेल उपादान रहैत अछि। एहि प्रकारें देखल जाय तऽ ओहि युगक धार्मिक दशासँ प्रभावित पबैत छी। ओना ई वात सत्य जे मधुरापन्नभाव भक्तियुगक जे महाकविक काव्य जे भक्तिमार्गक मर्मानभिज्ञता से हुनकर वास्तविक गुणक प्रति निराधार मिथ्या अवधारणा सेहो प्रचलित भेलैक। तें हिनकर मधुर भक्ति-मार्गमे, जे संत भाव, बुझब आवश्यक छैक।

संसारक जतेक मनीषि-प्रवर भेलाह अछि सभ मानव स्वभावक अन्वेषण ओ विश्लेषण करैत ओही सिद्धान्त पर अबैत छथि जे चेतनाक तीन धारा होइत अछि - तर्क शक्ति, अनुभव शक्ति तथा इच्छा शक्ति। आधुनिक मनोविज्ञानो तऽ एहि सिद्धान्त पर ठाढ़ अछि। हमरा लोकनि एहि अर्वाचीनकालमे मानव जीवनक जे तीन प्रमुख उपर्युक्त शक्ति तकरा धर्ममे संत अवधारणाके वीचमे राखि व्याख्या करी क्रमशः ज्ञानकाण्ड, भक्तिकाण्ड एवं कर्मकाण्ड एहि तीनू मार्गक बाद सनातन धर्मक मानव जीवनमे वा ई कही जे सम्पूर्ण मानव जीवनक बीच जे धर्म ताहिमे एहिसँ इतर कोनो मार्ग नहि छैक। अस्तु मिथिलामे खास कऽ देखल जयतैक तऽ जाहि कोनो काण्ड पर ध्यान केन्द्रित कयल जयतैक ओ अपन चरम पर पहुँच गेलैक अछि। इएह कारण छैक जे एहि तीनू - ज्ञान, उपासना एवं कर्म, वैदिक कालसँ मिथिलामे मानवशक्तिकें ध्यान मे रखलाक पश्चात् इएह जे तीनू रीति ताहिसँ धर्मक प्रतिपादन होइत अछि। तें एकरा वेदमे "त्रिकाण्ड" कहैत मधुरिमासँ आत्मविभोर होइत हृदय आनन्दमग्न भऽ जाइत अछि। भक्ति मार्गक अभ्यन्तर सख्य, दास्य वा दाम्पत्य भावक जे मधुर भाव जकरा भक्ति साहित्यमे महाभाव सेहो कहल गेल छैक। श्रृष्टिमे जखन अणु-अणुमे माया-ब्रह्म, स्त्री-पुरुषक संयोग चरितार्थ भेल अछि। आधुनिक युगमे विज्ञान जड़-जगतमे स्त्री-पुंभावक विकास मानव जीवनक सम्बन्धके पति-पत्नीक सम्बन्ध चरम उत्कर्ष मानल जाइत अछि। ब्रह्म प्राप्तिमे मधुर-भावक प्रवेश ब्रह्ममे मायाक अनन्यता ओहि सत्य प्रेमकें मार्गमे कोनो बाधा नहि बनि सकैत अछि। भावुकता आगा समस्त स्वार्थ, कामुकता ओ अहंकार तिरोहित भऽ जाइत अछि। भावुकता भगवानके प्रिय छनि। प्रेम विभोरमे अनिर्वचनीय आनन्द जीवनकें कृत-कृत्य कऽ दैत छैक। इएह भावुकता चिरंतन सत्यक आधार बनैत अछि। इएह भक्तसर्वस्व उक्तिमे भाव जीवात्माकें गोपी, राधा वा प्रकृति तथा परमात्मा पुरुष वा पति बुझैत अछि।"अही भावकें आर स्पष्ट करैत महाकवि विद्यापतिक जे श्रृंगार दृष्टिकोण मूलतः दू प्रकारक पूर्ववर्ती ग्रंथसँ प्रभावित अछि। जाहिमे पहिल प्रकारमे शास्त्रीय अछि। विद्यापतिक काव्य पर शास्त्र ओ पुराणक प्रभाव ओ अपन पूर्ववर्तीक काव्यकार प्रभाव देखल जाइत अछि। तकर मुख्यबात छलैक जे विद्यापति संस्कृतक प्रकांड विद्वान छलाह आ हुनक परिवार पंडित ओ वृहद् वहुश्रुत संस्कृतज्ञ परिवार छलनि तें प्रभाव पड़ब स्वभाविक छलैक।" हुनकर वर्णन दृष्टिकोण ओ अभिव्यक्ति एहिक श्रृंगारी दृष्टिकोण हुनकर काल्पनिक सूक्ष्मतिसूक्ष्म उद्भावना से प्रथमकोटिक

प्रतिभामे राम्मानित अछि। महाकविक प्रतिभाक जे विशिष्टता ओ अपूर्व छल, हुनकर प्रतिभा तऽ बुझू ``तिल-तिल नुतन होइ`` । एहि प्रसंग हमरा मोन पड़ैत अछि -It is Comperative in in its sprit and comprehencive in its study going through the book one is reminded of the well known verse of Werdsworth :-

A voice so thrilling never was heard

in spring times from the cuckoo bird

for Vidyapati rhapsody on love suggest to the soul the presence of perpetual spring. Love is the highest logic there is many a moral marin as well scattered here and therein his peotry.

अस्तु महाकवि विद्यापतिकें बुझवा मे आ हुनकर काव्यक अन्तर्ग्रहण करबाक अपन मन मस्तिष्कक संग मानवीयताक ओहि चिंतनधारामे उतरऽ पड़तैक जतऽ मधुर भक्तिक रहस्य बुझय पड़ैत छैक। श्रीमद्भागवत, गीत-गोविन्द एवं विद्यापति ओ चण्डीदास आदिक पदावलीकें श्रृंगारिक कविताक दुराचार एवं भ्रष्ट भावनाक प्रचार रामग्री बुझैत छथि नाक-भौं रिकोड़ैत रहैत छथि। हुनका सबहिक लेल श्रीमद्भागवतमे जे कहल गेल छैक ``भगवती भागीरथी स्वर्गसँ एहि पृथ्वी पर अयलनि तऽ हुनका डर भेलनि जे असंख्य यात्री हमरा भीतर स्नान करता तऽ सबटा पाप हमरेमे सटि जायत। ताहि पर महाराज भगीरथ कहै छथिन जे सर्वथा अपरिग्रह शान्त, ब्रह्मनिष्ठ एवं संसारकें पवित्र करऽवला साधु-संत जखन अहाँक भीतर स्नान करता तऽ सबटा पाप हरि लेताह, सबटा पाप नाश भऽ जायत किएक तऽ भगवाग ओहिठाम वास करैत छथि।`` एहि उपर्युक्त पाँतिक प्रसंग कहबाक आशय जे वैष्णव भावकें परकीय रसमे परमात्मासँ लगन भगवत् प्रेम महाकवि कोकिलक श्रृंगारिक काकली प्रेमावतार ``**की कहब हे सखि आनन्द ओर, चिर दिन मंदिर माधव मोर**`` मे महाप्रभु चैतन्यक भाव प्रवणता अद्वैतचार्यकें नचा दैत अछि। महाकविक जे संत भाव वैष्णव वर्गमे भगवद्भक्तिाक मंदाकीनिक प्रवाहमे श्रीयुत् जी.ए. ग्रियर्सनक मत कतेक समीचीन बैसैत अछि - ``The glowing stanzas of Vidyapati are read by devout Hindu with as little of the baser part of human sensuosness as the songs of salomon by the christion priests.`` विद्यापतिक काव्यक प्रसंग ग्रियर्सन महोदय कहैत छथि - ``ओहि रचना पर कुरुचि, कदाचार वा भ्रष्टाचारक उत्पादक कियो कहैत छथि तऽ हुनका कहय पड़त, गुन न हिरानो गुनगाहक हिरानो छथि।`` अस्तु ओहेन मस्तिष्कक साहित्य अनुग्राहीकें विद्यापतिक निम्नांकित पाँतिकें मनन करथु जे गौड़ीय सम्प्रदाय शाखामे संत लक्ष्मीनाथ गोसाइं आ साहेब रामदास अपन कीर्तन-भजनमे पदावलीक खूब प्रयोग कएने छथि - वनविहारी मुरारीक मुरलीक ध्वनि काव्यानिकुञ्जमे ध्वनित भेल से राधाक तेहेन प्राणोत्तेजक भावविह्वलताक अनुभव करू -

रसिया, आब न बजाउ विपिन बँसिया।

बार बार चरणारविन्द गहि सदा रहब बनि दसिया।।

कि छल हुँ कि होएब से के जाने बृथा होयत कुलहंसिया।

अनुभव ऐसन मदन भुजंगम हृदय मोर गेल डँसिया।।

नन्दननन्दन तुअ शरण न त्यागब बलु जग होए दुरजसिया।

विद्यापति कह सुनू वनिता मनि तोरमुख जीतल ससिया।

धन्य-धन्य तोर भाग गोआरिन हरि भजु हृदय हुलसिया।

एहि भक्ति रसक व्याख्या भक्तिसूत्र, श्रीमद्भागवत, वृन्दावन महात्म्य सनत्कुमारसंहिता, वृहदगौतमीयतंत्र, रासपञ्चाध्यायी आदि आर्ष ग्रन्थ एवं भक्तिरसामृत, उज्ज्वलनीलमणि आदि रस शास्त्रीय ग्रंथमे जे गौड़ीय संत सम्प्रदाय साहित्यमे जे रस सज्जित-निमज्जित भेल अछि। ताहिसँ परवर्ती गौरांग महाप्रभुक मैथिली संत साहित्यक ``गौरांग सम्प्रदायक परंपरामे जे रास विलास से धर्मिक रतवरँ कोनो प्रकारें कम नहि अछि।" सनातन धर्म जे ज्ञानक भीतपर आधारित अछि आ ओ सर्वसाधारणसँ दूर भऽ गेल छलैक। एहेन परिस्थितिमे महाकवि विद्यापति लोकभाषा मैथिलीमे जे सर्वसाधारण जनताक अपेक्षा ओ आकांक्षाकें भागवत भक्तिमे वैष्णव धर्मक साहित्य-सृजनसँ आकृष्ट कयलनि। आ धार्मिक सूत्रकें राधा ओ कृष्णक सनातन जीवनकें विनोदमय रूपोत्पादक लीलाकें सहजिया संत वैष्णव बीच महनीय भावसँ रखलनि जाहिसँ मात्र मिथिले नहि सम्पूर्ण भारतकें सनातन धर्मक प्रति आकर्षण बढ़लैक। अस्तु संत संसारमे जीवकें वास्तविक सम्बन्धसँ परिचय करबैत छथि, हुनका रचनामे ओहि अव्यक्ति सत्ताकें विलक्षण व्यक्तित्व प्रदान कयल जाइत अछि।" देखल जाओ -

लोचन धाय फेघायल हरि नहि आयल रे

शिव-शिव जिबओ न जाय आशे अरुझायल रे

मन कर ताहाँ उड़िजाइअ जहाँ हरि पाइअरे।

प्रेम परसमनि जानि आनि उर लाइअ रे।।

सपनहुँ संगम पाओल रंग बढ़ाओल रे।

से मोर विहि विघटाओल निन्दओ हेराओलरे।।

भनहि विद्यापति गाओल धनि धैरज कर रे।

अचिरे मिलत होहि बालुम पुरत मनोरथ रे।।

अतएव उपर्युक्त पदमे महाकवि राधा ओ कृष्णक बीच भाव प्रवणताक वास्ते हम एहि रचनाकें राखल अछि। एहहिठाम विद्यापति एकटा पतिकें विरहमे मानवीय भावना राधाक भाव अपन पतिक लेल व्याकुल मुदा तइयो अनिवर्चनीय अभिव्यक्तिसँ बचैत, अत्यंत निराश जीवन मे विद्यापतिक रचनामे संतकीय भाव कतेक मार्मिक भेल अछि। ``जिवओ न जाय`` विरह कातरा अमूल्य प्राणक प्रति निस्पृहता अवज्ञता तइयो शरीर नहि छोड़बाक हठ हृदयस्पर्शी आशे अरुझायल रे`क माध्यमसँ अनन्त छटपटाहटि व्याकुलता मुदा कृष्णक प्रति जे भावना हुनकर विलक्षण व्यक्तित्व पर कातर भाव शिव-शिव पद अत्यंत करूणोत्पादक जे काम सँ विरहणी कामरि शिव-शिव कहि गोहारि लगायब अत्यंत भावपूर्ण भेल अछि।

संत आ काव्यकारमे गीतगोविन्दकार जयदेव कविक नाम सर्वप्रथम अबैत छनि। कहल गेल अछि जे जयदेव कवि संग बड़ पैघ भगवद्भक्त संत छलाह। हिनकर अमर कृति गीतगोविन्द आइयो वैष्णव सनातन धर्मी संतक बीच अत्यंत आदरक संग लेल जाइत अछि। आ ताहि कड़ीकें आर मनोमुग्धकारी अभिनव जयदेव नामे जे विख्यात भेला महाकवि विद्यापति जिनका किछु

पूर्वाग्रही विद्वान लोकनि मात्र श्रृंगारिक कवि कहि अपन श्रृंगारक अतिवर्णना करय लगैत छथि। हुनका ओ प्रसंग बिसरा जाइत छनि जे जखन जयदेवकें संत काव्यकार कहल गेल।[5] तत्वत: संतक भाव ओ काव्यक प्रसंग जे चैतन्य महाप्रभु, तुलसी दास, सुरदास, मीरा आदिकें संत कहल जा सकैछ तखन महाकविकें संत किएक नहि कहल जा सकैछ? कि राजदरबारमे रहैत छलाह तें हम बहुत रास पोथीक अध्ययनमे संतक श्रेणीमे जे संत ओ संत साहित्यकें परिभाषित करैत अछि देखल ताहि श्रेणीमे महाकविक नाम अबैत अछि मुदा किछु पूर्वाग्रही विद्वान एहि बातकें बुझबामे अपन मिथ्या अभिमान घमंडक संग जीव रहला अछि।

"संत साहित्यक विकासमे विद्यापतिक भूमिकाक" प्रसंग तात्कालीन मिथिलाक सामाजिक ओ धार्मिक परिस्थितिक अध्ययन करैत अनुभव ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक धराधाम पर कतेको विद्वान मनीषीक पदार्पण भेल छलनि। विद्वत् वर्गमे संस्कृत अध्ययन ओ शास्त्रचर्चा, न्याय-शास्त्र, मीमांसा-शास्त्र, वेदान्त-शास्त्र, कर्मकाण्ड, दर्शन आदिक प्रभाव छलैक। जनसाधारणक आकर्षण ओ मनोवृत ओहि जटिलताक अझोराउटमे नहि जीबय चाहैत छल। समाजमे एक प्रकारक अराजकता कायम छलैक, विद्यापति रचित कीर्तिलताक दोसर पल्लवमे -

धरि आनए बाभन बरूआ।

मथाँ चढ़ाबए गाइक चुड़ुआ

फोट चाट जनउ तोड़,

उपर चढ़ाबय चाह घोर।।

धोआ उरिधान मदिरा-साँध

देउर भाँगि मसीद बाँध।।

गोरि गोमठ पुरलि मही

पएरहुँ देमाएक ठाम नही।।

हिन्दू बोलि दुरहि निकार

छोटेओ तुरूका भभकी मार।।

उपर्युक्त पदसँ स्पष्ट भय रहल अछि जे विद्यापतिक रचना कृत मिथिलाक समसामयिक विवरण प्राप्त होइत अछि। सामाजिक जीवनमे धनिक-गरीबक बीच बेस अंतर छलैक हुनक पाँति अछि -

धनिकक आदर सब तह होए

निरधन बापुर पुछ नहि कोइ।।[6]

आशय सामाजिक दशामे बाँटल गेल समाजकें विद्यापति अपन रचनाक बलें भाषाक बलें पश्चात् सामाजिक व्यवस्था मे सन्हियायल विद्रुपता प्राय: अखुनका जे सामाजिक दशा अछि ताहिसँ विकट आ सर्वसाधारणक जीवन अत्यंत दुरूह छलैक। विद्यापति सामाजिक जीवन दशाक अध्ययन-मनन कयने होयताह। युगक समसामयिकताकें अपन रचनामे समेटबाक प्रयास कय ओकर मनन कएने छल होएताह। पश्चात् जन-मानसक भावकें अन्त:स्थलमे उतारि कऽ "देसिल

वयनाक`` जे हुनक मूल धारणा से भाषा सामाजिक चेतनाक आधार थिकैक। पश्चात वेद आ ईश्वरमे अनास्थाक वातावरण कायम छलैक, महाकवि संस्कृतक विद्वान उपनिषद कालीन अध्यात्मिक चिंतनक भूमि छल मिथिला। एहि भूमिक महात्म्यकें, महाकवि जनक याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, गार्गी आदिक जन्मभूमि, धर्मक अनवद्य स्वरूप आ स्वस्थ आस्थाक पावन भूमि मिथिला जे विश्व जनीन धारणा -``धर्मस्य निर्णयोज्ञेयो मिथिला व्यवहारत:`` सर्वाङ्गीण अभ्युत्थानक हेतु प्रसिद्ध छल। पश्चात् बौध एवं ब्राह्मणमतमे खूब संघर्ष भेलैक ईश्वरमे अनास्था एवं वर्णाश्रम धर्मक प्रति घोर उपेक्षा भाव। कुमारिल ओ शंकरक द्वारा कयल प्रतिकार प्रदर्शनक पुनर्जागरण, शैव, शाक्त एवं वैष्णव सम्प्रदायक प्रचार-प्रसार, मुसलमानक हिंसक आक्रमण, विनाशकारी प्रभाव आदिसँ `अपन संतकीय भाव उजागर भेलनि संतक लक्षण प्रसंग सबसँ पहिल शब्द गीत। प्रेसक संत अंकमे लिख गेल अछि जे संतावृत सदा अन्तार्मुखी रहैत अछि। ओ अपन अन्तारात्मामे सदा भगवानक स्पर्श सुखक आनन्द उठबैत रहैत छथि। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी संतक लक्षणक प्रसंग लिखैत छथि जे संत पूर्णत: आत्मनिष्ठ रहैत समाजमे निस्वार्थ भावसँ विश्वकल्याणमे प्रवृति कएने रहैत छथि आशय समाजक सम्पूर्ण कल्याणक भावनासँ ओतप्रोत रहैत छथि। इएह भावना डॉ. सन्त नारायण उपाध्यायक छनि।

अस्तु महाकविक जे भावना ओ साहित्य सर्जना से ``सन्त साहित्यक`` प्रसंग आ हुनक जे सहिष्णु भावना तकर बानगी हुनकर अपन ग्रंथक पदसँ अनुभव कयल जाओ। भाषा साहित्यक अन्तार्गत ``संत साहित्यक`` जे हमर परिकल्पना ताहिमे विद्यापतिक भावकें जँ अनुभव कयल जेतैक आ एकर प्रमाणिकता जे ग्रंथ सँ प्राप्त होइछ से उँच्चस्तरीय संतकीय भाव हुनक साहित्यमे नुकायल अछि। यथा - संस्कृत ग्रंथसँ -

गंगामेऽसौ ममापि प्रथम कथमहो वैष्णवीति प्रसिद्धे:

किन्नामुनामेस्तिभोग; सतु भवतु यथा भेदजात: प्रमाणम्

भिन्नोऽहं कोऽत्र साक्षी विधिरिति विधिना सस्मितं बीक्ष्यमाणौ

पायारस्तां निर्विवादौ सपदि हरि हरौ व्यऽग्यमात्रोतरान।।[४७]

विष्णु कहैत छथि गंगा हमर थिकीह, अस्तु एकर पुष्टि ओ ``गंगावाक्यावली`` मे निबंधकार विष्णु एवं शिवक एकात्मकता कायम करैत छथि। ``पुरुष परीक्षामे`` महाकवि लिखैत छथि ईश्वरक नाममात्रमे भिन्नता छनि यथा -

विष्णु केऽपि निवेदयन्ति गिरिजानाथं च केचित्तथा,

ब्रह्माणं प्रभुमुल्लपन्ति भुवने नान्मैव भिन्नं मह:

निर्णीतं मुनिभि सततं मतिभिश्चेद्विश्वमेकेश्वरम्,

तच्चिन्तापरमानसे त्यवि पुनर्भिन्ना कुतो भावना।।[४८]

अर्थात् विष्णु कि ब्रह्मा कियो कतहु पूजा करथि मुदा ओ तेजस्वरूप ईश्वर छथि। एहि क्रमकें महाकवि अपन प्रसिद्ध पदावलीमे लिखैत छथि -

भल हर भल हरि भल तुअ कला

खन पित वसन खनहि बघछाला।।

---- ----- ------

भनहि विद्यापति विपरीत बानि।

ओ नारायण ओ शूलपाणि।।

एहिमे विष्णु ओ शिवकें एक्के रूपक दू गोट कला कहल गेल अछि। अभिव्यंजनाक भंगिमासँ विष्णुक कृष्णावतार ओ गोकुललीलाक उल्लेख ओही एकत्वक अनुसरण थिक। ताहिना दोसर पदमे शक्ति-तत्त्वक विविध नामान्तरसँ एक्के परम तत्वक प्रतिपादन कयल गेल अछि -

विदिता देवी विदिता हो

अवरल केस सोहन्ती।

एकानेक सहको धारिनि

जनि रंगा पुरनन्ती।

कज्जल रूप तुअ काली कहिअ

उज्जल रूप तुअ वानी।

.....

हासिनी देइपति गरूड़ नरायण

देवसिंह नरपती।

उपर्युक्त पदक परिप्रेक्ष्यमे नाम भेदक धर्माश्रित दर्शन, बुद्धि, विचार, विभिन्न धर्म सम्प्रदायक विभेद तत्वकें हुनक भक्ताकें, हुनक धर्मचेतानाकें गार्हस्थ्य जीवनक मर्यादामे बान्हल धर्म-भक्तिक लौकिक मनोवृत्तिकें पुराण धर्मसाहित्यमे मनोवृतकें जोड़ब महाकविक विशिष्टता छलनि। तें ओ लौकिक मनोवृतिक प्रधानता ओ प्रवणतामे कट्टरताक समीकरणके अत्यंत सहजताक संग शिवतत्व विष्णुतत्व, काली-दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, राधा आदिकें एकमे मिला दैत छथि। अत: उच्चकोटिक बौद्धिक शैव, शाक्त वैष्णव, सौर गाणपत्यमे कतबो विवाद वा मतभेदकें सामान्यजन अपन हृदयमंदिर ओ गृहमंदिरमे स्थापित करैत अछि। इएह लौकिक मनोवृत्ति महाकविक लक्षणीय अछि। कहबाक आशय महाकवि सम्प्रदायिक मतवादितासँ कखनहुँ पराभूत नहि भेलाह। तें महाकविकें कोनहुँ सम्प्रदायक बूझब वा श्रृंगारिक बूझब असंगत सन प्रतीत होइत अछि।[v] हुनक निश्छल श्रद्धा अटल विश्वास देवी शक्तिमे जनिक भिन्न-भिन्न रूप भिन्न-भिन्न देवताक नामसँ पूज्य होइत छथि जे तत्वत: एके छथि।[i] एकरहि लक्ष्य करैत म.म. हरप्रसाद शास्त्री ``**पंचोदेवोपासक**`` कहलनि।[ii] महाकवि आत्मा अनुवादी छलाह। जखन ओ शिवक स्तुत्य पदसभ तन्मयताक संग शिवलीलाक अनुभूतिक अभिव्यक्ति करैत छलाह से किंवदिति अछि जे महादेव मुग्ध भऽ कऽ साक्षात् दर्शन देने छलखिन। एतद् संत अपन `इष्ट`क संग आत्मीय संवाद स्थापित करैत अपन दैहिक, क्रियानुशासनकें, गार्हस्थ जीवनकें सम्पादित करैत छथि वएह संत छथि। आ हुनक विशेषता भेल जे शब्द संसार, औपम्य, बोध युक्त, मोहावरा, कूट, सांध्य रहस्य, प्रतीक उपमेय-उपमान, प्रसिद्ध मिथक, अन्तर्कथा, अभिव्यंजना, रस छंद युक्त वा मुक्तक, अंगपरिकल्पना सिद्धान्त दर्शन भिन्न कृतिक रूपमे, मंगलाचरण, ग्रंथावली, पदावली जे सर्ग,

अध्याय, उच्छवास, खण्ड ओ काण्ड रचना विविध सम्प्रदायक द्वारा मठ आदिक वर्णन करैत सहज विचारक जे पुस्तक प्रकाशित होइत अछि ओ संत साहित्य कहबैत अछि।

महाकविक विपुल वर्णनमे सूक्ष्मतिसूक्ष्म संदर्भ सबहिक समायोजन कयल गेल अछि। कवि कण्ठहारक आत्मविश्वास आ साहस अद्भुत छनि। ओ सतत संसारक सारकें मुक्ताक छंदमे रस योजनाक पृथक-पृथक उद्दीपन आ तकर निरूपण श्रृंगार रसक मन्दाकिनीमे राधाकृष्णक हृदयक उमड़ैत भावकें सहज धर्ममे विकसित कयलनि। भगवच्चरणमे आत्मसमर्पणक एहन-एहन भाव व्यक्त जे सरस ओ हृदयस्पर्शी राधाकें अपरूप पारस दिव्यताक प्रकाश मानलनि अछि। एहि पाँतिकें अवलोकन कयल जाओ :-

जँह जँह पग-जुग धरइ, तँहि-तँहि सरोरुह भरई

जँह जँह झलकत अंग, तँह-तँह विजरी तरंग

कि हेरल अपरूप गोरि, पइठल हिय मांहि मोरि

जँह-जँह नयन विकास, तँह-तँह कमल परगास

जँह-जँह कुटिल ततहि मदन सर लाख -

हेरइति से धनि तोर, अव तिन भुवन अगोर

पुनु किए दरसन पाव, दय योहे इह दुख जाब

विद्यापति कह जानि, तब गुने देबब आनि।

महाकवि विद्यापतिक पदावलीमे जतेक पदक रचना भेल अछि वा ई कही महाकविक समस्त रचना संसार मे राधाक जे परिकल्पना से सम्पूर्ण रूपें श्रद्धाक भाव छनि। राधा सम्पूर्ण रूपें भारतीय धर्म साहित्यक मनोरम कल्पना थिकीह। अनुरक्तिक साधना थिकीह। सम्पूर्ण बाङ्मयमे महाकविक समुद्भासित भाव जे हुनक रचनामे दर्शित होइत अछि, तकर अन्वेषण कयला पर स्पष्ट होइत अछि जे भक्त चितकें उद्वेलित कयनिहारि राधाक महिला मूर्ति मांसल सौन्दर्यक सृष्टिसँ मधुर रसक अधिष्ठात्री देवी जेकाँ नानाभावसँ `हृदयक पवित्रताकें निर्मित करैत अछि। हमर कहबाक आशय `संत` हृदय मे भक्ति साधना जीवन सत्यक संधान करैत अछि। भौतिक सुखक कल्पनाके अजवारि कऽ परमानन्दक वस्तु राखि कऽ महकवि स्वयंकें भगावनमे समर्पित कऽ देलखिन। तकर परिणाम जे ओ आ हुनक हृदय संत भावनासँ ओतप्रोत छल। तें किंववदंति अछि जे महादेव विद्यापतिक अहिठाम चाकरी करय अएलाह आ हुनक भक्तिक अनुरक्तिसँ गंगा स्वयं हुनक समीप एलथिन्ह।

मिथिलाक इतिहास स्वयंमे अध्यात्मिक इतिहास, तकर स्वर्णकाल विद्यापति-युग। भऽ सकैछ हमर मतसँ विद्वान लोकनि मतैक्य नहि राखथि। वैदिक कालहिसँ मिथिलाक इतिहासक प्रसंग एकटा सहृदयता छलैक पश्चात् शनैः शनैः तिरोहित होइत गेल। भारतीय साधनाक अन्तर्गत सनातन धर्मक जे विस्तार क्षेत्र आ ओहिमे कृष्ण आ राधाक प्रणयलीलाक चित्रण भागवतक आधार पर जयदेव कयलनि, पश्चात् महाकविक विचारधारा भागवत्, हरिवंश ओ विष्णुपुराण आधारित प्रतीत होइत अछि। विष्णुपुराणक रचनाकाल तक परंपरासँ प्रचलित कृष्ण कथामे एकटा नवीन विचारधाराक बीच उदात-श्रृंगारक कल्पनाकें स्वीकार कयल गेल। पश्चात् परवर्ती साहित्य

सर्जनामे एकटा नव दिशा निर्दिष्ट भेलैक। भागवत पुराणमे कृष्णाक भक्तिक उद्गमश्रोतमे कृष्ण आओर विष्णुक एकीकरण प्रकट रूपसँ भऽ गेल छल। विष्णु देवाधिदेव आ कृष्ण हुनकर पूर्णावतार मानि लेल गेल छलैक।" सनातन धर्म जे ज्ञानक भीतपर आधारित जे जाति-भेदक भावकें आर बढ़ेलक से महाकवि विद्यापति लोकभाषाक माध्यमसँ धरातल पर उतरलाह। सर्वसाधारणक इच्छा, आकांक्षा संतुष्ट करबाक प्रयास कयलनि। साहित्यकें सामाजिक आचरणसँ एकत्व स्थापित करबाक प्रवृति कयलनि। महाकविमे एकटा खास गुण जे हुनका लोक जनक कवि कण्ठहार जिनका जे भेलनि सएह कहि विभूषित कएलनि से छनि हुनकर सर्वसाधारण जनताक भावनाकें भागवत भक्तिक प्रतिपादन करब। धर्मकें लोकानुरंजक करब। देशकालक आवश्यकताक समाधान कएलनि। वैष्णव संत साहित्यक श्रृजनक जे मूल स्रोत वैष्णव धर्मक सिद्धान्त एवं कृष्णाक भागवत स्वरूपक चित्रण संगहि राधाक संग प्रणय से मानवीय व्यवहारक प्रतिविम्बक दिग्दर्शन करबैत छथि। महाकवि विद्यापति साहित्य ओ धार्मिक आचरणकें एकसूत्रमे आबद्ध कय एकरूपता स्थापित करबाक प्रयास कयलनि अछि। एहिक्रममे ओ जेना ज्ञान आ प्रेम निवृत्ति ओ प्रवृत्ति, त्याग ओ भोगक सामंजस्य स्थापित करबाक सेहो कोशिश कयलनि। भाषा भावक माधूर्य सरसता-सरलताक सम्मिश्रणसँ मैथिली साहित्यकें वृहत्तर भाषाक रूपमे प्रकट कयलनि। महाकविक चातुरी उक्तिसँ सर्वसाधारणकें आकर्षित करबाक अपूर्व क्षमता छलनि। उत्सुकताकें जागृत करब, गूढ़तम रहस्यकें उद्घाटित करब सुन्दर शैलीमे कतेक अपूर्व सँ अनुप्रासक छटामे :-

कमल मिलल दल मधुप चलल घर

विहग गहल निजठामे।

अरे रे पथिक जन थिर रे करिए मन

बड पांतर दुर गामे।।

उत्प्रेक्षा अलंकार -

1. **धुकुर गरय जलधारा**

   जनि मुख्य सरि डरे रोए अन्धारा।।

2. **पिअ मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज**

   चाँद अधोमुख पिबए सरोज।।

   ....

उपमा - दिने दिन बाढय सुपुरूषनेहा

अनुदिन जे सन चान्दक रेहा

रूपक - अगमने पेम गमने कुल जाएत

धिता पंक लागलि करिनी

आशय हमरा जनैत विद्यापति रचना स्वानुभीतिक प्रयोगशालामे मूल्यांकन कयल गेल अछि। संत कावयक प्रसंग भावक प्रधानता देल जाइत छैक। जीवनक प्रेम लीला कें ``सत्यम्, शिवम, सुन्दरम्`क" चित्रमे काव्यक प्रत्यक्ष प्रमाण जयदेव, चण्डीदास, चैतन्य महाप्रभुक नितांत श्रृंगारिक कविताामे धार्मिक स्रोताक स्तोत्र पबैत छी, तखन महाकविक राधा-कृष्णक श्रृंगारिक मधुरभाव मे सामाजिक जीवन सम्बन्धी योग, उचिती, सोहर, समदाउन, जन्म, मुंडन, उपनयन ओ विवाह आदिक अवसर पर जे लोक कंठमे विराजमान रसक प्रत्येक तत्वमे जे अभिव्यंजना भेल अछि से कि संत काव्यक श्रेणीमे नहि राखल जा सकैत अछि? एताबे नहि महाकविक रचनाकें चारि भागमे बाँटल गेल अछि - (क) विष्णु सम्बन्धी (ख) शान्ति पद (ग) गंगा, शक्ति आदि (घ) नचारी एवं महेशवाणी।

महाकवि विद्यापतिक अध्यात्मिक पक्षक प्रसंग भाव पक्षक जे चारूता अपूर्व अछि। जे `संत` ओ ``संत साहित्यक`` लेल प्रसाद गुण मुख्य अछि, मनुष्यमे ई गुण जतेक उत्कृष्ट रहतैक ओ ओतेक पैघ संत ओ पूज्य होएताह। प्रसाद गुणक जे श्रोत जहि हृदयसँ निःसृत होइत अछि ओ हृदय ईश्वरक ओतेक समीप रहैत अछि। आशय संत सतत् ईश्वरसँ तादात्म्य सम्बन्ध बनेने रहैत छथि। महाकविक रचनामे जे प्रसाद गुण जकर विशेषता भेल सरल सुबोध शब्दावली, कर्णकटुक शब्दक अभाव, दीर्घ समासक यथा सम्भव परिहार आ कोमल वृतमे राधाक विरह भावक उच्चकोटिक उदाहरण देखल जाओ :-

अनुखन माधव माधव रटइत राधा भेल मधाइ

ओ निजभाव सुभाबहि बिसरल अपने गुण लुबधाइ।

माधव अपरूब तोहर सिनेह

अपने विरह अपन तनु जर-जर जिबइत भेल संदेह।।

भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल-छल लोचन जानि।

अनुखन राधा राधा रटइत आधा आधा बानि।।

राधा सँय जब पुनः तेहि माधव माधब सँय जब राधा।

दारूण प्रेम तबहि ननि टूटत बाढ़त बिरहक बाधा।।

महाकविक एहि अन्यतम् रचनामे विरह ओ मिलन आ मिलनमे विरह दुनूक प्रकारक कष्टक अनुभव ओ सामंजस्य स्थापित करबाक जे प्रतिभा से मानवीय जीवनक एहन रूप उपस्थित करव कही तऽ **``तोहें सदृश एक तोहें माधव``** अत: एहन प्रेममयी मधुर भक्तिक रहस्य काव्यमे हृदय स्वयं वशीभूत भय जाइत छैक। एहन काव्यके एक बेर के कहय हजारो बेर एहन श्रृंगारिक कविताके जरा देल जयतैक ताइयो पश्चात्य साहित्यक फिनिक्स पक्षीक (Phenix) समान किंवा प्राच्य साहित्यक कामदेव सदृश ओहि भष्महुँ सँ वारंवार प्रादुर्भाव होइत रहतैक।[16] यदि इएह श्रृंगारिक काव्य मानव समाजमे भ्रष्टताक प्रचार करैत तऽ मानव समाज एकरा कहियाने विस्मृत कऽ देने रहितैक। मुदा भावुक हृदयक भक्ति भावना एहि वैज्ञानिक युगहुमे श्रीमद्‌भागवत् श्रृंगारिक भावकें मिथिलामे नहि वरण सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मयमे कथावाचक कार्तिक, माघ ओ वैशाखमे बचैत विद्यापति ओ वेदव्यास, जयदेव ओ चण्डीदासक पदकें कालीन्दी कूल पर कृष्ण द्वारा गोपीक चीर हरण, उन्मुक्त रास लीलाक वर्णन करैत छथि से भक्ति-भावक मनोहारी दृश्य हृदय मथुरा-वृन्दावनक गलीमे घुमय लगैत अछि। यथा :-

चानन भेल विषम सर रे

भूषण भेल भारी

सपनहु हरि नहि आयल रे

गोकुल गिरिधारी

एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे

पथ हेरति मुरारी

हरि बिनु हृदय दगध भेल रे

झामर भेल सारी।

राधाक विरह वर्णनक जे अभिव्यक्ति देलनि अछि, महाकवि से मदन सारक धारमे दगध भेल राधाक जे हृदय से भक्ति-भावुक प्रेमानन्दमे भावाश्रु बहय लगैत छनि।

भाव ओ कला पक्षक एहन अवलोकन भेटब अन्यत्र असंभव अछि। संत परमात्मासँ लगनमे लीन रहैत छथि से महाकविक जे काव्य साधना ताहिमे संतक जे धारणा दृष्टिगोचर

होइछ, ओ महाकविक परवर्ती काव्यकारक भावना संत साहित्यक सृजन मे एकमुस्त प्रवृत कयलक।

एहि प्रकारें अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे महाकविक श्रृंगारिक रचना नहि; वरण ओ आस्तिक सनातन धर्मिक, भक्तिक भावमे सरावोर `संत` प्रवृत्तिक अनुशीलन अछि। एहिसँ स्पष्ट भेल जे महाकवि गार्हस्थ्य जीवनमे संत हृदयक विष्णु सम्बन्धी पदमे अपूर्व परिचयक अभिव्यक्ति देखू -

माधव हम परिणाम निराशा

तोहें जगतारण दीन दयामय अतए तोहर विसवासा...

पुन: शान्त पदमे विचरण करैत संत हृदय महाकवि विद्यापति लिखैत छथि -

यावत जनम हम तुअ पद न सेवल

युवति मति मञे मेलि

अमृत तेजि किय हलाहल पीअल

सम्पद विपदहि भेलि।।

अस्तु निर्बेद वैराग्यभावक प्रदर्शन जीवनक क्रिया-कलाप पर क्षोभ प्रकट कयलनि अछि जे संत भावक सदाचारी सिद्धान्तक परिचय दैत छथि। एतवहि नहि महाकवि गंगा मे शक्तिक प्रति जे हुनक आत्मीय स्नेह वन्दना कतेक हुनका हृदयमे सुख उपजैत छनि जे देखल जाओ - गंगा विनती मे कहैत छथि -

वड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे..

`संत` हृदय जीव जगतसँ कतेक सम्पृक्त रहैछ से गंगा वन्दनामे दिग्दर्शन करौलनि अछि। पश्चात् भगवतीक वन्दना मे -

`` जय-जय भैरवि असुर भयाओनि....

मे संसारिक असारताक दूर करवाक प्रार्थना जे महाकवि कयलनि से संसारमे मानवीय चेतनाक लेल प्रेरित करैत अछि। नचारी - महेशवाणीमे मिथिलाक मध्य जे महादेव अत्यंत लोकप्रिय छथि से महाकवि संत संस्कृतिक जे भाव ताकर आत्मसमर्पण कयलनि। से शुद्ध भक्ति-

भावनाक परियायक भेल अछि यथा -

1. हम नहि आजु रहब एहि आँगन...

2. कखन हरब दुखभोर हे भोला नाथ...

3. शिव हो उतरब पार कओन विधि...

आदि। मानव जन-जीवनक चित्र प्रस्तुत करैत `संत` अपन मात्रक कल्याण नहि, अपितु समाज - कल्याणक लेल जे विकल ह्रदय, अकुलाइत रहैछ तकर सुमधुर गेय पदक सृजन कय `संत` कवि तकर अपरूप आचरणक परिचय देलनि अछि।

अतएव महाकवि विद्यापतिक संत साहित्यक भूमिकाक प्रसंग कही तऽ महाभारतमे कहल गेल छैक जे संत धर्मक अनुष्ठान करैत छथि।" संतक निश्वार्थ प्रेमसँ जनसामान्यक जे महाकविक प्रति अनुराग, विश्वास ओ जीवन जीबाक लेल औषधि प्रदान करैत छथि। ई जे भूमिका महाकवि विद्यापतिक से युग-युगसँ मिथिलाक संत साहित्यक वैभव परिलक्षित होइत अछि।

•••

संदर्भित ग्रंथ

1. संत अङ्क (बारहवाँ वर्षका विशेषांक) पेज - 206 ।
2. संत अङ्क (बारहवाँ वर्षका विशेषांक) पेज - 207

   Poems touch us more deeply; they move even the sceptic Soul, for they give a passionate form to the final longing of developed minds of the seers, Saints and the Poets."
3. हिन्दी साहित्य कोष, पेज - 854।
4. संत अंक, पेज - 208

   को म्होवान्यात् क: प्राण्यात् यदेव आकाश आनन्दो
   न स्यात्, येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम् ।
5. हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, पेज - 851।
6. मैथिली भाषाक प्रासंगिक अध्ययन सामग्री, पेज - 50 ।
7. विद्यापति -काव्यलोक बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, लेखक - नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार, पेज 1 एवं 2।
8. **पूजादिबनुराग इति पाराशर्थ:**
   कथादिष्वति गर्ग:
   आत्मरत्यविरोधेनेति शाण्डिल्य
   तदर्पिताखिलाचारतद्विस्मरणे परव्याकुलतेति नारद:
9. `हिन्दी संत साहित्य का केन्द्र बिन्दु" लेखक डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय। पेज-9,10, एवं 11।
10. संत साहित्य की समझ डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, पेज-91।
11. कीर्तिलता प्रथम : पल्लव।
12. संत-साहित्य की समझ, पेज-2, लेखक - डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय।
13. संत साहित्य की समझ - पेज-93। डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय।
14. हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, पेज - 85।
15. मणिमंजरी - मैथिली अकादमी पटना, संपादक डॉ. चन्द्रधर झा, पेज-110।
16. विद्यापति काव्यलोक - नरेन्द्र नाथ दास - विद्यालंकार, पेज - 2, भक्ति-मीमांसा - विद्यापति काव्यलोक, पेज-2।
17. पद्म पुराणमे - युवतीनां यथा यूनि यूनांच युवतौ यथा

    मनोऽभिरमते तद्वत् मनोऽमिरमतां त्वति
18. "विद्वानक जे एहन यशस्वी परिवारमे विद्यापतिक जन्म भेल छलनि, जे अपन परंपरागत

विद्याज्ञानक लेल प्रसिद्ध छलैक। महाकविक रचनामे ओहि परंपरागतक पूरा प्रतिफल दर्शित बुझा रहल अछि।" - डॉ. सुभद्र झा सौंग्स ऑफ विद्यापति, पृष्ठ - 20।

19. विद्यापति काव्यलोक लेखक नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार "Comment of Modern Review On Vidyapati Kabyalok December - 1942 मे सँ।

20. साधबो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपाबनाः।
हरन्त्यधं तेऽङ्गसङ्गातेष्वास्ते ह्यधभिद्वारिः।।
(श्रीमद् भागवदगीता 9/9/6) संत अङ्क, गीताप्रेस, पेज - 95।

21. विद्यापति काव्यलोक, पेज-10।

22. मैथिली काव्य परसंस्कृतक प्रभाव (गौरीनाथ भाषणमालाक प्रथम पुष्प) भाषणकर्त्ता स्व. श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-74।

23. हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, पेज-852।

24. संत अंक (गीताप्रेसक), पेज - 207 मे संत आर काव्य आलेख।

25. विद्यापति कालीन मिथिला, पेज-209, लेखक - डॉ. इन्द्रकान्त झा।

26. संत-अंक 627 लेखक - स्वामी श्रीशुधानन्द जी भारती, शीर्षक `संततत्व`, पेज-81।

27. विभागसार पात नं.-1, कथामासौ पाठसँ।

28. रमानाथ झा पुरूषपरीक्षा पृ. 115 सम्पर्क पोथी विद्यापतिकालीन मिथिला ले. प्रो. डॉ. श्री इन्द्रकान्त झा, पेज - संख्या - 354।

29. विद्यापति - मैथिली अकादमी, पटना, सम्पादक - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पेज-106।

30. विद्यापति - मैथिली अकादमी, पटना, सम्पादक - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पेज-106।

31. विद्यापति - मैथिली अकादमी, पटना, सम्पादक - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पेज-106।

32. कीर्तिलता (म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक सम्पादनक भूमिकामे) सम्पर्क पोथी "विद्यापति" संकलन डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पेज - 108।

33. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, पेज-8, प्रकाशक - मैथिली अकादमी, लेखक-पं. राजेश्वर झा।

34. मैथिलीक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री, पेज-56।

35. विद्यापति काव्य लोक, पेज-8, लेखक - नरेन्द्र नाथ दास `विद्यालंकार`।

36. सर्वत्र दयावन्तः सन्तः करूणवेदिनः।
गच्छन्त्यतीव सन्तुष्टा धर्म्यं पन्थानमुत्तमम्।। कल्याण संत अंक, पेज-39, गीताप्रेस।

37. सौहृदात्सर्वभूतानां विश्वासो नाम जायते।
यथा सत्सु विशेषेण विश्वासं कुरूते जनः।। - कल्याण संत अंक, पेज-39, गीताप्रेस।

श्रोतग्रंथ

1. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. जयकान्त मिश्र।
2. मैथिली साहित्यक इतिहास - श्री दुर्गानाथ झा `श्रीश` ।
3. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. बालगोबिन्द झा `व्यथित`
4. मैथिली साहित्यक इतिहास - श्री मायानन्द मिश्र।
5. मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास - प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, वैदेही समिति, दरभंगा।
6. मिथिलाक इतिहास - प्रो. उपेन्द्र ठाकुर, मैथिली अकादमी, पटना।
7. महाकवि विद्यापति - पं. शिवनन्दन ठाकुर पुस्तक भंडार, लहरियासराय।
8. मैथिल कोकिल विद्यापति - व्रजनन्दन सहाय, नागरी प्रचारणी सभा, आरा।
9. पुरुष परीक्षा - सम्पादक सुरेन्द्र झा `सुमन`, मैथिली अकादमी, पटना।
10. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - सम्पादक सुरेन्द्र झा `सुमन`, मैथिली अकादमी पटना।
11. रीति साहित्य को बिहार की देन - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना-3।
12. मैथिली लोक साहित्य एवं लोकसंस्कृति - स्व. डॉ. रमानन्द झा `रमण` ।
13. व्रजबोली साहित्य - लेखक - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, बिहार हिन्दी अकादमी।
14. वेदान्त दर्शन (ब्रह्म सूत्र) - गीता प्रेस।
15. ऋषि चर्चा - लेखक : महेन्द्र हजारी।
16. मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ - डॉ. रामेश्वर मिश्र, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी।
17. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. दिनेश कुमार झा।
17. हिन्दी संत साहित्य का केन्द्रविन्दु - लेखक : डॉ. सन्त नारायण उपाध्याय।
18. मिथिला अन्वेषणा एवं दिग्दर्शन - लेखक : इन्द्रनारायण झा
19. भगवत्प्रेम अंक - गीताप्रेस, गोरखपुर।
20. उत्तरी भारत की संत परंपरा - लेखक डॉ. परशुराम चतुर्वेदी।
21. श्री मद्भागवद्गीता - भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट।

●●●

चारिम अध्याय
विद्यापतिक परवर्ती संत कवि

महाकवि विद्यापति श्रष्टा छलाह, श्रष्टा सतत् मानवीय भावनाक प्रवल पक्षधर होइत अछि। ओ अपन निजक प्रसंग मे कम समाजक हित-चिंतन एवं मानवीय धारणाक अंतर्निहित सामाजिक मंगल कामना मे संलग्न रहैत छथि। महाकविक आविर्भाव ताहि समय मे भेल छलनि जखन मिथिलाक राजनीतिक आ सामाजिक सम्पूर्ण व्यवस्था संक्रमण कालसँ गुजरि रहल छल। द्रष्टा-श्रष्टाक चेतना संसार के भीतर मे जे तृष्णा तकर ओ निवारण तकैत गृह कार्यक सम्पादन मे ओ भक्त संत कहैत छथि। ``**याग दनादि धर्म**, धनसंग्रह आ सांसारिक विषयभोग एहि सब पदार्थमे हमर कनिको रूचि नहि अछि, हे ! भगवान पूर्वकर्मक अनुसार जे किछु होमयवला छैक ओ हेबे करतैक मुदा हे भगवान अहाँक समक्ष हमरा सन अनाथक हृदयसँ खूब जोरसँ इएह प्रार्थना रहत जे एहि जन्ममे कि, अपितु अगिलो जन्म-जन्मान्तर मे अहाँक चरण युगलमे अटल प्रेम बनल रहय। कि एकर चरितार्थ महाकविक कतेको पाँति अछि : -

हर जनि विसरब मो ममता / हम नर अधम पतीता।।

इतिहास साक्षी अछि मिथिलाक अध्यात्मिक सनातन हिन्दू जातिक आस्तिकता तऽ प्राचीन महर्षिक सन्तान बुझैत गोत्र आ ऋषिक स्मरण, वन्दन संतक पवित्र विचारमे पलल-बढ़ल अछि। जे स्नान, संध्या बन्दन ईश्वरीय ज्ञानक दिव्य आलोकमे जे संतक लेल तीन प्रकारक साधना कहल गेल छैक :- सुमिरण, ध्यान भजन' एतवे नहि संतमतक जे तीन सिद्धान्त (1) ईश्वरक अस्तित्व मे विश्वास (2) परमात्मा आ जीवात्मामे स्वरूपगत एकता आ (3) आत्माक नित्यता एहि तीनूक व्याख्या भेल एकर जे समाहार कयल जाय तऽ परमात्मा आ जीवात्मा तत्वतः एके भेलैक।' महाकवि विद्यापतिक रचनामे जे पद सभ हुनक भावनाकें उजागर करैत अछि ताहिसँ तऽ ई कहल जा सकैत अछि -

कुलं पवित्रं जननी कृतार्थ।
बसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंबित्सुख सागरे स्मिन्
लीनं परं ब्रह्मणि यस्य: चेत:।।

आशय स्पष्ट अछि जे जकर चित अपार संवित्सुखसागर परब्रह्ममे लीन जिनकर जन्मसँ कुल पवित्र एवं जननी कृतार्थ ओ पृथ्वी पुण्यवती होइत छथि। तकर प्रमाण ग्रियर्सन महोदयक मैथिली क्रैस्टोमैथिमे कहैत छथि - `Unparalle in the history of Literature.`` लोकप्रियताक अद्भुद उदाहरण संसारक समक्ष महाकवि प्रस्तुत कयलनि। अखनो धरि भारतीय भाषाक कोनहुटा महाकवि हिनक समता करबामे सक्षम नहि भेलाह अछि। महाकविक जे संतभाव तकर बानगी हुनक पदावलीक पद सभ दय रहल अछि। भाषा साहित्यक मध्य समाजक अंतिम व्यक्तिकें जोड़वाक जे

महाकविक धारणा लोक जीवन मे भक्ति पदसँ `स्थानीय सांस्कृतिक गौरव भावनाकें उभारि कऽ समाजकें विघटित होयवासँ वचाओल। विद्यापतिक जन्म एहेन परिवार आ कुल मे भेल छलनि जतय पांडित्य ओ राज्य संपर्कित आ समाजमे भरल-पुरल मर्यादा रहबे करितनि मुदा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक उत्कर्षक लेल जे समाजमे वा विद्वानक बीच जे प्रताड़ना सहैत मानवीय चेतानाकें ईश्वरसँ जोड़ि जे जगेबाक चेष्टा कयलनि तकरे प्रतिफल, महाकवि, महाकवि भेलाह। संत हृदय कखनहुँ हरबरायल वा उदिग्न नहि रहत हुनक भाव सतत ईश्वरक सताकें सर्वोपरि मानैत अछि। तें महाकविमे कखनहुँ जीवनक कोनहुँ छण मे कियो हुनक रचनामे उदिग्नता नहि दर्शित होइत अछि। विद्यापतिक भावकें जे कियो श्रृंगारिक मानलनि अछि ओ हुनक कुंठित भावना अछि। नहि तऽ साहित्येतिहासमे एक प्रकारक धार्मिक सम्प्रदायक नाम देल गेल अछि **``विद्यापति सम्प्रदाय``** हमर विषय ``प्रविद्ध परवर्ती संत कवि`` जे विषय कमोवेश बुझल जाओ इएह अछि। महाकविक रचना मे जे विविधता सएह हिनक विशिष्टता रहल अछि। तें एहि प्रसंग मतांतर सेहो खूब बेसी भेल अछि। म.म.हरप्रसाद शास्त्री हिनका पंचदेवोपासक मानैत छथि। भागीरथ प्रसाद शुक्ल हिनका `शाक्त` मानैत छथि। डॉ. जनार्दन मिश्रक अनुसार ``एकेश्वरवादी`` छलाह। नगेन्द्र नाथ गुप्त एवं पं. शिवनन्दन ठाकुर हिनका `शाक्त` मानैत छथिन। खगेन्द्र नाथ मित्र एवं डॉ. विमान विहारी मजुमदार हिनका `वैष्णव` मानैत छथि। राधाकृष्ण चौधरी सेहो बैष्णवे मानैत छथि।"

विद्यापतिक भावना आ रचना जीवादि मे परम तत्वक खोज करैत अछि। हुनक रचना ईश्वर ओ जीवक सम्बन्धके चरितार्थ करैत अछि। पदावलीमे मानवीय प्रतीक दृश्य ओ विम्ब विद्यापतिक धारणा छनि जे जगत सूर्यक समान आ जीव ज्योतिक समान मानलनि अछि। हमरा जनैत महाकविक रचनामे जीवक रितत्व ईश्वरमे, आ ईश्वर रितत्व जीवमे देखैत छथि तें ओ लिखैत छथि :-

जय जय संकर जय त्रिपुरारि

जय अध पुरुष जयति अधनारि।

तें महाकवि कि शान्ति पदमे वैराग्यक जे अभिव्यक्ति से मार्मिक भेल अछि। भक्तिक जे भावना जे वैष्णव भाव प्रवणताक संग महाकविक रचनामे निःसृत होइत अछि, जे हुनक उन्नतिशील विचारकें ग्रहणकें कय शंकरदेव, चण्डीदास, सूर तुलसीदास, राय-रमानन्द, मीरा, कवीर आदि संत श्रेणी ग्रहण करैत छथि। संत तऽ परमात्माक संग सम्पर्क स्थापित करैत छथि। महाकवि विद्यापति काव्यक अध्ययन करबामे आ ओकर निष्कर्ष पर पहुँचवाक जखन समय अबैत छैक तखन हमरा जनैत सब विद्वान अपने-अपना तर्क मे विद्यापतिक कें तकैत छथि आ से कही जे ओहि रूपमे भेटियो जाइत छनि इएह तऽ छनि महाकविक विशिष्टता। महाकवि विद्यापतिक प्रसंग कहल गेल छैक :-

``VIDYAPATI KABYALOK`` is a great achievement Highly sympathetic and-Scholarly Interpreter of the mind and massage and music of the master poet of maithili`` His vision and voice which one finds in the

works of Sanskrit, Bengali, Maithili, Hindi and English poets. The auther has given many parallelism between Vidyapati Sentiments and style of impression and those of Kalidas, Chandidas Govinddas, Tulsidas and Shakespeare thus proving once again that true poets are cityzens of the world. No wonder then that the current of Vidyapatis melody of love between Radha (Soul) and Krishna over soul is enternal and as love is the highest logic there is many moral marin as well Scattred here and there in his poeatry.

विद्यापतिक रचनाक प्रसंग ``संत मत`` तकवाक जे हमर धारणा आ हुनक परवर्ती रचनाकार मे ओ `संत साहित्यक विश्वास`क जे धारणा भारतीय भाषा साहित्यमे सामाजिक जीवनक बीच मिथिलामे सामाजिक वर्गीकरण सेहो भऽ रहल छलैक। मनुष्य दिनानुदिन गरीबीक पाँकमे फसल जा रहल छलैक। वातावरणसँ भिन्न भऽ कऽ कियो नहि रहि सकैत अछि, आ ने जीवि सकैत अछि। ओकर व्यक्तित्व आ कृतित्व ओहि वातावरणक प्रभावसँ परोक्ष वा प्रत्यक्ष रूपें प्रभावित रहबे करतैक। एतवे नहि वातावरणक संग ओहि सांस्कृतिक, सामाजिक वातावरणक प्रभाव सेहो रचनाकारक, रचना पर रहैत छैक। आ संतक प्रसंग कहल गेल छैक -``सन्त: स्वयं परहित विहिता भियोगा:``' संत दोसरक हित ओ सुखात्मक मे लागल रहै छथि जाहिसँ हुनक हृदय आनंदित ओ ईश्वरक समीप अपनाकें बुझैत छथि। महाकवि रचनाक माधूर्य अपूर्व होइत छल। दोसर महाकविक आविर्भाव ओहि समय मे भेल छल जे पूर्वोत्तर भारतक मध्य राजनीतिक ओ सांस्कृतिक संकट उपस्थिति भए विकट रूप धारण कयने रहैक। महाकविक सामने सबसँ पैध समस्या रहनि अपन सांस्कृतिक तत्वक रक्षा करब। तें ओ अपन ``देसिल बयनाक`` भाव ग्रहण कय जनभाषामे लिखब शुरु कयलाह किएक तऽ जनभाषा जाति-वर्ग भेद सँ मुक्त रहैत अछि इएह एहेन तत्व जे साधारणक मानसमे सामान्य भावनाक क्षेत्रमे अनन्य सम्बन्ध स्थापित करबामे सक्षम होइत अछि। भाषा-साहित्यक विकल्प राखि अपन सांस्कृतिक गौरवकें महाकवि अक्षुण्ण रखबाक लेल सतत प्रयत्नशील रहैत छथि।``" भक्तिपद लोक जीवनक सामाजिक भक्तिभावना भावाभिव्यक्ति मे जे आनन्द प्राप्त होइत अछि ताहिसँ मानव जीवन तथा जड़-चेतना जगतकें सेहो प्रभावित करैत छैक। महाकवि विद्यापतिक प्रतिभा चेतनासँ स्पंदित मैथिली काव्यधारा मातृभूमि मिथिलाक मध्य `संत` साहित्यक` अनुसंधानक क्रममे जे रश्मिराशि चातुर्दिक आलोकित करैत अछि ओ अमृतमय सिद्ध भेल अछि। इएह कारण जे विद्यापतिक काव्य धाराक विकास मात्र मिथिले धरि नहि अपितु संपूर्ण संसारमे भेल।

भारतीय दृष्टिमे अध्ययन-अध्यापनक प्रसंगे देखल जाइत अछि जे संतक भावना साहित्यक प्रति विशेष अभिरूचि तहिना मिथिलाक जे संत तिनको साहित्यक प्रति विशेष अभिरुचि छलनि। मैथिली भाषा-साहित्यमे विद्यापतिक पश्चात जे मूल संत सब अएलाह तिनकर साहित्य पद्मय ओ लोकनि तात्कालीन समयसँ प्रभावित, जे स्वाभाविक छलैक मुदा एकर संत साहित्य रूपें मूल्यांकन मैथिली साहित्य मे प्राय: नहि भेल छैक, जकर परिणाम मिथिला जकर राजा स्वयं

`जनक` संत छलाह। मूल्यांकन अध्यात्मक भावना सँ भेल मुदा अध्यात्मिक भावना आ संत मे किछु मौलिक अंतर अछि, संत साधना परहित मे विश्वास रखैत ईश्वर सँ तादाम्य संबंध बनेने रहैत छथि। ओतय अध्यात्मक पुरुष मात्र ईश्वरमे लीन रहैत छथि। जेनाकि कहल गेल अछि - **``सत्कर्मकृन्मत्परमो, मदक्त: संगबर्जित: निवैरि: सर्वभूतेषु य: स मामेति पांडव।**

मैथिली भाषा साहित्यक प्रंसंग विद्यापतिकें बिविध रूपमे देखल गेल अछि। मुदा हुनका प्रसंग जे ``विद्यापति`` धार्मिक संप्रदाय कहि इतिहास आदिमे उल्लिखित अछि से ई एक प्रकारें संत संप्रदाय सँ मेल खाइत अछि, एतद् कवि संत छलाह। आ हुनक भावनाकें अनुगृहीत कय जे आगू बढ़लाह से ओहि शाखाक संत रूपें परिगणित भेलाह।

विद्यापतिक समकालीन एवं पूर्ववर्ती विद्वान मानवीय जन जीवनकें व्यवस्थित करबाक उद्देश्य सँ अनेकानेक विद्वान स्मृति निबंध लिखने छथि एहि मध्य महाकवि विद्यापतिक योगदान सर्वोपरि अछि। एहि प्रसंग म.म. हर प्रसाद शास्त्रीक उक्ति कतेक समीचीन से देखल जाओ :- [विद्यापति संत छलाह से एहि उक्ति सँ परिपुष्टि होइत अछि -] ``मैथिल पंडितेर नानाग्रंथ रचना करिया अवार हिन्दू समाजके पुनर्गठित करिवार चेष्टा करेन। विद्यापति एइ सकल पंडित दिगेर मध्ये एकजन प्रधान।`` विद्यापति जीवनोचित वैविध्य के परखि परिपूर्ण करबाक प्रयास कयल। संत साहित्यक प्रसंग कहल जाइत अछि जे गंभीर सँ गंभीर भावकें सतत् सर्वसाधारणी करणक भाषा मे व्यक्त कयल जयबाक चाही। आशय महाकविक पदावली मे जाहि भाषा ओ भाव - अधम पतित कोना उतरता पार एहि भवसागर मार्गसँ ताहि लेल महादेवसँ अपन अनुनय-विनय कय रहला अछि....

सिव हो उतरब पार कवन विधि?

लोढ़व कुसुम तोरब बेलपात।।'

विद्यापतिक वैष्णव शांति पदक अध्ययन मननसँ महाकविकें वैष्णव धर्मक भाषा रूपें गृहीत भेल। मुदा हिनक भाषा ततेक सुलभ ओ ग्राह्य जन सामान्यक भेल जे **`विद्यापति सम्प्रदाय`** नामे विख्यात भेल। जाहि संप्रदायक विकास समस्त पूर्वोत्तर भारत मे भेलैक तकरे फल जे बंगालमे ब्रजबुली साहित्यक नामसँ प्रसिद्ध भेलैक आसाम मे शंकरदेव प्रभृति मैथिली पद ओ नाटक, उड़ीसामे राय रमानन्दक गोदावरी तट पर सँ एहि संप्रदायक भाव विस्तार कयल।

महाकवि विद्यापतिक काव्य विस्तारक जे भाव परवर्ती ओ समकालीन रचनाकार भेलाह जिनका मे संत भावक विस्तार भेल अछि, जाहिमे संत भक्तिक उद्देश्य आत्मगत नहि वल्कि वस्तुगत होइत अछि। संतक भावमे अध्ययन-अध्यापन सँ स्पष्ट होइत अछि जेनाकि ``गीता प्रेसक संत उक्तिमे`` विद्यापति कें रसिक संतमे परिगणित भेल अछि। जाहिसँ हम आहत भेल छी। विद्यापतिक पूर्व जयदेवक प्रति ओ भाव नहि। जखनकि विद्यापतिक रचनामे ओ संतकीय भाव जकरा सँ प्रभावित पूर्णरूपेण एकटा संत संप्रदाय कायम भेल अछि।" विद्यापति सम्प्रदायक मुख्य गुण संगीत सम्मति, भणिताक प्रयोग एहेन रचना रहस्यवादी कवि मध्य मिथिलेतर प्रदेशमे सेहो भेलैक जकरा प्रसंग हम लिखल अछि। हमर विषय प्रविधि **``मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण``** अछि।

मिथिलाक संत साहित्यक प्रसंग ओ मिथिलेत्तर संत साहित्यक प्रसंग यदि गवेषणात्मक विमर्श कयल जायत तऽ संत साहित्य मे सहज सामाजिकताक विशेष प्रमुखता अछि। मानव जाप सहज शून्य आ मनक एकाग्रता ओ अन्तर्मुखता पर विशेष रूचि देखाओल गेल अछि। सन्त साहित्य मध्य संत चरणादासक कथन -

मन ही मन जाप करि

दरपन उज्ज्वल होइ।।[13]

मुदा मिथिलाक संत साम्प्रदाय उपर दृष्टि निक्षेप कयल जायत तखन स्पष्ट ओ श्री मद्भागबत गीता`क अनुपम संदेश के प्रतिपादित करैत अछि। से खाहें विद्यापतिक उपर सेहो वैष्णव भक्तिक भाव कतौ ने कतौ प्रभावित ओ अनुभव कयल जायत अछि। वैष्णव पदावली गीत साहित्य हमरा सबकें पदावलीक रूपें जे प्राप्ति भेल अछि ओहिमे सुरक्षित गीत सभ भणिता रूपें प्रमाणिकताक संग परिचायक अछि।[14]

उपरोक्त अध्ययनक प्रसंग मे महाकविकें उपर जे संत भावक घटाटोप मानवामे बहुत रास विद्वान कें दुविधाक, निर्मूल कयल आव एहि संत महापुरुष महाकाव्यकार कें जे `विद्यापति सम्प्रदाय` मानल गेल छथि, अहूमे विद्वानक बीच जे/से मतैकता नहि अछि। अस्तु हम एहि दिशामे विद्यापतिक समकक्ष पश्चात 1860 ई. महाराज महेश्वर सिंहक राज्याकालक अंत धरि तक मानल गेल अछि।

ओना हम संत साहित्यक अध्ययनक क्रमे संतक जे रूप, लक्षण, संत शब्दक व्याख्या आदि करैत बोधज्ञान होइत दोहाकोश अर्थात् सिद्ध साहित्यक संग मैथिली संत साहित्यक प्रसंग चर्चा करैत विद्यापतिक काव्य रचनामे संतकीय भावक चर्चा कयलहुँ अछि। एहि चारिम अध्यायमे ``विद्यापतिक परवर्ती संत`` साहित्यक अध्ययन विश्लेषण करैत, सर्वप्रथम एहि कड़ीमे निम्नांकित संत साहित्यक धाराक वर्णन अवलोकन करी :-

1. **विष्णुपुरी** - अध्ययन ओ अनुशीलन सँ हिनक काल निर्धारण 1425 सँ 1500 ई. मानल जा रहल अछि। जेनाकि बिविध पोथीसँ प्राप्त साक्ष्यक आधार बनाओल गेल अछि।[15] विष्णुपुरी संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वानक संग महाकविक समकालिने जकाँ छलाह। पं. रमानाथ बाबूक अनुसार संस्कृत महान ग्रंथ ``भक्ति रचनावलीक`` विख्यात रचनाकार छथि। जगज्ज्योतिर्मल्लक हरगौरीक विवाहसँ अनुमान कयल जा सकैत अछि जे वैष्णव संन्यासी रहितहुँ, उदार विचारक व्यक्तित्व रहथि। विष्णुपुरी करमहे तरौनी मूलक श्रीधरक पौत्र एवं रतिधरक पुत्र छलाह। म.म. महेश ठाकुरक पिता एवं चन्द्रपति ठाकुरक मातामह, मूलनाम रमापति छलनि। पहिने शिवभक्त पश्चात् संन्यास धारण कय विष्णुपूरी नामे ख्याति प्राप्ति कयलनि। संस्कृतक अनेको ग्रंथक प्रणेता रहलाह अछि। ``भक्ति रत्नावलीक` जे हिनक प्रसिद्ध ग्रंथ तकर बंगला अनुवाद 1487 ई. मे प्राप्त भेल से ``लौरियाकृष्णदास`` कएने छलाह। कविशेखर बद्रीनाथ झा हिनक परिचय अपन मैथिली **``गीत रत्नावली``**मे विस्तृत रूपें लिखैत छथि। जे - चैतन्यदेवक परम गुरु माधवेन्द्रपुरीक संगी एवं म.म. महेश ठाकुरक माम छलाह। एतबे नहि

``प्रेमचंद्रिका`क रचयिता परमानन्द पुरी हिनकर शिष्यक कोटिमे अवै छलखिन। एखनहुँ विष्णुपुरीक डीह तरौनी गाममे प्रसिद्ध भेल अछि। प्रो. तंत्रनाथ झा हिनक कवित्वक विशिष्टताक प्रसंग मे अपन पोथी -``Vishnupuri the Maithili Vaishnava Savant`` मे सविस्तार वर्णन केने छथि। हिनक कुल पाँच गोट पद अखन धरि उपलब्ध भेल अछि जाहिमे दूइ ``दूईगोट रचना शिव ओ कृष्ण विषयक एवं एक गोट राम विषयक अछि। ओ उच्चकोटिक शिव ओ विष्णु भक्त छलाह।

संत `विष्णुपुरी`क प्रसिद्ध रचना जे प्रसिद्धि `भक्तिरत्नावली` नामे अछि, सर्वप्रथम आसाममे प्राप्त भेलैक। ताहिमे ओ तैरभुक्तीय परमहंस कहि परिचित परम वैष्णव नामे ख्याति छलाह। चैतन्य देवक स्थानीय गुरु सेहो छलाह, स्थानीय गुरुमे रघुपति उपाध्याय एवं माधवेन्द्रपुरीक शिष्य ईश्वरपुरी जे चैतन्य देवकें दीक्षा देने रहथिन, ओहो तिरहुतिया मूलक ब्राह्मण छलाह। मिथिलामे वैष्णव पीठक परंपरा अदौसँ रहल अछि। लक्ष्मीनाथ गोसाई, रघुवर गोसाई, रोहिणीदत्त गोसाईं, कमला दत्त गोसाईं, भैयाराम झा आदि सभक साधना स्थल, शिष्य परंपरा बरोबरि प्रचलित रहल अछि। स्वयं विद्यापति भागवत् पुराणक प्रतिलिपिकार छलाह जे भागवत ओ गीतगोविन्द सँ प्रभावित वैष्णव पदक रचयिता छलाह।

गीत काव्यक दृष्टिसँ विद्यापति अपन जीवनक उत्तरार्द्ध मे अपन जीवन हरिक पद पर अर्पित कयने छथि से कतेको पद अछि...।[15] अस्तु मिथिलाक परंपरा मे गीति-साहित्यक परंपरा चौदहवीं शताब्दीमे आरंभ भऽ गेल रहैक। जे उमापति उपाध्याय लगसँ वृतात्मकताक रूपमे प्रारंभ भेल। जे हो, वैष्णव सहजिया सम्प्रदायक उपर बौद्ध सिद्धक प्रभाव छलनि, जयदेवक काव्यमे राधा ओ कृष्णक संग काम नाट्य शास्त्रीयताक नायिका भेद सँ जोड़ल गेल अछि जे विशिष्ट रीति श्रृंगारक अजस्र धार बहल अछि।

विष्णुपुरी जे `तीरभूक्ति परमहंस` तऽ कतहु तीरभूक्ति संन्यासी नामसँ सेहो प्रसिद्ध भेल छथि। आचार्य शिवपूजन सहाय हिनक गणना वंशाली वैष्णव धर्म प्रवर्तक रूपें सेहो कयने छथि। लिखैत छथि जे ``आपकी रचनाओं का जितना प्रभाव उक्त धर्म पर पड़ा, उतना कम ही व्यक्ति अथवा रचना पर पड़ा होगा।``[16]

हिनक रचनामे अलौकिक प्रेम ओ मर्म वर्णित अछि। हिनक रचनाक अध्ययनसँ विद्यापतिक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि। यथा -

प्रथम बएस जत उपजल नेह
एक पराण दौ एकजन देह
तइसन पेम जदि विसरह मोर
काठहु चाहि कठिन हिअ तोर
ए प्रभू ठाकुर न तेजहु नारि
तोंहें बिनु लागब कओने ओहारि
सुपुरुष चिन्हअ एहे परिनामे

जइसन प्रथम तइसन अवसान

टुटल पेम नहि लाग ठाम

विष्णुपुरी कउ बूझसि विरान।

जखन संतक मादे पदक व्याख्या कयल जायत ताहिठाम क्षुद्र अहंभाव बुद्धिक स्थान नहि रहि जाइत छैक। भगवानकें शास्त्र मे रसरूप कहल गेल छनि। ``**रसो वै सः**`` आत्मा ओ परमात्माक रस विशेषक अनुभव कयलासँ महान वस्तुक प्राप्ति होइत छैक, कहबाक आशय आत्माक पहिल संपर्क जखन कोनो महान वस्तुक वा व्यक्तिक द्वारा उपजल नेह अंत-अंत धरि आनन्दातिरेकसँ भरल बूझू दू देह एक प्राण सन भेल रहैत अछि। संतक द्वारा एहेन प्रेमक भावसँ रचल ओ रचना साहित्य वनि जाइत अछि। एहि पदमे विष्णुपुरीक अलौकिक ओ परमार्थक भाव एहि सँ सामाजिक जीवनक नीक तथ्य बहराइत अछि, जे नीक मानवीय प्रेमक प्रसंग महाकवि सेहो लिखलनि अछि -``सुजनक पेम हेम समतूल दहइत कनक दुगुन होइ मूल`` काव्यक माध्यमसँ उपदेशक रास्ता बनाओल गेल अछि।

अस्तु एहि उपर्युक्त पदमे सार्वभौम अलौकिक प्रेम तथा क्षुब्ध साहित्यिक मूलमे संशयात्मक हृदयक हलचलकें संत विष्णुपुरी अपन काव्यक माध्यम सँ अन्तःकरणक चरम अभिलाषाकें शांति प्रदान करबाक प्रयास कयलनि अछि।

भारतीय साहित्यक अन्तर्गत परमात्माक उपासनामे संत भिन्न-भिन्न मार्ग जेना ज्ञानयोग, कर्मयोग आ भक्तियोग आदिक उपयोग करैत छथि। भारतीय साहित्यमे भक्तिक महत्व एकटा प्रेरक तत्व रहल अछि। भक्तिक बिना भारतीय काव्यक मार्मिकता आ महत्ताक बुझि सकब संभव नहि अछि। एतबे नहि विद्वान डॉ. रामदेव झा लिखैत छथि जे ``भक्ति अनुप्राणित काव्यक पृथक कऽ देल जाय तऽ काव्यक नामपर बहुत थोर सामग्री शेष रहि जायत।`` कहबाक आशय भारतीय बाँङ्गमयक अंग अछि मिथिला। आ मैथिली भाषा मे सेहो भक्तिक परंपरा अविच्छन कायम रहल अछि, से मुदा स्वाभाविक प्रक्रिया अछि।

मैथिली भाषा-साहित्यक काव्य परंपरामे श्रृंगार-भक्ति जे परंपरा ओ अध्यात्मिक जीवनक अत्यंत कोमल भावनासँ संबंध छैक। श्रृंगारक जे सम्बन्ध इहलोकिक आ भक्तिक परलौकिक मिथिला मे पंचोदेव उपासना मे मुदा मूलतः तीनटा प्रमुख रूपें अराध्य रहलैक अछि। विष्णुक रूपें राम आ कृष्णक अवतार, शिव ओ शक्ति जकर विभिन्न प्रभेदा रुप अछि। विष्णुक रूपें मिथिला मे जे खूब प्रसिद्धि रहलैक अछि। रामावतार आशय रामाश्रयी शाखा आ कृष्णावतार, कृष्णश्रयी एतद् वैष्णव भक्तिक इएह दू टा आधार, शिव सदाशिव साम्य रूपमे, एकर अतिरिक्त किछु अन्यान्य देवी-देवीतक भक्तिक भावना मे लागल रहैत छथि।

मैथिल भक्ति काव्यक धारामे अपन-अपन विश्वास ओ सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक परंपरा सहज ओ प्रेम-श्रद्धा-आस्था ओ विश्वासक प्रतिफलें भेल अछि। एहिठाम कोनो धार्मिक आंदोलन किंवा सम्प्रदाय विशेषक कोनो प्रभाव नहि परलैक। आस्थावादी मैथिल समन्वयक प्रवृत्तिक होइत छथि। एकटा मैथिल भक्ति वा आस्थावादी मे प्रायः जे रचनाकार संतमे बहुत

तन्मतासँ जाहि दिशि भाव निदर्शन भेलनि ताहि दिशि प्रसंग वढ़ल।

परमहंस विष्णुपुरीक प्रसंगे जेनाकि उपर्युक्त लेखन मे अछि `भक्तिरचनाकरक साक्ष्य सँ स्पष्ट अछि जे ओ पूर्वोत्तर वैष्णव सम्प्रदायक उत्थानकर्त्ताक रूपें बेसी विख्यात भेल छथि। डॉ. दिनेश चन्द्रसेनक कथन छनि -``ई बंगीय समाजमे भागवतकें लोकप्रिय बनौलनि एवं मध्वा संप्रदायक वैष्णव मतक बंगालमे सर्वप्रथम माधवाचार्यक सम्प्रदायकक लेल बंगाल मे पथ प्रशस्त कयलनि।' डॉ. सुशील कुमार डे महोदयक मतानुसार ``विष्णुपुरी श्रीधरक अनुयायी एवं अद्वैत्व वेदांती छलाह। जे हिनकर पितामह छलथिन। एतबा तऽ अवश्य जे ई मिथिलावासी ताहि मे कोनो संदेह नहि।' काव्य रचना हिनक शिव विषयक ओ कृष्णपरक रचना विशेष रूपें प्राप्त होइत अछि। हिनकर पूर्ववर्ती मैथिली साहित्यक आदि कवि महाकवि विद्यापतिक प्रसंग सेहो रचनामे मधुर रसक व्यंजना करैत छथि कृष्ण जन्म ओ गोपीक मनोभावक जे वर्णन जाहि तन्मयताक संग भेल अछि, प्रसंगे कही जे जनता पर अत्यधिक प्रभाव छोड़ने छथि। संत सबहिक सब युगमे सत्य ओ सौन्दर्यक खोजक उद्देश्य रहैत छनि, जीवन भरि ताहिक पाछू परिश्रम करैत रहै छथि। नाना प्रकारक कष्ट आदि के सहि सत्यक सिद्धान्तकें स्थापित करबाक लेल प्रयासरत रहैत आनन्द जीवनक अजस्र स्रोत बहबैत रहैत छथि। भगवानक संसारमे दीव्यधाम खोजमे संत सतत भगवत्साक्षात्कार तथा प्रेमसमाधिका सिद्धान्त ओ वृत्तान्तकें अपन रचनामे संयोगने रहैत छथि। विष्णुपुरीक राम-सीताक प्रति सेहो समर्पित-भक्तिभावना रहैत छलनि एतवे नहि ``**भक्तिरत्नावली**`` ग्रंथक अतिरिक्त, विष्णुपुरी टीकाक सेहो सृजन कयने छलाह। वैष्णव सम्प्रदायक महान संत विष्णुपुरीक एकटा प्रशंसात्मक घटना अछि, जे नाभास्वामी भक्तमाल मे अंकित अछि तकर भाव एहि प्रकारें चैतन्य महाप्रभू जगन्नाथपुरीक प्रवास मे छलाह हुनका विष्णुपुरीक महान पोथी -``भक्ति रत्नावली`क सूचना प्राप्त भेलनि, महाप्रभू चैतन्य पोथीक लेल चिट्ठी लिखला ताहि समय विष्णुपरी काशी प्रवास मे छलाह, विष्णुपुरी ग्रंथक एक प्रति तुरंत प्रेषित कय देलथिन।

संत विष्णुपुरी अलौकिक बुझू ओ लोकनि परमात्माक भूमिकामे आत्मबोधन करैत छथि आ आत्माक आदेशकें स्वीकार कयने छथि। एतद् विष्णुपुरी संत शिरोमणि जीवनक मनोहारी वर्णन माध्वा सम्प्रदायक वात्सल रसमे -

हे सखि हे सखि, कहिओ ने
जाहे।
नन्दक अङगना कइसन उधाहे।
नन्दक नन्दन त्रिभुवन सारे।
यशोदा पाओल ननुत्रे कुमारे।
मन भेल हरखित देखि तनुरूपे
जनि भेल उदित दीप अन्धकूपे

आसलता पल्लव जनि देला

मेदिन सुरतरू आँकुर भेला

विष्णुपुरी कह सुनह गोआरी

परम जोति अवतरल मुरारी।।

उपर्युक्त पदमे उत्प्रेक्षा अलंकारमे वात्सल्य रसक संग रूपक अलंकार हे सखि कहल नहि जा रहल अछि, नन्दनक अंगना उखाही करब नीक नहि लगैत अछि। कोना करब नन्दक जे पूत से त्रिभुवन संसारक छथिन मुदा यशोदाक लेल नेने छथिन अहिठाम रूपक अलंकार जखन कि मन भेल ओहिना हरखित जे कूप अन्हार मे एकाएक दीप उदित अर्थात् जड़य लागल होइ। अतएव भगवान प्रति जे उत्कट धारणा विष्णुपुरी अपन उपासना ईश्वरक संभावनाक दीप जड़बैत संदेह सँ आगाँ निश्चयात्मक भाव सँ पाछाँ रचनाक भावक शुद्ध विचार निर्मलबुद्धिक संग भगवद्भक्त भक्तिक आनन्दक जे विषय-वस्तु मैथिली साहित्यमे संन्त साहित्यक जे अवधारणा से अन्यान्य प्रदेशसँ भिन्न, इतिहास, पुराण, भागवद्गीता, गीतगोविन्दकार जयदेव अर्थात् शास्त्रीय पद्धितक अनुशरण करैत दृष्टिगोचर होइत छथि। तें मिथिलाक संत अन्यान्य प्रदेशक संतक अपेक्षा विशेष शास्त्रीय पद्धतिक अनुसरणक आग्रही रहैत छथि।

अस्तु भागवत संत ब्रह्म होइत छथि। संत भगवानक नित्य लीला आ लीलामयक हृदय होइत छथि। संतके कोनो सीमामे बान्हब अत्यंत दुष्कर। संत रंगमहलक बात कें माहली संते बुझैत छथि।

संत विष्णुपुरीक प्रसंग भक्तिरत्नावलीमे मात्र एतबे लिखल छैक जे ओ **`परमहंस`** कोटिक संन्यासी संत छलाह जे तिरहुतक वासी छलाह। नाभाजी अपन रचना भक्तमालमे उल्लेख कयल अछि। हिनक प्रसंगे आर सब उल्लेख भऽ गेल अछि। मुदा हिन्दी विश्वकोषमे संत विष्णुपुरीक दोसर नाम ``बैकुण्ठपुरी`` सेहो छलनि। संगहि इहो लिखल अछि जे मदनगोपालक शिष्य छलाह। आ ओ वेसीकाल काशीमे रहैत छलाह। संत विष्णुपुरीक प्रसंग हिन्दी विश्वकोषमे सेहो बहुत किछु अध्यात्म कथा लिखल अछि। विष्णुपुरीक अध्यात्म सँ अभिव्यक्ति कतेको रास कथा अछि ताहिमे तीनटा कथा जे मार्मिक अछि जे मानव रूपें देवरूप दर्शित अछि।

भक्तरत्नावली मे भागवतमे सँ नवधा भक्तिक प्रसंग सुन्दर वाक्य संगृहीत कयल गेल अछि। भक्तिरत्नावली कुल 13 भागमे विभक्त अछि। जकरा प्रत्येक भाग कें ``विरचन`` कहल गेल छैक। विष्णुपुरी एहिमे मूल बात से कहैत छथि -``कतेको बड़का अज्ञ होउथ वा अल्पबुद्धि हमर एहि प्रयासकें भक्त लोकनि अवश्य याद करता। जेना मधुमाछी मे कतेक बुद्धि छै आ कतेक गुण तकर लोक कें नहि खियाल रहैत अछि मुदा ओकर संचित मधुकें सब बहुत चावसँ ग्रहण करैत अछि।

``भक्तरत्नावली`` पर सर्वप्रथम संस्कृतमे टीका लिखल गेल अछि, श्रीधर द्वारा। जकर नाम ``कान्तिमाला अछि जे गद्यमे लिखल गेल अछि। मैथिली भाषामे ओना स्व. तंत्रनाथ वाबू सेहो लिखने छथि एतबे नहि, **``भक्तिरत्नावली``** पर गुजरातीमे सेहो टिप्पणी भेल छैक। विष्णुपुरी चारि

गोट ग्रंथक प्रणयन कयने छलाह। (1) भगवद्भक्तिरत्नावली (2) भागवतामृत (3) हरिभक्तिकल्पलता एवं (4) वाबय विवरण। आ संगहि भक्ति रत्नावली पर तीन गोट अख्यायिका लिखल गेल छैक। भक्तिरत्नावलीक 13 गोट विरेचनमे पहिल विरचनमे भक्तिक महिमाक वर्णन भेल अछि, दोसरमे महत्पुरुषकें, तेसर भक्तिक आ चारिमसँ बारह धरि नवधा आ तेरहम विरचनमे ``शरणागतिका`` वर्णन भेल अछि।[5]

एहि प्रकारें शिव विषयक गीत एवं हिनक बृहद अध्ययन अनुशीलन सँ प्रतीत होइत अछि जे भक्तिगीतकार एवं ``जगज्जोतिर्मल्लक` हरगौरी विवाह सँ अनुमान कयल जा सकैत अछि जे संत विष्णुपुरी उदार विचारक व्यक्तित्व छलाह।

विष्णुपुरी केवल परमहंसे टा नहि छलाह ओ संस्कृतक ग्रंथ रचनाकार भक्त कविक संग मातृभाषामे गीत रचनाकार सेहो छलाह। विष्णुपुरी पंचोदेवोपासक सेहो रहथि। शिवक नचारीक वर्णन देखू -

भल शिव शंकर मोरा

बुझल जतीपन तोरा

अति गोरा लो......

....

फणि माला लो

विष्णुपुरी शिवदासे

परिपुर्ाथ मोर आसे

दिसबासे लो

एहि प्रकारें विष्णुपुरी संत जीवनक साधना प्रतिपादन निष्काम निर्वैरी, विरक्ति संसारक संबंध के ममता त्याग बटोरीक माध्यमे रामदर्शी रूप धारण केने रहलाह।

मध्यकालीन सनातन धर्म जे ज्ञानक भीति पर आधारित, सर्वसाधारणसँ बड़ दूर छल। वर्णव्यवस्था एवं जाति-पातिक भेदभाव पर आधारित समाजक बीच जे दूरी तकरा आर बेसी वढ़ौलक। एहि परिस्थितिमे वैष्णव संत लोकनि लोकभाषाक माध्यमसँ धरातल पर आबि सर्वसाधारण जनताक अपेक्षा एवं आकांक्षाकें सन्तुष्ट एवं पूर्ण कयल। मानवी ऐषणाक सम्मिश्रण भेलासँ वैष्णव धर्मक सिद्धान्त के साहित्यक संग एकसूत्र मे आवद्ध कय कालविजयिनी बनौलनि। संत कतेको प्रकारक होइत छथि। गीताप्रेसक संत विशेषांकमे सांसारी संत, गृहस्थ संत, व्यापारी साधु-संत आदिक उल्लेख भेटैत अछि। अतएव मानव हृदय परमात्मासँ संपर्क करबाक लेल जे व्याकुल आशय, संतक लक्षण प्रसंग श्रीमद्भागवतगीतामे कहल गेल अछि :- भगवान स्वयं भक्त श्रीउद्ध्वजी सँ कहैत छथि जे संत सब पर दया करय बला ककरहुँसँ छोह द्रोह नहि करैत छथि। तितिक्षु सत्यप्रतिज्ञ, निन्दादि दोषादि सँ रहित, सुख-दुखक छन्दमे समान भाव वला, उपकार

करैवला, विषयसँ विचलित नहि होमयवला आदि गुणसँ सम्मन्वित कारुणीक, सहनशील सुहृदयी - कृपालु भगवानक प्रति प्रार्थित रहैत छथि।"सएह संत भेलाह।

ओना मिथिलामे विद्यापतिक प्रभाव बहुमुखी अछि। विद्यापतिक अध्ययन जेना अखनो अपूर्ण सन लगैत रहैत अछि, जखनकि संसारमे हिनका पर खूब बेसी अध्ययन भेल छैक।

मिथिला दर्शनक भूमि रहल अछि एतद् भक्तिरसक सराबोर भेल प्रधान तत्व शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा मधुर वा कही श्रृंगार रस मे वैष्णव मत के मधुरतम मानल गेल अछि। संत विष्णुपुरी सेहो एकर पर्याय छलाह।

2. **गोविन्ददास** : विद्यापति काव्य परंपराक अनुगामी `संत` गोविन्द दास, संतमत भक्ति आत्म समर्पण ओ महाप्रभूक संग जे एकात्मकता स्थापित कयने छलाह से संतमतक मूल सिद्धान्तसँ मेल खाइत अछि। (1) ईश्वरक अस्तित्वमे विश्वास (2) परमात्मा एवं जीवात्माक स्वरूपगत एकता (3) आत्माक नित्यता। एहि प्रकारें संतमत ईश्वरकें सत्ताकें मात्र सिद्धान्त रूपें टा मे नहि मानैत छथि, बल्कि हुनका लेल ईश्वर ओतबेक सत्य होइछ जतेक `आत्मा`। संतमतमे शंकाक कतहु गुंजाइस नहि रहि जाइत छैक। कहबाक आशय विद्यापति सम्प्रदायक काव्य विषयक भक्ति ओ श्रृंगार। भक्तिपदक रचना मे भेल शक्ति वन्दना, गंगा वन्दना, शांतरसक गीत, महेशवाणी, नचारी, एवं विष्णुपद आदि। ``विद्यापति संप्रदाय`` मे जे रचना अछि ताहिमे राधा-कृष्णक केलिलीला जे मैथिली भाषाक अंतर्गत श्रृंगाररसिक मानल जाइछ। ``मुदा चैतन्यमहाप्रभू वैष्णव सम्प्रदायमे मधुर रसक वैष्णव भजन कहल अछि। एहन भजनमे श्रृंगार आवरण मात्र रहैत अछि। कवि अपन भक्ति विषयक मनोभावकें उत्कट श्रृंगाररसक रचनाहुमे कृष्णक आलौकिकत्वक आभास दैत व्यक्त कऽ दैत छथि । गोविन्द दासक पदमे ई विशेषता सर्वत्र दृष्टिगोचर हाइत अछि, जकर प्रमाण हिनक `भणिता` पदक जे पंक्ति, जाहि मे श्रृंगारक लेसमात्र नाम नहि, प्रत्युत हृदय खोलि कऽ राखि देने छथि। कोनो-कोनो ठाम हिनक पदक मनन कयलासँ ई अनुभव होइत अछि जे संतकीय भावमे विद्यापतिसँ आगू निकलि गेल छथि। यथा महाकवि कहैत छथि -``रसश्रृंगार सरसकवि गाओल`` जखन कि गोविन्ददास लिखैत छथि-

``गोविन्दगास हृदयमणि मंदिर`` अविचल मुरति त्रिभंग।` गोविन्द दास हेरि भेल भोर।।

एतद् गोविन्ददास अपनाकें भगवद्लीला कहि तकर साक्षी ओ द्रष्टा मानलनि अछि। अस्तु सन्त काव्यक अन्तर्गत सन्त लोकनि अपन रचना मे ओहि अव्यक्ति सत्ताकें विलक्षण व्यक्तित्व प्रदान करैत अछि। निर्गुण कवि सेहो सगुण जेना बनाकऽ भगवान इष्टदेव कें स्वीकार करैत छथि।

गोविन्ददास सगुणोग्राही संत राधा-कृष्णक महिमाकें गबैत-गबैत अघाइत नहि छथि। हुनकर स्वानुभूतिक तीव्रता आ तज्जन्य आनन्दसँ प्रेरित रहैत छथि। सन्त कविक इएह विशेषता जे शब्द ओ पद माध्यम सँ जे प्रकट, प्रमाण स्वरूप से बुझा जाइत अछि। अपन निजक कसौटी पर कसैत साधिकार लिखैत छथि रचना वंदनामे -

भजहु रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द

दुलह मानुष जनम संतसंग तरहए भवसिन्धु

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वन्दन पाद-सेवन दास
ध्यान पूजन आत्म निवेदन गोविन्ददास अभिलाष।।

सन्त काव्यक वर्ण्य विषय विशेषतर धार्मिक एवं दार्शनिक होइत अछि। जगत एवं जीवकें वास्तविक सम्बन्धक वर्णन संत कवि कयने रहैत छथि। सन्त कविक रचनामे भावक विशेष महत्व रहैत छैक। ``जकरा काव्य शास्त्रक जनक आचार्य भरतमुनि" भावकें तीन भेद मानलनि अछि। आशय वा रचयिताक भाव वा कही ओ भावानुभूतिक संग सामाजिकताक पूर्ण तादात्म्य बैसाओल जाइत अछि। संत काव्यक अंतर्गत रचयिताक ध्यान भाव सौन्दर्यक प्रति विशेष दर्षित होइत अछि। जाहि मे परमतत्वक चर्चा रहैत अछि। अस्तु संत साहित्यक प्रसंग `हितकारक` शब्द अत्यंत व्यापक जे सम्पूर्णतामे रहैत छैक एतद् कही संत साहित्यक प्रसंग कहल जाय तऽ - **``हितेन सह सहितम् तत्सभावः साहित्यम्``** कहबाक आशय, उपर्युक्त पद कतेक मार्मिक कृष्णे जे नन्दक पुत्र थिकाह, हुनके चरणक वन्दना करू, मनुख कोखिये जन्म लेब दुर्लभ आ से सन्त ओ ज्ञानीक सत्संग करू आ क्षणिक सुखक, सांसारिकताक नाश होयत तदनुसार ओहिमे जे बाधक से तकरा नष्ट करबाक जे माध्यम से बुझू नबधा `भक्तिक माध्यमसँ जे एकटा प्राचीन पद्धति अछि, संत गोविन्द दास अपनौलनि अछि।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङमयं तप उच्यते।।

महाकविकें सेहो संत कवि मानवामे विद्वान कें असमर्थता रहल छनि मुदा संत सिद्धान्ताक मतानुसार, विद्यापतिक काव्यक अध्ययन मननसँ हुनक जे धार्मिक विश्वास वैष्णव ओ शिव उपासक संग, विद्यापतिक भक्ति ओ श्रृंगार रसक चर्चा खूब भेल अछि। खूब विवेचन भेल अछि। मुदा हुनक अराली व्यक्तित्व जाहिराँ उपेक्षिते रहि गेला, हम एहि राबके अध्ययन करैत महाकवि संत सेहो छलाह, से सम्बन्धित अध्यायमे सिद्ध कयल गेल अछि।

मैथिली भाषा-साहित्यक एकटा बड़ पैघ अवगुण जे उचितो वस्तुकें घोंघाउजमे संशय बना दैत अछि। आशय जतवा अध्यायन कयल अछि ताहि मे गोविन्द दासक रचना ओ व्यक्तित्वक `संत` भावसँ समन्वित मुदा हुनका सांसारिक, रसमिजाजी कवि संतक कड़ीसँ जे अवटारवाकक धारणा सर्वथा अनुचित मानल जा सकैछ। तकर पाछू कही `संत`क अर्थ लक्षण मत परंपरा, विशिष्टता साधना लक्ष्य आदिक विषद् वर्णन हम प्रथम अध्यायमे केने छी ताहिसँ ई सिद्ध होइछ जे गोविन्ददास संत कवि छलाह।

वैष्णव मतावलम्बीक अनुसार जेनाकि कहल जाइत अछि जे निर्मल आत्मस्वभाव ज्ञानमय आत्मा आदिक प्रसंग कालीदास लिखैत छथि - जे संत बुद्धिमान, पवित्रात्मा, सज्जन परोपकारी, सदाचारी होमक चाही, साधारण बोल-चालक तहत भक्त, साधु व महात्मा आदि शब्द

संतक प्रयाय मानि लेल गेल अछि।[19] सिद्धान्तिक भावमे सन्त महापुरुष हुनकर रचना आ वाणीक परिचय अध्ययन मननसं जे भावश्रोत नि:सृत होइत अछि जाहिमे मानव समाजक कररुणासँ द्रवित कल्याणक जे भावना आ दोसर दिशि भेल परमज्योति, परमशक्ति, परमात्मा वा ब्रह्मक जे साक्षात्कार करबाक जे व्यग्रता जेना गोविन्द दास अपन परंपराकें तोड़लनि अछि - यथा -

माधव मास साध विधि बाँधल पिक कुल पञ्चमगान

दारुन मनमथ फुलसर हानल कान्ह रहल दूर देस।।[20]

मैथिली भाषा साहित्यमे गोविन्ददास कें हम ओहि कोटिक `संतमें` रखैत छियनि जाहि कोटिमे हम सब बंगालक चैतन्य महाप्रभुकें बंगला साहित्यमे रखैत छी। मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत गोविन्दासक रचनामे जीवन प्रवाहक शाश्वत सौन्दर्यक जे व्यंजना भेल अछि ताहिमे भगवान श्री कृष्णक प्रति जे भक्ति-भावना मनमे उजागर होइछ, ताहि प्रसंग कही तऽ कृष्णक प्रति भक्तिभाव मे पाँच प्रकारक मनमे रति भाव उत्पन्न होइछ। अही पांच प्रकारक रतिभाव उत्पन्नमे पाँच प्रकारक स्थायी भाव रूपक जे परिणति होइत अछि ओएह गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायिक रस विस्तारक व्याख्या करैत अछि। अत: वात्सल्य एवं मधुर - पाँच भेद गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय जे रस तकर सविस्तार व्याख्या कयलनि अछि।[21] ताहि दृष्टिसँ गोविन्द दास चैतन्यदेवक मधुरस किंवा भक्ति रसक परिज्ञान करबौने छथि। गोविन्द दास विद्यापति सम्प्रदायक संत कविमे बंगालक जे चैतन्यदेव तिनकर अनुचर छलाह। वैष्णव पद सबहिक संग्रहक आरंभ **`रूप गोस्वामी`** क काव्य सिद्धान्त ग्रंथ सभहिक उदाहरण सबकें संग्रहीत करबाक हेतु भेल अछि।[22] एकरा बादे वैष्णव गीत सभक पैघ-पैघ संग्रहक क्रमिक विकास होमय लागल।

सर्वप्रथम एहि प्रकारक संग्रहमे गोविन्द दासक पदक संग्रह विश्वनाथ चक्रवर्तीक ``क्षणदा - गीत - चिन्तामणि`` सतरहम-अठारहम शतकक सन्धि कालक संकलन अछि। एहिमे गोविन्द दासक 78 गोट गीतक संकलन कयल गेल अछि। (2) अही कालमे दोसर संकलन नरहरि चक्रवर्तीक `गीत-चन्द्रोदय` नामसँ 1170 वैष्णव भजन संकलित भेल अछि। जाहिमे गोविन्द दासक 65 गोट भजन संकलित अछि। ओना ई ग्रंथ अप्रकाशिते रहल एकर पांडुलिपिमे 1446 गीतक संकलन अछि। 3. तेसर संकलन 1724 ई.क अपनमे राधामोहन ठाकुर जीक द्वारा `पदामृत - समुद्र``क नामसं संकलित एहिमे गोविन्ददासक 228 पद समाविष्ट अछि। ध्यान देवाक छैक संग्रहक विशिष्टता जे एहिमे संस्कृत भाषामे एहि गीतक अर्थ तक देल अछि। अर्थ लिखबाक परंपरा प्राय: एतहिसँ प्रारंभ कयल गेल अछि। आर जे एकटा नव विन्यास भेल गीत सभक स्थान पर `पद` शब्दक चलनिसार बढ़ल। पश्चात गोकुलानन्द दासक पदकल्पतरु वा श्री श्री पदकल्पतरु जे वैष्णव दास नामसँ विशेष प्रख्यात छलाह। एकर पहिल प्रकाशन 1321 साल 1914 ई.) मे मूल रूपमे प्रकाशित भेल, तकरबाद 1322 साल (1915 ई.) सँ अनेक वर्ष धरि बंगीय साहित्य परिषद्सँ प्रकाशित होइत रहल एहिमे 473 गोट गीत वा पद संकलित अछि।

एहि प्रकारें एम्हर मिथिलासँ तीन गोट संग्रह प्रकाशित भेल अछि जाहिमे स्व. रमानाथ झा द्वारा ``श्रृंगारभजन-गीतावली`` पं. गोविन्द झा द्वारा संकलित एवं सम्पादित ``गोविन्ददास

भजनावली`` एवं सुरेन्द्र झा `सुमन`जी द्वारा सम्पादित ``गोविन्द-गीताञ्जली``। एतद् एकर अतिरिक्त गोविन्द दासक गीतक बहुत रास हस्त लेख गीतसभ सेहो प्राप्त भेलैक अछि। जकर एखनधरि सन्दोहन नहि भेल अछि।

एहि प्रकारें स्रोतक दीर्घकालसँ सर्वेक्षण जारी अछि, विद्यापतिक बाद कोनो पूर्वांचलीय वैष्णव कविकें एतेक सर्वेक्षण नहि भेलनि अछि।

मिथिलाक वैष्णव संत साहित्यमे प्रसिद्ध गोविन्द दासक अवदान जीवन प्रवाहक शाश्वत भक्ति भावनाक जे दर्शन होइत अछि ताहिमे कही तऽ पदावली काव्य विद्यापतिक पद शैली पर रचल वैष्णव तत्वक राधा-कृष्णक लीला-विलास चैतन्य वा आचार्य चरित आधार बनाय चरितार्थ कयल गेल अछि। चैतन्य महाप्रभूक वैष्णव त्रिमूर्ति शिष्य परंपराक अन्तार्गत गोविन्द दास अपन विशेष व्यक्तित्वसँ विद्यापति काव्यधाराकें प्रवाहमे चैतन्य महाप्रभूक स्पर्शमणिमय अपन हाथ गीत गोविन्दक जयदेव सँ होइत विद्यापति ओ चण्डीदासक भावप्रण प्रवाह गोविन्द दासक गीतमे गीत-गोविन्दक सोचमे समा जाइत अछि। गोविन्ददासक काव्योत्कर्ष ओ भक्ति भावनाक सौरभसँ लौकिक श्रृंगारक गीत होइतहुँ `भजन`क मर्यादा प्राप्त कय लेलक। एहि विधिएँ देखल जाय गोविन्द दासक काव्यधारा शुद्ध पार्थिव धरातल पर श्रृंगार सहकृत प्रेमाभक्ति रूप धारणा कय एकर दीव्यता मुख्यत: गौड़ीय वैष्णव सन्त समाजमे भेटैत अछि।

``वैष्णव`` शब्दक सर्वप्रथम प्रयोग महाभारतमे उपलब्ध अछि। एतद् अध्ययनक जखन मनन कयल जाइछ तखन कोनो निष्कर्ष पर विद्वान लोकनि पहुँचैत छथि। महान आश्चर्यजनक विषय सब मैथिली साहित्य मध्य संत साहित्यक अध्ययन क्रममे लगैत अछि? से कही एकहि आचरण प्रवृत्ति रचना क्रम समान रहैत एकटा `संत` कवि वा रचनाकार आ दोसर हुनकर समकक्ष के गैर संत रचना कहि अवटारल जाइत अछि ``श्रृंगारिक`` कहि तिरस्कार कयल जाइत अछि। ``श्रीमद् भागवत् गीतामे कहल गेल छैक `सत` शव्दक अर्थक संग ``ऊँ तत्वत्`` वाक्यमे ब्रह्मक दिशि निर्देश करैत छथि। किन्तु एकर उपयोग स्तित्व एवं साधुताक अर्थमे कयल जाति अछि। संत शब्दक व्यापक एकर कथनी ओ करनीक बीच सामंजस्य स्थापित कयल जाइत अछि। कबीर आदि संत कवि जिनका कहल गेलनि अछि लिखैत छथि -

निरवैरी निहकामता साँई संती नेह

विषया सूं न्यारा रहे संतनि को अंग एह

कहबाक आशय संतक लक्षण निर्वैरी निष्काम, महाप्रभूक प्रेम आ विषयसँ विरक्त होयब मात्र अछि। एहि प्रकारें देखल जयबाक चाही तऽ गोविन्द दासक अद्भुत त्रिमुखी व्यक्तित्वक छलाह। प्रगाढ़ कृष्ण भक्त विलक्षण कविप्रतिभा, सम्पन्न छलाह, संत ओ नहि छलाह से कोना कहबनि ओ तात्कालीन परिस्थितिक अनुसारे एहेन व्यक्तित्वक लेल नवद्वीप सबसँ आकर्षक स्थान छलैक प्राय: 1590 ई.क समीप नव्यनैयायक अध्ययन करबालय बंगाल पहुँचल छलाह। महाप्रभू चैतन्यदेवक द्वारा प्रवर्तित अभिनव वैष्णव संप्रदायक सरस धारामे प्रवाहित भय आजीवन रमि गेलाह। घूरि कऽ कहियो घर नहि गेलाह। अस्तु हम सब अपन एहि संत महापुरुषक प्रति जे

आवश्यक छै से हुनक अध्ययन मिथिलाक धार्मिक शास्त्रीय ``संत साहित्यक`` विकासक परंपरामे एवं तात्कालीन स्थितिक पृष्ठिभूमि मे कयल जयबाक चाही। एतद् विषय अध्यायसँ जोड़ि कऽ देखल जाय।

एतवा तऽ अवश्य जे गोविन्ददास मैथिल छलाह हिनकर वंश कुण्डलीक अध्ययन सँ स्पष्ट अछि जे गोविन्ददास मिथिलाक छलाह। ताहिमे किनको कनेको शंका नहि रहि गेल अछि।

महाकविद्यापति सम्प्रदायक विशिष्टता भणिताक भजनमे धार्मिक परंपराक जे बहुतो `सन्त` कवि मे देखल जा सकैछ यथा महाकविक संग चैतन्य नरोत्तम, श्रीनिवास, राय वसन्त आदि एकर ज्वलंत उदाहरण छथि[12]। चैतान्य महाप्रभु, नित्यानन्द आदिक धार्मिक परंपरामे सामान्यत: देखल जाइछ जे सन्त अपन शिष्यमंडलीक मध्य प्रतिष्ठा बढ़बैत-बढ़बैत स्वयम् उपासक सँ उपाष्य बनि जाइत छथि। आ भक्त लोकनि मरणोपरांत वा अपन जीवन कालहि मे ईश्वरक रूपमे अवतार मानि लेल जाइत छनि आ हुनकर मंदिर तक बनि जाति अछि। जेनाकि एकर बानगी दक्षिण भारतक आडवाडलोकनिक प्रतिमा सहस्त्राधिक वर्ष पूर्वहि स्थापित भऽ गेल अछि। बंगालमे एहि प्रथाक सबसँ पहिने 1853 ई. खेतरीमे चैतन्य महाप्रभू, नित्यानन्द आदिक मूर्तिक स्थापनासँ आरंभ भेल। एहि परंपराक अनुसरण करैत गोविन्द दास कतौक वैष्णव सन्तालोकनिक नाम कीर्तन कएने छथि एतय विद्यापति स्तुति गीत उद्धृत कएल जाइत अछि -

कवि पति विद्यापति मतिमाने

जाक गीत जग चीत चोराओल गोविन्द गौरि सरस रसगाने

भुवने अछए जत भारति वानी,

ताकर सार सार पद सञ्चिए बाँधल गीत कतहुँ परिमानी।

जे सुख सम्पदे सङ्कर धनियाँ

से सुखसार सरस रसिकाई कण्ठहि कण्ठ परायल बनिआ।

आनन्दे नारद न धरइ येहा....

से आनन्द रस जगभरि बरिसल सुखमय विद्यापति कवि मेहा

जत-जत रस पद करलन्हि बाँधे

कोटिहि कोटि श्रवणपर पाइअ सुनइते आनन्दे लागल धांधे।

जे रस सुनि नागर नर-नारी

की ए की ए कए चित चमकाबय ऐसन रसमय चम्पु विथारी

गोविन्ददास मतिमंदे

एत सुखसम्पद रहइते आन मन जैसन वामन घरबइ चन्दे[13]

एहि प्रसंगे आर गीत सब अछि गोविन्द दासक रचनाक अध्ययनसँ लोकक एहन धारणा बनल अछि जे ओ विद्यापतिक साक्षात् शिष्य छलाह। मुदा से कोनो साक्षात् सम्बन्ध नहि। धार्मिक

सम्प्रदायिक आचार्य लोकनिक स्तुति लिखबाक परिपाटी रहल अछि।

दोसर पद अवलोकन करु :-

विद्यापति स्तुति रूपमे जे गोविन्ददासक पदमे सबसँ प्रसिद्ध अछि -

विद्यापति-पद-युगल-सरोरूह

निस्यनंदित मकरन्दे

तसु मझु मानस-मधुकर मातल पिवइते करू अनबंधे

गोविन्ददास ह्रदय अवधारल भगत कृपा बलवान

पद कल्पतरु पद-12

अस्तु कहबाक आशय गोविन्द दास अन्यान्य सन्त लोकनिक संग विद्यापतिहुक स्तुति लिखने छथि। तँ एहिठाम ओ विद्यापतिकें कवि रूपमे नहि प्रेमाभक्तिक उत्कर्षक स्तवन कयल गेल अछि। गोविन्ददासक प्रति हमर धारणा अछि जे ओ सधुक्कड़ी भाषावला ई स्तुतिगीत सभ हिनक संतकीय भावक उजागर करैत अछि।

प्रो. रमानाथ झा मिथिलाक इतिहासक गंभीर विद्वान मानल जाइत छथि। गोविन्द दासक गहन अध्ययन कय हुनक गीत सबहक संग्रह कय ``श्रृंगार भजन - गीतावली`` नामसँ प्रकाशित करयौनै छलाह। भारतीय संस्कृतिमे संगहि मिथिलाक जे सभ्यता-संस्कृति ताहिमे न्याय दर्शनक विकासक संग बंगालक संग्रहित वैष्णव सम्प्रदायक विकास सेहो भेलैक। गोविन्द दास बंगालक नवद्वीप मे गीत रचैत छलाह। ओएह गीत सभ वृन्दावनमे जीव गोस्वामीके पठाओल जाइत छल; जाहिसँ वृन्दावनस्थ वैष्णव भक्तगण आप्लावित होइत छलाह।[1]

विषय प्रविध `संत-साहित्य` ताहि संगे जखन चर्चित काव्यकार संतक कोटिमे अवै छथि कि नहि, संत प्रसंग जे लक्षण, रूप, स्वभाव साधना, आचरण वा ई कही मिथिलाक जे संतकीय भाव से वैदिक साधना पर आधारित अछि। कहबाक आशय परमेश्वरक स्वरूप जगतक पूर्वक आ परमेश्वरक नाम हमरा लौकनि निरपेक्ष, जे जगत संबंधी दृष्टिकोण सँ देल करैत छी।[2] जेना जिनकामे निरपेक्षता, भगवत्परायणता, शान्ति, समदृष्टि, निर्ममत्व, अहंकारशून्यता, छन्दहीनता आ निष्परिग्रह आदि गुणसँ समन्वित जे से संत थिकाह[3] कुजौलिवार गोविन्द दास वएह छथि जिनकर हम प्रसिद्ध गोविन्द दास नामे संत साहित्यक`क प्रसंग जोड़ल अछि। मिथिलाक वैष्णव धर्म ओ सम्प्रदाय प्रसिद्ध अछि। ताहिमे गोविन्द दास अद्भुद त्रिमुखी व्यक्तित्व, विकसित-दुर्घर्ष - नैयायिक, प्रगाढ़ कृष्ण भक्त संगहि विलक्षण कवि प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तिक रूपमे प्रसिद्ध छथि। ताहि समयमे मिथिलाक विद्वान ताधरि विशिष्ट नैयायिक नहि मानल जाइथ जा धरि नवद्वीपक पानि नहि पिबथि। प्राय: 1590 ई. मे नवद्वीप पहुँचलाह आ आजीवन एताहि रहि गेलाह तें हिनक रचना पूर्वांचलमे प्रसिद्ध भेलैक।

नव्य-न्यायक परंपरामे संतकीय भाव - विश्लेषण :- उपर्युक्त जे वर्णन भेल अछि ताहिमे

हमर आशय हुनका संत सिद्ध करबाक छल से कयल। गोविन्ददासक प्रसंग जखन भारतीय संस्कृतिक अन्तर्गत न्याय दर्शनक प्रसंग जे अनुशीलन क्रममे गोविन्ददास गंभीर कृष्णभक्ति सम्प्रदायक परंपराक जे धार। पद्धति मिथिलामे प्रवाहित भेल सएह समस्त पूर्वाञ्चल, असम बंगाल ओ उड़ीसामे पाटल आओर ताहीसँ सज्जित भूमि अभिनव वैष्णव सम्प्रदाय उद्भूत भेल आओर ताहि क्रममे जे अपार श्रृंगार भजन लिखल ताहिमे संत गोविन्द दासक नाम अग्रगण्य छनि। गोविन्ददास जयदेवक गीत गोविन्द आ चण्डीदासक श्री कृष्ण कीर्तनसँ मैथिलीक किरतनिआ अनुकरण जन्य नारीक दुनू रूप जे अद्भुत राधाक परकीया भाव एवं रूक्मिणी सत्यभामाक स्वकीया भाव लय छथि। विद्यापति काल सँ ओ गोविन्ददास एहि दू कविकें वाद प्रायः कतहु कविकृतिमे नायिकारूपें राधा दृष्टिगोचर नहि होइत छथि। यदि कदाचित होइतो छैक शब्दान्दरें परमप्रिया नाम रहित परकीया नायिका ओहिना रहैत छथि जेना श्रीमद्भागवतमे- एहि सँ स्पष्ट अछि जे मिथिलाक कृष्ण-भक्ति परंपराक अन्तार्गत विद्यापति मैथिल परंपराक प्रतिनिधित्व करैत छथि, जखन कि गोविन्ददास गौड़ीय परंपराक अनुगामी छथि।

गोविन्ददास रचित पदमे काव्यशास्त्रीय भाव :- गोविन्ददास जन्मजात मैथिल छलाह। हिनकर भाषाक उद्भवक सम्बन्धमे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी लिखैत छथि। जे बंगालक विद्यार्थी सभ संस्कृत अध्ययन करय मिथिला जाइत रहथि फलतः मैथिली बंगालक मिश्रण होमय लागल आ विद्यापतिक गीतक आदर बदलैत आ विद्यापतिक गीत, सभ कृष्णक ब्रजलीला पर केन्द्रित छल जकर नाम ``ब्रजबुलि`` पड़ल जे एक प्रकारक मैथिलीक प्रभाव सँ कृत्रिम भाषाक नामे प्रसिद्धि प्राप्त भेलैक।''

सर्वप्रथम गोविन्द दासक भाषाक विवेचन प्रायः बीरेन्द्र मुखोपाध्याय एम.ए. वर्ष 1922 ई. मे कयने छलाह। ``पद-साहित्य ओ गोविन्ददासेर भाषा नामे एकटा निबंध बंगीय साहित्य परिषदक अधिवेशन मे पढ़ने छलाह। ओना विद्वान लोकनि गोविन्द दासक भाषाक विवेचन अपना-अपना तर्कक अनुसार कयने छथि।

डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक कहब छनि जे गोविन्ददासक पदावलीक भाषा पूर्ण रूपेण शुद्ध रूपे मैथिली परिलक्षित होइत अछि।

गोविन्ददासक रचनामे राधा-कृष्ण लीलाक गान भेल अछि। राधाक रूपक लेल भावोल्लासक वर्णन जे व्रजमे जतेक ललना छथि ताहि सबमे राधा शिरोमणि छथि। आ गोविन्द दासक रचना पर हुनक भाषा शब्द पर विद्वानक बीच जे तारतम्य मुदा सम्पूर्ण अध्ययन-अध्यापन सँ स्पष्ट होइत अछि जे सम्पूर्ण रूपें सब विद्वान स्वीकार कयल अछि जे गोविन्द दासक भाषा विद्यापतिक भाषा अछि। मैथिली व्याकारणमे निबन्ध जनसाधारणकें सरलतापूर्वक बोधगम्य भेलैक आ सबकें अपन भाषा सन लगैक।

गोविन्ददासक रचनामे छन्दक विन्यास खूब भेलेक अछि। ओना संत साहित्यमे भाव निःसृत भजन जाहिमे प्रवाहक एहन धार बहैत अछि जाहिमे ओकर काव्यशास्त्रीय रूप देखबाक कार्य अनुशीलनकर्त्ताक होइत छनि, कहबाक तात्पर्य जे जाहि रचनामे साहित्यिक भोग जतेक

बाँचल रहतैक ओएह रचना साहित्यक संग्रहणीय ओ अमर होइत छैक। मैथिली साहित्यक अन्तर्गत भाषा आ वर्णवृत्त लगभग बारहम शतकसँ भेटय लगैत अछि - तहिएसँ मैथिलीमे छन्दक वार्णिक आ मात्रिक धारा प्रवाहित होइत आबि रहल अछि। एहि ठाम गोविन्ददासक जे रचना अवलोकन कयल जाय -

1. चौपाइ - कण्क माझ कुसुम परगासर

211 21 111 11 2 1 = 15

भ्रमर विकल नहि पाबय पास

111 111 11 211 21 = 15

2.पायर वार्णिक - हंसि निहारल पलटि हेरि

लाजें कि बोलब साँझक बेरि

11 1 111 111 11-11

छन्दक रचनामे तालक संग अनुकूल वर्ण-विन्यास रहैत अछि. वर्ण एवं मात्राक संख्या निश्चित रहैत अछि। वर्णक दुई भेद - स्वर एवं व्यंजन परंच छंदशास्त्र मे मात्र स्वर टा के महत्व देल जाइछ। गोविन्ददासक रचनामे विद्यापतिक स्पष्ट प्रभाव वैष्णव कवि लोकनि कें उपर विशेष आग्रही से 15 वा 16 मात्राक चौपाइ एवं 27 एवं 28 मात्राक वर्णिक छंद मे रचना करैत छलाह। अत: गोविन्ददासक रचनामे ओहि कालक समस्त गौड़ीय वैष्णव संत पदावलीमे दुनू धाराक मिश्रण प्राय: भेल अछि। गोविन्ददासक रचनाक जे मूल विशिष्टता अनुप्रासक छटा छलनि। आ एकरा संगे रचनामे छंदक प्रयोग बेसी नहि भेल छैक। यथा 28 मात्राक छन्द मिथिलामे सरसी कहबैत छैक -

1. सरसी : मधुसम वचन कुलिस सम मानस पहिलहि जानि न भेलै

1111 111 111 11 211 1111 21 1 21

2. त्रीपदी - जगत कतन अछ जुबजन कतन लावय पेम

सेहे विचेखन पुरुख बोलिअ जे चीन्ह आएस हेम

गोविन्ददासक लेखनीक अपन विशिष्टता अछि। छन्द मे जखन ओ गीत भजनक सृजन करैत छथि तखन इच्छानुसार छन्दक चरणके घटाओल-बढ़ाओल जाइत अछि।

राग : - गोविन्ददासक गीत मे रागक जे महत्व से मात्र ऐतिहासिक रहि गेल अछि। आलोच्य कालमे रागक अपन महत्व छलैक, मुदा आगू चलि कऽ हमरा लोकनि मात्र एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छी जे राग एकटा मिथक बनि रहि गेल अछि।

गोविन्ददासक रचनामे अलंकार :- गोविन्ददासक युगमे अलंकार`क विशेष महत्व छलैक। काव्य कौशलक चमत्कार से अपूर्व रहैक। गोविददासक रचनामे श्लेष, अनुप्रास तऽ अपन पराकाष्ठा पर पहुँच गेल रहैक। आधुनिक समयमे एकर अंत भय रहल अछि। काव्य शास्त्रमे शब्दक जे शिल्पता से अलंकारक रूपें दू टा मे विशेष झलकैत अछि - अनुप्रास ओ यमक, जकर

निर्वाह गोविन्द दास अपन रचनामे परंपरा अनुसार अत्यंत चमत्कारी भेल अछि।

अनुप्राराक प्रौढ़ता एतय दर्शित अछि -

हरि जब हरस बरस रस बादर सादर पूछय बात।

निरखि बदन तोर आकुल से हरि निज सिर धरू तुअ हाथ।।

मानिनि काहे कठिन तुअ मान।

छलबल दिठि जब तोहि कत साधल पलटि न हेरल कान।।[47]

जेनाकि काव्यशास्त्रीय सहृदयतामे कहल गेल अछि वर्णक वारंबार न्यास होइछ। एहिठाम ह`, र, स वर्ण बारंवार आयल अछि जे अत्यानुप्रासक कड़ीमे अवैत अछि।

पूर्वाञ्चलीय वैष्णव कविगणमे प्राय: इएह टा श्लेषक चमत्कार देखाओल अछि।

घन रसमय तनु अन्तर गहीन।

निमगन कतन रमनि-मन-मीन।।

गति गजराज चरण अरविन्द।

नखमणि - निछनि दास गोविन्द।।

आशय एहि घनरस, मकर आदिमे श्लेष अलंकार छैक एतय कृष्णक, भक्तिभावुक दर्शन कराओल गेल अछि। श्याम सिंहक सन कृष्णकें कोना अपन हृदयक पिजरा मे बंद कय लेने छह।

काव्यशास्त्रीय कथनमे कहल गेल अछि वक्रोक्ति : काव्य जीवतम्[48] यथा -

भल भेल माधव तोहें रहु दूर। अजतन धनिक मनोरथ पूर

ऐसन गुनइत तुअ गुन कोटि। मानल पोषक यामिनि छोटि।।

गोविन्द दासक रचनामे जे श्रृंगार सन वुझना जाइत अछि से एक प्रकराक भक्तिक चरमोत्कर्ष अछि आ सन्त अपन ईश्वरसँ तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कायल करैत अछि, एतय संत गोविन्द दासक पदमे सन्निहित भाव हुनक सांसारिक प्रेमत्वक जे भावना ताहि लेल युग-युगमे अनवरत जीवंत वनल अछि।

गोविन्द दासक रचनामे मौलिकता आ परंपरागत भावक समन्वय :- मिथिलाक अन्तर्गत एकटा प्रसिद्ध कहबी अछि जे निन्दाक भाषामे कहल जाइत छैक जे `गओले गीत की गायब` लाक्षणिकता निन्दनीय, परंतु गीतक वास्तविकता जे एहि विधामे एके गीत के बेर बेर गायब निन्दनीय नहि मानल जाइछ। गोविन्द दास पर आक्षेप छनि मुदा ओ अनुसरण, अनुकरण होइत

अनुहरण धरि पहुँच जाइत छैक अपन जोड़-मोड़ देत मौलिकता छाप निखरि जाइत छनि। गौड़ीय सम्प्रदायक संत मे गोविन्द दासक ई पद देखल जाओ -

राधा माधव दुहू तन मिलल

उपजल आनन्द कन्द

कनक लता तमाल जनु बेढल

राहु गरासल चन्द।...[15]

एहिठाम महाकवि विद्यापतिक पंक्तिक अवलोकित करु -

राधा-माधव मंदिर निवसय सयनक सुखे

रसे-रसे दारून दर्द उपजल पुन

कान्ह चलल तब रोखे[52]

एहि भक्तिरसक व्याख्या संत गोविन्द दासक भावमे सम्पूर्ण रूपें गौड़ीय साहित्य रसमे सज्जित निम्मजित अछि।

अस्तु काव्य जगतमे गोविन्द दासक प्रसंगे बुझल जयवाक वाही ओ परंपराक पथिक छलाह। आलोच्यकालक परंपराक निर्धारण रीति करैत गोविन्द दासक विवेचना पर हुनक परिचय पर मंथनमे देखल जाइछ विवाद भेलैक, मुदा विद्वान लोकनि समाहार कय देने छथि। तैं एहि पर किछु कहब अतिउक्ति होयत। गोविन्द दासक भक्ति ह्रदय आ संत भावनाक परिचय हुनक वंदना शीर्षक पदसँ प्राप्त होइत अछि।

भजहु रे मन-नन्द-नन्दन अभय चरणाविद्

ध्यान पूजन आत्म निवेदन गोविन्ददास अभिलास।।[54]

गोविन्द दासक संत ह्रदय गौड़ीय संप्रदायमे रहैत बंगालक चैतान्यदेवक परवर्ती भजानावली संत तऽ संस्कृत विद्वान तें हुनक रचना जन सामान्य मे खूब प्रसिद्धि नहि भेलैक। दुरूहताक भावमे प्रसाद गुणक अभाव हिनक रचनामे रहैत अछि। से हिनक रचनामे पाण्डित्यक पुरजोर, वक्रताक योग, आलंकारक आडम्बर भावुकताक भावगत चमत्कार रहैत अछि। तें सामान्य भक्त ओ अध्यात्म भावक भूखल कीर्तन मंडलीके नहि रूचै छनि :-

रोदित राधा श्यामक कोर, हरि-हरि कहाँगेल प्राणनाथ मोर।।

ऐसन हेरइत राहिक रीत, गोविन्द दासक चित

आचार्य रमानाथ झाक कथन अत्यंत मार्मिक अछि, हुनक भाव अछि जे कहैत छथि -``हुनक आस्था आ आदरक कथनमे लोकक अत्यधिक अतिरंजना अछि, लिखैत छथि जे जाहि वर्गक लेल लिखल गेलैक तकरा लेल अनायारा बोधगम्य भेलैक, रोचक लगलैक। तकर प्रमाण एहिराँ बढ़ि कऽ आर की भऽ सकैत अछि जे वैष्णव भजनक जतेक संग्रह संकलित भेलैक सबमे गोविन्दासक पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान पओल गेलैक। ``कहब छनि गोविन्ददासके बुझबाक लेल गौड़ीय सम्प्रदायक कृष्णभक्ति ओ मार्गक अवधारणा के बूझय पड़तनि, संगहि भक्ति हृदय चाही, आस्था चाही अस्तु अंतमे गोविन्द दासक ``रचना नारियल फलक समान अछि।`` उपरसँ कठोर मुदा भीतार अत्यंत कोमल भाव अर्थ सम्मन्वित रहैत अछि।

अस्तु गोविन्ददास निःसन्देह भक्त रचनाकार छलाह। हिनक भक्ति उद्‌गार, लौकिक प्रणय लीला वर्णन बूझि हिनक रचनाके भक्तक समूह ओ संत साहित्यक प्रणेता लोकनि राधा-कृष्णक लौकिक अवतारके प्रसंग हिनक रचनाके तीव्र तल वा तीनस्तरीय मानलनि अछि। ओना जयदेव ओ विद्यापतिक रचनाकें सेहो त्रितलीय कहि व्याख्या कयल जाइत अछि। कहबाक आशय `पहल तल पर कृष्ण लौकिक नायक प्रतीक थिकाह, द्वितीय तल पर ईश्वरक अवतार थिकाह, तृतीय तल पर परमपूज्य परमात्मा थिकाह ``कृष्णस्तु भगवान स्वयं् थिकाह।``

आलोच्यकालमे भक्त ओ संतकविक रचनात्मककला सम्मानित संत अनेकानेक सम्प्रदाय आदिमे विभक्त भेलाह। भक्ति भावनाक अभिधानमे गोविन्ददास भक्तिक अभिलाषा जनौने छथि। जे भागवत संप्रदायक उपासनाक मार्ग अछि। गोविन्द दास जाहि परिवेशमे उदित ओ विकसित भेलाह ओ महाप्रभू चैतन्यदेवक नव प्रवर्तित शरीरमे जाहि भावसँ गोविन्ददासक रचना निःसृत होइत अछि से अपूर्व। यथा -

जय जय श्रील राम रघुनन्दन जनकसुता रतिकन्त

सुर-नर-वानर-स्वचर-निशाचर जसुगुणगाव अनन्त

भक्ति-आनन्दित मारूत नन्दन चरण-कमलकरू सेवा।

गोविन्ददास हृदय अवधानल हरि नारायण देवा।।

ओना एकटा प्रश्न अवश्य जे गौड़ीय संप्रदाय मे कृष्णकें छोड़ि कोनहु देवी-देवताक पूजा-अर्चना वर्जित अछि यथा -

हृषीकेश गोविन्द सेवा, न पूजिब देवी-देवा

एइ, त अनन्य भक्ति हय।।

एहि प्रसंग कहल जाइत अछि जे संत गोविन्द दास मैथिल धार्मिक संस्कारसँ विलग नहि छलाह। हुनक धार्मिक उदारता विद्यापतिसँ प्रभावित छलनि। विद्यापतिक उत्तराधिकारी अपन भक्तिभावना रूपें छलनि। भणिताक प्रकट कयनहि छथि। हिनक अराध्यक प्रति भक्तिभावना अन्त:सलीला सरस्वती जकाँ प्रवाहित अछि। कतौक वेर तऽ ओ अपन अराध्यक छविक प्रति लीला पर गिरमंक्षण करैत देखल जाइत गेल छलाह। साधनाक इतिहासमे बौद्धतांत्रिक युगिनबध रूपेण चार्यापदक डोम्बिनीर संग कीर्तन चित शुद्ध आर्यदेव चित्तशुद्ध निर्मल करैत धोबी जेना मैलकें हटा कय निर्मल बना दैत छैक। रूपगोस्वामीक कथन छनि जे "मंजरी भावेर साधनार द्वारा कामकें विदूरत करिवार उपाय करियाछेन" एतद् गौड़ीय संप्रदायक संत गोविन्ददास छलाह। ओना कनीमनी जे रहस्य से वैष्णव संप्रदायक भेने आवश्यक छैक आ ने वाञ्छनीये।

गोविन्ददासक भक्ति पदमे शब्दक कोमलता, अनुप्रासक छटा, छन्दक रोचकता, ध्वनिक झंकार कल्पनाक प्रौढ़ता, दृष्टिक सूक्ष्मता मैथिली भाषा साहित्यमे हिनका सम कियो नहि, आ ने कियो हिनक प्रतिद्वन्द्वी।

वस्तुत: गोविन्ददासक स्थान मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापतिक बाद जे रचनाकार भेलाह से हुनकासँ प्रेरणा ग्रहण कय भेलाह। गोविन्ददासक नामक प्रति अत्यधिक विवाद अछि। पंडित राजेश्वर झा लिखैत छथि जे खाहें बंगाली गोविन्द दास होउथ वा मिथिलाक। दुहू वैष्णव संत भेलाह। गीतक सम्मिश्रण तेना भेल छैक जे फर्क करब सेहो कठिन अछि। किन्तु एतबा निर्विवाद दुनू वैष्णव संत छलाह। विद्वान पंडित राजेश्वर झा लिखैत छथि जे राधा-कृष्णक रूपें जे अपनाकें समर्पित करैत छथि तिनका सांसारिक रागसँ कोन तात्पर्य वस्तुत: संत जिनकर बैधी एवं रागानुराग भक्तिये सर्वोपरि लक्ष्य होइछ ओ लोकनि अपना प्रसंग किएक लिखतथि। ओ लिखैत छथि गोविन्द ठाकुर आ गोविन्ददास दुनू दू व्यक्ति छलाह कहबाक आशय मिथिलामे सेहो गोविन्द नामे घमर्थैनि अछि मुदा पंडित राजेश्वर झा विद्वान पं. डॉ. रमानाथ झाक कल्पना समीचीन ओ सार्थक मानल गेल अछि। हिनका विद्वान पण्डित राजेश्वर झाक कहब छनि जे गोविन्द दास वैष्णव संत छलाह। जखन कि गोविन्द ठाकुर व्याकरण, दर्शन तथा काव्यतत्वक ज्ञाता छलाह।

●●●

साहेब रामदास :- मैथिली साहित्यक इतिहास साक्षी अछि, महाकविक ``विद्यापति सम्प्रदायक`` परवर्ती संत कविमे बाबा साहेब रामदासक नाम सर्व प्रमुख अछि। `संत साहित्य` मध्य मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहास सिद्ध साहित्यसँ आरंभ भेलैक अछि। अस्तु कहबाक तात्पर्य ई कोनो नवीन नहि एकटा प्राचीनकालसँ आबि रहल परंपरा बनि गेल छैक। अही परंपराक कड़ीमे संतश्री रामदास अबैत छथि। साहेब रामदासक समय साल 1153 तदनुसार1746 ई. मध्य मानल गेल अछि आ से महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकालमे भेल छलनि। साहेब रामदास अलौकिक सिद्ध पुरुष रूपें ख्याति लब्ध प्रतिष्ठित संत छलाह। हिनक पद हिनक प्रसंग जे समय तकर परिचय -

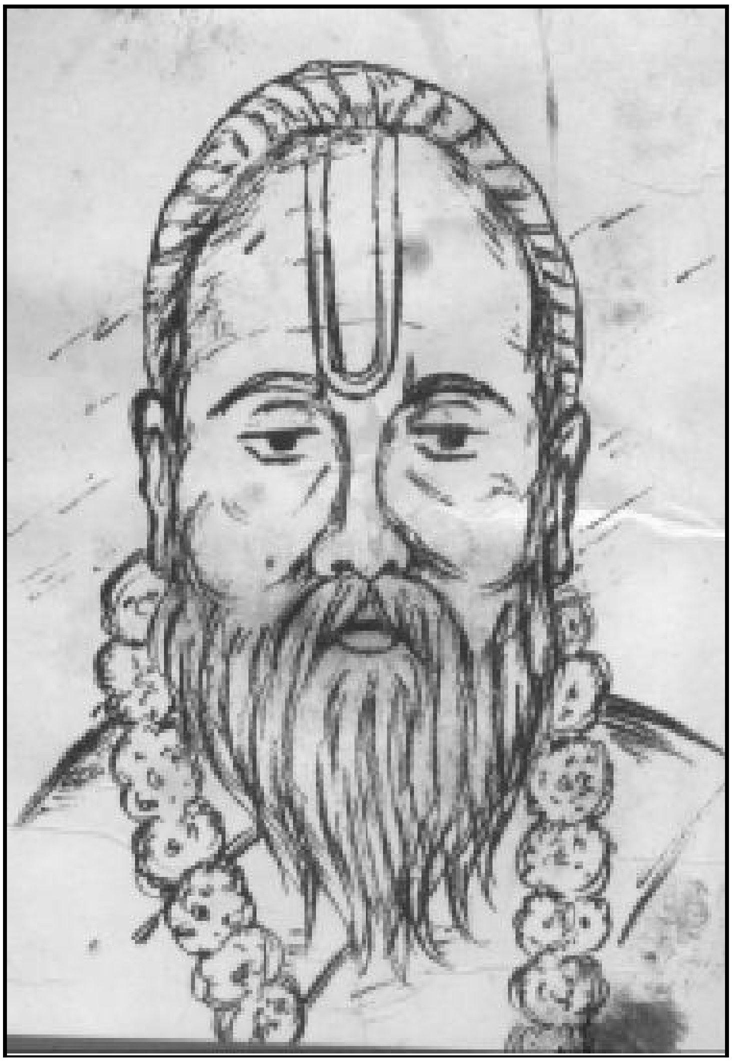

शिवलोचन मुख शिव सन जखन

साहेबराम दास तिथि तखन

प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश मिथिला देश

शासित छल ई मिथिला देश:*

साहेब रामदास वैष्णव भक्त छलाह जे पश्चात कवि रूपमे प्रतिष्ठापित भेलाह। ओ विष्णुक भजन-कीर्तन करब, भक्तिमार्गी छलाह। ज्ञानमार्गी नहि, कहवाक ध्येय ई जे ओ भजन कीर्तनमे अपन भक्तिक प्रदर्शन करैत छलाह। से कही तऽ भक्त साहित्यक अन्तर्गत रस के 13 टा भेद मानलनि अछि। आ साहित्य शास्त्रमे नौ टा रस अस्तु दास्य, सख्य, वात्सल्य एवं मधुर रूप गोस्वामी भक्तिक पाँच रसके प्रधान मानलनि अछि। वैष्णव सम्प्रदायमे एकर अत्यधिक महत्व अछि।

एहि प्रसंग कही तऽ विद्यापतिक परवर्ती संत साहित्यक रूपमे हिनक नाम अग्रगण्य अछि। साहेब रामदासक जन्म मिथिलाक मधुवनी जिलामे वेनीपट्टी अनुमंडलक अन्तर्गत जरैल परगना के

कुसमौल ग्राममे भेल छलनि। जातिय कर्मसँ ओ ब्राह्मण छलाह, सरिसबे छाजन मूलक ओ न्याय चिंतामणिक प्रणेता जगद्गुरु गंगेश उपाध्यायक कुलमे जन्म लेलाक सन्तॉ ओ ऊँच्च कोटिक अपनाकें प्रमाणित करैत छथि। हिनक जन्मक प्रसंग तिथि स्पष्ट नहि वर्षहुमे मतैक नहि छैक, से विधानक हिसाबसँ हिनक जन्म 1680 ई. सँ लऽ कऽ 1690 ई.क बीच मानल जा रहल अछि। एहि प्रकारें साहेबराम दासक समय सतरहम शताब्दीक अंतिम दशकसँ मानल जयबाक चाही। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे साहेबराम दासक समय महराज नरेन्द्र सिंहक (1743-1760) ई. समयमे निश्चित रूपें छलाह। संत साहेब रामदास पर उपलब्ध सामग्री रूपें कवीश्वर चंदा झा हिनक रचनाकें एकत्रित कय ``पदावलीक`` संकलन कयने छलाह।

सबसँ पहिने बाल्यकालक नाम साहेबराम झा छलनि मुदा बैराग्य ग्रहण कयलाक बाद वैष्णव सम्प्रदायमे जखन अयलाह तखन हिनक उपाधि `दास` झाक स्थान पर ग्रहण कयलाह।" जेना वैष्णव भक्त गोविन्द दास, चंडीदास, रामदास, रामस्नेहीदास आदिक संग लागल अछि। ओना कविता वा पदक सृजनमे ओ कतहु साहेबदास, साहेवराम वा कतहु साहेव लिखि रचना कयने छथि। एहन कहल जाइत अछि जे ओ नेनपनसँ भक्ति-भाव सम्मन्वित विचारधाराक व्यक्ति छलाह। अठारहवीं शताब्दीक अंतिम चरणमे मैथिली काव्यधाराक अन्तर्गत अकस्मात परिवर्तन होमय लागल छलैक। साहेब रामदास गार्हस्थ्य जीवनमे रहि महाप्रभुक सन्निकट पहुँचबाक लेल प्रयत्नशील छलाह, अस्तु हिनक जीवनक मध्य एहन घटना घटलैक जे हिनक जीवनधाराकें मोड़ि कऽ राखि देलक।

साहेबराम दास गार्हस्थ्य जीवनमे अपन भक्ति भावनाक संग जीवि रहल छलाह। बेसीकाल हिनक समय ईश्वरोपासनामे बितैत छलनि। हिनक जीवनक जे घटना ओ अत्यंत मार्मिक अछि। भगावनक प्रसंग कहल जाइत अछि जे भावी हाथ धराकऽ कोनो कार्य करबा दैत छैक, सएह भेलैक। न्याय चिंतामणिक कुलसँ उद्भुत साहेब रामदास गार्हस्थ्य जीवनसँ ईश्वरक समीप पहुँचबाक लेल प्रयाररत छलाह मुदा गोकर्ण भागवत रादृश" जेना पुत्र अपन पिताकें रांन्यारा धारण करबाक लेल आग्रह करैत छै, तहिना साहेबरामदास जीक एक मात्र पुत्र प्रीतम सादृश्य उपदेश दैत संन्यास ग्रहण करवाक लेल आग्रह करैत छथि। एहन किंवदंति अछि, जे साहेबराम दासक एकमात्र पुत्र `प्रीतम` दुखीत पड़ि गेलाह आ विस्तार पर पड़ल रहलाह, पिताक आँखिमे `नोर` देखि हुनका कहलनि `वाबूजी` ! अहाँक आँखिमे नोर किएक? ई संसार अनित्य अछि, पिता-पुत्र, बन्धु-बान्धव, स्वजन-परिजन सभ माया-जाल थिक, माया अपनामे लपेटि मोक्षक मार्गके अवरुद्ध कय दैत छैक, हम यदि बाँचि जायव तऽ अहाँक बाट छेक लेब, तें पुन: जन्मक कारण बनत, एहि लेल हम अहाँ कें एहि माया जाल सँ मुक्त करैत छी। जाहिसँ अहाँक भगवत भजनमे बाधा नहि आबय आ अहाँ वैराग्य भावसँ ईश्वरोपासना कय सकी। कहैत-कहैत सब दिनुका लेल `प्रीतम` आँखि मूनि लेलथिन, साहेब रामदास विलाप करय लगला ओहि विलापसँ जे शब्द आ भाव नि:सृत भेल -

``प्रीतम प्रीति तेजि भेल परदेशिया हो।``

साहेबराम दासक लेल इएह `प्रीतम` शब्द अराध्य भगवान श्री कृष्णक पर्याय बनि गेल आ कोनो बताह सदृश उदिग्न भय वृन्दाबन विहारीक बुझू वियोगमे नृत्य करय लगला। `प्रीतम`क

अंतिम वाक्य संत साहेवराम दासक मनोदशा पर विशेष गहींरगर प्रभाव छोड़ने छल। गार्हस्थ्य जीवनकें तिलांजलि दय वैराग्य जीवनमे आबि योगसाधनाक मार्ग प्रशस्त करबाक लेल एकटा योगीसँ दीक्षित भेलाह पश्चात् दण्ड प्रणाम दैत जगन्नाथ धाम पहुँचला, हठयोग मे पृथ्वीक रगड़ सँ हुनक पेटक चमड़ी मे घाव आ ओहिमे कीड़ा सेहो फड़ि गेल रहनि मुदा अपन यात्रा सफल कयल, जगन्नाथ पुरीक पंडा सिंहद्वारि पर हुनका वेंतसँ ओधवाध कय देलखिन, ओ अचेत भऽ गेलाह, पुनः जखन चेतना जगलनि तखुनका हुनक एकटा पद अत्यंत प्रसिद्ध अछि :-

साधुकें संगति परि गुरुक चरणि धरि

आहे सजनी हमहू जाएब जगरनाथहि रे की

नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,

आहे सजनी माँगि भिखि दिवस गमायब रे की।

सभ जग भेल भाला गुरुआ अठारह नाला

आहे सजनी ओहि ठाम केओ नहि छोराओल रे की।

`साहेब` जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि

आहे सजनी जगत-जीवन निअराएल रे की।[ʌɪ]

कहल जाइत अछि जे हुनक कठिन भक्तिक भावना देखि स्वयं भगवान साक्षात् दर्शन देने छलखिन। वृन्दावन नटवरधारी श्री कृष्णक ध्यानमे स्वयं बाँसुरी बजाकय सुधिबुधि हेरा जाइ छलनि।

मैथिली साहित्यक प्रशस्त परंपरा रहलैक अछि। अध्यात्म ओ संत मार्ग मे गुरुक महत्व परम पिता परमेश्वर सदृश मानल गेल छैक। कबीर दास लिखैत छथि -

गुरुगोविन्द दोउ खड़े काके लागौ पाँय

बलिहारी गुरु आपनो गोविन्द दियो बताय।।

भागवत सम्प्रदायमे सेहो प्रसिद्ध श्लोक अछि -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः

गुरुर्साक्षात् प्रब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

``संत साहित्यमे`` ओना सब शिक्षा-दीक्षामे गुरुक महत्व छैक मुदा संतक जीवन ता धरि सुफल नहि होइत छनि जा धरि गुरू दीक्षा नहि लेल जाइत अछि। साहेब रामदास जी वैराग्य-ग्रहणक पश्चात् तीर्थ भ्रमण कयलनि पुनः आपस भेला पर विधिवत ``**बलिरामदास जी**`` सँ दीक्षा ग्रहण कयल। बलिराम दासजी केओटा (मधुबनी जिला) गामक परिसरे मूलक ब्राह्मण छलाह, बाल बैरागी भऽ मुड़िया रामपुरक एक वैरागी शिष्य भऽ परिवारिक परित्याग कऽ वैष्णव धर्मक दीक्षा लेने छलाह तीर्थ स्थलक भ्रमण कऽ अपना गामहिमे (केओटा) एकटा निर्जन स्थान मे अपन कुटी वनाय रहय लगला। बलिरामदास जीक शरणागत भय, परम विरक्ति महायोगी साहेबराम दास जी प्रिय शिष्य बनलाह। भजनानन्दी साहेब रामदास जी अपन गुरुक प्रति जे आत्मनिष्ठा एहि पदमे देखल

जाइछ :-

गुरू बलिराम चरण धरि माथे

साहेब हरि अपनौलनि हे

अब तौं जरा मरण छुटि जैंहे

संशय सकल मेटौलनि हे।

संतक जीवनमे ज्ञान ओ भक्तिक समन्वय आवश्यक। संत मतमे गुरुक सान्निध्य महिमा गायन सर्वत्र होइत रहल अछि। संत साहेबरामदास प्रेम आ भजन, स्मरण जप सांसारिक जीवमे भगवानक दीव्य स्वरूपक दर्शन करैत हृदयमे अन्वेषण करैत छथि। वाह्य आडंबर हिनकामे नहि दर्शित होइत अछि। संतक जीवनसँ जे महत्वपूर्ण भावना निकलैत अछि। संत साहेबराम दारा तपल-तपाओल गुरुक आश्रम मे सिद्धि प्राप्ति भेलनि। आ सामान्य जनक आधि-ब्याधिक कष्ट आदिक निवारणक लेल मानव समुदायक भीड़ हुनका लग उमड़य लागल।

नामक महात्म्य - भक्ति मार्गमे `नामक` महत्वकें सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि। साहेवराम दासक पद देखू -

कहय सुर मुनि निगम नारद बुझि मन त्रिपुरारि

तुलय किछुओ न ``नाम`` नाम के सम ढूढि वैसे हारि।।

ऐसे नाम प्रताप जागयलेय अधम को तारि

पाप पिंजर परे साहेब नाथ लेटू-उवारि।।"

नाम संत साहित्य मध्य एक एहन `साधना` अछि जे निर्गुण ओ सगुणक बोध करबैत अछि। ओना तर्कक समकक्ष दृष्टिसँ देखल गेल अछि साहेबरामदास भगवत नाम महात्म्य के प्रमुखता दैत, स्वर्णिम समय मैथिली काव्यधाराक परंपरागत श्रृंगारिक आ व्यवहारिक स्वरूपक परित्याग करैत ``**धार्मिक ओ दार्शनिक**`` विचारधाराक दिशि उन्मुख भेलाह। जकर प्रभाव सर्वव्यापी भेल। तकर प्रभाव सँ परवर्ती हिनक समवयस्की कवि भक्ति ओ दर्शन कें माध्यम बनाओल जिनका भक्ति रस सँ संपर्क नहि छलनि सेहो एहि नवीन विचारधारासँ अपनाकें पृथक नहि राखि सकलाह। ताहिमे उल्लेखनीय छथि - रत्नपाणि, गोपीश्वर शंकर, आदिनाथ, रघुनन्दन आदि।"

साहेबराम दासक पदावली - साहेब रामदासक अठारहवीं शताब्दीक आरंभिक कालमे मैथिली गीत काव्य धारामे देखल गेल अछि। आ अहीठामसँ अकस्मात परिवर्तन दृष्टिगोचर होमय लागल। हिनका रचनामे संत परंपराक यशस्वी रूप दर्शित होइत अछि। हिनक काव्यक भाषा मैथिली साहित्यक अन्तार्गत जाहि भावक विस्तार कयलक ओ ``संतक पूर्णता मे भक्ति काव्यक विकास कहल जयतैक।`` हिनक अपन इष्टक भजन जाहि भावसँ आरंभ कयलनि प्रायः ओ नवीनता दृष्टिगोचर होइछ। धार्मिक आ दर्शनिक प्रभाव हिनक रचनामे देखल जा सकैछ से कहबै ई अपन नाम कमेवाक इच्छासँ कयलनि से नहि छल, एहि सव स्पृहासँ दूर साहेबराम दास मुक्तक मे रचना करैत छलाह आ से यत्र-तत्र छिड़ियायल छलैक जकरा आधुनिक मैथिलीक निर्माता कवीश्वर चंदा

झा द्वारा एकत्रित कयल गेल आ सर्वप्रथम इएह युनियन प्रेस (राज) सँ 478 पदक संकलन कय छपबौलनि आ राजक संपत्तिक रूपमे पुस्तकालयमे दय देलनि जकर नाम राखल गेल छलैक ``साहेबराम दास गीतावली`` एकर आर्थिक सहायता महंथ वंशीदासक द्वारा देल गेल अछि। एहि पोथीक मुखपृष्ठ पर निम्न पंक्ति एकर साक्ष्य अछि-

पचाढ़ी संज्ञक स्थानस्थापक महंत श्री पाँच
साहेबरामदास कृता तच्छिष्य परंपरा-स्थित
पचाढ़ी स्थानीय महंथ श्री दू
बंसीदास पवित्र द्रव्य ब्ययेन
कवि श्री चंद्र शर्म्म प्रबन्धने
च मुद्रिता।

पोथीक अंत कवीश्वर प्रणीत एक गोट चौपाई मुद्रित अछि -

शिव लोचन मुख शिव सन जखन
साहेबरामदास तिथि तषन
प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश
शासित छल भल तिरहुत देश
सन् 1153 साल

इति महात्मा 5 साहेब रामदास कृता गीतावली समाप्ता - ।।

उपर्युक्त पाँतीसँ साहेब रामदास जीक समयकाल स्पष्ट होइत खूब बेसी प्रमाणिकताक संग सिद्ध होइत अछि। संगहि इएह काल महाराज नरेन्द्र सिंहक समय थिकनि।

संत साहेब रामदासक रचना दोसर खेप 1955 ई. मे ललितेश्वर झा छपबौलनि जे प्राय: चंदा झा द्वारा संकलित `गीतावलीक` पर्याय थिक। ओना साहेबरामदासक भाषा मे किछु विद्वान ब्रजबोली मानैत छथि मुदा से एक प्रकारक मनगढंत कहल जा सकैछ। ई संपूर्ण रूपें विशुद्ध मैथिलीक पद थिकैक। मिथिलाक तत्कालीन सान्त परंपरा मे गीतक बोल साधुक्कड़ी भेल छल जे सम्पूर्ण रूपें मैथिलिए छैक। एहन देखल गेल अछि जे संतक बोल किछु अपन वर्ग बनबैत छल जे सधुपाकड़ी बोली कहाओल जे मैथिलीक बोली छैक।

संत साहेबराम दासक स्वर्णिम काव्यधाराक विशिष्टता जे अवतार, भगवान श्रीकृष्णक जन्म, बधाइ, प्रभात गीत वात्सल्य वर्णन, रूप सौन्दर्य, बालक्रिड़ा, पनिघट एवं जलक्रिड़ा चौल, नौका विहार, वंशीवादन, राम-विरह वर्णन, पुनर्मिलन, उपालंभ मान वर्णन, उधोसंवाद, विनय पद भगवान रामचन्द्र, सीता, शिव, हनुमान, होली वर्णन आदिक संग पचाढ़ी स्थानक परंपराक वर्णन अत्यंत सुरुचि ओ मार्मिक भेल अछि।

काव्य सौष्ठव :- मैथिली साहित्यक अन्तर्गत भक्ति काव्यक विकास महाकवि विद्यापतिक रचना सँ आरंभ होइत अछि। ओना मैथिली संत काव्यक उत्थान मध्य कालसँ मानल जाइत अछि

जकर नींव कहि सकैत छी जे सिद्ध साहित्यसँ परि गेल रहैक। मुदा साहेब रामदासक अपन अराध्यक प्रति जो भाव प्रस्फुटित भेल सएह कविता की गीत रूपें प्रतिष्ठित भेलैक। श्रीकृष्णक प्रति जे हिनक प्रवण प्रसाद गुणमे नि:सृत भेल से अपूर्व भेल अछि। हुनक एकटा पद कतेक उत्कृष्टता चरमोत्कर्ष पर पहुँचल अछि :-

हे मोर मन राजी निस दिन वृन्दावन के वासीसँ

ध्यान धरी हरि चरण मनाबी काज कोन मोरा काशी सँ

जनम-जनम केर प्रीति बनल अछि मुरलीधर सुखरासीसँ

कहि न रहीं मन भए परवश नेह लगाय अविनाशीसँ

या व्रज मे उपहास करो केओ डर नाहि मोरा हासी सँ

राजीव नयन रसिकनन्दन बौधी प्रेमक फाँसी सँ

अब तँ संग कबहि नहि छुटिहैं यमुना कुंज मिलासी सँ

एक पलक सगरो निसि बासर बिसरे नहि मोही छाती सँ।

एतद् एहि प्रसंगमे कही तऽ हुनक काव्य सौष्ठव ओ भक्ति भावनाक अनुरूपें हुनक पदावली अछि।

साहेब रामदासक पदावलीक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे ओ उँच्चकोटिक वैष्णव संत छलाह। पद रचना भजन-कीर्तन भक्त मार्गक अनुसरण करब ओ दास्य, साख्य, वात्सल्य आ मधुर रस कें संग जे प्रवाह हिनका वैयक्तिक भावनाक मनोभावनाक अपूर्व चित्रण, हिनक पदमे भेल अछि।

निर्गुन सगुन पुरुष भगवान

बुझि कहु साहेब करइ ध्यान

धैरज धरिअ मिलब तोर कन्त

साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त।।

कहबाक आशय साहेव रामदास सगुण ओ निर्गुण ब्रह्मक जे उपासनाक भाव सँ अनुपमेय अछि।

साहेबरामदास कृष्णकाव्यक परंपरा मे मैथिली साहित्यक मध्य जे रामक चित्रण कयलनि। अछि जे प्राय: ककरो ध्यान ओतेक नहि गेल अछि। हिनक रचनाक मुख्य विशेषता ईश्वरक समीप पहुँचब छनि। साहेबराम दासक हृदय कृष्णक समान विष्णु अवतार रामक प्रति ओतवे आकर्षण देखेलनि अछि।

साहेब रामदासक रचनामे भाषाशैली ओ भाषागत भाव लोकभाषामे रचनाक सजीवता पाठकक हृदयमे कोना बसैत ताहि लेल ओ अप्रचलित शब्दसँ परहेज करैत रहला। आ अपन भावोदगार गय पदसँ कयलनि जे कृष्ण भक्त द्वारा सामूहिक रूपें गाओल जाइत छलैक। पदावलीक संगीत तत्व मानव मनके संवेगात्मकता कें आओर तीव्र केलकैक। संगीतक उपादेयताक

प्रसंग कहल जाय तऽ हिनक पद सुनलाक पश्चात मानसिक ओ शारीरिक दुनू रूपें सुखक अनुभूति प्रदान करैछ। संगीतक रचनात्मक विचारक अभिव्यक्ति कलात्मक पक्षपर कतेक प्रभाव छोड़लकैक से देखल जाओ एहि पदमे -

वैरि विहि दुख मोरि लिखल जनम भरि विधिसौं किछु न बसाइ।।

विहि भेल वाम श्याम गेल मधुपुर गोकुल उसरन डाइ

एहि जीवन सौं मरन उचित भल इ दुख सहल न जाई

पापी प्राण तेजन नहि तन कें बहुत दिवस बहि जाय

साहेब धीरज धरहुँ चित सुन्दरि बोए प्रभुमिलि हैं आय।

साहेबराम दासक पदमे `विरह` भाव प्रेममे जे अपन महत्व बर विशिष्ट रखैत छैक, हृदय स्पंदित, संगीतक एहन उच्च भाव रखनिहार साहेब राम दास जीक साहित्यमे विशेष चर्चित नहि भेलैक से एकटा विचारणीय प्रश्न अछि?

साहेब रामदासक आंतरिक स्वर, माधूर्य प्रत्येक पदक सौंदर्य, लालित्य, देशज शब्दक विलक्षण उपयोग मिथिलाक लोककंठ सँ उपजल शब्द विन्यास आ ओकर धुन आ राग मे समदाउन, उदासी, चैतावर, होली, पराती, सोहर, लगनी आदिक जे रचना भेल से मानवीय चेतनाक आधार लोक जीवनक भावकें अभिव्यक्ति देलनि, जे ओ द्रष्टा से वएह एकटा श्रष्टा भऽ सकैत अछि तकर प्रमाण अछि। साहेबराम दास यदि एकदिश लोकधुनि आधारित रचना कयलनि तऽ शास्त्रीय पद्धतिमे सेहो रचना कयलनि यथा राग-विहाग, मुलतानी, भूपाली, रागपीलू, राग देश, राग केदार, भैरवी, दादुका आदिक ओजस्वितापूर्ण भावमे भेटैत अछि।

साहेबरामदास मैथिली साहित्याकाशमे चिरपरिचित विषय कृष्ण-काव्यक प्रसंग पर खूब रचना कयलनि। भक्ति रसक चरमोत्पत्ति अछि, हुनकर रचनामे संगीतक मौलिक तत्वक संग स्वर माधूर्य आ जीवन दर्शन सँ सहृदयी पाठक के विवश ओ अपना मे रमा लैत छथि । साहेब रामदास संतक जे विशिष्टता, घुमक्कड़, फक्कड़ आ संगीतक शक्ति भरने, घुमैत रहैत छलाह। ई बात पूर्वहि लिखने छी ओ मूल रूपमे संन्यासी योगी छलाह। हुनका कोनो चीजक स्पृहा नहि रहि गेल छलनि। ईश्वरोपासना मे अपन शिष्यक संग गबैत रहैत छलाह हुनक कुट्टीमे प्राय: सब वाद्ययंत्र रहैत छलैक। साहेबराम दास कुशल साधकक कसौटी पर कसल संगीतज्ञ छलाह। राग छंद लय ताल सर्वगुण सम्पन्न पद अछि। ओ नचारी, मल्हार, भैरव, भैरवी प्राती, सोहर घमार, झांझटी आदि राग पदक रचना करब सामान्य जनक गप्प सन नहि छलैक।

साहेब रामदासक रचनामे छंदक बेस प्रयोग भेल अछि। आ पाणिनीक कहब छनि छन्द ``**पादौ तु वेदस्य**`` छन्द वेदक पायर अछि। आ मिथिलामे `संत`क अवधारणामे वेदक महत्व सर्वाधिक अछि। `छन्द` ओहेन रचना जाहिमे राग तालक संग वर्ण विन्यास यथेष्ट रूपें बर्णन रहैत अछि। यतिक आदिक खियाल समुचित रहैक अस्तु तकर साहेब रामदास खूब मनोयोगसँ ध्यान देलनि अछि। हिनक रचनामे वार्णिक ओ मातृक छंदक प्रयोग खूब भेल छैक। कहल गेल छैक जे छन्दक प्रयोग मात्र हृदयेक टा के नहि वशीभूत करैत छैक वल्कि मस्तिष्ककें विकासमे सेहो

सहायक सिद्ध होइछ बल्कि सुगमता पूर्वक रटा सेहो जाइत छैक। वार्णिक छंद ओ भेल जाहिमे वर्ण वा अक्षरक एकटा निश्चित संख्या व्यवस्थित योजनाक तहत सृजन भेल रहैत छैक। से कही साहेब रामदासक रचना पद देखल जाओ -

कृष्ण जन्म सुनि ढरइछ नोर

कहलगि कहओ हरब नहि थोर।।

अब नहि रहनि अवनि केर भार

जत अरिजन तत होयत संहार।।

कंश वंश आब होयत निदान

ई नहि मानु, थिक भगवान।।

पुरल मनोरथ अभिमत काम

गोकुल आयल पुरुष अभिराम।।

होयब अमर इन्हि मानहु परमान

शिव सनकादि घरे जसु ध्यान।।

II IIS I IS II S I

उपर्युक्त पद चौपाइ जे मातृक छन्द थिकैक। 16 मात्रा पर यति कृष्णक जन्मक भाव दय संत साहेब राम दास अपन अलौकिक लोकप्रियताक प्रतीक जाहिमे मिथिलाक आ मैथिली साहित्यक मध्य अत्यधिक लोकप्रिय भेल अछि। महिमाक वर्णन भेल ओ चौपाइ छंदक प्रयोग एहेन देखल गेल अछि जे कृष्ण काव्यमे कम भेल छैक। तकर सफल रचना करैत राम काव्यक वर्णन छैक। अपूर्व कवित्वक प्रयोग केने छथि।[66] एहि चौपाईकें अवलोक करु -

जागहु राम सकल सुखदाई।

S I I S I I I I I ISS

2 I I=3 4 + 3 + 6 = 16

भरत शत्रुघ्न लक्ष्मण भाई

I I I I 3 I I I I 55

बैसि कौसिल्या मंगल गावै

राम राम कहि राम जगाबै।[67]

एहिठाम प्रत्येक चरणमे 16 गोट मात्रा छैक। चौपाइ के प्रत्येक चरणमे 16टा मात्रा होयब आवश्यक मुदा अंतिम वारिटा मात्रा - सगण (IIS), यगण (ISS) लधक रूपमे (IIII) एवं भगण (SII)[68] आशय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ गीत काव्य रचना कय जे सर्वगुण सम्पन्नताक परिचयसे साहित्यिक रचनाक कड़ीमे संत साहेब रामदास अपन फराक परिचीति छनि। जकरा कवीश्वर स्वयं परखि हिनक पदावलीक संकलन कयलनि। कवीश्वर चंदा झा स्वयं एकटा गान विधाक मर्मज्ञ छलाह जे आधुनिक मैथिलीक जनक छथि। एतवे नहि साहेव राम दासक रचनामे अलंकारक प्रयोग सेहो खूब

सिद्धहस्तताक संग भेल अछि यथा -

कनक कलित कटि किंकणी कलवाल माल

गोपी गण दइ दही चुम्बहि मृदुनयन कहि पहिरावहि गंजमाल -

एहिठाम कन-कलि, कटि-किंकि, गोपी-गण, कहि - कहि , पहि, वहि आदिमे छेका अनुप्रास अछि। कहबाक आशय एहि पद्यक पाँति मे एकबेर स्वरूप एवं क्रमश: आवृत्ति भेल अछि व्यंजनक यथा कन - कलि, कटि, किंकि, कल - माल, गोपी गण आदिकें देखलाक उपरांत एतय स्वरूपक क्रमिक आवृत भेल अछि अस्तु छेकानुप्रास भेल अछि। साहित्यिक निर्माण जखन होयतैक तऽ वएह साहित्य अपन दोसर पीढ़ीमे वा कही अनंतकाल धरि जीवित रहतै जाहिमे काव्यशास्त्रीय भावना सँ समन्वित रहत अन्यथा ``आयल - पानि, गेल-पानि, बाटे विलायल पानि।`` अलंकार वादी आचार्य दण्डी लिखैत छथि -`काव्य कल्पान्तरस्थायी जायते सदलंकृति` आशय काव्य तखने अमरत्व प्राप्त करतैक जाहिमे अलंकार रहतैक।

आशय संत साहेबराम दासक `पदावली` संत साहित्यक मध्य एकटा निर्विकार ह्रदयीक लेल युग-युगसँ शक्ति प्रदान करैत अछि। एकर एक-एक पद लोक जीवनक अध्यात्म दिशि प्रकृति करबैत अछि। गबैया राजकवि हिनक गीतकें भजन - ओ कीर्तनमे हिनक गीत सबकें गबैत रहैत अछि। साहेबराम दास योगी संन्यासी `संत` भगवत भगवानक प्रसंग कतेक किंवबदंति अछि। हुनका नाम कमेबाक अभीष्ट तऽ रहनि नहि, ओ सर्वज्ञ छलाह ईश्वरक समीप पहुँचल ओ नचारी, सोहर, धमार आदिक संग अपन कुटी पचाढ़ी `महंथान मे भजनक प्रभाव ओ भनकसँ लोकक आधि-ब्याधि दैविक कष्ट सँ निवारण भऽ जाइत छलैक।

साहेब रामदासक रचना पर काव्यपुराणक प्रभाव :- साहेबरामदास संत परब्रह्म परमात्माक भक्तिमे चरमतल श्रीमद्‌भागवत गीतामे अंकित स्वरूपक उपर हुनक दृष्टि नचैत रहैत छलनि। गीतामे कहल गेल अछि जे हमरामे आ तोरा मे कतहु कनियो अन्तर नहि ज्ञानी पुरुष छथि जे हमरा-तोरामे फर्क नहि करैत छथि। जीवरूपमे जगत रूपमे संपूर्ण संसार अक्षर - ब्रह्म रूप मे छथि ब्रह्मा, विष्णु आ शिव सबटा वएह छथि। पदावलीमे हिनक अभिव्यक्ति केहन भेल अछि-

शेष महेश सनकादि जाके चरण को धरय ध्यान

चारि वेद षट शास्त्र भागवत सतत करत है गान।

वरनै गौतम व्यास सुदामा महिमा सिंधु समान।

ओहि प्रभू पूरण ब्रह्म पुरातन साहेब जन के प्राण।।

अस्तु `संत` साहेबराम दास जीव-सम्बन्धी विचार पुराणक जीवक मादे जे दार्शनिक विचार ताहिसँ खूब प्रभावित छथि। श्री मद्‌भागवत गीतामे कृष्ण सभ वस्तुमे स्वरूपमे अपन रूप अंकित करैत छथि। जाहिसँ भक्त ओ भगवानक दूरी सदरिकाल संत कम करबाक लेल प्रयासरत रहैत छथि से संत साहेबराम दासक एहि पदमे देखल जाओ :-

संत जगत अनन्त लूबधै भन जानिके सार

जाहि हरि आपनाय लिन्हौं तनि तेज वस्तु आसार

काम क्रोध मद लोभ तृष्णा जे जन झोके भार।

से जन हरि से मिलै साहेब निगम करत पुकार।।

संत साहेबरामदासक उपर विष्णुपुराण आ भागवतक ई कृष्णभक्तिक प्रभाव नहि हो से संभवे नहि संपूर्ण मिथिला कृष्ण भक्तिमे रमल छलैक तखन संत मन सतत अपन अराध्यकें आम जनक प्रति अनुगृहित करैत छथि - से एहि पदमे -

आवागमन कवहु नहि होइहैं, अध करबै को आरा

पिअत अघात अमर हो जैहों अजब अमीय के ई धारा

-- --- -- --- --- -----

अबतौ बनी प्रीति नहि बिसरै रहौ जाओ की देह।।

साहेबराम दासमे जे भक्तिभावनाक समर्पण कृष्णाक प्रेम लेल साहित्यमे विशिष्ट स्थान छनि। कतहु-कतहु हुनक पदमे अद्‌भुत चमत्कार छनि। कृष्ण ब्रह्म थिकाह आ संत साहेवराम सदरिकाल ब्रह्मत्वक उपस्थापन लेल उत्कंठित रहैत छथि। साहेबराम दास भगवानमे भोक्ता-भोग्या दुनू भावसँ सम्मन्वित छथि। हुनकर साधना सहरजमीन पर अवस्थित छनि। पदावलीमे एहि अवस्थाके निरूपित करैत लिखलनि अछि ओ पद देखल जाओ -

वृन्दावन के कुंजगलीमे

मुरली के झरी लागल हे

-- --- -- ---

-- --- -- ---

जाको ध्यान लगौ वृन्दावन साहेबसो

बड़ भाग है

सभही गोकुल की कुल वनिता अपन पति

परित्यागहु हे।[१९]

साहेब रामदास संत सिरोमणि छलाह हुनक कहब छनि मनुष्यत्व देवत्वक जननी थिक। प्रेमसँ मनुष्य देवता बनि जाइत छैक। `संत` कहैत छथि मनुष्य सदरिकाल ककरहु प्रेममे वियोगित बनल रहैत छैक। मुदा से ओ बुझबाक शक्ति नहि रहि जाइत छैक। प्रेमक वास्तविक स्पंदन राधा-कृष्ण रूपमे जखन ओ साधक बनैत अछि तखन ओ पूर्ण योगी ओ दीव्य बृत्तिकें धारण करैत अछि।

संत साहेवराम दासजी श्रीमद्‌भागवतमे साधकक भक्तिमे नवधा भक्तिक प्रसंगे ईश्वरोपासनामे विश्वास रखैत छलथिन। ईश्वरोपासनमे निष्काम भय ओ निर्गुण भक्तिक उपासक रूपें संत साहेबराम दासकें सेहो मानल गेलनि अछि। ओना मिथिलाक धर्मग्रंथमे नवधा भक्तिक आशय श्रीमदभागवत, उपनिषद, रामायण मे नौ प्रकारक भक्तिक विश्लेषण साहेब रामदास जे स्वीकार करैत छथि। ई जे नौ प्रकारक भक्ति -

श्रवणं कीर्तन विष्णोः स्मरणं पाठ सेवनम्।

अर्चनं बंदनं दास्य सख्यमात्म निवेदनम्।।

इति पुसांर्पिता विष्णौ भक्ति श्चेन्नब लक्षणा।

क्रियते भगवत्यद्या तन्मन्येऽधीत मुक्तमम।।

संत साहेबरामदास मे उपर्युक्त नवो प्रकारक भक्तिक अनुगंजके अर्पण करैत छलाह हुनकर पाँति द्रष्टव्य अछि :-

साहेबदास सबहि के परिहरि दृढ़ भए भजहु मुरारि।

न मिलिहैं एहन पुन अवसर सुनहु वचन ब्रजनारि।।

कहबाक आशय भगवानक नाम हुनक गुणक महात्म्य ओ सर्वव्यापकता छलनि। तें ओ कखनहु राम कखनहुँ कृष्ण आ कखनहुँ विष्णु रूपमे देखैत छथि। जे हो ओ मैथिलीक सिद्धिपुरुष छलाह। मैथिली हुनक प्राण छलनि, तकर प्रमाण हुनक रचना अछि।

संत साहेबराम दास अपन अंतिम समय ``पचाढ़ी आश्रममे`` बितौलनि जे सम्प्रति दरभंगा-जयनगरक मार्ग केवटी-रनवेक पूब रैयाम अवस्थित जे पूर्वमे बुढ़बन नाम सँ प्रसिद्ध छलैक जे निर्जनमे अपन साधनाक उत्तम स्थान मानलनि। एहि पाछू बहुतरास एतिहासिक वर्णन छैक। कवीश्वर चंदा झा संपादित **``संत साहेबराम दासक पदावलीमे``** पचाढ़ीक तात्कालीन महंथ लोकनिक परिचय कवीश्वर स्वयं लिखने छथि जे प्रायः 1900 ई. मे प्रकाशित भेल छैक। 1930 ई. मे कवीश्वर स्वयं रामकृष्णदासजीक समयमे यात्रा कयने छलाह। जे संत साहेबराम दासजीक शिष्य-गुरुक परंपराक पता चलैत छैक।

एहि प्रकारें समस्त अध्ययन ओ अन्वेषणसँ अनुभव कयल जे संत साहेवराम दास जीक रचना भाव के हुनक साहित्यक अध्ययनक जे भाव गंभीर से पंचोदेवोपासक छलनि। मिथिलाक महात्म्यकें संत खूब नीक जकाँ जनैत ओ एकेस्वरवादी नहि रहला। ओ तत्वज्ञानी मायक गुणक बखान सेहो कयलनि अछि। जगदम्बाक जन्मस्थली मिथिला शक्तिक सिद्धपीठ बनल अछि। तैं लिखैत छथि -

झुरवहि जनिक नृपसुजस सकल दुरि गेल।

---- ----- -------

साहेब सोच छोड़हु सिआपितु के धनुष तोरत भगवान।

पुनः दोसर ठाम लिखैत छथि -

बैसलि जानकी हेरे अवधि नगर के ओर

---- ----- -------

जह-तह सुनल श्रवण भरि किरति भेल सबहि कें नेह।।

अंतमे कहल जा सकैछ जे मिथिलाक मध्यकालमे साहित्यिक दृष्टिसँ विशेषता रहलैक अछि जे विद्यापति साहेब रामदासक देवीदेवताक प्रति जे भक्तिभावना मिथिलाक परंपरानुसार

"रमन्ते योगिनोऽन्ते सत्यान्दे चिदात्मनि" अस्तु संत साहेब रमता-रमिता आदि शब्दक विन्यास जकर प्रयोग शताधिक पदमे कयलनि अछि से साधक ओ भक्त लेल कयने छथि। एताद संत साहेबराम दास मिथिलाक संत ओ संत साहित्यक मध्य हुनकहि पदके आश्रय लऽ कहल जा सकैछ :-

रघुवर चरण कमल पर नैना करि विश्राम।

जाते चरन दरसन के कारन भरत तजौ सुखधाम।।

जे पद पदपंकज जनक सुता नित परसिकरथि परनाम।

ब्रह्मादिक, सनकादि, शुकादिक निस दिन जप हरिनाम।।

अस्तु संख्यभावक भक्तिक सनातन धर्ममे हृदयग्राही ओ आनन्दलोक ओ भक्तिसौन्दर्यक भावक सृजन करैत संत साहेब रामदास अपन छाप मिथिले नहि अपितु संपूर्ण भारतीय वाङ्गमय मे अपन संतकीयभावक अमिट छाप छोड़ि गेलाह।

डॉ. जयकान्त बाबू हिनका प्रसंग लिखलनि अछि जे -In all these songs whether Bhajans, Sohar or Rasas, Sahebram Das writes in an easy and lucied style. It seems that for him it is sufficient to mention the lords praise and he lost in the thought of him. The sweet and peculiar melody of has lines is a decided advantage in this convetion Chanda Jha paid a Complement to it when he. intiated it in his works.

अस्तु एकटा पदमे लिखैत छथि -"मिथिला नगरी तोर दान विनु साहेब होइछ विहाल" तथा दोसरठाम लिखैत छथि।" साहेब करूणा करय शीशधुनि मिथिला होइछ अन्धेरि।" से कहबाक तात्पर्य जे हिनक भक्तिभावनाक सहजता ओ सरलता ओ भाषाक प्रवणता, निष्कपट ग्रहणतामे कतहु-कतहु भाषाक राधुक्कड़ी रान प्रतीत होइत अछि रो मुदा अद्‌भुत आकर्षण उत्पन्न करैत अछि।

संत साहेब लक्ष्मीनाथ गोसाई परहंस - मध्यकालीन मैथिली साहित्यक प्राणवायु महाकवि विद्यापतिक प्रभावक रचना कौशलक दृष्टिसँ एकटा काव्य परंपराक विकास भेलैक जे विद्यापतिक भाषा वैष्णव धर्म संप्रदायक भाषा रूपमे गृहीत भेल। ओना विद्यापतिक काव्य प्रतिभाक प्रभाव संपूर्ण विश्वे पर पड़लैक मुदा हमर विषय प्रविद्ध जे अन्वेषणक कार्य ताहि परिप्रेक्ष्यमे "मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण"क प्रसंग उक्त अध्यायमे विद्यापतिसँ प्रभावित रचनाकालक प्रसंग इतिहासकार लोकनिक एकमत नहि छनि। मुदा सबगोटे कमोवेश विद्यापतिसँ लऽ कऽ ओइनवार राजवंशक पतन 1527 ई. एकर पश्चात् महाराज महेश्वरसिंहक राज्यकालक अन्त 1860 धरि आ अहीठाम सँ मिथिला राज्यक कोर्ट ऑफ बड्र्स आरंभ होइत अछि। मोटमाट श्रीश जीक इतिहासमे विद्यापतिक परवर्ती कविक रूपें 1860 धरि मानलनि अछि। मुदा डॉ. जयकान्त बाबूक इतिहास आर कने स्पष्ट कयलक अछि ओ 1527 ई. बाद आ 1860 के बीचक समयके सेहो दू भाग मे बटलनि अछि हिनकर कहब छनि जे 1527 सँ लऽ कऽ1700 ई. धरि विद्यापतिक उत्तराधिकारी कविगण पश्चात 1704 सँ 1860 ई. धरि मध्यकालीन कविगण भेलाह। जे हो एतबा

तऽ अध्ययन ओ अनुशीलनसँ अनुभूति होइत अछि जे 1700 ई.क बाद आ पहिनेक कविक रचना मे विशेष मूलभूत परिवर्तन दृष्टिगोचर नहि अबैत अछि। विद्यापतिसँ आरंभ कय महाराज महेश्वर सिंहक शासन धरि बुझू विद्यापतिक अनुशरणेक रूपें पद रचना भेलैक। आन-आन भारतीय भाषा-साहित्यक सदृशहि मैथिली साहित्य मे सेहो ``संत कवि`` लोकनिक परंपरा विद्यमान अछि। भक्ति-भावनाक प्रचार-प्रसार करवाक निमित जे काव्य रचना कयलनि आशय-

तर्कोऽप्रतिष्ठ: श्रुतयो विभिन्ना

नासौ मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।

धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां

महाजनो येन गत:स पन्था;।।[1]

महर्षि वेदव्यासक एहि वचनमे महाजन शब्दक अर्थ संत वा सत्सुपुरुषसँ मानैत छथि। जीवन पथ पर `संत` अपन धर्मक पथ पर पाथेय बुझैत शास्त्रोचित सुबोध लोकभाषा मे गूढ़तम बात के ओ भावकें सामान्य समस्त जनपद कें अपन ईश्वरीय अध्यात्म पर आगू वढ़बाक लेल प्रेरणास्रोत बनैत छथि।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं परमहंस अपन अनेक नामसँ प्रसिद्धि प्राप्त कयने छथि यथा - लक्ष्मीनाथ, लक्ष्मीपति लखन, लछन नामे जे भणिता मे भेटैत अछि। संत साहेब लक्ष्मीनाथ गोसाईंक प्रसंग कने जिला जवार आ नाम आदिक परिचय प्रसंग - कहीं तऽ संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं के जन्म वर्तमान सहरसा जिलाक सुपौल प्रखंडक परसरमा गाममे भेल छलनि। जे अखन सुपौल जिला बनि गेल अछि। हिनका पर तथ्यपरक ओ सत्यक प्रमाणिकताक संग संकलन जे सर्वप्रथम कयलनि ओ छलाह पंडित छेदी झा `द्विजवर` हिनका मतें लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म 1793 ई. (तदनुनसार वि.सं. 1850 आओर फसली 1200 साल) मे भेल छलनि।[2] हिनका मतो 80 वर्ष धरि संत भगावनक सेवामे रहलाह। जे हो जनुश्रुतिक अनुसार मृत्युक पूर्व लक्ष्मीनाथ गोसाईं निम्न दोहा लिखि शिष्य जॉन साहेब कें अपन मृत्युक संवाद देने छलाह -

लक्ष्मीनाथ सुरपुर चले जान रहे एहिठाम।

कुटी हमारी देखियो, मिथिला मे बनगाम।।

अस्तु एहि पाँतीसँ जॉन साहेबक मृत्युसँ पूर्व भेल अछि। सर्वसम्मतिसँ संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक मृत्यु 85 वर्षक अवस्थामे 5 दिसम्बर, 1872 मे भेलनि।[3]

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक पिताक नाम पं. बच्चा झा छलनि। प्रतिष्ठित मैथिल निविष्ट ब्राह्मण छलाह। आ माता निर्मला आशय लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जीवन तद्युगीन सामान्य कृषक सामाजिक जीवनक संग वाल्यावस्था बितलनि। गाय चरायब हुनक सुखद कार्य छलनि। गोस्वामी लक्ष्मीनाथक वृहत जीवनी नामक पोथी मे पं. छेदी झा `द्विजवर` लिखैत छथि जे बड़ दयालु एवं पुत्रवत्सल पुत्रक पिता पं. बच्चा झा जोंकी महिनाथपुर निवासी पं. रत्ते झाक ओहिठाम लक्ष्मीनाथ जीकें विद्याध्ययनक हेतु पठाओल। ईश्वरीय अध्यात्मसँ भगवानक सत्ताकें स्वीकार्यक कतेको किंवदंति अछि जकर चर्चा होयत तऽ विषय प्रविद्ध भटकल सन लगतैक अस्तु पंडित रत्ते

झाक ओहिठाम तंत्र विद्या ओ हठयोग दिशि प्रवृत्त कय देने छलथि। गुरुक मनाहियो पर ओ हठयोग नहि छोड़लनि बल्कि ताहि लेल ओ अपन रचनामे एकर भर्त्सना सेहो केने छथि। आशय ओ साधना पद्यतिमे विश्वास राखि अपन मार्ग मे चलि देने छलाह। हुनक असाधारण प्रतिभा ओ भक्ति साधनासँ काव्य रचनाक जे धारणा ताहिसँ गुरुक आदर, शिष्यक प्रति आबि गेल छलनि।[२]
संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं ज्योतिष ओ वेदान्त आदिक सेहो खूब बेस अध्ययन कएने छलाह। हुनक सांसारिक दुनियासँ उदासीनता देखि हुनक पिता वयस्क भेला पर कहुआ ग्रामक सोखादत ठाकुरक कन्या सँ हिनक विवाह करवा देलनि। मुदा ओ पारिवारिक अनुराग सँ सतत् उदासीन रहैत छलाह। माया-मोहक सूत्र हुनका भीतर सुड्डाह भय गेल छलनि। आंतरिक पीड़ाक चलते घर-परिवारक, माल-जाल पर कोनो सुधि नहि ताहि लऽ कऽ एकबेर ज्येष्ठ भायक फटकार सुनि हुनका भीतरक वियोग आर प्रज्ज्वलित भय उठल आ घर त्यागि विदा भय गेलाह। ताहि समय ओ एकटा पद लिखलनि यथा जे अत्यंत मार्मिक छैक आ ओ अपन बिछाओन पर छोड़ि देने छलाह -

चलिये कंत ओहि देश जहाँ निज-घर अपना।
पचरंग महल देखि मत भुलहुँ यह सुख
जानहुँ निशि सपना ।।
यह संसार फूल सीमर के अन्दर रुइया रे सुगना
सुत वित नारि भवन कुल परिजन यह सब
चमकत चारि दिना।।
जल थल अनल आकाश पवन कृत विकसित
वारिज एक छना।
`लक्ष्मीपति` भ्रम त्यागि भजन करू तिहु पर ठाकुर एक जना।।3।।

कहबाक आशय `संत`क जीवन अत्यंत परमात्मानिष्ठ होइत अछि, हुनकर समस्त कामना निवृति, तृष्णाक विध्वंस भय गेल रहैत छनि, ओ सामाजक बीच रहितो ईश्वरसँ तादात्म्य सम्बन्ध कायम करबाक लेल उद्धत रहैत छथि। संतक लेल गृहत्याग करबाक प्रसंगे महाभारतक शांतिपर्व अध्याय 278 के आधार पर कहल गेल अछि जे एकांत भेला पर संतकें ध्यानमे नहि साधनाक समय हुनकर अपन आत्मासँ दर्शन होइत छनि मोन के अचल ओ स्थिर रखबाक वास्ते योगाभ्यास करैत छथि। एतबे नहि संत भगवानक गुप्त संकेतके बुझि कखन कोन प्रकराक आचरण करय लगता से साधारण लोकक लेल बूझब बड़ कठिन अछि-

यान्यनवधमनि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो
इतराणि। यान्यस्मक: सुचरितानि। तानि
त्वयोपास्यानि न इतराणि।।[३]

आशय शास्त्रोक्ति निर्देश कर्मक आचरण जे संतक ज्ञानसँ ओतप्रोत लोकहित उद्येश्य आचरित रहैत छथि। वास्तव मे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं जागरूक समाज सुधारक छलाह, अत्यंत

भ्रमणशील रहलाह, स्वाध्याय तप आ साधनारत रहैत वेद-पुराण, उपनिषद् प्राचीन संस्कृत साहित्यक अथाह सागरमे डुबकुरिया लगा कऽ अनमोल रत्न खोजबाक लेल सतत प्रयास करैत रहलाह। लक्ष्मीनाथ गोसाईं साधित योग सिद्ध पुरुष छलाह। नेपालक सुप्रसिद्ध पशुपतिनाथ महादेव दर्शन यात्रा हिनका जीवनक लेल महत्वपूर्ण घटना अछि। संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक सम्पर्क अही यात्रासँ विभिन्न धर्म सम्प्रदायक साधु-संतसँ सत्संग प्राप्त भेलनि। ओहि समयमे ओम्हर `नाथ` सम्प्रदाय साधु-महात्मा हिन्दी साहित्यक रीति कालक समय छलैक जखन संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं 30 वर्षक छलाह, साहित्यमे श्रृंगारक महत्व विशेष छलैक।[7] संत काठमाण्डू यात्राक वृतान्त जे 1825 ई.क अछि हिनक जीवनमे आमूल चूल परिवर्तन अनलक। हिनक जीवनक महात्माक संग जे वार्त्ता गोरखनाथ आ दोसर हुनक शिष्य लम्वानाथ स्वामीक संपर्कक जे वर्णन आयल अछि से हुनक एकान्त साधनाक परिचायक अछि। ओहीठाम हुनका अपन गुरूक जे खोज से योगीराज लम्वानाथक शिष्यत्व प्राप्त कयलनि। हुनक आ महात्माजीक जे वार्तालाप ओ इएह संपर्क संत लक्ष्मीनाथजीक जीवनक मध्य ``योग साधनाक` मूल क्रियासँ जोड़ल समस्त विधि-विधानसँ शरीर शुद्धि, अंगन्यास मुद्रा, आसन मुद्रा आदिसँ प्राणायामक संग अष्टांग योग, समाधि पाद, साधनापाद, विभूतिपाद एवं कैवल्यपादक संग चतुष्पादक ज्ञान देलाक बाद गुरू हुनका आवश्यक विषयक ज्ञान करा कऽ साधनाक सफलताक गूढ़ मंत्र दय भगवत भजनक आज्ञा देलनि, पश्चात लक्ष्मीनाथ पत्र, पुष्प, फल आ जल दक्षिणा स्वरूप समावर्तन कय गुरूक आशीष प्राप्त कयलनि। पश्चात् अभीष्ट स्थान दरभंगाक समीप रहुआ गामक एकटा पीपर गाछक नीचमे अपन स्थान तकलनि। कतौक वर्षक कठिन तपस्याक बाद अभिष्ट दक्षता प्राप्त कयलाक पश्चात् परिव्राजक रूपें प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थानक भ्रमण करय लगलाह। अही क्रममे ओ बनगाँव पहुँचलाह, अहिठाम हिनक स्वागत खूब नीक ओ हर्षपूर्वक कयल गेल। से अहि वास्ते जे अहिठामक लोक खूब सोझमतिया आ साधू महात्माक सेवा श्रद्धाक भाव रखैत छलाह।

बनगाँवमे स्वामी संत लक्ष्मीनाथ गोस्वामी कें विभूतिपाठक रश्मिक विकासक रेखा विकसित कयलनि। मैथिली भाषामे कविता लिखब आरंभ कयल।[8] मिथिलासँ तंत्र विद्याक प्रवलता एवं एकेश्वरवाद सँ जोड़िकऽ योग विद्या सगुणोपासना के पुनर्जीवन प्रदान कयल। जखनकि कबीर ओ नानक प्रभृति सन्त योगक निर्गुणोपासना पर विशष जोर देने छलाह। सन्तक टुटपुजिया वचन विदग्ध शिष्य निर्गुण उपासनाक स्वतंत्र विचारमे मूर्तिपूजा वर्णव्यवस्था, तंत्रोपचार आदिक खिल्ली आ मजाक उड़बय लागल,त कवीरादि मतक कट्टर समर्थक, शास्त्रीय ओ संस्कृत विद्याक ह्रास भेलासँ शास्त्रीय ज्ञानक अभावमे सगुणोपासक के मजाक उराओल जाइत छलैक। नाथ संप्रदाय सबहक अपढ़ शिष्य सब सगुणोपासनाक विरूद्ध छलाह। गोरखनाथ लिखित ``हठयोग प्रदीपिक` सँ स्पष्ट अछि जे संस्कृतक विद्वान अछैतो निर्गुणोपासक छलाह। संगहि वेदान्त सिद्धान्तकें अपन समर्थन दैत छलाह।

उपर्युक्त कथनक प्रासंगिकता अहिठाम छल जे बाबा संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं संस्कृत साहित्यक विद्वान छलाह, वेदान्त दर्शनक सूत्रधार महर्षि वेदव्यास उपनिषद आदिक मंथन कय `ब्रह्मसूत्र` नामक ग्रंथ लिखलनि जाहिसँ ओ सिद्ध कयलनि अछि जे ``सृष्टिक सृजनकारक तत्त्व

``ब्रह्म` थिकाह।" तात्पर्य अध्ययनक मूलके बूझि संत लक्ष्मीनाथ गोस्वामी अहि प्रसंग के ग्राह्य केने छलाह आ ओ बुझैत छलाह **सगुणोपासनाक बिना निर्गुणोपासना पर नहि पहुँचल जा सकैछ।** इएह तत्वक मर्मज्ञता स्वामीजीक योग गुरू लम्बागाथक आदेश जे **``कलौ केवलम कीर्तनम्`** आ अही सिद्धान्त पर बाबा अपन दृढ़ भय अपन जीवन पर्यन्त रहलाह। कबीर आदि सन्ताक अवतारावाद, निर्गुणोपासनाक समर्थन प्रलाप मात्र अछि, मिथिलेक जनता नहि भारतीय जनता भगवान श्रीकृष्णकें साक्षात् ब्रह्म मानैत छनि आ गीतामे ओ अपन सिद्धान्त लिखैत छथि।

स्वामी जी लक्ष्मीनाथ गोसाईं गीताक आधार मानैत गीतामे श्रीकृष्ण कहने छथि -

समं पश्यन्हि सर्वत्र समपस्थितमीश्वरम्।

न हिनरस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम।।

कहबाक आशय जे संत-योगी सर्वत्र समान भावसँ परमात्माक स्थिति रहैत छथि। स्वामीजी सगुणोपासक-निर्गुणोपासक समवादी छलाह। सगुणक लेल राम, कृष्ण, शिव, गुरु, गंगा प्रभृति देवक लेल प्रार्थना लिखने छथि। एतबे नहि स्वामी जी निर्गुण ब्रह्मक वर्णन बोधगम्य भाषामे सेहो कयने छथि।

स्वामी लक्ष्मीनाथ गोसाईंक मैथिली भाषा साहित्यक सेवा अभ्यर्थना :- पंडित छेदी झाक अनुसार ``मैथिली-संस्कृतक जन्मजात भाषा अछि, स्वामी जीक मैथिली भाषामे ब्रजभाषाक मिश्रण से कही मिथिलामे एकटा सधुक्कड़ी भाषाक विकास भेल छलैक, ताहिसँ हिन्दी भाषाविद् क्षेत्रीय भाषाक उपर प्रहार शुरु कयल आ हिन्दीक मानय लागलाह जकर मिथिला घोर विरोध कयलक आ संतक बीच जे सधुवकड़ी भाषाक प्रचलन से एक प्रकारक मैथिलीक बोली अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाईं संत काव्य साधनामे लीन रहला लगभग प्रकाशित-अप्रकाशित मिलाकऽ सातटा ग्रंथक रचना कयलनि। लगभग 25000 पदक सृजन कयलनि।" परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक लिखल ग्रंथ निम्न अछि -

1. **गीतावली** - प्रातः स्मरणीय लक्ष्मीनाथ गोसाईं एहि ग्रंथमे श्रीकृष्ण ओ श्रीरामक विनय-प्रार्थनाक संग अध्यात्म जीवनक, कीर्तन, आत्मोपदेश, परोपदेश, होली, चैतावर, महेशवाणी, पराती आदिक संग तेसर संस्करण परम हंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, खरकाई लिंक रोड, विष्टुपुर, जमशेदपुर-831001 द्वारा 2015 ई.मे 2000 प्रति प्रकाशित करबाओल गेल अछि। वर्तमान मे एहि ग्रंथमे 743 पद संग्रहित अछि।

2. **विवेक रत्नावली** - एहि ग्रंथमे प्रश्नोत्तर अछि। गुरू शंकराचार्यसँ कयल गेल प्रश्न आ उत्तर जे देल गेल छलैक तकरा परमहंस संत गोसाईं जी संस्कृतसँ हिन्दी भाषामे अनुवाद कयलनि। एहिमे गुरू शंकराचार्य लिखित तत्वबोधक मौलिक ग्रंथक अ सँ क्ष तक प्रत्येक अक्षरक एक-एक दोहा जाहिमे अनुप्रास अलंकार आदिक भरमार अछि। गुरू शंकराचार्यक लिखल तत्ववोधक भाषानुवादक संग पंचतत्व अवस्थाकोष प्राण, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि जीव आत्मा, परमात्मा आदि पर प्रकाश देल गेल अछि। रामरत्नावली ``एकरे संग देल गेल छैक जाहिमे मौलिक ग्रंथ दोहा-छन्दमे राम नामक महिमा` उल्लिखित अछि।

`गुरु चौबीसी` सेहो अही विवेक रत्नावली ग्रंथक अंग अछि जाहिमे कही तऽ एकटा पौराणिक विषय थिकैक जाहिमे अवधूत दात्रेय चौबीस विषयमे शिक्षा लेलाक बाद हुनका गुरू मानलकनि तकर भाषानुवाद सेहो छैक।

अस्तु अध्ययनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक एहि ग्रंथमे विभिन्न प्रसंगसँ उधृत बनल एकटा विशाल ग्रंथ अछि।

3. **श्रीकृष्ण रत्नावली** - श्रीमद्भागवत गीताक हिन्दीक भाषानुवाद अछि। मुदा आब ई ग्रंथ प्रकाशित भय गेल अछि। एकर प्रकाशक परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति खरकाई लिंक रोड, विष्टुपुर, जमशेदपुर-831001 फोन 0657-2249248 प्रथम संस्करण। 1000 प्रति ई. 2016 मे प्रकाशित भेल छैक तैं आव ई अप्रकाशित ग्रंथमे नहि एवाक चाही।

लक्ष्मीनाथ गोसाईंक पोथीमे अखनहुँ किछु अप्रकाशित ग्रंथ अछि ताहिमे प्रमुख अछि -

1. **योगसार समुच्चय** - योगिक क्रिया पर सूत्रक कयल अन्वेषणक प्रसंग ग्रंथ अछि।

2. **अकुलागम तंत्र** - बावाक एहिमे तंत्रसँ सम्बन्धित कयल गेल अन्वेषण ग्रंथ थिकैक।

3. **बन्दीमोचन** - माँ जगदम्बाक बन्दना अछि।

4. **मोह-मुद्गर** -

उपर्युक्त इएह चारि ग्रंथ हमरा जनैत अप्रकाशित अछि।" समस्त अध्ययन गीतावली फलस्वरूप भेल अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाईं योग सिद्धि प्राप्त संत छलाह तैं हिनका प्रसंग कतौक चमत्कारी कौतुक पूर्ण देवतुल्य प्रसंग समाजमे विख्यात अछि। कहले नहि लिखल अछि जे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कें आठगोट सिद्धि प्राप्ति भेल छनि जे हुनक पोथी `गीतावली` संग फुलेश्वर मिश्रक पोथी ``संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं`` आ संगहि एकर उल्लेख पं. छेदी झा द्विजवर सेहो अपन संकलन ``गोस्वामी लक्ष्मीनाथ की बृहद जीवनी`` आ ललितेश्वर झा द्वारा संकलित ``लक्ष्मीनाथ की पदावली`` ग्रंथमे भेटैत अछि।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक प्रसंग ई कहल गेल अछि जे हिनक प्रमुख शिष्यक कड़ीमे किछु अति प्रमुख छथि जिनक उल्लेख आवश्यक अछि ताहिमे -

1. **स्व. पंडित रघुवर झा गोसाईं** - मैथिली भाषा-साहित्य मध्य संत साहित्यक मध्य हिनकहुँ नाम प्रसिद्ध अछि।

2. **स्व. क्रिश्चन जॉन** - बरियाही कोठी, सहरसा।

3. **स्व. राजाराम शास्त्री** - प्रयाग (उत्तर प्रदेश)।

4. **स्व. मोहम्मद गौस खाँ** - मुंगेर।

परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक किछु प्रसिद्ध कुट्टी छलनि ताहिमे जकर सम्पूर्ण विवरण गीतावली ग्रंथ पेज 36 सँ 38 पर उल्लेख भेल अछि।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक साधनामे तल्लीन हुनक रचना संसार वड़ विशाल अछि। ओ

सम्पूर्ण रूपें राम-कृष्ण चरितके पद्यबद्ध करबाक व्रत लेने छलाह। भक्ति ज्ञान ओ वैराग्य सम्बन्धी आदि प्रकारक रचना मे नचारी ओ लोक विषयक रचनाक संग समाजक कल्याणक प्रसंग कतेको नीतिबद्ध रचना सेहो कयलनि। कहवाक आशय हिनक जीवनक सर्वाधिक समय काव्य रचनामे व्यतीत भेलनि तकर एकटा बानगी जखन स्रोता -भजनी आ स्वयं-उधाय लगैत छलाह तकर विनोद पूर्ण रचना कतेक समीचीन भेल अछि नींद आ ऊँधायब पर सावधान करैत लिखैत छथि -

मो से दूर रहौ रे निनियाँ।

कर जोड़ि वरजों तोहि जोगिनियाँ।

राम भजन को छाड़ो रजधनियाँ।

क्यों चाहौं हमरासँ सुखरैनियाँ।

हम महाराज रामके भजनियाँ।

चाकर नीच गुलाम खेलनियाँ।

तकरो यम किंकर गोहरनियाँ

`लक्षन` कहत हॉटो जाओ एहि खनियाँ।

रामक दोहाइ काटि लिहों नकनियाँ।

भजन-कीर्तनक महत्वकें संत लक्ष्मीनाथ युगानुकूल बुझैत खूब प्रश्रय दैत छलाह। बाबा रांतक जे मूल धारणा लोक जीवनक हितकारक होइत छथि रो तकर प्रतिमूर्ति छलाह। हुनक विचार छलनि जे कीर्तन कयलसाँ सद्भाव ओ चित्त सेहो निर्मल होइत छैक। अपन ग्रामीणसँ ओ अत्यंत मृदु कोमल भावसँ मानवीय कल्याणक लेल हुनक गीतक व्यवहार प्रसिद्ध अछि।

हमर विषय प्रसग संत साहित्य एतद् पदक जे रचना संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कयने छथि ताकर विभाजन करब विशेष झंझाटिया नहि छैक कारण तताबा सामग्री अछि जे विद्वान लोकनि द्वारा संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर खूव कार्य भेल छैक। ओहि हिसाव सँ ``मैथिली संत साहित्य`` भंडारकें मात्र हिनकहि नामे अध्ययन विस्तार पूर्वक कयल जाय तऽ नीक ग्रंथक सृजन भय जयतैक। परंच से तऽ नहि। एहिठाम विद्यापतिक परवर्ती संत साहित्यक सृजन अछि अस्तु अहि अध्यायक महत्व के बुझैत संक्षिप्त भाव विस्तारमे ``पंचरत्न गीतावलीक नामसँ उल्लिखित संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंजीक संग्रह पर लिखल छैक **``लक्षन ललित गीतावली कहत सजन हितलागि``** वाबा अपन रचनाकें मूलतः तीन भाग कयलनि अछि - `राम-गीतावली`, `कृष्ण-गीतावली`, आ गीतावली ओना एकर बादो प्रकाशक ओ संकलनकर्त्ता विभाजनक प्रयास कयलनि अछि। ताहिमे प्रमुख छथि सहरसा जिला बनगाँव कें पंडित महावीर झा द्वारा ``परमहंस भजनसार।"

1. **``श्री कृष्ण रत्नावली``** पोथी संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक अनन्य भक्त रघुवर गोसाईं द्वारा संशोधित कऽ द्वितीयाबृत्ता रूपें कयल गेल अछि. पोथीक अंत कविक रचना दोहा, चोपाई प्रसंग एहि प्रकारें देल गेल अछि:-

हर भूषण हरवदन घर, हर तल हरिशिर रूप

एते अंक मिलाय के बीते शाके भूप।।28

हरि रिपु तिथि हरनयन सम, मास पक्ष शनिवार

लक्षन कृष्ण रत्नावली, पुस्तक कियो तैयार।।29

नाग नाग शर चन्द्रमा, एते अंक चौपाई

भूत भूत पर विविध्यं, दोहा मान जनाई।।30।।[10]

दोहा संख्या 28, 29 एवं 30 मे अंकित शास्त्रीय पद्धतिक विस्तार सँ वर्णन करव संभव नहि मात्र एतबा बुझल जयबाक चाही जे 1758 शाकाब्द ज्येष्ठ कृष्ण 13 शनि त्रयोदशी तिथिक संकेत आ दोहा 30 सँ समायोजन कयला पर 1788 गोट संख्या एवं दोहाक संख्या 255 प्रमाणित होइत अछि।

ज्योतिष शास्त्रीय गणना एहि ग्रंथमे गोस्वामी जी एकर लेखन वर्ष मास तिथिक संग दोहा चौपाइक संख्या आदिक उल्लेखकँ हुनक ज्योतिषीय ज्ञान शैलीक परिचय प्राप्त होइत अछि। एहन अंक शैलीक नियम कें ``**अंकानां वामतो गतिः**`` कहबैत अछि।[11]

2. **रामरत्नावली** :- एहि पोथीमे तुलसीकृत `दोहाबली`क पद्धति पर एकसय एगारह दोहाक रचना अछि। जाहिमे दोहा छन्द मे राम नामक महिमाक गुणगान भेल छैक। सरल भावमे एहि दोहाक अवलोकन करू -

बन्दौ आनन्द ब्रम्ह गुरू, राम-नाम श्रुतिसार

लक्षन रामरत्नावली, दोहा करत उचार।।

एकर भाषा सधुकरी छैक जाहिमे मैथिली शब्दक प्रयोग खूब भेल अछि।

3. **आकारादि दोहावली : -** एहि प्रसंग हम पहिने बहुत चित्रण कयने छी एहि पोथीमे `अ` सँ `क्ष` धरि सब अक्षर पर एकटा कऽ दोहा कुल 54 गोट दोहाक सृजन भेल अछि। एकर मंगलाचरण -

जा पद रज को ब्रह्म हर, घरत रहे उर ध्यान

सो प्रभू लक्ष्मीनाथ के, सदा हरे अज्ञान।।

योग आ भक्ति जिज्ञासुक लेल उपयोगी ग्रंथ थिकैक। एहिमे मैथिली मिश्रित सधुकरी भाषाक प्रयोग भेल छैक।

4. **प्रश्नोत्तरीमाला** : - एहि पोथीक विशिष्टता छैक जे शंकराचार्यक द्वारा कयल गेल प्रश्नोत्तरी कें सर्वजनके सहज भाषामे उपलब्ध करेबाक दृष्टिएँ एहि पोथीक विशेष महत्व अछि। एहिमे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं अनुवाद कयलनि अछि। एहिमे कुल चौसठिगोट दोहा अछि। मुख्यपृष्ठ पर संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं रचित दोहाक संग शंकराचार्यक श्लोक सेहो अछि। जे निम्नांकित छैक -

बद्योहि का? यो विषयानुरागी।

का वा विमुक्तिविर्षये विशक्तिः।।

ध्यान देबाक छैक। उपर्युक्त दोहा अतिरिक्त मुख्य पृष्ठ पर सेहो एकटा प्रश्नोत्तरी दोहा अछि :-

वन्ध्यो को जगत मे? जहि विषय अनुराग

मुक्ति कौन की होत है? जाको विषय विराग।।

भाषाक प्रयोगमे लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन विद्वत्ताक परिचय दैत किछु दुरूहता सन अनुभव होइत अछि, मुदा संत कविक भाव एहि वास्ते प्रशंसनीय जे संत लोकक लेल होइत छथि एहि भाषाकें देखैत ई अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण अछि, विद्वान संतक अनुवादकें सामान्य जन जिनकामे अध्यात्म जगतसँ रूचि रहतनि से सहज बुझि जेताह। तकर एकटा आरंभिक दोहा -

बूड़त हौं उदधि मे, नाव कहाँ सँ पाब

क्रियावन्त गुरूक कृपा, विश्वेश्व र पद नाव।।

अंतिम दोहा अछि -

रामनाथ गौरीश की, गाइ कथा उदार

`लक्ष्मीपति` भाषा सुकृति शक योगीन्द्र सुहार।।

5. **भाषातत्वबोध** : - प्रस्तुत ग्रंथ सेहो पद्यानुवाद अछि, जे स्वामी शंकराचार्य द्वारा विरचित गद्यग्रंथ थिकैक। एहिमे संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं लोकभाषामे निनानवे गोट दोहा अछि एकर अनुवाद देखल जाओ :-

साधन चतुष्टयं किम्? नित्यानित्य वस्तु विवेकः।

इहांमुत्र फल भोग विरागः। इत्यादि।

अनुवाद - **साधन चार प्रबीन जो सो अधिकारी सार।**

ताके साधन करतहौं, तत्व विवेक प्रहार।

प्रारंभमे कवि ईश्वरसँ वन्दना कयलनि अछि आ अंतक दोहा अछि -

तत्वबोध भाषा विमल, मंजुल पद हरिगान

`लक्ष्मीपति` कृत पढय नित, सुनत होत विज्ञान।

स्पष्ट करी जे शंकचार्यक गद्य ग्रंथकें लक्ष्मीनाथ गोसाईं पद्यमे अनुवाद कयल।

6. **गुरू चौबीसी** : - ब्रह्मनिष्ट अवधूत महात्मा दत्तात्रय जे चौबीस अवतारमे सँ एकटा अवतारी पुरुष छलाह ओ प्राकृतिक पदार्थसँ शिक्षा लय जे उपदेश देलनि अछि तकरे संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं पद्यानुवाद कयलनि अछि। जे जनसाधारणक लेल अत्यंत उपयोगी छैक। एहिमे प्रथम दोहा गुरु वन्दना ओ छब्बीसम दोहा पठन-पाठनक फल अंकित अछि। एकर अंतिम पद अछि -

`लक्ष्मीपति` दोहा रचि, गुरू चौबीसी नाम

पढ़ै, सुनै जो प्रेम करि, ताके पुरण काम।।

एहि प्रसंग एकटा वात कहब अत्यंत मार्मिक अछि जे उपर्युक्त पाँच पोथीकें मिला कऽ आशय

- रामरत्नावली, आकारादि दोहावली, प्रश्नोत्तरीमाला, भाषातत्वबोध एवं गुरूचौबीसी के एक ठाम कऽ देला पर एकर नाम ``विवेक पंचरत्न`` नाम सँ प्रकाशित कयल गेल अछि, जकर मूल आब उपलब्ध नहि अछि। एकरा पं. छेदी झा `द्विजवर` पुन: संपादित कय जन सहयोग प्रेस (सुपौल) सँ मुद्रित करबौने छलाह जकर प्रति बनगाँवमे उपलब्ध अछि।[24]

मोहमु दगर : - इहो पोथी स्वामी शंकराचार्य विरचित संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं द्वारा अनुदित ग्रंथ अछि। लोककंठमे एहि पोथीक पाँतीसब अखनो प्रवाहित होइत रहैत अछि। लोक विषयक रहैत ई पोथी अध्यात्म विषयक रचना सेहो अछि। यथा अवलोक करू -

वदौं गुरू पद पद्‌म पाप हरन पावन करन

सकल शास्त्र को सद्‌म, सेवत सुरशृषिराजवर

ओना एहि पोथीकें लुप्तप्राय मानल जाइत अछि।

एतद् अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट होइत अछि जे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक एहेन बहुतरास पोथी जेना (1) योगसार समुच्चय (2) अकुलाम तंत्र (3) बन्दीमोचन आदि पोथी आब उपलब्ध नहि अछि।[25]

सुप्रसिद्ध कवि उपन्यासकार बैद्यनाथमिश्र ``यात्री``जी संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं कें अपन रचनामे `गौरव` माननलनि अछि। हुनक पाँती देखू -

लक्ष्मीनाथक योगध्यानमे

कवि चन्द्रक कविताक गानमे

नृप रमेश्वरक उच्च ज्ञानमे

आभा अमल अहाँक

विद्यावल विभवक गौरवमे

अहँ छी थोड़ कहाँक?[26]

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं अद्वैतवादी छलाह। ओ प्रभूक आकारक खंडन कयलनि अछि। `अद्वैतवाद` भारतीय अध्यात्म चेतनाक प्राचीनतम मान्यता अछि।

नर भज भगवत, जग यश उपजत

जपत सकल सत, रहत सदत रत

--- --- -- --- -- --- --

यमक नगर गय, परम नरक भय

`लक्षन` भगत जन, रहत मगनमन[27]

अस्तु ईश्वरोपासनामे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक तन्मयता आ प्रेम विह्वलतामे हुनक अनुयायी वा कही भक्त हृदयकें जीत लैत अछि।

व्यवहारिक दृष्टिमे : जगत मिथ्या कहैत छथि जे ईश्वरक कतहु आदि-अंत नहि। मनुष्य अपन मानसक संग अपन कर्मेन्द्रिय कें एकनिष्ठ कय अपन अस्तित्वक सार्थकता सिद्ध करैत अछि।

हिनक कहब छनि जे ज्ञानाश्रयी भेला पर साधक व्यवहारिक दृष्टिसँ अपूर्ण रहि जाइत अछि। एतद् संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे सर्जनात्मक कल्पनाशीलताक अपूर्व समन्वय जाहिमे गीताक ज्ञान भागवतक महात्म्य ओ गीतगोविन्दक शैलीसँ युक्त भक्ति भाषाक अनन्य भाव दृष्टिगोचर होइछ यथा एहि पदमे देखल जाय -

राजित विपिने दश दिशि दिपने गोद्विज देव हुलासँ।
युवती संग रसिक त्रिभगे वृन्दावन कृत वासं।।
श्रीपति चरमे अशरण शरणे तरणि श्रुतिसारं।
लक्ष्मीपति जन परम विकल मन कुरू भव सागर पारं।।[66]

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं भक्त छलाह, कतेको ठामक पर्यटन कयला, हिनक भाषा पर कतौक ठामक प्रभाव पड़ल अछि। मिथिला मे साधु सन्तक एक विशेष प्रकारक बोलीक प्रयोग कयने छथि, से इहो तकर प्रयोग कयलनि जाहिमे तात्कालिन समयमे आम जनता विशेष रूचि सँ सुनैत छलैक। कहबाक आशय संतकाव्यक विशिष्टता लोक जनक भावनासँ भावसौंदर्यसँ लेल जाइत छैक। संत मानवीय जीवन गाथाक गंभीरसँ गंभीर भावकें सर्वसाधारणक भाषामे व्यक्त करब हुनक उद्देश्य रहैत छनि। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं अनपढ़, निरीह, बृद्ध ग्रामीणक दुर्दशा, संतक भक्त हृदयमे भजन आदिक रचना करैत ओ वैराग्यमे काव्यक संतत्व भावसँ सामाजिक ग्राम्य जीवनक वर्णन करय लगैत छथि। शिवक विवाहक वर्णन करैत जाहि भावके विभत्स रसमे चित्रण कयलनि अछि से अन्यत्र असंभव अछि -

हम नहि करब एहेन बर माई।
लोक कह त की? देखू जमाई।। ध्रुव।।
पहिनहि अशुभ, विकट तन नाङट, झौंसल सन बगय बनाई
-- -- --- --- ---
`लक्ष्मीपति` जनु निन्दा करिये भाग होई सँ ई वर पाई।।4।।[67]

दोसर पद अवलोकन कयल जाओ -

आवहू मूढ़ हारि नहि माने, वृद्ध भये नहि हित पहिचाने
दूर रहे सो भये समीपि, विकट सदा सो दूरि दुराने
---- --- ---- ---- ---- ---
जरो मरो दुख सहो विविध विद्य तबहू आशा लोभ लुभाने
लक्ष्मीपति भगवन्त भजन बिनु, विकल भये मुख्य पछताने ।।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं आर्थिक, नैतिक, सामाजिक ओ राजनीतिक दृष्टियें ग्राम्य जीवनकें काव्य कलाकमे सौंदर्यक संग उतारब विशिष्टता रहलनि अछि। रसक दृष्टिसँ यदि हिनक रचना कें अकानल जाय तऽ विशेषत: श्रृंगार ओ शांत रसक प्रधानता छनि। ओना वीर ओ विभत्स रसक उद्रेक सेहो हुनक हृदयमे बड़ मर्मस्पर्शी रहल अछि। एहिठाम एकटा बानगी -

जब कपि दल घेरे लंका

राम नाम लै कूद परो है किन्ह ताल दै डंका

---- --- ---- ---- ---- ---

असुर मारि सुर बन्ध छुड़ाये राम लखन विर बङ्का

``लक्ष्मीनाथ`` विभीषण जन को, भरो तिलक दै अङ्का।।

एतद् देखल ओ अनुभव तखन होइत अछि जखन गोसाईं जीक विषद अध्ययन कयल जाइछ जे ओ ग्रामीण जीवन ओ लौकिक हृदयकें अत्यंत करीबसँ देखैत साहित्यक जे मूल धारा भोगल यथार्थ सन प्रतीत होइत अछि। वर्णित विषय आत्मसात करैत लोकक आत्मीय बनि जाइत छथि। ओ ब्राह्मण रहैतो ओ `संतक` भावकें खूब मनोयोगसँ सार्थक कयलनि अछि। सर्व धर्म सम्मानक हुनक भावना जे धार्मिक कट्टरता आ जाति-पातिक भावनाक ध्वंस कयलनि अछि। ओ जनमानसक कल्याणक भावनासँ प्रेरित हिन्दू, मुसलमान, इसाई एवं सब जाति-वर्गमे हुनक शिष्य रहनि। सभ्यता-संस्कृतिक प्रचार-प्रसारक जे हुनक अपूर्व भावना तकर एकटा वानगी हुनक शिष्य जॉन साहेब हुनके शैलीमे रचनाक अवलोक करी :-

जय जय रंजन जय दुख भंजन,

जय जय जय सुखदाई।

अशरन के शरणागति दायक,

प्रभू यीशु जगराई।।

--- ----- ----

उदधि सामना प्रेम तिहारो,

जा मध्य जगत समाई।

`जान` अधम जन को प्रभू दीजे, विन्दु समाना ढाई।।

अस्तु संतक हृदय विशाल ओ पवित्र सगुण - निर्गुनक समाहार भावसँ हिनक पद :-

निराकार सगुण बनि आये, आपहुँ नाना रूप धराये

एक अनेक भये हैं बहुविध, आपहुँ आप समाये

आपहि भूमि समीर अनल जल, आप आकाश बनाये

आपहि चित्त बुधि है आपहि, आपहि विषय विहार

आपहि जीव देवता आपहि, आपहि भोगनहार।।[56]

एहि प्रकारें सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाईं संतक ओहि परमपद सत्ताकें स्वीकार कयलनि अछि। हिनक रचनामे ओहि अव्यक्त सत्ताकें विलक्षण व्यक्तित्व प्रदान करैत बुझा रहल अछि। जाहिमे निर्गुण-सगुणक जे भगवानक समन अपन ईष्ट देव स्वीकार करैत हुनका प्रति भक्ति आ प्रेम प्रदर्शन करैत हुनक महिमाक गुणगान करैत नहि अघाइत छथि। जाहिमे विविध चेष्टा साधनाक बल पर स्वयं ओहि तत्वक उपलब्धि सँ `स्वानुभूतिक तीव्रता सँ अन्यान्य बातक

परित्याग करैत विश्वक कल्याणक भावमे समाहित रहैत, संत प्राण संचार करयवला वायु समान होइत छथि -

बाहर भीतर सवनि के, प्राण वायु संचार

लैत दैत नहि घरैत किछु संत सुगंधि विकार

एहि प्रकारें बहुविध अध्ययन-अनुशीलन सँ एतबा तऽ स्पष्ट जे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं जीकें प्रसंग डॉ. जयकान्त मिश्र अपन हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, प्रथम भागमे संत साहेब रामदास संग तुलना करैत, योगी रूपमे लक्ष्मीनाथ गोसाईं के श्रेष्ठ माननलनि अछि। डॉ. फुलेश्वर मिश्र अपन शोध पुस्तक ``संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं`` मे विद्यापतिक वाद मिथिलाक दोसर पैघ कवि कहलनि अछि से तिनका प्रति हमर एहि शोध प्रबंध ``मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ अनुशीलनमे`` सम्पूर्ण रूपें विस्तारित अध्ययन संभव नहि हिनक एक-एक रचना साहित्यक मध्य अपन अपूर्व भावमे सराबोर अछि। ताहिमे किछु लय हमहूँ हिनक प्रसिद्धि के विस्तारित करबाक प्रयास कयल अछि। एतद् हमर विचारें किनको सँ तुलना करब किनको नीचा देखायब शास्त्रीय पद्धति विद्वताक क्षरण करब किनको प्रति दुर्भावना होयत, मात्र हम एतबे कहि सकैत छी - **``तोहें सदृश एक तोहें माधव``** कहि, एहि विशाल विषय प्रसंग कें अंत कय रहल छी।

विद्यापतिक परवर्ती संत कविक प्रसंग जे वास्तवमे संत छलाह तिनकर चर्चा ओ अध्ययन उपर्युक्त शीर्षक मादे कयल गेल अछि। एहि प्रसंग विद्वानक संग विमर्श भेल तऽ कतेको कहलनि ईश्वरीय भाव निहित पद संत साहित्यक मध्य लेल जेबाक चाही, परंच हमर जे अध्ययनक भाव विस्तार से जे संतकीय भावसँ जीवन जीवैत ईश्वरीय भावमे प्रवाहमे एकत्व स्थापित करैत रचना कयल गेल, सएह संत साहित्यक रूपें व्याख्यायित कयल जयबाक चाही। एतद अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट भेल जे किछु नाम जे हम एहि अध्यायमे रखने छलहुँ ताहिमे अमृतकर रमापति एवं भानुनाथ प्रभृति मात्र कवि छलाह। तत्कालीन समयमे महाकविक प्रभाव समाज पर तेहन छल जे रचनाक रूचिरक प्रभावें राधा-कृष्णक श्रृंगार भाव लय देखा-देखी बहुतो रचनाकार भेलाह। ताहि समयमे हमरा जनाबे कोनहु व्यक्ति लेल समाजमे मान-मर्यादा प्रसंग छलैक, कारण विद्यापतिक प्रभाव समाजमे ततेक गहींर धरि चलि गेल रहैक, विद्यापति ततेक लोकप्रिय बनि गेल छलाह, हुनक मान-मर्यादा ततेक व्यापक रूपें समाजमे पसरल छलैक जे परवर्ती कालमे बहुतरास कवि काव्य क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि ताहिमे उपर्युक्त नाम प्रमुख अछि। मुदा ओ संत कवि रूपें हमरा नहि बुझना जाइत छथि।

अमृतकर - श्रृंगारिक भाव लय रचना कयलनि ओ महाराज शिवसिंहक दरबारक मंत्री आ महाकविक समकालीन छलाह। रामभद्रपुर पोथीसँ गीत संख्या 105 मे हिनक नामक उल्लेख भेल अछि। बलाइनिमूलक कायस्थ चन्द्रकरक पुत्र ओ श्रीधरक वंशज छलाह पश्चात् हिनके वंशमे मुंशी रघुनन्दन दास भेलाह। हिनकर रचना नेपालक तालपत्र भाषागीत संग्रहमे उल्लेखित अछि। हिनक पदक रमणीयता हिनक विशिष्टता अछि। हिनका विद्यापतिक समकालीन मानैत, महाकविक पद सँ प्रभावित भय रचना कयलनि। हिनक सात गोट रचना भेटैत अछि।

अस्तु एतबा धरि अवश्य ई जे अमृतकरक संत साहित्य मध्य कोनहुँटा योगदान नहि छनि।

ओ राजनीतिज्ञ शिष्टमंडल तक सिमित छलाह। धर्म कार्यक मादे बालगोविन्द वाबूक इतिहासमे लिखल अछि जे मिथिलामे हिनका द्वारा बनवाओल एक आधटा मंदिर एखनहुँ मिथिला मे अछि मुदा स्पष्ट नहि कयल गेल छैक।

रमापति - विद्यापति संप्रदायक परवर्ती कविमे श्रृंगारिक रचना लेल प्रसिद्ध छथि। अपन परिचय `रूक्मिणीहरण` नाटकमे देने छथि। ई महाराज नरेन्द्र सिंहक आश्रयमे रूक्मिणीहरण ओ रूक्मिणीस्वयंवर नाम सँ प्रसिद्ध नाटक प्राप्त होइत अछि। हिनक रचना मे मान ओ कौतुकक वर्णन विशेष मुदा कतौ-कतौ ओ ``हरिपद प्रनत रमापति भान`, मुरारि भगति रमापति भान आदि लिखि अपन भक्ति ह्रदयक परिचय अवश्य देने छथि। मुदा ओ संत आ संत-साहित्यक लेल अपेक्षित नहि अछि।

नन्दीपति - हिनक परिचय प्रसंग मैथिलीक प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामदेव झा हिनक पद सबहिक सम्पादन कयने छथि ``नन्दीपति गीतामाला`` नामे जाहिमे उत्कृष्ट कविक रूपें परिचय प्राप्त होइत अछि। एहि गीत सबमे जाहि भावक परिचय देने छथि ताहिमे अपूर्व तन्मयता अछि। किशोरावयमे कृष्णाक लीलाक उपराग यशोदा कें भेटैत छनि तकर नन्दीपति गोपीक द्वारा कयल गेल भाषाक शब्द तेतक परिमार्जित ओ सहज प्रवाहपूर्ण अछि। पाण्डित्यपूर्ण भाषासँ परहेज केने छथि। मुदा संत साहित्यक जे परिसीमा ताहिके अनुकूल नहि मानल जा सकैछ।

एराद् हमर अभिप्राय मैथिली भाषा साहित्यक मध्य भक्त कवि संत प्रवणभावनाक सहज उद्‌गार साहित्य रसिक प्रेमी साहित्यकारक अध्यावधि कोनो विद्वानक ध्यान विशेष रूपें नहि गेलनि अछि तें एकर संकलन संपादन करबामे विशेष घमर्थनि भेल अछि। मैथिली साहित्य मध्य विस्तृत ओ विपुल संत ओ साहित्य उपलब्ध अछि। एहि विपुल साहित्य सम्पदाकें उजागर मात्र करवालय कृत संकल्पित छी।

•••

संदर्भित ग्रंथ

1. संत अंक Page-75 संख्या 627 गीता प्रेस
नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे
यद्भाव्यं बद् भवतु भगवन् पूर्वकर्मानुरुपम।
एतत्प्रार्थ्य मम बहु मतं जन्मजन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादाम्भोरूहयुगगता निश्चला भक्तिस्तुति।।
2. संत अंक Page 90 गीताप्रेस
3. संत अंक Page 89 गीताप्रेस
4. संत अंक Page 53 गीताप्रेस
5. मैथिली साहित्यक इतिहास (श्रीश जी बालगोविन्द बाबू जयकान्त बाबू, मायानन्द बाबू आदि)।
6. विद्यापति काव्यलोक Page -II
7. संत अंक गीता प्रेस Page - 103 (भर्तहरि)
8. मैथिली साहित्यक इतिहास दुर्गानाथ झा श्रीश - Page - 80-81

   (नोट : चारिम अध्याय महाराज महेश्वर सिंहक शासनकाल धरि विद्यापतिक सांप्रदायक काव्य प्रवृत्ति)।
9. गीता अध्याय 11 श्लोक 55 द्वारा उत्तरी भारत की संत परंपरा Page-15 ले. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
10. मैथिली प्रारंभिक अध्ययन सामग्री - Page 69।
11. विद्यापति - डॉ. शैलेन्द्र झा (मै.अ. पटना, Page-99)
12. श्रीश जीक मैथिली साहित्यक इतिहास, Page - 111
13. चरणदास की वाणी भाग-1, पृष्ठ-32 वेलविडियर प्रिटिंग वर्क्स इलाहाबाद, सन-1952) पोथी सन्त कबीर के राम बिहार हिन्दी अकादमी, पटना, Page -25
14. चण्डीदास - ले. सुकुमार सेन, अनुवादक गोविन्द बाबू भाव अध्ययन। पेज-7
15. जयकान्त बाबूक इतिहास श्रीशजीक इतिहास, मायानन्द बाबूक इतिहास, बालगोविन्द बाबूक इतिहास संगहि डॉ. फूलेश्वर बाबूक पोथी लक्ष्मीनाथ गोसाईं।

    Ref. Journal Patna University खण्ड 3,1,2 सँ संगहि मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - सुमनजी।
16. मैथिली काव्य पर संस्कृताक प्रभाव, पेज-70 भाषणकर्त्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`।

17. रीति साहित्य को विहार की देन - डॉ. अमरनाथ सिन्हा विहार हिन्दी अकादमी Page-28 (हिन्दी साहित्य और बिहार प्रथम खंड (42-43)

18. रीतिरााहित्य को विहार की देन - do-

19. मैथिली पत्रिका `पक्षधर` अंक जनवरी - 2016 विशेषांक शीर्षक मैथिलीमे भक्ति-काव्य आलेखकार डॉ. रामदेव झा, Page -11

20. `` `` चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स। दिनेश चन्द्र सेन, कोलकाता वि.वि. 1917 पृ. 277, 299।

21. पक्षधर - उपर्युक्त परिचयानुसार - परमहंस विष्णुपुरी : हिज आइडेंटीटी एंड एज रमानाथ झा पटना वि.वि. जर्नल-जिल्द। खण्ड-2 1945 पृ. 7-20

22. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page -21 मैथिली अकादमी।

23. संत अंक गीताप्रेस वारहवें वर्षका विशेषांक Page-938-39।

24. संत अंक गीताप्रेस वारहवें वर्षका विशेषांक Page-938-39।

25. रांत अंक गीताप्रेरा वारहवें वर्षका विशेषांक Page-938-39।

26. संत अंक विशेषांक - गीताप्रेस, पेज - 28

कृपालुरकृतद्रोहस्तितिक्षुः सर्वदेहिनाम्

अमानी मानदः कल्पो मैत्रः कारुणिक कवि।। (11/11 / 29-31)
तितिक्षवः कारूणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्

----

27. मैथिली साहित्यक इतिहास डॉ. दुर्गानाथ झा `श्रीश` Page - 136।

28. गोविन्ददास भजनावली - मैथिली अकादमी, पटना, Page-1।

28 ``मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव रााहित्य``

29. डॉ. दिनेश कुमार झा, काव्य शास्त्र Page-4।

30. श्रीमद्भगवद्गीता - 17/15 (मैथिली काव्य शास्त्र, Page - 56) दिनेश कुमार झा

31. सन्तः परीक्ष्यन्यतरद्भजन्ते मूढ़ः परप्रत्ययनैय बुद्धिः / यथा तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः - कालीदास (उ.भा.की. संत परंपरा-परशुराम चतुर्वेदी)

32. गोविन्ददास - गोविन्द झा सा. अकादमी (श्रृंगार भजनावली 1.112)

33. ब्रजबोली साहित्य डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा, विहार अकादमी, Page - 209)

34. भारतीय साहित्यक निर्माता गोविन्द दास सं. गोविन्द झा साहित्य अकादमी, Page - ``श्रोत संधान``

35. भारतीय साहित्यक निर्माता गोविन्द दास सं. गोविन्द झा साहित्य अकादमी, Page -14 एवं 15।

36. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य Page - 6 (महाभारतक 18/6/97)

37. उत्तरी भारत की संत परंपरा, Page - 14।

38. कबीर ग्रंथावली 29, 1 (पृष्ठ - 50)।

39. गोविन्द दास - संकलन गोविन्द झा Page - 25।

40. पदकल्पतरु, पद सं. - 2386।

41. गोविन्द दास संकलन Page -31 ।

42. The absolute is the precosmic nature of God and rod is the absolute from the cosmic point of view.`` Dr. Radha Krishnan (An Idealist View of life P.345) भारतीय भाषा परिषद् - पुस्तककालय, कोलकाता।

43. संत स्वरूप शीर्षकसँ उड़ियाबावा जीक विचार संत अंक गीताप्रेस - Page-27।

44. अनयाराधितो न नं भगवान् हरिरीश्वरः।
भन्नो विहाय गोविन्द प्रीतो यामनयद् रहः।।

45. बंगीय साहित्य-परिषद् पत्रिका भाग-31 संख्या-2, पृष्ठ-20।

46. पदकल्पतरु पृ. सं. 234।

47. श्रृंगार भझनावली - (गोविन्द दास सँ गोविन्द झा) Page - 54।

48. काव्य शास्त्र - दिनेश कुमार झा आचार्य कुन्त`क कहब छनि। काव्य शासत्र Page-22।

49. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव Page - 74।

50. विद्यापति पदावली रामवृक्ष वेनीपुरी जी Page-113।

51. गोविन्ददास भजनावली Page - 1।

52. गोविन्द दास Page - 66 श्रृंगारभजनामृत - 117।

53. रमानाथ झा सम्पादित पोथी - प्राचीन गीत पृ. - 223/65।

54. श्रृंगारभजनावली - 21।

55. प्रेमभक्ति चंद्रिका पेज - 17।

55क. ``मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य`` - पेज -31

56. कवीश्वर चंदा झा ओ ललितेश्वर झा संकलित पदावली जे साहेव रामदासक छनि। (मै. सा. इतिहास, Page - 106।

57. मोनोग्राफ - Page - 9।

58. मोनोग्राफ - साहेबरामदास श्री शंकर झा।

59. साहेबरामदास पदावली (वंदा झा संकलित)

60. राधाकृष्ण भक्तकोश संपादक - भगवती प्रसाद सिंह, पेंज - 398।

61. राधाकृष्ण भक्तिकोश Page - 318।

62. मोनोग्राफ पेज - 26

63. राधा कृष्ण भक्तिकोश पेज - 400

64. मोनोग्राफ - Page - 30।

65. मैथिली काव्य शासत्र डॉ. दिनेश कुमार झा Page - 306।

66. राधाकृष्ण भक्त कोश Page - 400।

67. मोनोग्राफ - Page - 64।

68. मैथिली काव्य-शास्त्र डॉ. दिनेश कुमार झा, Page - 315।

69. मोनोग्राफ Page - 43।

70. मैथिली साहित्यक इतिहास डॉ. बालगोविन्द झा व्यतित, Page - 110।

71. संत अंक Page - 99। (गीताप्रेस) महर्षि व्यासक वचन (संतोवार शास्त्ररक्षण निबंधकारश्रीयुत् वसंत कुमार चट्टोपाध्याय)।

72. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं. - डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page - 30।

73. तैतिरीयोपनिषद् 1/11/2 संत अंक वारहवें विशेषांक - Page - 61।

74. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page - 37।

75. गीतावली लक्ष्मीनाथ गोस्वामी परमहंस विरचित Page - 13।

76. वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र) अध्याय-1 दोसर पाद Page 47 एवं 48 (गीता प्रेस)।

77. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - मैथिली अकादमी - डॉ. फुलेश्वर मिश्र।

78. गीतावली Page - 34।

79. `विवेक पंचरत्न`` संपादक पं. छेदी झा द्विजवर, Page - 13।

80. श्रीकृष्ण रत्नावली Page - 152 अध्याय 18 दोहा संख्या 28, 29 एवं 30 प्रकाशक परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, जमशेदपुर।

81. श्रीकृष्ण रत्नावली Page - 4 एवं 5 अध्याय 18 दोहा संख्या 28, 29 एवं 30 प्रकाशक परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, जमशेदपुर।

82. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page - 56 एवं 57।

83. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page - 57।

84. `चित्रा` - वैद्यनाथ मिश्र `यात्री` जीक कविता संग्रह माँ मिथिले शीर्षकसँ।

85. गीतावली - संतश्री लक्ष्मीनाथ गोसाईं विरचित पद संख्या भजन संख्या - 561 Page - 333।

86. मैथिली साहित्यक इतिहास लेखक डॉ. वालगोविन्द झा `व्यथित` Page - 109।

87. गीतावली Page - 408।

88. सन्त कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं डॉ. फुलेश्वर मिश्र Page - 121।

●●●

श्रोतग्रंथ

1. Songs of Vidya Pati - by Dr. Subhadra Jha
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र।
3. विद्यापतिकालीन मिथिला (अंगरेजी) प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
4. चट्टोपाध्याय एवं दत - भारतीय दर्शन पृष्ठ 26।
5. मिथिला भाषामय इतिहास - मुकुन्द झा `वक्सी` मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स (वनारस)।
6. पं. वलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन।
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर (प्र. हिन्दी ग्रंथ रचनाकार कार्यालय, बंबई सन् 1942) पृ.9
8. चण्डीदास लेखक सुकुमार सेन अनुवादक - गोविन्द झा। साहित्य अकादमी - भाव अध्ययन।
9. लोचनकृति राग तरंगिणी।
10. रांत अंक बारहवें वर्ष का विशेषांक।
11. परमहंरा विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत डॉ. रामदेव झा, मिथिला भारती अंक-2, पृष्ठ-136-144 F.P. 20
12. मैथिली गीत रत्नावली संकलन वदरीनाथ झा, पृ.7 (F.P.-21)
13. जगज्ज्योतिर्मल्लक हरगौरी विवाह।
14. श्रृंगारभजन गीतावली - भूमिका, पृष्ठ-5, डॉ. अमरनाथ झा।
15. गोविन्ददास भजनावली - मैथिली अकादमी।
16. डॉ. रामदेव झा परमहंश विष्णुपुरी एवं हुनक शिवगीत नामक निबंध जे मिथिला भारती अंक-2 , भाग 1-4 मे प्रकाशित अछि। ओही पृष्ठ - 136-144।
17. मिथिला तत्व विमर्श म.म. परमेश्वर झा पृष्ठ - 165।
18. उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय - प्राचीन कविर ग्रंथावली - 1897।
19. अमरनाथ झा - गोविन्ददास मैथिली अकादमी, पटना- 1981
20. राजेश्वर झा - मध्यकालीन पूर्वाञ्चलीय वैष्णव साहित्य मैथिली अकादमी, पटना - 1997 ई.।
21. सुरेन्द्र झा `सुमन` - गोविन्द-गीताञ्जलि, मैथिली - मंदिर दरभंगा - 1980।

22. चन्दा झा - श्रृंगारभजन - गीतावली, सम्पादक - अमरनाथ झा, मैथिली साहित्य पत्र कार्यालय, दरभंगा 1349 साल।

23. कालिदास नाथ संकलित - गोविन्ददासेर पदावली 1902।

24. राधामोहन ठाकुर - पदामृत समुद्र प्रकाशक रामनारायण विद्यारत्न बरहमपुर लगभग 1770।

25. विमान विहारी मजूमदार - गोविन्द दासेर पदावली कोलकाता वि.वि.।

26. चंदा झा - श्रृंगारभजन - गीतावली।

27. दीनेश्वरलाल आनन्द - मिथिलाक महाकवि गोविन्द दास, लक्ष्मी प्रकाशन, पटना 1988

28. रामदेव झा - मैथिली प्राचीन गीतावली मैथिली अकादमी।

29. बदरीनारायायण झा - मैथिली कवि गोविन्ददास, अनुपमा प्रकाशन फोर्ट बम्बई - 1973।

30 मैथिली भाषा का विकास - गोविन्द झा विार हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

31. लोचनक रागतरंगिणी मैथिली अकादमी पटना प्रथम संस्करण - 1981, पृ. 9

32. सिद्ध साहित्य - डॉ. धर्मवीर भारती पृष्ट - 19-20.

33. चार्यागीत कोश वृतिनामा खंड - 47।

34. प्रवेशिका मैथिली साहित्य प्रकाशन पुस्तक भंडार, लहेरियासराय।

35. अत्याधुनिक मैथिली गद्य: प्रगतिशील मैथिली प्रकाशन, भगवान पुस्ततकालय, भागलपुर।

36. मैथिली साहित्यक आदिकाल श्री राजेश्वर झा। श्री अमरनाथ झा रसआर (सहरसा) 1968।

37. विद्यापति - म.म. डॉ. उमेश मिश्र हिन्दुरतानी एकेडमी।

38. मैथिली ग्राम. गीत - डॉ. उमेश मिश्र हिन्दुस्तानी एकेडमी।

39. कृष्णजन्म (मनवोध) सं.-म.म. उमेश मिश्र - तीरभूक्त।

40. वर्णरत्नाकर - प्रो. आनन्द मिश्र पं. गोविन्द झा मैथिली अकादमी।

41. महाभारतक शान्तिपर्व अध्याय -278।

42. संत समागम - स्वामी रामसुख दास, गीताप्रेस, गोरखपुर।

43. वेदान्त दर्शन, ब्रह्मसूत्र गीताप्रेस।

44. रीति साहित्य को विहार की देन - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी - डॉ. अमरनाथ सिन्हा

45. संत कबीर के राम - डॉ. महेश्वर प्रसाद सिंह - विहार हिन्दी अकादेमी।

46. सुरसागर - संपादक - नंददुलारे - वाजपेयी कानपुर नागरी प्रचारिणी सभा।

47. प्रभू यीश महीस पृष्ठ - 41

48. मैथिली प्राचीन गीत संग्रह : सं. श्री रमानाथ झा, अनन्त प्रकाशन, दरभंगा - 1968।

49. गोविन्द गीतावली मथुरा प्रसाद दीक्षित राजप्रेस, दरभंगा।
50. कृष्ण जन्म मनबोध - म.म. उमेश मिश्र तीरभुक्त प्रकाशन प्रयाग
51. वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर ठाकुर।
52. रामेश्वरचरित मिथिला रामायाण - महाकवि लालदास, प्रकाशन - साहित्य अकदमी।
53. मिथिलाभाषा रामायण - कवीश्वर चंदा झा, मैथिली अकादेमी पटना।
54. मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि मेधातिथि ग्रंथालय, दरभंगा।
55. हिन्दी साहित्य कोश - भाग-1, संपादक - धीरेन्द्र बर्मा (प्रधान)।
56. गीत गोविन्द : जयदेव प्र. भागवे पुस्तकालय बनारससँ 1998।
57. संतवाणी संग्रह (भाग-1) बेलबेडियर प्रेस, प्रयाग - 1956।
58. हिन्दी साहित्यक का वृहद इतिहास सं. डॉ. राजवली पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
59. चौरासी सिद्ध कौन थे : पं. परशुराम चतुर्वेदी, ओरियेंटल प्र., लखनऊ।
60. महाभारत गीताप्रेस - गोरखपुर।
61. संत साहित्य : डॉ. सुदर्शन सिंह मजीठिया।
62. रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर
63. भक्ति आन्दोलन का अध्ययन : डॉ. रतिभानु सिंह `नहर`। किताब महल (होलसेल डिब) इलाहाबाद।
64. सन्तमत परंपरा और साहित्य सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, डॉ. भुवनेश्वर मिश्र `माधव`। श्री बनमाली त्रिपाठी, उमेश साहित्य प्रकाशन, पटना-6।
65. धर्म तुलनात्मक तृष्टिमे : डॉ. राधाकृष्णन राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली - 1963।
66. तांत्रिक बाङ्मय मे शाक्त दृष्टि - गोपीनाथ कविराज, पटना - 1943।
67. मध्ययुगीन हिन्दी संत-साहित्य और रवीन्द्रनाथ प्रो. डॉ. रामेश्वर मिश्र - वि. वि. प्रकाशन, वाराणसी।
68. ब्रजबोली साहित्य - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा-विहार न्ही ग्रंथ अकादमी।
69. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य - पं. राजेश्वर झा।
70. पक्षधर (विशेषांक) मैथिली पत्रिका सं. कुमार शीतांशु कश्यप अतिथि संपादक - श्री अर्जुन मुण्डा, झारखंड।
71. विद्यापतिकालीन मिथिला - डॉ. इन्द्रकान्त झा मैथिली अकादमी।
72. वंग्ला साहित्य परिचय - डॉ. पार्थ चट्टोपाद्याय, तुलसी प्रकाशन।
73. मैथिली साहित्यक इतिहास - मायानन्द मिश्र।
74. मिथिलाक अन्वेषण एवं दिग्दर्शन, इन्द्रनारायण झा
75. मिथिलाक सामाजिक इतिहास - पं. गोविन्द झा।

76. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र) महेन्द्र हजारी।
77. महायोग विज्ञान - योगेन्द्र विज्ञानी।
78. वाल्मीकि - मू. आई. पाणुङ्ग राव अनुवाद अशोक कुमार ठाकुर, साहित्य अकादेमी।
79. व्रतापर्वोत्सव अंक - गीताप्रेस।
80. संत उद्गार - ब्रह्मलीन स्वामी श्रीरामसुख दास जी के विचार।
81. विद्यापति काव्यलोक - नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार।
82. मिथिलक इतिहास - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
83. मैथिल सहितयक इतिहास - मायानन्द मिश्र।
84. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय।
85. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - (गौरीनाथ - भाषणमालाक प्रथम पुष्प) भाषणकर्ता - श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`।
86. मिथिलाक शाश्वत साधना - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
87. मिथिला संस्कृति ओ सभ्यता - उमेश मिश्र - ।
88. विद्यापति काव्यलोक - नरेन्द्र नाथदास विद्यालंकार।
89. मिथिलाक इतिहास - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
90. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय।
91. मैथिली साहित्यक इतिहास - मायानन्द मिश्र।
92. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - भाषणकर्त्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन` (गौरीनाथ - भाषणमालाक प्रथम पुष्प)।

•••

पाँचम् अध्याय

"पूर्वाञ्चलीय संत – साहित्य पर विद्यापतिक प्रभाव"

विश्वक प्राचीन साहित्य मैथिली लोक विश्वासक अनुशीलन ओ विश्लेषण पर आधारित अछि। अध्ययन ओ मनन तखन जे अनुशीलन कयल, परिणाम सामने अवैत अछि ताहिसँ इएह अनुभव होइत अछि जे समय-समय पर सभ विषय-वस्तु, भाषा-साहित्य समय सापेक्ष प्राचीनताक भीति पर आगूक मार्ग प्रशस्त करवाक लेल विद्वान प्रयासरत रहैत छथि। भारतवर्ष एकटा एहेन देश-विशेष अछि, जाहिठाम अनेक साधक ओ विचारक मानवताक समग्र दृष्टि सँ मातृभूमिक ममताकेँ अद्वैत जे एकरा सार्वदेशिक बनेबाक शक्ति प्रदान करवाक सब युग कालमे प्रयास कयल गेलैक अछि। एहि प्रयासक साधना में आर्यभूमिक पवित्रभूमि मिथिला जकर हरक नाश सँ स्वयं भगवती सीताक पदापर्ण होइत अछि। कहवाक आशय जे विश्वक सबसँ पवित्र स्थल आधुनिक काल में येरूशलम कैँ कहल जाइत छैक जाहि ठाम विश्वक तीन-तीन धर्मक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल अछि। मुदा अध्यात्म ओ भागवत संप्रदायक दृष्टि सँ मिथिलाक जे मानवीय अवधारणा तऽ से कही जे विश्वक अध्यात्म भूमि कहल जयतैक। विचारवाक दृष्टि सँ समस्त मानवताक मातृभूमि अछि मिथिला जकर इतिहास साक्षी अछि।

मध्यकालीन पूर्वांचल पर मुसलमानक आक्रमणसँ एकटा नव धर्म पद्यतिक संपर्कमे आयल। सनातन धर्म जे ज्ञानक भीतिपर आधारित छल से सर्वसाधारण सँ दूर भेल जा रहल छलैक। वर्णव्यवस्था आ जातिभेद – भावक अन्तर ततेक बढ़िगेल रहैक ताहि लऽ कऽ वैष्णव संत लोकनि लोकभाषाक माध्यम सँ धरातल पर उतरलाह। जे आम जनक अपेक्षा आ आकांक्षाक संतुष्टि एवं पूर्ण करवाक अभीष्ट छलैक। भागवतक आधार पर लोकरंजक भक्तिक प्रतिपादन वैष्णव धर्मके व्यापक बना देशकालक आवश्यकताक समाधान कयल गेल। वैष्णव साहित्य-सृजनक मूल श्रोत वैष्णव धर्मक सिद्धान्त एवं कृष्णक भगवत स्वरूपक चित्रण संगहि राधाक संग प्रणय ओ क्षणिक प्रणय भंग मानवीय व्यवहारक प्रतिबिम्बक दिग्दर्शन करबैत वैष्णव साहित्यक परंपराक स्थापना कयल गेल ओ पूर्वांचलक भाषा साहित्य तथा धार्मिक आचरणके एक सूत्र मे आबद्ध कऽ एकरूपता प्रदान कयलक। एहिक्रममे जेना ज्ञान आओर प्रेम निवृत्ति प्रवृत्ति, त्याग आओर भोगक सामंजस्य भेल ओहिना मैथिली, बंगला, उड़िया, प्रभृति पूर्वांचलक भाषाक भावक माधुर्य, सरसता एवं सरलताक सम्मिश्रण सँ एकटा नव वृहत्तर भाषाक रूपमे प्रकट भेल जकरा पर मैथिल कवि कोकिल विद्यापतिक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित अछि।[1]

पूर्वांचलक वैष्णव संत साहित्य जे सनातन धर्मक कृष्णक प्रणयलीलाक रास, कीर्तन ओ गीतक मादे समस्त पूर्वांचलीय भारतक जे भावना विद्यापतिक देसिल बयनाक संग कालविजयनी बनल। वैष्णव संत शुद्ध रूपैं आध्यात्मिकताक संग आत्मा ओ परमात्माक बीच तादात्मय स्थापित करैत, वात्सल्य ओ माधुर्य भावक उपासनामे चैतन्य महाप्रभूक नाम निष्ठाक भावसँ लेल अछि। वैष्णव संत लोकनि कृष्णक दाम्पत्य जीवनक चित्रण सामग्रीकेँ लोकरंजक बनौलनि। कृष्णक भक्ति में लीला श्रृंगार, गोपी विहारक जे पद माधुर्य

ओ शब्दक स्पर्श सँ रोमांचित करैत साहित्यक जे श्रृजन से मार्मिक भेल अछि।

एहि भावसँ मुग्ध विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखैत छथि – जे सर्वविदित अछि।

सत्य करे कहो मोर वैष्णव कवि
कोथा तुमि पेये छिले एइ प्रेमच्छवि ?
कोथा तुमि शिखे छिले एइ प्रेमगान
विरह तापित ? हेरि काहार नयान
....
....
से संगीते तारि ? नाहि हृदय संचित
तार भाषा हते करिबे वंचित चिर दिन ?

अस्तु "मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण"क शोध साधना में पूर्वांचलीय संत साहित्य पर महाकवि विद्यापतिक प्रभावक यदि विश्लेषण नहि कयल जायत तऽ एकटा कतहु ने कतहु कमी सन अनुभव होइत, अस्तु मातृभाषाक प्रति जे संतक भाव तकर प्रस्फुटन तऽ महाकविये सँ आरंभ होइत अछि। आ संतक प्रसंग भाषाक क्षेत्र में महाकविक भावना बुझू तऽ बौद्ध दर्शन सँ प्रभावित अछि। बौद्ध जेना एकटा "सहजिया" मार्गक अनुशरण कयने छलाह ओ लोकनि "प्रज्ञा" एवं "उपाय" युगिनबद्ध मार्ग छलैक, तहिना वैष्णव सहजिया संत लोकनि "राधा आ कृष्णक नित्यप्रेमक जे अवधारणा स्वरूप कायम करैत अछि ताहिसँ प्रथमत: ई भेलैक जे समाजक बीच दुरूहताक समाहार करैत बंगालक सहजिया संप्रदायक संग लोकभाषाक प्रवाह ततेक पसरलैक जे सूफी-संप्रदायक संग मिलिकऽ बंगाल मे, बाउल संप्रदायक" जन्म भेलैक।[2] मिथिला आदिकाल में विद्वानक 'जन्मभूमि' मानल जाइत अछि। विद्या अध्ययनक केन्द्र छलैक। मैथिल यद्यपि पंचोदेवपासक होइत छथि। मुदा से विष्णुक उपासनाक परंपरा अत्यंत प्राचीन छैक। "हरिवंश तथा विष्णु पुराण मे वर्णित रासलीला प्रधानत: तंत्र सँ प्रभावित पाओल जाइछ। विष्णुपुराणक योगमायाक आख्यानक आधार आदिशक्तिये थिकीह तथा एकरे आधार मानि सहजिया एवं नाथ संप्रदायमे स्त्रीक प्रधानताक समावेश कयल गेल।[3] कहवाक आशय जयदेव ओ विद्यापति वैष्णव गीतक माध्यमसँ जाहि सरसता ओ प्रणय लीलाक वर्णन कएने छथि जेना ओ एकटा व्यापक बनौलनि से हुनकर (विद्यापति) समकालीन संत विष्णुपुरी आ रघुपति उपाध्याय सेहो ग्रंथक रचना कयलनि।

वस्तुत: विद्यापतिक प्रभाव बंगाल वा कही वैष्णव संत साहित्य पर तेहेन ने पड़लैक जे सम्पूर्ण पूर्वांचलक संत समाज ओकरा संग एकाकार भऽ गेलैक। भक्ति रत्नाकरक रचैता नरहरि चकवर्ती लिखैत छथि –

ब्रजेर मधुर लीला या सुनि दरबै शिला
गाइलेन कवि विद्यापति[4]

उपर्युक्त शीर्षकक आलोकमे विश्लेषणक परिणाम कही तऽ विद्यापति 'ब्रजबुलीक' मूल रचनाकार छथि, नरहरि चकवर्ती स्वीकार करैत छथि जे विद्यापतिक ब्रजबुलीक सूत्रपात कयलनि जकर क्रमागत

विकास कयलक आ इएह आगू चलिकऽ संत महाप्रभू चैतन्य देवक सृजन पथ प्रदर्शित कयलक आ जे गौड़ीय संप्रदायक उद्भव ओ विकास कयल।

सनातन धर्मक भीति पर वैष्णव संत सम्प्रदायक विद्यापतिक काव्य प्रतिभासँ प्रभावित चैतन्य महाप्रभु प्रतिस्थापित वैष्णव धर्मक प्रतिनिधित्व बंगाल मे करय लगला, जे चैतन्य सम्प्रदायक नामसँ, उद्गम भूमिक नाम पर "गौड़ीय वैष्णव" धर्मक नामसँ प्रख्यात भेल। मुदा एहि संप्रदायक अतिरिक्तो एक गोट वैष्णव संप्रदायक बंगाल में प्रचलन पूर्वहिसँ छल जकर नाम सहजिया वैष्णव संप्रदाय जे खाँटी बंगालक माटि-पानि सँ समन्वित अछि। चण्डीदास एहि पंथक महनीय साधक छलाह। तेसर जे संत समाजक बीच प्रख्यात भेलैक ओकरा ब्रजबुलि जकर प्रादुर्भाव महाप्रभुक चैतन्यदेवक जन्मक पश्चात भेल जाहिमे विद्यापति गीतक व्यापक विशिष्ट स्थान भेटलैक। एहि क्रममे मैथिली एवं बंगालक वैष्णव संत लोकनि एकरा प्रतीक रूपे स्वीकार कयल। मैथिली ओ बंगलाक सम्मिश्रण सँ एकगोट नवीन काव्य भाषाक उद्भव ओ विकास भेलैक तकरा ब्रजबुलि कहल गेलैक। महाप्रभु चैतन्य अपन लौकिक अवधारणा मे जाहि प्रेम भक्तिक निर्मल धारा में अवगाहन कयल से राधा कृष्णक प्रेमोपासना विषयक दिव्यानुभूति जागृत कयलक।

विद्यापतिक प्रभाव बंगालक अंतर्गत जे ब्रजबुलि साहित्य नामे भेल तकर संक्षिप्त वर्णन –

ब्रजबुलि साहित्यक प्रसंग विद्वान लोकनि बहुत रास प्रसंग विवेचित भेल छैक। मुदा संत साहित्य मध्य श्री कृष्ण भक्ति जे भावनाक शास्त्रोक्ति रूपें जे विस्तार भेल ताहि अनुसारे : (1) वैधी आओर (2) रागभक्ति एहि दुनुकें परिभाषित एना कयल जाइत अछि।

(1) बैधी – ओ भक्ति भेल जाहिमे नाम-कीर्तन, भागवत श्रवण, मधुरा-वास, साधन–समर्पण, साधु-संगति, श्रीमूर्ति-सेवन एहि साधना मे एहि पाँचोक विशेष महत्त्व अछि।[5] एहि भावके आसामक आचार्य श्री शंकर देवक अनुसार रागभक्तिक रागात्मिकता ओ रागानुका दू भेद होइत अछि।[6] ओ जे कृष्णक नित्य परिकर नन्द-यशोदा, गोप-गोपीक अनुगत रागानुरागमे नित्य अपन चरमावस्था में रहैत छथि ई जे अवस्था से चैतन्य मतक परम भक्तक सर्वोपरि लक्ष्य थिक जे होउक चैतन्य मतक अनुसार कृष्ण भक्तिक प्रमुख साधन हरिनाम संकीर्तन थिक शांडिल्यसूत्रक वाक्यमे – "नाम्नेति जैमिनि सम्भवात" संत मत में नामक बड़ व्यापक ओ महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। संत साहित्यक मध्य जतेक महान संत भेलाह नाम लैत संसार के भवसागर मानैत नाम रूपी नाव सँ खेवैत पार होइत गेलाह। एहि कड़ी मे बहुतो विद्वान विद्यापतिक प्रभावकेँ नगण्य मानलनि मुदा से एकटा पूर्वाग्रसित भावना, अन्यथा सतत ईश्वरक लीला मानि भगवानक महासत्ता के स्वीकार करैत एक सँ एक पदक रचना कयल जे सांसारिक जीवन रससँ आप्लावित अछि। राजदरबारी कवि मुदा कहियो ओ भाव महाकवि केँ प्रभावित नहि कयलक ओ सतत ईश्वर ओ सामान्य जनक जीवनकेँ ईश्वरसँ जोड़ि सेवा साधना मे तल्लीन रहलाह, हिनके प्रभाव चैतन्य महाप्रभु पर रहलनि आ ताहिसँ जे प्रभावित भेलाह से हुनक मूल तऽ महाकविये छथि।

संतक प्रसंग बहुत रास विवेचना अग्रिम अध्याय मे भऽ गेल अछि, संत सतत, भक्ति आत्मसमर्पण आ महाप्रभुक संग भाव में एकाकार भऽ जाइत छथि। कहबाक आशय संत मतक तीन सिद्धान्त (1) ईश्वरक अस्तित्व में विश्वास (2) परमात्मा आ जीवात्माक स्वरूपता आ तेसर (3) आत्माक नित्यता। अत: संत

मतक अनुयायी ईश्वरकेँ परम सत्ता आत्माके सत्य बुझैत अही आधार पर महाकविक जे भावना लोक आ लोकजीवनक भाव के जगबैत ताहिसँ अनुप्राणित जे रचना भाव बहरायल से साहित्यक रूपमे सामाजिक व्यवस्था पर हरिनाम संकीर्तनक प्रसंग शांडिल्य सूत्रक वाक्य "नाम्नोति जैमिनि सम्भवात" अर्थात् संत साहित्य में नामक महिमा के व्यापकता प्रदान कयल गेल अछि।

ओना समस्त भारतीय साधना आ उपासना प्रद्धति कमोवेश एकहि रंग अछि। मुदा से एहिमे किछु अन्तर अबैछ तऽ से पूर्वोतरक वैष्णव धर्मक सैद्धांतिक निरूपण जे राधा-कृष्णक प्रणय लीला मे कृष्णकेँ साक्षात ब्रम्ह आ राधाकेँ हुनकर माया-शक्ति आ सनातन लीलारूप में "एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय"(7) अध्ययन सँ इहों स्पष्ट अछि जे कृष्ण आ गोपीक सम्बन्ध अत्यंत प्राचीन कृष्णक नाम गोपाल कहबाक सेहो प्राचीन काल सँ आवि रहल अछि। आ विष्णुक प्रसंग तऽ ऋग्वेदमे विष्णुकेँ "अजेय गोप" कहल गेल छनि।(8) विद्यापतिक राधा ओ कृष्ण जे सनातन नारीत्व ओ पुरुषक लीलाक रास कीर्तन आ गीतसँ समस्त उत्तरी-पूर्वी भारत में "देशिल बयना" केँ एक देशी नहि अनेक देशी बनाय कालविजयिनी बनौलनि। तकर सर्वप्रथम उदाहरण छथि –

(1) चैतन्य महाप्रभु – हिनक जन्म ब्राह्मण कुल में बंगालक नवद्वीपक समीप नादिया मे भेल छलनि। नवद्वीप विद्वानक केन्द्रस्थल छलैक। चैतन्य महाप्रभुक समय बंगालक राजनैतिक धार्मिक एवं सामाजिक अवस्था बड़ शोचनीय छलैक, धार्मिक संप्रदाय में पाखण्ड ओ वामाचारक प्रधानता छलैक, चैतन्य वैष्णव सात्विक भक्ति दिशि आकृष्ट भेलाह आ विद्यापतिसँ प्रभावित बंगाल मे एहि धर्मक स्थापना कयलनि। बंगालक आरंभिक साहित्य प्रधानत: वैष्णव साहित्य थिकैक। राधा-कृष्णक लीला केँ पद सन्निहित एहि ठाम महाप्रभु विद्यापतिक भक्ति ओ संतभाव सँ प्रभावित छथि एकरे आधार बनाए वैष्णव मत के संत लोकनिक बीच संत-साहित्य नाम धराय समस्त पूर्वोत्तर भारत में प्रख्यात भेलाह। जकर विकास बुझियौक बंगाल, आसाम आ उड़ीसा मे भेलैक। राधा-कृष्णक पदके ततेक भावसँ गाओल जाय लागल जे बंगाल आ विद्यापति भाषाक गीत प्रभाव मे एकटा तेसर भाषाक जन्म भेलैक जकर नाम भगवान श्री कृष्णक लेल प्रसिद्ध स्थान ब्रज आ ब्रजभाषा प्रसिद्ध, रासलीला जकर प्रचार प्रसार अखनो मिथिला में प्रसिद्धि छैक, तकरे भाव धराय ''ब्रज-बुलि'' नामे प्रसिद्ध भेल जकर आदि पुरूष कही तऽ चैतन्य महाप्रभु छलाह। राधा-कृष्णक लीलाकेँ मानवीकरण कएल गेल आ एवं क्रमें शृंगार भक्तिमूलक अलौकिक तत्व ज्ञानक निरूपण करैत जाहिमे विरह-मिलन-आसक्ति गुण के समावेश करैत लौकिक गुणके आधार बनाकऽ बारहम शताब्दीमे निम्बाकाचार्य सर्वप्रथम एम्हर प्रवृत्त कयल बौद्ध धर्मक प्रभाव पूर्वी भारतमे विशेष छलैक तकरा मोड़ दैत पश्चात् एहि दिशा मे जयदेव, विद्यापति, चण्डीदास, संत साहित्यक दिशा के मोड़ देलनि मुदा समाजक बीच एकर स्थान निरूपण कयल चैतन्य महाप्रभुक द्वारा छलैनि।

जयदेव आ विद्यापतिक पद बंगाल, बिहार, मिथिला, उड़ीसा, असम एवं नेपालक सामान्य सँ सामान्य व्यक्ति सँ लऽ कऽ संत समाज तक पर्णकुटी सँ महल धरिक, कुलकामिनी सँ लऽ बारबनिता धरि मे समान रूपेँ सम्मानित भेल अछि से ब्रजबुलि केँ एकर उद्भव आ विकासक प्रसंग डॉ॰ सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ॰ सुकुमार सेन, श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त प्रभृति विद्वान तऽ मैथिली सँ मानैत छथि, एतबे नहि ब्रजबुलि पद विशुद्ध

मैथिलीक पद थीक।[9] एहि प्रसंग मे हम आर कने भीतर तक जाकऽ चैतन्य महाप्रभूक जे राधा कृष्णक प्रति जे भक्ति-भावनाक विकास मे विद्यापतिक समकालीन जे हुनकासँ प्रभावित छलाह। राधा-कृष्णक प्रेमोपासना विषयक जे दिव्यानुभूति तकरा जागृत कयलनि ताहिमे प्रमुख रूपैं माधवेन्द्र पुरी हिनकर शिष्य ईश्वर पुरी, विष्णुपुरी सँ चैतन्य देवक प्रेम भक्तिक भावना जे प्रवाह लौकिक आचरण मे प्रवाहित भेल तकरा अवगाहन कय कृष्ण भक्तिक जे परंपराक विकास भेल / तकरे प्रभाव सँ चैतन्य देवक जन्म स्थान नवद्वीप (नादिया) मे चैतन्य देव अपन चौदह-पन्द्रह वर्षक अवस्था मे ततेक ओजस्वी न्यायशास्त्रक विद्वान मे हुनकर नाम प्रसिद्ध भेल जे ओ एकटा पाठशालाक स्थापना कयलनि। चैतन्य देवक नाम प्रसंग मात्र एतबे जे प्रारंभिक नाम विश्वम्भर छलनि। किन्तु माता-पिता निमाइ कहैत छलथिन्ह। गौरवर्ण होमक चलते हिनका गौरांग कहल जाइत गेलाह। आ सन्यास ग्रहण केलाक उपरांत हिनकर नाम ''कृष्ण चैतन्य'' भेल।[10] पश्चात् महाप्रभु चैतन्य देवक नामे प्रसिद्ध भेलाह।

महाप्रभू चैतन्य देव संकीर्तन प्रणालीक प्रवर्तक मानल जाइत छथि। चैतन्य देवक जखन प्रादुर्भाव भेलनि तहिया बंगालक धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय छलैक, पाखण्ड,हिंसा आ बामाचार आदिक प्रधानता रहैक, वैष्णव संत लोकनिक अपन चरित्रक बल पर एहि धर्मक सात्विकता मे लोक आकृष्ट भेलैक आ चैतन्यदेव कैं परब्रह्मक अवतारमानय लगला। चैतन्य देव मतक अनुसारमात्र तीन गोट धाम स्वीकार कयने छथि। (1) वृन्दावन (2) द्वारिका (3) बैकुण्ठ। अही क्रम मे ओ कीर्तन करैत भ्रमणशील रहैत छलाह। मैथिली पूर्वांचलीय भाषा समूहक प्रमुख भाषा जाहिमे उड़िया, असमी, बंगला, नेपाली आदि पर मैथिली भाषा साहित्यिक प्रभाव महाकवि विद्यापतिक आविर्भाव सँ विशेष पड़लैक तकर मूल मे तात्कालीन धार्मिक सम्प्रदायक कठोरता मे राधा-कृष्णक पदक जे मानवीकरण कय लौकिक भाषाक प्रधानता अस्तु तकरे फल छी जे यत्र-तत्र मानवीय प्रेमक उल्लेख आ मधुर भावक प्रधानता सर्वत्र उपलब्ध होमय लागल तकरे फलस्वरूप बंगाल मे सुच्चा वैष्णव सम्प्रदाय सहजिया जकर महनीय साधक चण्डीदास छलाह। पश्चात् बंगाल मे चैतन्य महाप्रभूक द्वारा गौड़ीय वा गौड़ांग, गौड़ेश्वर जाहिमे माधव सम्प्रदायक विकास भेलैक। अस्तु संत भावक प्रसंग जे मानल जाइत अछि से संत शब्दक वाचनमे बुझल जाय साधु, संन्यासी विरक्त, त्यागी, महात्मा आदि शब्दक समावेश बुझल जाइत अछि। आशय मानव हृदयक महाप्रभू सँ जे भेंट करबाक तीव्रता से कही हुनक ई जे भेंटक तात्पर्य से तत्वदर्शी आ कवि सौन्दर्यान्वेषी अस्तु एहि पवित्र भाव सँ अन्वेषण सँ ओ महाकविक करीब पहुँचैत छथि, संत आत्मा-परमात्मा रस विशेषक जे अबाध रूपैं अनुभव करैत अछि वएह संत छथि। आ ताहिसँ हुनकर आत्मा आनंदातिरेक होइत रहैत छनि। अस्तु चैतन्य महाप्रभूक भावना रसराज-कृष्ण आ महाभाव श्री राधामे अंतर्निहित भऽ गेल छलैनि। हुनक किछु अलौकिक घटना सँ प्रभावित हिनक ततेक भक्त भेलाह जे हिनक नाम सँ एकटा सम्प्रदायक नाम परि गेल आ ताहिमे प्रमुख भक्त छलाह :

चैतन्य महाप्रभूक समकालीन आ परवर्ती अनुयायी लोकनि द्वारा जे रचना भेल अछि से कही संत ओहि प्रेम के तेना कऽ व्यवहृति कयल जे साहित्य मे सार्वभौम ओ अलौकिक प्रेमक शुद्धता आ परमार्थिक एकता जैस्पर्सनक शब्दमे ''काव्य हमरा अन्तस्थल के स्पर्श करैत अछि, संशयात्मक हृदयमे हलचल उत्पन्न करैत

अछि आ से ऋषि महात्मा आ कवि अपन परिपक्व अन्त:करणक चरम अभिलाषा मे रागमय रूप दैत अछि। यथा – मुकुन्द मानत जे चैतन्यदेवक एकटा सहयोगी छलाह। हुनक पद अवलोकन करी हिनकहि नाम -

एक पयोधर चन्दन लेपित
अरे सहजई गोर
हीय धराधर कनक भूधर
कोले मिलल जोर

....

पंच गौरेश्वर भोज पुरन्दर
भणे यशोराज खाँ।।[11]

अस्तु उपर्युक्त पदमे उपमा उपमेय कतेकअपूर्व भेल अछि। शब्दक विन्यास तेहेन उच्च कोटिक भेल अछिताहि सँ विद्यापति भाव प्रदर्शित होइत चैतन्य देवक संग पूर्णता पबैत छथि। एहि प्रसंग मे स्पष्ट करी जे यशोराज काँ आ मुकुन्द मानत एक व्यक्ति छथि।

2. मुरारि गुप्त – सिलहठक बासी चैतन्य महाप्रभु सँ ततबा प्रभावित भेलाह जे घनिष्टताक पराकाष्ठा छल जे अपन गाम बिसरि चैतन्यदेवक पड़ोसिया बनि गेलाह। हिनक प्रमुख रचना श्री कृष्ण चैतन्य चरितामृत रचना थिकैक उपलब्ध रचना मुरारि गुप्तक उपलब्ध पद मे अनुभव करी –

तपत किरिण यदि अंगना दगधल
की करब जल अभिषेके।
दुख भरे प्राण बाहिरे या निक सबे

....

....

मानिनि एतए समापह माने
भणइ मुरारि प्राणपति संगिनी
पुरष बद्ध बहुत दोख।[12]

श्रृंगारक ओटमे भक्तिभावनाक जे उद्रेक भेल अछि से अपूर्व ओ अदौ कालिक भाव सँ समन्वित वैष्णव साहित्य मध्य संतक लेल कहल गेल अछि जे ऋषि आ क्रांतिदर्शी कवि संत मे एकटा विशेष प्रकारक गुण होइत छैक जकरा ज्ञानयोगी, भक्तियोगी वा कर्मयोगी कहि सकैत छी। अस्तु एहि पद सबमे सन्नहित भाव मानवोचित स्नेह के दर्शित करैत अछि।

बंगाल मे वैष्णव मतक संत परंपरा गीतगोविन्द कार जयदेव सँ आरम्भ होइत अछि कमोवेश महाकवि विद्यापति हुनक अनुचर बनि आम जनता मे अपन पैठ बनौलनि जकर प्रभाव चण्डीदास पुन: चैतन्य महाप्रभूक प्रभाव सँ बंगाल मे नरहरि दास हुनका आशय चैतन्यदेव के कृष्णभावक अपूर्व संत भेलाह परिणाम 'बासुदेव घोष, माधव घोष, रमानन्द बसु चैतन्यदेवक प्रबल समर्थक छलाह। डा॰ सुकुमार सेन लिखैत छथि जे रामानन्दक कृत पद लगभग एक दर्जन होयत एक गोट पद एहिठाम अछि –

मलयज मिलित यमुना जल शीतल
बंशीवट निर्माण

....

बसु रामानन्द भणे तुलना ना हय मने
रूपेर निछनि पंचबाण।

रामानन्द बसु महाप्रभुक जीवन सँ सम्बद्ध कतेको रचना अछि। एहि कड़ी मे वंशीवदन दास आदिक नाम ब्रजबुलि साहित्य मध्य खूब प्रमुखता सँ लेल जाइत अछि। वंशीवदन दासक रचना मे बाल कृष्ण लीला मनोहर चित्रण कएने छथि।

वैष्णव संत लोकनिक मनोहारी चित्रण महाप्रभुकेँ प्राप्त छलनि आ वैष्णव संत साहित्यक सृजन करैत गेलाह मुदा हुनकर स्वर्गारोहणक पश्चात् हुनकर अनुयायी लोकनि हुनका ब्रजबुलि साहित्य मे आर पुष्पित-पल्लवित कयलनि। ताहि परवर्ती संत कवि काव्यक कड़ी मे जनिक नाम प्रमुख अछि - गुरु-शिष्यक परंपरा कायम करैत नित्यानन्दक मृत्युक पश्चात सीता देवी एवं जाह्नवी देवी एहि धर्मान्दोलन के गतिमान बनौने रहलीह, एहि कड़ी मे कवि नयनानन्द, वृन्दावन दास, देवकी नन्दनदास, यदुनन्दन दास, माधव दास, द्विजहरि दास, पुरूषोत्तम दास, लोचन दास, अनंतदास, ज्ञान दास, बलराम दास, जगन्नाथ दास आदिक स्थान बड़ विशिष्ट छनि। नयनानन्द दासक एक पदके अवलोकन कयल जाय–

ओ रूप सुन्दर गौर किशोर
हेरइते नयन आरति नहि ओर।।

....

लघु पद पंकज अलि सहकार
कह नयनानन्द चीत विहार ।।[13]।।

आब वैष्णव अलंकार मे रति जकर वैष्णव संत साहित्यमे भक्ति रसामृत सिन्धु मे कहल गेल छैक। रूप गोस्वामी रसामृत लिखलनि अछि जे 'एषा कृष्णरतिः स्थायी भावो भक्ति रसो भवेत" अर्थात् श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि द्वारा उद्भूत स्थायीभाव कृष्णरति, विभव-अनुभव, सात्विक भाव, व्यभिचारी भावधारा आस्वाद अवस्थामे विकसित होइत भक्ति रस बनि जाइत छैक।[14]

चैतन्यदेवक जीवन तेसर भाव मे अबैछ जखन ओ सन्यास ग्रहण कयलनि नवद्वीपमे एकटा पुनः नव सम्प्रदायक पदार्पण भेल जकर बंगाल सहित आन-आन प्रदेश मे प्रसार-प्रचार भेल तकर नाम चलल गौड़ीय सम्प्रदाय मे ''चैतन्य भागवतक" रचना संत नित्यानंदक आदेश सँ भेल छैक। अहुमे ब्रज-बोली साहित्यक प्रभाव पड़ल अछि। एहि पाँतीक अवलोकन करू –

कैसे चरणकेर पल्लव ठेललि
मीललि भान भुजंगे.....
वृन्दावन कह निषेध ना मानलि
हमारि ओरे नहि चाहे।।

कहबाक आशय एहि कड़ी मे जाहि संत कविक नाम प्रसिद्ध भेलाह। से छथि देवकी नन्दन दास, शिवानन्द चक्रवर्ती, गोपालदासक ब्रजबोली पदमे शिवानन्द आचार्य ठाकुरक रचना कहल जाइत अछि जे हो संत लोकनि बंगालक धरती सँ विद्यापतिक राधा-कृष्णक प्रति जे भाव चैतन्यक भाव सँ ब्रजबोली साहित्य एकटा स्वतंत्र मुदा प्रभावित गुरु शिष्य परंपरा मे अध्यात्म जगतक प्रवाह मे आगू अपने एहि बात के बुझू एहि संत मे एकटा गदाधर भेला परिचय देव संभव नहि मुदा हुनका एहि संत परंपराक बीच राधाक अवतार मानल गेल अछि। यदुनन्दन दास हिनकहि शिष्य भेलाह आ चैतन्य महाप्रभू पर अपन रचना कयलनि। माधव दासजीक नाम डॉ॰सुकुमार सेन मंगल कर्ताक रूपें लैत छथि जे चैतन्य अनुयायी छलाह। द्विज हरिदास भक्ति रत्नाकरक अनुसार द्विज हरिदास अपन शिष्य गोकुल्लुनन्द, श्रीनिवासाचार्य आ श्रीदास कें दीक्षा देलनि। श्रीदास नाम संकीर्तनक एक सय आठ श्रीकृष्णक भिन्न-भिन्न नाम सँ बंगालक वैष्णव घर मे प्रतिदिन गाओल जाइत अछि। माधवीदास। चैतन्यदेवक प्रमुख अनुयायी जगन्नाथ दासक शिष्य छलाह। हिनक ब्रजबुलि पद में विद्यापति पदक प्रभाव देखल जाओ।

राधामाधव विलसइ कुंजक मांझ
तनु तनु सख्स परश रस पीवई
कमलिनी मधुकर राज

....

अपरूप प्रेमे विषापित अन्तर
कहतहि माधवीदास।।

एहि क्रम मे आगू बढ़ैत वैष्णव संत समाज मे अध्ययन ओ अनुशीलन सँ एतबा तऽ स्पष्ट होइत अछि जे बंगाल धरती पर मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव सँ दूनू धरती मिझिराओल अछि जाहिमे कतिपय गुरु-शिष्य परंपरामे चैतन्य देव सँ प्रभावित कतौक मैथिल बंगालक नवद्वीप मे आबि बसि गेलाह।

एहि कड़ी मे हम मात्र ओहि महान संत सबहिक नाम जे बंगालक वैष्णव धारा मे राधा कृष्णक भाव सँ गौड़ीय संप्रदायमे संत समाजकेँ आ सामाजिक जीवनकेँ मार्ग दर्शन करैत रहलाह ओ सबमे – पुरूषोत्तम दास, परमानन्द दास कचरापाराक छलाह। लोचनदास वर्धमान जिलाक अन्तर्गत कोग्रामक छलाह। ज्ञान दास जे ब्रजबुलीक बंगला साहित्य मे सर्वश्रेष्ठ कवि संग संत छलाह – देखल जाओ –हुनक पद

लहु-लहु मुचकि हासि चलि आओल
पुन-पुन हेरसि फेरि,

....

....

ज्ञान दास कह सखि तुहुँ विरमह,
राइ पायल बहु लाजे।

उपर्युक्त पद मे सरस भाषा मे वर्णनक कौशल झलकैत अछि। कला पक्ष आ भाव पक्षक अद्भुत सामंजस्य भेल अछि। अनन्त दास, कटुआक महोत्सव मे अपन पद परिचय अपूर्व रूपेँ देने छलाह। बलराम

दासक रचना वैष्णव सम्प्रदायक साहित्यक उद्भव मे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। कानुराम दास, वैष्णव त्रिमूर्ति, नरोत्तम दास, कृष्णदास कविराज, श्यामानन्द राय, वसंत, कवि रंजन, शेखर, मोहन दास, वल्लभदास, घनश्याम दास, यदुनन्दन दास, सुन्दर दास आदि वैष्णव साहित्य मे ब्रजबुलीक नामे मैथिली भाषा साहित्य मे महाकविक काव्य प्रभावक परिणाम पूर्वोत्तर भारतक बंगाल, आसाम, उड़ीसा आ नेपालक जे वैष्णव धाराक जे संत-साहित्य तकर संक्षिप्त इतिवृतात्मक भाव प्रस्फुटित भेल अछि। जकर अंतिम कड़ी विश्वकवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वीकार कयलनि अछि। भानुसिंहेर नाम सँ जे कुल २२ गोट पद तकर प्रमाण अछि।

अस्तु विद्यापति, गोविन्द दास प्रभृति कतिपय मैथिल कवि अपन सरस ओ शृंगार काव्यक हेतु बंगालक कवि रूपेँ मान्यता सेहो पओलैनि जे मैथिली भाषा साहित्यक रूपेँ हृदय उद्‌गारित्व होइत अछि।

पूर्वाञ्चलीय संत साहित्य पर विद्यापतिक प्रभाव क्रम आब उड़ीसाक संक्षिप्त वर्णन क्रम शुरू करैत छी :-

अपनेकेँ जनवैत कही जे वर्तमान युगक जीवन अत्यन्त दुरूह मानवीय चेतना पर व्यक्तिभाव स्वार्थ ततेक हाबी भेल जा रहल अछि, जे हमरा जनैत मनुखके बिसरा रहल अछि जे ओ एहि धरती परहक सब सँ पैघ ज्ञानी जन्तु आ मार्गदर्शक अछि। पाशविकताक जे भावना क्रमिक विकास भऽ रहल छै, एहना दशा मे हमर ई ''शोध-प्रबंध" आशा समयानुकूल समाजक लेल कनिको जँ लाभकारी होयत तऽ हम अपन एहि शोध आ जीवन केँ सार्थक बुझबैक। कारण समाज संतक आदर एहि वास्ते जे मानव देह मे देवत्वक प्रवेश जे भिन्न-भिन्न जाति धर्म क्षेत्र मे अवतीर्ण होइत अछि, ओना धार्मिक सिद्धान्त मे अन्तर होइत अछि, मुदा संतकीय भाव संपूर्ण धरा-धाम पर एके होइत अछि, अस्तु संत साहित्यिक मैथिली भाषा साहित्य प्रसंग कही तऽ मिथिला विश्वक अध्यात्मिक भूमि मानल जयबाक चाही, जतय बुद्ध, जैन, महाकवि विद्यापतिक पदार्पणक संग माँ सीताक जन्म डीह चारिटा दर्शनक उत्सभूमि रहल अछि। कही सम्पूर्ण भूमिक दर्शनक अध्ययन आ अनुशीलन होयब तऽ मिथिलाक भूमि चरमोत्कर्ष पर अछि तेँ शायद महात्मा गांधी अपन आन्दोलनक श्रीगणेश मिथिलाक पावन-भूमि सँ आरम्भ कयलनि। एतद् कही तऽ पूर्वोत्तर भारत पर मिथिलाक साहित्य संसारक प्रभाव मे उड़िसाक वैष्णव साहित्य अवश्य आयल तकरा प्रमाणित कयल गेल अछि।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन बाबू लिखैत छथि उत्कल प्रदेश देवता प्रधान जगन्नाथ राधा-कृष्णक कीर्तनक सुधालुप्त, चैतन्यक नीलांचल बास वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसार स्वयं रामानुजाचार्य 12वीं शदी मे पुरी आयल छलाह। पश्चात जयदेवक प्रभाव दक्षिण देश सँ नरहिंस मुनि आ नरहरि दास एहि भूमिक सुदृढ़ताकेँ प्रमाणित करैत छथि।

उड़िया भाषाक विकास मागधी प्रकृति सँ मानल जाइत अछि। एकर सम्बन्ध विशेष रूपेँ मगध प्रदेश सँ रहल अछि, उड़ीसाक प्राचीन नाम उत्कल आ कलिंग देश कहल गेल अछि। आ उत्कल देशक सर्वपापहरण देश कहल जाइत छैक। ओना उड़िया भाषाक उद्भव आ विकास कहिया भेल से कहब कठिन अछि, जे हो मुदा स्फूर्ति लोकभाषा मे जहिया चैतन्य महाप्रभूक आगमन भेलनि ताहि सँ पूर्वहि वैष्णव संत साहित्यक विकास पाँचगोट वैष्णव संत – बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनन्त दास, यशोवन्त दास एवं अच्युत दास ई

पाँचो पंचसुखा नामे प्रसिद्ध छलाह।[16] ''चैतन्य चरितामृत'' सँ स्पष्ट होइत अछि जे राय रमानन्दक ''जगन्नाथ वल्लभ'' नाटक मे रागानुगा भक्ति राधाक भाव मनोहारी अवश्य भेल छैक, गीतगोविन्द स्मरण होइछ मुदा चैतन्य महाप्रभूक आगमन सँ पूर्वक रचना थिकैक। अध्ययन ओ अनुशीलन सँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे उड़ीसाक ब्रजबोली साहित्यक विकास बंगालक प्रभाव सँ नहि विद्यापतिक अनुकरणक परिणति सँ भेल अछि। जकर उड़ीसा मे स्वतंत्र रूपेँ विकास भेल छैक। बहुत रास विद्वानक मते जे उड़ीसा मे ब्रजबोलीक विकास महाप्रभू चैतन्य देव आ बंगालक प्रभाव वा मार्गे भेल अछि से निराधार अछि। उपलब्ध सामग्री प्रमाणित करैत छैक जे अहू ठाम विद्यापति आ मैथिली प्रभावापन्न पदक रचना सँ कयने छथि। एकर उत्स नृप बैद्यनाथ प्रसिद्ध बैजलदेव सँ आरम्भ होइत अछि। जे विद्यापतिक कतिपय रचना मे भणिता सँ स्पष्ट होइत अछि। उड़िसाक प्रधानता भारतीय संस्कृति मे भगवान जगन्नाथक महत्व हुनक भक्तिभाव मिश्रित मधुरभाव राधा-कृष्णक कीर्तन सुधालुप्त जयदेव, विद्यापति, चण्डीदास आदि वैष्णव संत लोकनिक प्रभाव अवश्य पड़ल हेतैक। प्रो॰ राधाकृष्ण चौधरी सेहो प्रमाणित कएने छथि। एहि प्रसंग के एना देखल जाओ –

भनइ विद्यापति अभिमत देवा
चन्द देवि-पति बैजल देवा।।
दोसर ठाम– भनइ विद्यापति पुन पुन सेव
चन्दल देविपति बैद्यनाथ देव[17]

संगहि बैजल देव द्वारा लिखल प्रबोध चन्द्रिका व्याकरण ग्रंथ मे विद्यापति रचित मणि मंजरी नाटिकाक अभिनय जगन्नाथ रथ यात्राक अवसर पर भेल अछि, तकर प्रमाण प्राप्त होइत अछि। बैजलदेव कला ओर साहित्यक मर्मज्ञ छलाह।[18]

उड़िया भाषा साहित्यमे गीत रचनाक परिपाटी प्राचीन काल सँ आवि रहल अछि। मार्कण्डे दासक ''केशव कोइलि'' सँ प्रमाण आवि रहल अछि। बौद्ध धर्मक जखन आत्मसात भेल तखन वैष्णव धर्म उड़िया मे रागानुभक्ति आ ज्ञानमिश्रा भक्तिक समावेश जे उड़िया साहित्य के आर सरस ओ मधुर बनौलक। अस्तु संत साहित्यक मादे किछु विशेष अवधारणा सँ विषय प्रविद्ध राधा-कृष्णके प्रेम उत्पादक लीला वर्णन करब आवश्यक कहब तऽ सएह सन्निहित अछि।

कहबाक आशय राय रमानन्द वैष्णव साधना तत्वसँ अवगत तऽ छलाहे मुदा से कही ब्रजबोली साहित्यक शुभारंभ बैजलदेव सँ होइत अछि। एहेन पद सबहक संग्रह सँ सिद्ध होइत अछि चन्दल देवी हुनक पत्नी छलथिन्ह। विद्यापति आश्रय दाता महाराज शिवसिंह आओर बैद्यनाथ बा बैजलदेव सब समकालीने छलाह। डॉ॰ शैलेन्द्रमोहन झा मिथिला-भारती अंक-२ भाग-४ मे प्रकाशित कयलनि अछि जकर पद निम्नलिखित अछि :–

कत दु:ख कत सुख धरिते नारि हिया
हमे नारि अभागिनी निदारुण पिया

....

धन जन जौभन दिन दुयि चारि

नृप बैध्यनाथ कहे सुन बननारि

एहि ठाम दोसर पद –

विसम कुसुम सरे अंतरे जर जर रे

तुव बामे विधि भेलो बामे

....

सेहो तुम्हे हारि निला

बैद्यनाथ नृप भान।

वस्तुत: बैजलदेब महाकवि विद्यापतिक साक्षात् सम्पर्क मे छलाह। जकर पुष्टि ओ मणिमंजरी नाटिकामे सेहो कयल अछि। प्रसंग पद देखल जाओ –

शुन शुन विनति हमारा

सहजे भुंजब रति हम नारी अवश

....

नृप बैद्यनाथ कह भावि

धाला रमणी बहुत पुण्ये पाबि।[18A]

एहि प्रकारेँ उड़ीसा मे काव्य भाषाक रूपेँ ब्रजबोलीक विकास तऽ आरंभ भऽ गेल रहैक मुदा महाकविक काव्य गृहीत प्रेम तत्वक आधार वैष्णव-भावना, रस माधूर्यक जे भावनाक अन्तर्निहित रहैक मुदा १६वीं शतीक चैतन्य महाप्रभुक द्वारा बंगाल में जे वैष्णव संतक आंदोलन आरम्भ भेलैक से एकटा नव पृष्ठभूमिक शुरूआत ब्रजबोली नामे प्रसिद्ध भेल। तकर विकास मे चैतन्य महाप्रभुक माध्यम उड़िसामे सेहो कार्य कयलक आ एकटा उत्साहवर्धन तऽ अवश्य भेलैक। इ बात सत्य छैक जे मैथिली आ महाकवि विद्यापतिक रचनाक कौशल आ राधा कृष्णक जे मधुर भाव जाहिमे कहबै अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन उपस्थिति जकर कायल महाप्रभु चैतन्यदेव ततेक आत्मलीन भय गेलाह जे एकटा स्वतंत्र नव भाषा शब्द विकास कयलक। उड़िसामे एकर विकासक मार्गकेँ गतिमान बनेबा मे संत राय रमानन्दक स्थान बड़ विशिष्ट अछि। जे महाप्रभुक सम्पर्क मे सर्वप्रथम अएलाह। राय रमानन्द उड़िसाक जगन्नाथ पुरीक समीप गामक जन्मित्व उच्च कोटिक शासक बाद पैघ विद्वान, परम भक्त कृष्ण तत्वक महान ज्ञाता छलाह।

राय रमानन्द **[1504– 1532]** – राय रमानन्द आ चैतन्य देवक बीज कतेको दिनक वैष्णव धर्म पर वार्ता चलल जकर चर्चा कृष्णदास कविराज चैतन्य चरितामृत मे कयने छथि। ब्रजबुलि पदक रूपेँ राय रमानन्दक एहि पद पर ध्यान केन्द्रित करी :–

पहिलहि राग नयन रंग भेल

....

न सो रमन ना हम रमनी

....

बर्धन रूद्र नराधिप मान

रामानन्द राय कवि भानु।।[19]

नाम संकीर्तनक यात्राक पश्चात महाप्रभु चैतन्य देव स्थायी रूपेँ नीलाचल मे निवास करय लगलाह। तखन राय रमानन्द सेहो अपन राजकीय पद के छोड़ि हुनकहि लग आवि गेलाह। आ तखन जगन्नाथवल्लभ नाटक लिखलनि अही काल मे राधा कृष्णक मधुर भावक उद्रेक भेल जे महाप्रभुक अत्यन्त प्रिय पद छलनि से देखल जाओ –

विदलित सरसिज दल सय सयने

....

रामानन्द राय कवि भणितम्।

राय रमानन्दक महाप्रभुक संग घनिष्टता छलनि। हिनक भणिता युक्त 100 पदक रचना संग्रहित अछि ''पदावली'' नामे रचना पोथी विशिष्ट अछि। एहि पोथीक मनन सँ अनुभव होइत जे ओ महाकविक कतेक सम्पर्क मे छलाह तकर बानगी अछि -''पदावली'' जे हुनक भावना केँ सुप्रतिष्ठित करैत अछि। चैतन्य महाप्रभु केँ प्रत्यक्षत: अनुराग आ विद्यापतिक पद सँ कतेक घनिष्ठता छलनि से हुनक पद सब परिचय दैत अछि। हिनक पदावली केँ सर्वप्रथम प्रियरंजन सेन सम्पादित केलनि। राय रमानन्दक प्रेम विलास विवर्तन मे महाप्रभुक आनन्दक ओर-छोर नहि अछि।

जगन्नाथ दास – हम हिनक प्रसंग पूर्वहि चर्चा कयल मुदा तकर विषय किछु भिन्न छल उड़ियामे ''पंच सखा'' नामे प्रसिद्ध वैष्णव संत छलाह जगन्नाथ दास – जे उड़िया भाषा मे श्रीमद् भागवतक रचना कयने छलाह। सिंह चन्द्रोदय मे हुनकर भणिता नामे एकगोट पद उपलब्ध अछि –

फाल्गुन पुर्णिमा तिथि सुभग सकली
जनम लभिवे गोरा पड़े हला हुली

....

दीन हीन उद्धार हेबै भेल आश
देखिया आनन्दे भाषे जगन्नाथ दास।[20]

हिनक प्रसंग मात्र एतबे प्राप्त भेल मुदा से कही विषय प्रसंग नवीन नाम ब्रजबोली सँ अभिहित भेल से एकर प्रचार-प्रसार महाप्रभुक आगमन सँ पूर्वहि आरंभ भऽ गेल छलै।

चम्पत्ति राय – उड़िया साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे बंगाल सँ पहिने ब्रजबुलि साहित्यक श्रृजन आरम्भ भऽ गेल रहैक। जेना कि नृप बैजल देवक समसामयिकता वर्णन प्राप्त होइत अछि। ताहि आधार के जँ संगीन करी तऽ स्पष्ट भऽ जाइत छैक से समाजक बीच बृहद स्थान पओलक महाप्रभु चैतन्य देवक आगमन ओ राय रमानन्दक संपर्क सँ आर विकसित भेल रहैक। एहेन कहल जाइत अछि जे चम्पति राय वा चमूपति के एके मानल जाइत अछि। ''श्री गौरचन्द्र: श्री प्रतापरूद्र महाराजस्य महापात्र: चम्पत्ति राय नामा महाभागवत् आसीत।[21] अस्तु चम्पति रायक प्रसंग दुविधाक समाहार कयल गेल अछि एहि प्रसंग अध्ययन करबाक छैक। एकटा प्रसंग जे चम्पति रायक समय 1479 ई॰ सँ 1532 ई॰धरिक बीच मानल जाइत अछि। एहेन इतिहासक पन्ना सँ स्पष्ट होइत अछि चम्पति राय प्रताप रूद्रके महामात्य

छलाह जे अपन दोसर उपाधि विद्यापति सेहो पौने रहथि।[22] चम्पति राय पर बंगलाक प्रभाव आ उड़िया सांस्कृतिक सम्पर्कक परिणाम राधा मोहन ठाकुरक उक्ति कतेक समीचीन बैसल अछि तकर प्रमाण भेटैत अछि। डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झाक पोथी ब्रजबोली साहित्य Page 258 मे वस्तुत: बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त अपन विद्यापति पदावली मे चम्पति भणितायुक्त विद्यापति नामे पाँच गोट पद संग्रहित एतय द्रष्टव्य अछि एकटा पद :

शुनु शुनु माधव निरदय देह
कि कबहुँ ऐहुन तोहरि सुलेह।।

....
विद्यापति कवि चम्पति भान
राइ न हेरब तोहरि बयान

मानिनी नायिकाक प्रति दूतीक उक्ति रूप मे एहि पदक जे वर्णन से वास्तवमे एकटा संत मानव जीवन सँ उपर उठल रहैत छथि। ओ अपन आत्म प्रशंसा सँ दूर यथार्थक दैव सम्पृवित विकास मे लागल रहथि।

उड़ीसामे ब्रजबोली साहित्यक विकास अनवरत जारी रहलैक। 16वीं शताब्दीक बाद धरि एहि क्रम मे जे संत रचनाकार महाकवि ओ महाप्रभुक प्रभाव मे रहलाह ताहिमे प्रमुख छथि – महाराज प्रताप रूद्रदेव, महापात्र कानुदास, माधवी दास एवं मुरारी आदिक रचना पदकल्पतरु ''क्षणदागीत चिन्तामणि'' एवं अप्रकाशित पद रत्नावली प्रभृति आदि संग्रहमे प्राप्त होइत अछि। जे एकटा मैथिली संत साहित्यक निधि अछि।

महाराज प्रताप रूद्रदेव : महाराज प्रताप रूद्र प्रतापी नरेश महाराज कपिलेन्द्र सिंह देव छलाह जे 1504 सँ 1532 ई॰ के बीच भेल रहथि। संत हृदयक जे मनोविज्ञान कहैत अछि ताहि मे प्रेम, कृतज्ञता, मान, साहस, न्याय आदि गुण, व्यक्तिक चिंतन, सत्य, ईश्वरीय शक्तिक विकास हुनकर हृदय मे होइत छनि ओ देखि हमरा अहाँक हृदयकेँ प्रभावित करैत अछि आ ओ आदर्शक पात्र बनैत छथि। सिद्ध संत संसार मे प्रकट भऽ मानवीय जीवन उन्नतिक दृष्टि दय अपना भीतरक विश्वास आ शक्ति के जगबय चाहैत छथि। महाराज रूद्रप्रताप स्वयं उच्चकोटिक विद्वान संस्कृत ग्रंथक रचैता छलाह। महाप्रभुक समसामयिक एवं अनुगत होइतो हुनकर आशीर्वादभाजन होमक सौभाग्य प्राप्त भेल छलनि। ओ डॉ॰ सुकुमार सेन से नहि स्वीकार करैत छथि। ओना बंगीय साहित्य परिषद मे 192 पद हस्तलिखित अछि ताहिमे एकटा पद हिनक भणितायुक्त अछि।

तोमार लागिया राधे तोमा आराधिनु
मनेर मानस यत सकल साधिनु।।
रेणु हैले ना पाइ यदि मने अनुमानि
प्रतापरूद्र कृपा करह आपनि।।

अस्तु एहि पदक भाव मैथिली संत-साहित्यक भाव जग जगबैत अछि।

कानुराम दास : संत तऽ सदब्रम्ह के उपासक होइत छथि। समस्त जगतक कारण अपरिच्छिन्न नित्य

परमात्मा जे जीवात्मा के वास करैत छथि संतक भाव जखन पद रूप धारण करैत छैक अर्थात् - "अस्ति ब्रम्होति चेद वेद। सन्तमेनं ततो विद:।"[23] संत कानुदास महाप्रभुक प्रति ओ राय रमानन्दक प्रति अशेष स्नेहक वर्णन कयने छथि।

आशय ब्रजबोली साहित्य मध्य उड़ीसा प्रदेशक संत साहित्यिक रचनाकार में प्रसिद्ध कानुराम दासक नाम सँ चारिगोट रचनाकार अबैत छथि। कियो भणितामे कानुदास वा कानूराम दास लिखने छथि। कियो भणिताम् कानुदास वा कानूराम दास लिखने छथि। साहित्य मे कखनो काल ई दुविधा होइत छैक विद्वानक अध्ययन ओर अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे कानुराम दास महापात्र हमर आलोच्य कवि ओ संत छथि जे "रसिक मंगल" नामक ग्रंथ प्राप्त होइत अछि। जकरा जगबंधु बाबू राय रमानन्दक पद संग मिलबैत छथि।[24]

जय - जय गौरांग चौदेर प्रिय राम
कि कहब रामेर गुण यारे लमि पुन: पुन:
महाप्रभु कैल आलिंगन।
रसे भासि राम राय रसेर संगीत गाय
विरचिल रस पद बहु।
कहे दीन कानुदास बड़ मने अभिलाष
भजि सदा रामेर चरण (गोर पद तरंगिणी पृष्ठ 302)

अस्तु एहि पदक सम्पूर्णता मधुर रस मे वर्णन करैत समर्पणक भाव अछि। मानवीय चित्त के जखन संत ब्रम्हक संग जोड़ैत छैथि तखन ब्रम्हानन्दक सुख भेटैत छनि।

माधवी दासी – महाप्रभुक अंतरंग भक्ति करैत छलाह। "चैतन्य चरितामृत" सँ प्राप्त जानकारी अछि। जाहिसँ दुविधा उपजैत अछि से माधवी देवी अलादा छलीह राधाक वैष्णव संत लोकनि राधाक भाव मे हुनकर सखी अपना के मानैत छथि। डॉ॰ सुकुमार सेन कहैत छथि जे माधवी दासी पण्डिताइन छलीह हुनकर विचारमे कोनो पुरुष कवि छलाह। चैतन्य चरितामृतमे उल्लिखित अछि।

माधवी देवी शिखि महितिर भगिनी
श्री राधार सखी मध्ये यार नाम गनि

माधवी दासीक विवाद मे 'पदकल्पतरुक' संपादक धारणा किछु भिन्ने छनि जे प्रसंग हो हमर विषय प्रविद्य जे पद अछि –

परशिते राइ तनु आपने भुलल कानु
मुरछि पड़ल धनि कोर
....
उपजल उल्लास कहइ माधवी दास
विदगध माधव राधे।[24A]

अस्तु हमर अध्याय प्रसंग अछि "पूर्वांचलीय संत साहित्य पर विद्यापतिक प्रभाव" आ शोध-प्रबंध विषय थीक "मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण" एहि क्रममे मैथिली भाषा साहित्यिक विकास

कहिया सँ भेल से कोनो तिथि बा काल निर्धारण नहि अछि। मिथिलाक वर्णन तिरभुक्ति तिरहुत जे हो अदौकाल सँ श्री मद्भागवत आदिमे नामक वर्णन उत्पत्तिक प्रतिपादन होइत अछि। मुदा मध्यकालीन इतिहास मे सातवीं शती मे मैथिली भाषा साहित्यक रूपेँ पूर्ण विकसित भेल। सिद्ध साहित्य चर्यापद डाक-घाघ बचन, वर्णरत्नाकरवर आ ज्योतिरीश्वर सँ महाकवि विद्यापतिक समय अबैत-अबैत अपन स्वर्णयुग मे आबि गेल छलैक। हमर कहवाक आशय महाकविक काव्य प्रभाव खासकऽ पूर्वांचलक साहित्य पर जे संतकीय भाव छोड़लक जकर प्रभाव बंगाल मे संत चैतन्य महाप्रभु पर पड़लनि, उड़ीसा मे समर्पित भाव बैजलदेव वा बैद्यनाथ देव पर पड़लनि जकर परिणाम ब्रजबुलि नामे एकटा भक्तिक रूप मे वैष्णव संत साहित्य नाम सँ भिन्न राधा कृष्णक मधुर भाव मे अविरल प्रवाह शुरू भेल जे संत हृदयकेँ मोहित कयलक। परिणाम साहित्यक विकासक प्रसंग आलोचक लांञ्जीनक्सकाक कहब कतेक समीचीन भेल अछि - ''हमर आत्मा कोनो महान वस्तुक सम्पर्क सँ अपने-आप स्वाभाविक रूपेँ उपर उठि जाइत अछि आ आनन्दातिरेक सँ भरिकऽ बुझू नाचय लगैत अछि।[25] अही रसक अनुभूति सँ संत द्वारि खोजि कऽ प्रेम आ एकर अभिव्यक्ति कविक द्वारा होइत अछि से ''साहित्य" कहबैत अछि।

उड़ीसा मे ओना १७वीं शताब्दी मे ब्रजबोली साहित्य पीढ़ीक किछु नामचीन रचनाकार भेल छथि जकर उल्लेख विद्वान डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन बाबू सेहो अपन पोथी ''ब्रजबोली साहित्य मे उल्लेख कयने छथि आ संगहि पं॰ राजेश्वर बाबू उल्लेख कएने छथि ताहिमे प्रमुख रायदामोदर दास चाँद कवि वा चन्द्र कवि आ यदुपति दासक नाम अबैत अछि।

एहि प्रकार अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे महाकवि साहित्य रसिक संसार मे बसंत बसा देलनि। मानव हृदयक वाटिका मे भाव विटप सँ शताब्दी-शताब्दियहु सँ युग-युग धरि गुञ्जाय मान भऽ रहला अछि भारतवर्ष मे मैथिल-मिथिला ओ मैथिलीकेँ धन्य कऽ गेलाह, आ मैथिली साहित्यके समुज्ज्वल करैत गेलाह। पाठक, लेखक, कवि आदि जएह तकला तिनका वएह भाव पुरूकस प्राप्त भेलनि।

आसाम मे संत साहित्य पर महाकवि विद्यापतिक प्रभाव ओ असमियाक ब्रजबोली साहित्य पर साहित्यिक प्रभाव :

महाकवि विद्यापतिक आसामक संत साहित्य ओ ब्रजबोली पर प्रभाव : प्राचीन भारतक राजनीतिक सांस्कृतिक जीवन मे मिथिलाक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहलैक अछि। एहि भूमिक हेतु विदेह तथा मिथिला नामक उत्पत्ति विशुद्ध पौराणिक अछि। जुलियस एगलिक अनुसार ई भूभाग आर्य लोकनिक निवास स्थल छलैक। एकर उद्भव विकासक वर्णन विष्णु पुराण ओ श्री-मद्भागवत मे कयल गेल अछि। जे हो, मिथिलाक इतिहास लिखिनाहार महान प्राचीन इतिहासकार डॉ॰ उपेन्द्र ठाकुर जीक इतिहास मे एकर प्राचीनताक वर्णन अत्यन्त सजीवतापूर्वक भेल छैक।

हमर उपर्युक्त प्रसंग लिखवाक एहि ठाम एहि वास्ते प्रासंगिक अछि जे कोनो प्रदेशक वा कोनो व्यक्तिक प्रभाव संत साहित्य मध्य नहि अपितु भागवत संत प्राणीक हित जितेन्द्रिय निष्काम समदर्शी होइत छथि। आसामक वैष्णव - साहित्यक इतिहासक जे दिग्दर्शन करबैत अछि से तंत्र-मंत्रक भाषाक रूपेँ प्राप्त होइत अछि। कहवाक आशय आसामक साहित्य लोक गीत लोककंठ सँ नि:सृत होइत अछि। शिष्ट

साहित्यिक रूपेँ असमयिा साहित्यक विकास तेरहम शताब्दी सँ आरम्भ भेल। एकर प्रथम प्रमाण भेटैत अछि। ''कामता'' राज्यक अधिपति दुर्लभ नारायण द्वारा कतिपय पण्डित कविके राज्याश्रय प्राप्त भेलैक जतय सँ प्रश्रय पाबि हेम सरस्वती, हरिहर विप्र उपाख्यानक आधार पर 'प्रह्लाद चरित्र' आ लव-कुशार युद्ध एवं बब्रू बाहनार युद्धक रचना कयल जे असमिया साहित्यक आदि काव्य अछि। कवि रत्न द्वारा जयद्रथ वध काव्य निबद्ध कयलनि, से अभिव्यंजना शैलीमे मुदा एकर पाण्डुलिपि अनुपलब्ध छैक।

आसाम आ मिथिलाक सम्पर्कक आदि पुरुष सिरताज माधव कन्दली के कहल जाइत अछि। कछारी राजा महामाणिक्यक आश्रित छलाह। रामायण भाषा अनुवाद विद्वानक दृष्टिसँ सेहो आसाम मिथिलाक उच्चारणक दृष्टि सँ बंगालक करीब मुदा शब्दक रचना दृष्टि सँ हमरा लोकनि आसामक बेसी करीब थिकहुँ यथा - दिलाक - असमिया, देलक - हमसब, करि राख आसाम, कय राख - हम सब, थिक असमियो मे अहिना प्रयुक्त होइत अछि आर बहुत रास शब्दक साम्य अछि।

आसामक वैष्णव साहित्यक प्रसंग आर बहुत साम्य अछि एकर मूलमे 16म शताब्दी मे स्वयं शंकरदेव मिथिलाक यात्रा कएने छलाह। मिथिला आ आसामक परंपरागत सम्बन्ध जे शंकर देव एतुका भाषाक मधुरतासँ मुग्ध भय अपन साहित्यक अभिव्यक्तिक माध्यम बनाओल। विद्यापतिक प्रभाव मे जखन ओ अयला तखन तऽ ब्रजबुली साहित्यक मुख्यत: दू भेद भेटैत अछि - (1) वरगीत आ (2) अंकिया नाट - गीत आ पुनः कही जे असमिया भाषा साहित्यक लेल विकासक आधारशिला अहीठाम सँ प्रारम्भ होइत अछि। अस्तु कोनो साहित्यक उपर प्रभाव पड़वाक ओकर इतिहास अध्ययन आवश्यक तैं एतेक वर्णन करब उचित बुझल।[26] ओना–''डॉ॰ सुकुमार सेन आसाम आ बंगालक ब्रजबोली के भिन्न-भिन्न स्वीकार नहि करैत छथि। मुदा से डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन बाबू अपन पोथी ब्रजबोली साहित्य मे स्पष्ट कएने छथि आ कहै छथि जे एकर दुनूक बीच तुलनात्मक भिन्नता स्पष्ट देखै छी। भाषा गत अन्तर, मिथिलासँ स्वतंत्र संपर्क बाद मे ओना– ''जर्नल ऑफ कामरूप अनुसंधान समिति संख्या-8 पृ॰-104" (हिन्दी-मैथिली लि॰खण्ड-1 पर उद्धृत) सर्वप्रथम वरगीतमे मिश्रित भाषाक उपयोग कयने छथि। जखनकि अंकियानाट अत्युत्तम सिद्ध भेल अछि। शंकरदेव असमिया साहित्यक प्रेरक आ ब्रजबोली साहित्यक श्रष्टा कहि सकैत छियैन्हि। शंकरदेव मिथिला ओ मैथिलीसँ संपर्कमे अनवाक श्रय कामताक राजा (कुचबिहार) प्रायः 1540 ई॰ मल्लदेव जिनकर उपाधि नरनारायण छलनि संस्कृतक महान संपोषक छलाह।[27]

आसामक वैष्णव संप्रदाय देवकीपुत्र श्रीकृष्णक भक्त सम्प्रदाय छथि जकर प्रवर्तक स्वयं शंकर देव आ माधवदेव छलाह। आ दुनू गोटे वैष्णव संत कृष्ण भक्तिकेँ आधार श्रोत बुझलनि आ ओहि धारा मे प्रवाहित भय गेलाह। कृष्णक भक्तिक जे उत्पत्ति से कही ओना भाषा विज्ञानक भाव भज धातु सँ होइत अछि जकर अर्थ होइत छैक भजब इएह जे भजब से कृष्णक प्रति जे भक्तिभावनाके आर बल दैत अछि आ पदावलीक एकटा-एकटा पद जे प्रेरक तत्व जेकाँ भक्त आ संत अपन जीवनमे उतारलनि अछि आसाम आ शंकर देव एवं माधवदेव एकर अपवाद नहि छैथि। अतएव जीव आ ब्रम्हक संग एकात्मकताक रूप स्थापित करबाक प्रयास कयलनि। शंकरदेव वेद-वेदान्त, ब्राम्हण-उपनिषद, रामायण, महाभारत, षटदर्शन एवं पुराण आदिक विधिवत् अध्ययन कयने छलाह। अपन गुरु माधव कंदली जिनका अहिठाम 22 वर्ष धरि अध्ययन

कयलनि। पश्चात् सूर्यवती नामक कन्यासँ विवाह भेलनि जाहिमे हरिप्रिया नामक पुत्री भेलनि आ पत्नीक देहांत चारिये वर्षक पश्चात भऽ गेलनि। वैष्णव संत शंकरदेव महाकवि विद्यापतिक पश्चात् अपन साहित्यिक भाषाक विकास वैष्णव संत महाप्रभु चैतन्य देवक समान आन-आन संत लोकनिक जे साहित्यिक भाषाके समादृत कयने छलाह, तहिना कृष्णभक्तिक सिद्धान्त के अपनाकय आसामक साहित्यिक भाषाक उद्‌भव ओ विकास कयने छथि। वस्तुत: ओहि समय मे विद्यापतिक काव्य यश अपन पराकाष्ठा पर छलैक। बंगाल मे महाकवि प्रभाव आ हुनक काव्य रचनाक अनुकरण चरमोत्कर्ष पर रहैक। अपन तीर्थाटन सँ शंकरदेव बारह वर्षक बाद जखन ओ अपन देश आसाम पहुँचला तऽ ओ दू प्रकारक शैलीक विकास कयलनि जकरा एकटा के शुद्ध असमिया जकरा असमिया ब्रजबोलीक रूपगठन स्वीकृत तथ्य प्रमाणित करैत अछि।

हिनक जे काव्य परिचय से विद्यापतिक प्रभाव अप्रत्यक्ष रूपेँ हिनक हृदय मे कायम रहैत छनि। जे ब्रजभाषा साहित्यक प्रेरणा सँ ब्रजबुलि के वरगीतक श्रोत फुटि चलैत अछि जकर भाषा मैथिली ओ ब्रजभाषाक किछु आ असमी पदक संग मुहावराक प्रयोग शुद्ध भऽ गेल रहैक। अतएव शंकर देव असमिया आ मैथिली भाषाक संग वैष्णव साहित्यक धरातल पर अध्यात्मिक सम्बन्ध जे राम आ कृष्णक भक्तिक भजनक आश्रय ग्रहण कय महाप्रभु चैतन्यक सदृश गंधसूत्र पकड़ि – ''वरगीत ओ अंकीय नाट'' गद्य ओ पद्य समभाव रूपें बंगाल उड़ीसा एवं आसाम मे आर विशेष रूपेँ नाटकक रचनाक प्रयोग सेहो शुरू भऽ गेलैक। जे कतौ नहि भेल छलैक आसाम तहि लऽ कऽ आर प्रसिद्ध भेल।[29]

वरगीत – शंकरदेव कैँ मैथिली भाषा साहित्य सँ परिचय भेलनि आ विद्यापतिक भाव के उतारलनि शुरू-शुरू मे श्रीमद्‌भागवतक स्कंध पुराण मे जे कृष्ण कथाक आधार बना एकसरनियाँ वैष्णव संतक प्रार्थना रूपेँ अर्चनाक गीत छल। जकरा परिवर्तित कय बड़गीत नाम 1481 ई॰क पश्चात् उत्तर भारत तीर्थाटन सँ आपस भेला पर देलनि। संत महात्मा सँ विचार-विमर्शक बाद सर्वप्रथम शंकरदेव बद्रिकाश्रमे बड़गीतक रचना कयल[30] राग धनाश्री मे देखल जाओ -

मन मेरो राम चरनहि लागु
ताइ देख न अन्तक आगु
मन आयु क्षणे-क्षणे टूटे
ताइ चेतिया चित्त गोविन्द
मन जानिया शंकरे कहे।।
देख राम विन गति नहे।

ध्यान देल जाओ बड़गीत मे भक्ति भावनाक जे उद्रेक होइछ ओ दैनिक जीवनक जे भक्ति रूपेँ हमरा लोकनि पूजा अर्चना, धार्मिक व्रत-उत्सव मे जे निर्लिप्त भावक उद्रेक होइछ। तकरे धरि बड़गीतक भाव मानल जाइछ। रचना रूपेँ मात्र तीन गोटेक बड़गीत पाओल जाइछ जे तीन भाग में बाँटल गेल अछि। ताहिमे शंकरदेव, माधवदेव एवं पुरुषोत्तम ठाकुर प्रभृति छथि। (1) राम आ कृष्णक व्यक्तित्व प्रसंग (2) हुनक लीला प्रसंग (3) धार्मिक तत्व प्रसंग – देखल जाओ एकटा नमूना - बड़गीतक एकटा खास विशेषता जे एहि मे एकटा राग आवश्यक गुण छैक। अध्ययन सँ इ स्पष्ट भेल उपर्युक्त तीन नामक बाद आर हुनकर

सहचर लोकनि भेलाह यथा –

"राग-नट मल्लार" मे मनन करी

मधुर मुरति मुरार : मन देख हृदय हमारु।

रूपे अनंग संगे तुलना

तनु कोटि सुरूज उजियार।

....

....

पलव रतन नुपुर परवासा

भक्त परम घन ताहे मजोक

मन शंकर एहु अभिलाषा।

दोसर राग बसंत मे :–

काकरु मनुवा विसय विलास।

दुर्लभ मानवी तनु पनुसो नापास।

भारते मानवी तनु तरणी उपाम।

देह भरा कलिको धरम हरिनामु।

गुरु केरूवालि राम अनुकूल बाव।

हरिगुन गाया भवसागर कुलाब।

आशा सयल गरल करो दूर।

नाम आमिया पाने मन करो पूर।

कहई माधवदास गति नाहि आन।

सजन जनेर संग अगियान।[31]

शंकरदेवक वैष्णव आन्दोलनके एतेक व्यापक जे पूर्णतया शाक्त प्रदेश मे समर्थनं व्यापक लोकप्रिय भेलैक से कहबै तऽ मरूभूमि मे ऊँट जल'क गंध सूत्र पकड़िकय जलाशय तकबाक लेल चलि पड़ला। आशय शंकरदेव महाकविक आश्रय ग्रहण कयलनि जाहि सँ एहेन काव्यात्मक सौन्दर्य, भावगत सुकुमारता, आ प्रौढ़विचार तत्व निहित अछि। बड़गीतमे जे ब्रजबोलीक प्रयोग से भाषाक दृष्टि संयुक्त रूपैं कहल जा सकैछ व्यंजनक अल्पता भेल आ स्वर एवं अनुप्रास अलंकारक बाहुल्यता, कृत्रित्व भाषा मे भक्तिक रस भावना जे बड़गीतमे बहलैक से कृष्ण ओ राधाक प्रति स्नेह जकरा गोपी लोकनि अपन दैनिक जीवनमे ब्रजभाषा संग जीबैत छलीह। तहिना शंकरदेव आ बड़गीतक रचैता लोकनि जाहि शब्दावलीक संग मनोभावक जे अभिव्यक्ति कयलनि से अपूर्व भेल छैक। अखन धरि 240 बड़गीतक संख्या प्राप्त भेल अछि। रचैता मे रामचरण ठाकुर एवं दैत्यारि ठाकुर आदि सेहो गेल छथि। शंकरदेवक कएकटा वड़गीतक वर्णन देखू :-

ओ ओरे सखि पेखे रे कंजलोचन चललि नन्द कुमारा।

इन्द्र बदन कोटि मदन रूपे तुल नहि आरा।।

....

....

पद पंकज मंजिरे सुरे हरय चित्त हमारू।

शंकर कह छाड़ विरह ओहि जग आधारू।।

अंकीयानाट – अंकीया नाटक प्रसंग बुझू शंकरदेव प्राय: मूल रचैता छथि। एहिमे कृष्णक विविध लीलाक वर्णन भेल अछि। असमिया ब्रजबोलीक दोसर आ समृद्ध भेद अछि। विद्यापतिक भावनाक अनुशरण करैत मैथिली नाट्य परंपराके स्वीकार करैत संस्कृत नाटक ओ नाट्यशास्त्रक किछु नियमक पालन सेहो करैत आसामक लोक परंपरा सँ जुड़ल अछि।[33] आसाममे मंदिर सबमे लोकनृत्य अभिनीति कयल जाइत छल ताहिमे ओजा पाली क लोकप्रियता छलैक विद्वान बिरंचि कुमार बरूआक धारणा छनि जे शंकरदेव अंकीया नाटक ओहि ओजा पाली सँ प्रभावित भऽ कऽ अंकीया नाटक आरम्भ कयलनि। वस्तुत: अध्ययन सँ स्पष्ट होइछ जे ''आसामी साहित्य मे अंकीया नाट एक जातिवाचक पद अछि जाहिमे वैष्णव-सिद्धान्त निरूपक एक अंकक रचनाक बोध होइत अछि।[34] अंकीया नाटकक भाषाक प्रसंग विद्वान S.K. भूइंयाक मत अंकीया नाटकक भाषा मैथिली आ असमियाक मिश्रणक विलक्षण उदाहरणप्रस्तुत करैत अछि।[35] एहिठाम गीतक रूपात्मकता अवलोकन कयल जाय, अंकीया नाट मे परवेश वा कही पयोसार गीत रूपक पद्धति छलैक। मिथिला आ नेपालक नाटकक समान पहिल बेर रंगभूमि मे परेवश करैत गीत रूपैं पात्र अपन परिचय दैत छलैक। शंकरदेवक ''राम विजय नाट" मे जे पद से देखी –

भेलि परवेश परमेश रघुनाथे

संवेग सोदर शरधनु घरि हाते-

श्याम रुधिर चिर पीत परकाश

....

चरणक रञ्जि मञ्जिर मणि रोल-

कृष्ण किङ्कर ओहि शङ्कर बोल

यथा उमापति उपाध्यायक कृति पारिजात हरण नाटकमे सत्यभामाक प्रवेश गीतकें देखल जा सकैछ। प्रसंगवस शंकर देव जखन अपन बारह वर्षक तीर्थाटनमे रहैथि पुरीमे मिथिलाक पंडित जगदीश मिश्रसँ सम्पर्क भेलनि ओतहि भागवतक संपूर्ण अध्ययन कयल।

हमर आशय संत रूप मे शंकरदेव कँ संत अंक गीताप्रेस मे श्री हेमकान्त भट्टाचार्यक लेख सँ शंकरदेव कँ 'शंकरक' अवतार माननलि अछि। जे हो एतबा स्पष्ट अछि जे ओ दीव्य व्यक्तित्व छलाह। उमापतिक पारिजात हरण नाटक मध्य ओ शंकरदेवक पारिजात हरण। नाटकमे सत्यभामाक मानवीयता बेशी निखरैत अछि। स्पष्ट अछि जे उमापतिक नायक धीर ललित नायक छथि तऽ शंकरदेवक कृष्ण अवतारी कृष्ण छथि। शंकरदेव धारणा सतत सामान्य ओ साधारण जनसँ सम्पृक्त भक्तिभावनाक चरमोत्कर्ष देखाओल गेल अछि। सत्यभामाक विरह वर्णन देखी -

हरि-हरि प्रिय मेरि बैरि अधिक भेलि
कयलिअतये अपमाना
धरणी लुटि लुटि विलपति बाला
कृष्ण किङ्कर रस भाना।।

अस्तु भाषा छन्दक अनुपम संपृक्तता भेल अछि। नाम सँ ब्रजबोली मुदा से मैथिलीक अनुरूप भेल अछि। शंकरदेवक भाषाक इएह विशेषता मैथिलीक करीब आ विद्यापतिक परवर्ती पूर्वोत्तर मे प्रसिद्धि प्रदान करैत अछि। शंकरदेवक अध्यात्मिक उन्मेष मे हुनका द्वारा प्रतिपादित एकसरणिया आत्म समर्पणक भावना हुनका अद्वैतवादक समर्थक कहल जाइछ। नाम धर्म मे अटूट आस्था ओ व्यवहारिक साधना मे श्रवण कीर्तनक साधक चैतन्यक राधा- कृष्ण, बल्लभाचार्यक गोपी-कृष्ण, नामदेवक रूक्मिणी-कृष्ण, रामानन्दक सीता-राम युगलमूर्तिके अराधना विश्वास एहि पाँती मे देखल जाओ –

प्रकृति-पुरुष दुइरो नियन्ता माधव
समस्तरे आत्मा हरि-परम बान्धव।

एतद् अध्ययन ओ मनन सँ स्पष्ट अछि जे संत शंकरदेव संसारक निस्सारता ओ शोक संकुलता सदति सीतित ओ भक्ति हृदय दैन्य पुरित स्वर विगलित भेल अछि से एहि पद मे देखल जाओ -

श्री राम ! मइ अति पापी पामर तेरि भावना नाई
जनम चिन्तामणि माहे गयो जब काचक लाइ।।

....

परम मुरख माधव एकु भकति न जाना
दास दास बुलि ताबहु एहु शंकर भाणा।

अंकीया नाटमे एहि प्रकारे संत शंकर देव श्रीकृष्ण ओ श्री रामक भक्ति मे अखण्ड विश्वासक संग अपन आत्म समर्पण कयलनि अछि। एहि अंकीया नाटक माध्यमे शंकरदेव संतरणक साधना मे बुधि-विवेक संग वरगीतक मूल स्वर दय आसामक ब्रजबोली साहित्य कैं साहित्यक पराकाष्ठा पर पहुँचेलनि अछि।

माधवदेव – शंकरदेवक पश्चात् हुनकर शिष्य संत माधवदेव आसामक वैष्णव आन्दोलनकैं नेतृत्व प्रदान कयलनि। संत माधवदेव सत्र संस्थाक संस्थापक छलाह। ओ शंकरदेव अनुशासनबद्ध आचार विचार कैं उत्तरोत्तर विकास करैत गेलाह। शंकरदेवक आदेश पालन मे मैथिल साधक विष्णुपुरीक भक्ति रत्नावली'क असमी रूपांतरण कयल गेल। धर्मक व्याख्या ओ सरल ओ सरस भाव मे नाम बोध[36] नामक हुनक अमरकीर्ति छनि। शंकरदेवक मेधावी शिष्य छलाह। हुनके सन प्रतिभाशाली कवि छलाह नाट्यकार छलाह। शास्त्रीय शिक्षाक पारंगत, मानव जीवनक अध्यात्मिक उन्मेष करैत छलाह। आसामक ब्रजबुलि साहित्यक अन्तर्गत बालकृष्ण पर केन्द्रित रचना करैत छलाह, माधवदेव वात्सल्य रस उद्रेक करैत राधा-कृष्णक हृदयहारी रूप चित्रांकन करैत छलाह।

साजे रे सखि नन्दकु बाला
नव घन जिनि शोहे तनु काला

अधर सुधारस पूरित वेणु

....

कण्ठे केलि कदम्बक माला

करत माधव गति बाल गोपाला।।

माधवदेवक काव्यक अन्तर्धारामे भक्तिक भावक अन्तर्गत ''महापुरुषिया धर्म'' कहि विख्यात भेलैक। कृष्णक वृन्दावन गोप शाखाक क्रीड़ारत रस माधुरीक जे वर्णन से कतेक मार्मिक कयलनि अछि –

विरिन्दावन भेटलो ए हरि ए गुणेर निधि

अपरूप रूपे नयन दुहु पूरलों हमारि सुपरसन विधि।।

....

....

रसेर माधुरी हरि त्रिभुवन मोहन

दीन माधवदास गावे।

बाल रूपमे (वात्सल्य रसमे) देखल जाओ कतेक मार्मिक रचना भेल अछि - माता यशोदा लऽग कृष्ण गोपीक शिकायत करैत छथि –

मायक आगू गोविन्द करत गोहारि

देखत्व कैचन गो गोवारीणी

हामाकु पारत गारि -।।

हामु बालक चय खेंड़ि खोलावत

तटा कयलि चोरि चोरा।

ताहिक हाम मिनति बुलि मागो

हामाकु बोलय दुर छोड़ा।।

पूछत ऐंचन बात दुइ-नुइ

ओहि बालक सब सखी

हमारि ऐचन कलंक गोकुल मह

आबरि कमन आछौं राखि।।

लुहु जब माईं उचित बुझल नाहि

गोबारीक यशोदा गारि दिये खेदल

माधव एहु रस गाइ।।

प्रतिभाशाली शंकरदेवक शिष्य माधवदेव आदर्श शिष्यक भाँति छथि। मैथिल वैष्णव संत विष्णुपुरीक भक्ति रत्नावलीक असमिया मे अनुवाद केलनि। एतबे नहि ओ आदिकवि एवं नामघोषक छन्दो रचना कयलनि। स्त्री समाज कैँ दृष्टि मे राखि 300 छन्द मे जन्मरहस्यक रचना कयलनि। ओ २०० एहेन गीतक रचना कयलनि जे अध्यावधि असम मे नित्य प्रसंग एवं नैमितिक अवसर पर गाओल जाइत अछि।

काव्य आ गीतक अतिरिक्त माधव देव रास झुमरा भूष्ण, हरण, ब्रम्हा मोहन, कोटोरा, खेलावा, अर्जन मंजन, चोरघरा, पिम्परागुचुबा, भोजन विहार एवं भूमि लोटोवा आदि एक प्रकारक गीत थिकैक जे अखनो मिथिला ओ आसामक बीच गाओल जाइत अछि।

माधवदेवक भाव पर महाकविक मूलभाव लोकचेतनाक प्रभाव कतेक प्रभावी भेल अछि से हुनकर रचना पर स्पष्ट देखल जाइछ। ओ लीला नाटक रूपेँ प्रस्तुत कयलनि अछि तकर कथानक जाहि रूपेँ व्यक्त भेल अछि ताहि सँ ई भोजन विहार मे अपूर्व बाल सखाक जे जीवन तकर वर्णन कयल अछि। ओना विद्वानक मत अछि जे नाटक अपूर्ण अछि। हुनका द्वारा कौतुक क्रीड़ा आदिक जे अपन रचना मे जे दृश्यक सृष्टि कयलनि अछि, रचनामे हास्य रसक उद्रेक सेहो भेलैक अछि। देखल जाओ एकटा रचनाक मात्र किछु पाँती –

तेजहुँ ताप सुनह मेरि माइ
हाम देखलों तेरि बालक का नाइ।

....

कहय माधव गति बालक कानाइ।।

एहि प्रकारेँ अध्ययन ओ अनुशीलन सँ एहि निर्णय पर अबैत छी जे माधवदेवक रचना पर ब्रजबुलीक प्रभाव अवश्य अछि आ ब्रजबुलीक भाषा पर मैथिली भाषाक प्रभाव अछि आ मैथिलीक प्रभाव माने महाकविक छाया भाव तऽ स्पष्ट देखल गेल अछि। अस्तु माधवदेव आसामक मध्यकालीन सामाजिक परिदृश्यमे संते रूप धारण कय सामाजिक चेतनाकेँ महाकविक मूल धारणा रूपेँ जगेबाक प्रयास कयलनि।

गोपाल अता: – माधवदेवक पश्चात् अंकिया नाटक रचयितामे संत गोपाल अताक स्थान अछि। ओ माधवदेवक शिष्यत्व स्वीकार कय एकशरणियाँ धर्मक प्रचार करऽ लगलाह। गोपाल अता दुई गोट नाटक 'जन्म यात्रा' एवं 'गोपी-उद्धव' संवाद प्रमुख रचना मानल जाइत अछि। देवकीक विवाह मंडप जयवाक वर्णन देखल जाओ –

सखि सब संगे चललि देबकि,
विवाह मंदिर माझे
हंसर गा मिनि कुरंग नयनी
देखि ससधर लाजे।

अध्ययन-अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि गोपाल अता: प्रसिद्ध गोपाल देव एके व्यक्ति ओ संत छलाह। विरह वेदना निवेदित पदक वर्णन देखल जाओ।

आरे कि कहबो उधव कि कहबो प्राण
गोविन्द बिने भयो गकुल उछाल।

....

मथुरा रहल सबे गोपिनीक पिउ
केशव बिने कैछे घरब जीउ।।[37]

अस्तु भाषागत वैशिष्ट्यक अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे विद्वान डॉ शैलेन्द्रमोहन झा अपन पोथी ब्रजबोली साहित्य मे लिखैत छथि जे आसामक ब्रजबोली असमीभाषा द्वारा जे प्रयुक्त होइत अछि से मैथिली थिकैक। एतय बंगाल एवं उड़ीसा मे ब्रजबोलीक प्रयोग प्रादेशिक जेकाँ भेल अछि। तहिना आसामो मे भेल छैक। एतय किछु विभक्ति प्रत्यय, शब्दावली एवं वाक्य विन्यास पूर्ण तथा मैथिलीक अनुरूप भेल अछि। यथा –

संदर्भ मे गेल, उठि, करि राख, थिक, कह, कहब, पूछल, कयल, बोलल, देखब, सुनह, बैठि, बैठि रह, रहल, आनत, प्रभृति क्रियापदक प्रयोग कतेक समीचीन भेल अछि। तहिना मैथिलीक ठेंठ शब्दक प्रयोग असमिया ब्रजबोलीक खास विलक्षणता अछि। जेना माओ, बनिज, पाँजर, दरमाहा, कुसियार, वस्तु, लग, कल उपार, भुईं राति, पथार (खेत-पथार), पाट (राजपाट) कमार, दालिम (दाड़िम) पिच्छल (पिच्छर) घिउ, सेप, बुधियाक (बुधियार) अउँठा, गोर आदि शब्दक समूह के देखला उतर इ स्वत: अनुभव होयत जे मैथिली तत्वक प्रधानता असमी ब्रजबोली मे ततेक स्वभाविक रूपें भेल अछि जे ताहिसँ आसाम आ मिथिलाक बीच वास्तविक परिचय प्राप्त होइत अछि।

एहि प्रकारैं अध्ययनक क्रम मे ब्रज-बोली साहित्यक अन्तर्गत किछु आर नाम सोलहम शताब्दी मे अबैत अछि ताहिमे प्रमुख छथि –

1. द्विजभूषण - 1507 ई० मे हिनक जन्म भेल हिनक सहयोग मे शंकरदेवक पौत्र पुरूषोत्तम आओर चतुर्भुज छलाह। हिनक मूल कीर्ति शंकरदेवक जीवन चरित्र आ अजामिल उपाख्यान नामक नाटक प्रसिद्ध अछि। हिनक किछु प्रसिद्ध पदमे एकटा देखल जाओ –

साधु लोक द्विज पितृ सुजन
मारि चुरि करि आनल घन।।
असतरि संगे दुष्ट भैल मति।
कहै द्विज भूषण गोविन्द गति।।

अहिठाम 'करि, चुरि, मारि, मति, गति आदि मैथिली शब्दक उपयोग आ श्री मद्‌भागवत मे सँ अजमिल प्रसंगक जे मार्मिकता महाप्रभु नारायणक नाम मात्र सँ अजामिल के मोक्ष बा मुक्ति जे किंबदंति तकर अपूर्व वर्णन भेल अछि।

रामचरण ठाकुर :– हिनक जन्म 1521 ई० में भेल छलनि। ई माधवदेव संरक्षण मे रहलाह। संस्कृत मैथिलीक अध्ययन कय ओतहि ओ विद्वान बजलाह। हुनक प्रसिद्ध रचना कंस वध अछि जे ब्रजबोली छैक।[39]

दैत्यारि ठाकुर – जन्म 1564 ई० भेल छलनि ई अपन रचना हिनकर पिता आसामक ब्रजबोली साहित्यक दधीचि शंकरदेव आ माधव देवक संपर्कित तैं शंकरदेव आ माधवदेवक जीवन चरितक रचना कयलनि। इएह रचना हिनक प्रसिद्धिक कारण बनल जकर समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ अत्यन्त महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। हिनक 'स्यमन्त हरण' यात्रा कथा श्रीमद्‌भागवत पुराण मे उपलब्ध अछि। ''नृ सिंह यात्रा" नाटक श्री कृष्णक द्वारा जाम्बवतीक संग बारिका आपस आ सत्राजीत कैं ओ मणि देलखिन आ सत्राजित अपन पुत्री सत्यभामाक विवाह हुनका सँ कराओल एहि नाटकक गीत राग बलोआर रूपक ताल मे ई पद देखल जाओ –

चललि द्वारकापुरी प्रभु जदूपति।

स्यमन्तक मनि लैया संगे जाम्बवति

....

कह दैत्यारि दास एड़ा आन काम

कृष्णार चरण धरि बोला राम-राम।[40]

एतद् अंकीया नाटकक एहि प्रकारक पदक रचना आसाम मे जे शंकरदेवक संग प्रारम्भ भेल छलैक तकर रूप शनै: शनै: परिवर्तित होइत गेल। दैत्यारि ठाकुरक पश्चात् एहि धारा के जे प्रवाहमान बनेने रहलाह ताहिमे प्रमुख संतकवि मे रूचिदेवसूल जिनक रचना मे शतस्कंध-वध, संत गोपाल जे 'सीता हरण', दुर्वासा भोजन तथा बलि छलन एवं माधव भीष्म निर्यान, सिन्धुरायात्रा सन प्रमुख अंकीया नाटक रचना कयलनि।

एहि अध्यायक समरूपता सँ आसाम मे वैष्णव साहित्यक विकास ब्रजबोली जकर विकास बंगाल मे चैतन्य महाप्रभुक महिमा जे विद्यापतिक पद सँ अतिशय प्रभावित छलाह। विद्यापतिक रचना वृहद् लोक समाजके प्रभावित करैत भक्ति साहित्य कैँ जे जनसामान्य सँ जोड़ि उच्चतम शिखर पर पहुँचाओल जकर अलौकिक शक्ति जन सामान्यके प्रभावित कयलनि कमोवेश संत शंकरदेव कैँ प्रभा बोत्पादक रूपैँ आसाम मे संत साहित्यक विकासक मार्ग प्रशस्त भेलैक।

●●●

संदर्भित ग्रंथ :

1. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य पेज - 3 लेखक पं॰ राजेश्वर झा
2. उत्तरी भारत की संत परंपरा (आचार्य परशुराम चतुर्वेदी Page - 73)
3. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य – पं॰ राजेश्वर झा Page - 154 एवं 155
4. Bengali Language and Literature Page -53, 508
5. ब्रजबुलि साहित्य एवं पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य Page -31 अर्जुन भज्जन नाट
6. Do – Page - 32
7. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य – पं॰ राजेश्वर झा Page -1
8. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य – पं॰ राजेश्वर झा Page -2
9. ब्रजबुलि साहित्य उद्भव एवं विकास, प्रथम अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन दरभंगा, रचना संग्रह प्रथम भाग - पृ॰ 12 जर्नल असम रिसर्च सोसाइटी अंक - 8 भाग 4 ब्रजबुलि लिटरेचर ऑफ असम पृ० 12
10. संत अंक गीता प्रेस Page 207 एवं 208
11. पूर्वांचल वैष्णव साहित्य Page - 46
12. पूर्वांचल वैष्णव साहित्य Page - 47
13. डॉ॰ सुकुमार सेन, हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर पृ॰ 45
14. ब्रजबोली साहित्य -डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा Page 209
15. जर्नल ए० सो० बंगाल अंक-66 (1897) पृष्ठ 317
16. ब्रजबोली साहित्य page-246 प्राप्त – मायाधर मान सिंहा हिस्ट्री ऑफ उड़िया लिटरेचर (1962) 90
17. ब्रजबोली साहित्य – Page-247 डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा।
18. एहि सबहक प्रमाणक लेल प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक दस पाण्डुलिपिक आधार पर प्रबोध चंद्रिका क संपादन कयल जे Annals of the Bhandar Kar oriental Research Institute Vol. XLIV 1963 मे प्रकाशित अछि।

    नोट (एहि प्रसंग डॉ॰ मायाधर मानसिंहा, History of Oriya Literature (1962) Page - 29 एवं राष्ट्र भाषा रजत जयन्ती ग्रंथ (उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा कटक) मे प्रकाशित ओड़िसा मे संस्कृत साहित्य शीर्षक निबंध, पृष्ठ 447 ।

18A. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य पेज –113

19. चैतन्य चरितामृत -2.8 मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य Page - 116
20. उड़ीसा वैष्णव साहित्य परंपरा पोथीक नाम 'मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य। Page-117
21. ब्रजबोली साहित्य डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा Page - 257 एवं मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य पेज 117।
22. ब्रजबोली साहित्य Page 259
23. संत अंक 627 गीता प्रेस Page 73 (तै०उ०2/6/1)
24. ब्रजबोली साहित्य – डा० शैलेन्द्र मोहन झा Page 261 गौर पद तरंगिणी पृ० 75

24A. श्रीश्रीपद रत्नमाला – पृ० 215

25. संत अंक 627 गीता प्रेस Page 205-06
26. मैथिली साहित्यक इतिहास पेज - 168
लेखक - डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीष'
27. B.K.Barua Assamese Literature (page 16-17) Page 16-17
28. ब्रजभाषा एवं ब्रजबुलि साहित्य पृ० 420
29. ब्रजबोली साहित्य – डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा Page - 267
30. विरंचि कुमार बरूआ शंकरदेव ...... सेन्ट ऑफ आसाम। पृ॰ 53 एवं 54 – म०का०पूर्वा० बै०सा० – पं० राजेश्वर झा पेज - 126
31. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य पेज – 129
32. पुराणि असमिया साहित्य पृ०-58 (ब्रजबोली साहित्यक 270 में हि०मै०लि०पृ० 177-178 उद्धृत) संकेत भेटैत अछि)
33. 'अंकीया नाट' Introduction page - IX
34. Assames Literature (P.E.N) Page - 33
35. अंकीयानाट परिशिष्ट - On Dr. S.K. Bhiyan page – 288-289
36. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य - Page 143
37. ब्रजबोली साहित्य Page - 289
38. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य Page 149 एवं 150.
39. जगदीशचन्द्र माथुर, प्राचीन भाषा नाटक संग्रह पृष्ठ 159
40. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य Page 152

●●●

श्रोत-ग्रंथ

1. इण्डियन एन्टिक्वेरी, 1873 पृ० 7
2. विद्यापति पदावली - पृष्ठ - 21
3. अर्जुन भज्जन नाट
4. परसुराम चतुर्वेदी, वैष्णव धर्म पृष्ठ - 48
5. ए० पी० कर्मवारक दि रिलिजन्स ऑफ इंडिया पेज सम्पर्क न०-39
6. चित्रा प्र० शास्त्री चरित्र कोष - पृष्ठ - 139
7. प्रभु दयाल मीतल चैतन्य मत आ ब्रज साहित्य पेज - 75
8. मिथिला तत्व विमर्श पृ० 165
9. डॉ०रामदेव झा मिथिला भारती अंक-2, भाग - 1-4 पृष्ठ 138
10. चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन, पृष्ठ - 297-299
11. एस के ई वैष्णव फेथ एण्ड मुभमेन्ट पृ० 51
12. भागवत सम्प्रदाय पृ० 497
13. विमान विहारी मजुमदार "श्री चैतन्य चरितेर उपादान कोलकाता 1959 ई०) पृष्ठ - 490
14. प्रभुदयाल मीतल चैतन्य मत और ब्रज साहित्य - पृष्ठ - 1
15. रामपूजन तिवारी, ब्रजबुलि साहित्य पृ० 30
16. श्री प्रभात मुखर्जी दि हिस्ट्री ऑफ मेडिएभल वैष्णविज्म इन ओड़िसा पृ० 79
17. राष्ट्रभाषा रजत जयंती अंक मे आर्तवल्लभ महन्ति के ओड़िया साहित्यक विकास क्रम शीर्षक पृ० - 150
18. विद्यापति पदावली - भाग -1 (विहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना)
19. जगदीश चन्द्र माथुर एवं दशरथ ओझा, प्राचीन भाषा नाटक संग्रह।
20. राधाकृष्ण चौधरी, पूर्वांचल भाषा साहित्य एवं संस्कृत।
21. माधवदेव – लेखक – सत्येन्द्रनाथ शर्मा, मैथिली अनुवाद कमलाकान्त भंडारी, प्रकाशक साहित्य अकादमी।
22. मिथिलाक संस्कृति ओर सभ्यता (मैथिली) दरभंगा – लेखक - म० म० उमेश मिश्र
23. दि लच्छवी ऑफ मिथिला एण्ड नेपाल, चौखम्बा प्रकाशन, लेखक - एच० एन० झा
24. विद्यापति काव्यलोक - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार।
25. मैथिली साहित्य विमर्स – गोविन्द झा
26. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन प्रथम खण्ड - डॉ० बीरेन्द्र श्रीवास्तव।
27. बंगभाषा ओ साहित्य – दिनेशचन्द्र सेन, प्रकाशक - गुरूदास चट्टोपाध्याय एण्ड सन्स।

28. वैष्णव-पद-लहरी – दुर्गादास लाहिड़ी (संपादक), प्रकाशक – बंगवासी कार्यालय।

29. श्री श्री गौड़ीय वैष्णव साहित्य – श्री हरिदास, प्रथम संस्करण, 462, चैतन्याब्द, हरिलाल कुटिर श्री धाम, नवद्वीप।

30. श्रीमद्भागवत

31. विष्णुपुराण

32. गोविन्द दासक पदावली – गोविन्द दास

33. चैतन्य चरितामृत – कृष्णदास कपिराज सं० प० श्री नित्यानन्द गोस्वामी, सुलभ लाइब्रेरी 98 न० निबू गोस्वामी लेन कोलकाता।

34. चैतन्य चरितामृत – सं० श्री सुकुमार सेन, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली।

●●●

छठम् अध्याय

भक्ति आन्दोलनक मिथिलाक संत साहित्य पर प्रभाव

अध्यात्मिक चितंन मानव जीवनक अमूल्य निधि बनैत अछि। कोनहुँ देशक लेल अध्यात्मिक आवश्यकता सर्वप्रथम अबैत अछि। जाहिठामक अध्यात्मिक चेतना जतेक सुदृढ़ रहत ताहिठामक अनुशासन तत्संबंधी रीति-रिवाज ओहिठामक पहिचान बनैत छैक। मिथिलाक धार्मिक आस्था, सामाजिक अध्यात्मिक चेतना जे रहलैक से अन्यान्य प्रदेश सँ अपन एकटा भिन्न प्रकारक धार्मिक परंपरागत सनातनी - असनातनी न्याय-मिमांसाक संग समकालीन सामाजिक धार्मिक अंत: संबंध कें विश्लेषण करैत अछि। मिथिला अत्यंत प्राचीन कालहि सँ लोकजीवनक समन्वयक भावनासँ दिग्दर्शन करवैत आयल अछि। एतय संत-परंपराक अन्तर्गत सम्मिलित करय वला मिथिला मे संतक चुनाव आ फेर हुनक साहित्य तऽ एहि प्रसंग ``भक्ति आन्दोलन``क आरंभ इतिहासक मध्यकाल सँ जे लेल गेल अछि। एतुका से मूल धर्म तऽ सनातनी रहल अछि कलांतर मे इस्लाम, इसाई, यहूदी, बौध, जैन आदिक संग भारतीय परंपरामे राज-धर्म, पितृधर्म, शिष्य-धर्म संग समूहगत आस्था धर्मक रूप ग्रहण करैत चलि आबि रहल अछि आ एतहि सँ संत भगवानक स्वरूपक दर्शन करवा लय ललायित होइत छथि। हुनका पर कोनो आन्दोलनक प्रभाव नहि पड़ैत छनि ओ तऽ एकहिटा मंत्र जनैत छथि जे ``हरिके भजता से हरि के हेताह``। मुदा समाज देश काल परिस्थिति के देखैत कौखन कऽ नव-नव उधबा उठैत रहैत छैक। ताहि परिप्रेक्ष्य मे ``भक्ति आन्दोलनक`` स्पष्ट रूपमे कोन तरहक प्रभाव मिथिलाक संत साहित्य पर पड़लैक। से हमर चिंतन मैथिली संत साहित्यक सूक्ष्म अध्ययनमे भारतीय इतिहासक मध्यकालीन कालमे आयल ``भक्तिक आंदोलनके जे अध्यात्मिक चेतना तकर प्रभावक प्रसंग उठल प्रश्नक उत्तर ताकि रहल अछि? भारतमे जे ``भक्ति आंदोलन`` चलल ताहि प्रसंग मुख्य धारणा सामंतवादक पतन आ हिन्दू धर्ममे आयल गतिरोध अध्यात्मिक अद्य:पतनक लक्षण जे देखायल चौदहवीं सँ सतरहवीं शताब्दी मे पतनोन्मुख धर्म के जे नवजीवन देबाक ब्यग्रतापूर्ण प्रयास भेल से सामाजिक आर्थिक शक्तिक बीच एकटा नब धार्मिक अवधारणा कें गति प्रदान कयल गेल। निस्संदेह एहि प्रकारक सुधार आंदोलनक (Religious Movement) चर्चा विश्वभरि मे भेल रहैक। कि एहि सुधार आंदोलनसँ मिथिला आ मिथिलाक संत साहित्य अबंच रहलैक? तकर विमर्श मैथिली संत साहित्यक दृष्टि देखबाक प्रयास कयल जा रहल अछि। एहि प्रसंगमे कोन प्रश्न उठतै जे ई एकटा सामाजिक राजनीतिक आंदोलन छलैक, ताहि परिप्रेक्ष्यमे महान धार्मिक विचारक विद्वान एंगेल्स लिखने छथि ``सामाजिक आ राजनीतिक आंदोलन के धार्मिक जामा पहिरेबाक प्रयास भेल आम जनताक भावनाकें धर्मक चारा दय आर प्रभावशाली बनेबाक आवश्यक छलैक।``

वस्तुत: मिथिला धरातल पर अध्यात्मिक चेतना बड़ प्रखर। मिथिला अदौकाल सँ विद्वानक भूमि रहल अछि; धार्मिक परंपरा, धर्म-मिमांसाक संग, सनातनी असनातनी भारतीय परंपराक

राज-धर्म, पितृ-धर्म, गुरु-धर्म, शिष्य-धर्म आदिक समूहगत आस्थाक संग धर्म शब्दक व्यत्युपत्ति करैत कही जे ``धार्येत इति धर्म: कहवाक आशय जे धारण कयल जाय सएह धर्म होइछ से खूब निष्ठापूर्वक मिथिलाक धरती पर प्रचलित रहल अछि।

सनातम धर्म संत - हम सनातन धर्मक परिभाषा आदि पर नहि जायव हमर विषय एहिसँ उपर उठल अछि ताहि अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट होइछ जे गुप्तयुगीन विष्णुपूजा-अर्चना पद्धति मिथिलाक आम ओ लोकजीवनक संग रचि बसि गेल छलैक। मिथिलामे अवतार वादक आस्थाक प्रचलन रहल छैक तँ यदि भक्ति आन्दोलन सँ प्रभावितक प्रश्नक उत्तर सरासर निराधार तऽ नहि कहबै मुदा एहिठाम अदौसँ एकटा विधान रहल अछि। शंकराचार्य स्वयं मिथिला आयल छलाह ओहि कालमे मिथिलाक आम जनमे धार्मिक आस्थाक जे धारणा ``ब्रह्म सत्यम`` जगन्मिथ्या जीवौ ब्रह्मबैनापर। कहवाक आशय पुण्य आ पाप मनुख के ताधरि हरान करैत छैक जाधरि जगतक संग सम्बन्ध रखने रहैत अछि। मोक्षक प्राप्तिक जे धारणा मिथिलाक संत मे ईश्वर भक्तिक जे धारणा से वुझल जाओ ``मनसा - वाचा कर्मणा`` । तीनूकें निरूपित करैत अछि आशय मिथिलाक विस्तृत साहित्यिक अध्ययन सँ धार्मिक आस्थाक प्रसंग कतिपय प्रश्न उठैछ मुदा विषयगत प्रसंग भक्ति आंदोलनक मूल् आधार भगवान विष्णु वा हुनक अवतार राम-कृष्णाक भक्तिक प्रसंग अछि। किंतु शुद्ध रूपें धार्मिक आंदोलन नहि छलैक। मुदा वैष्णव सिद्धान्तमे मूलत: आदर्शवादी अभिव्यक्तिमे राष्ट्रीय भाषाक ओकर साहित्यिक अभिवृद्धिक मार्ग प्रशस्त भेलैक। संत भगवानक उपासनामे लागल रहैत छथि जे संतक साधना थिकैक। संतक जे भावना सच्चिदानन्दक भावना होइत अछि. मिथिलाक जे विभिन्न मार्गक पंथक से खाहें सगुण होउथ वा निर्गुण, शैव, शाक्त-वैष्णव, ज्ञान वैराग्यक महत्व पर प्राय: कविगण अपन-अपन रचनाक अभिव्यक्ति भेदहुमे अभेद सत्ताके स्वीकार केने छथि - महाकवि लिखैत छथि -

कजल रूप तुआ काली कहिय

उजल रूप तुआ वाणी

रविममंडल पर चंडा कहिय

गंगा कहिय पानी।

अस्तु भक्ति आंदोलन सबहिक मिथिलामे एहि वास्तो प्रभाव विशेष नहि पड़लैक ताकर मुख्य कारण मिथिला जे ब्रह्म विद्या मे विश्वास रखैत अछि। ``एक सत बहुधा विप्रा वदंति`` भक्ति आंदोलनक प्रभाव महाराष्ट्र ओ दक्षिण भारतक संग अन्यान्य प्रदेशमे जे भेल होउक मुदा मिथिलाक अंतर्गत मैथिली संत साहित्यक ``श्रौत ज्ञान वाक्यक स्पष्ट व्याख्या केलक अछि। जयदेव आओर विद्यापतिक अपन सरस गीतक माध्यम सँ राधा ओ कृष्णक प्रणय लीला कें आ ओही कथा वस्तु कें पश्चात् विष्णुपुरी रघुपति उपाध्याय, लक्ष्मीनाथ गोसाई, रोहिणीदत्त गोसाइ, गोविन्द दास कमला दत्त सँ होइत संत हरिकिंकरदास, परमानन्द दास, जयदेव स्वामी रामस्नेहीदास, अपूछदास, सुदर्शनदास, गरिश्वरदास, पंचमदास, सेवादास, लालमित्र, मगंलदास, संत -

स्नेहलता, मोदलता, गोसाइं सत्यनारायण झा, संत मेहीं दास आदिक संग मिथिला मैथिलीक संत साहित्यक उद्गाता रहलाह अछि। कहवाक आशय मिथिलाक श्रौत-ज्ञान वाक्य स्पष्ट व्याख्या ज्ञान-वैराग्य एवं निर्वेदक दिव्यता ओ भाव विभूति विभिन्न संतक विनय-पद ओ शांत-पद देखल जा सकैछ संत स्नेहलताक रचनामे मिथिला भूमिक विशिष्टताक प्रसंग जे लिखलनि ताहिसँ स्पष्ट अछि जे भक्ति आन्दोलनक प्रभाव नहि के बराबर पड़ल अछि जेना :-

धन्य अनन्य हमर थिक मिथिला अकथ कथा

महातम कहल ने जाय।

विधि हरि हर सुर नर मुनि किन्नर जकर

प्रशंसा करथि अघाय - ॥

जतय आबि जग जननि जानकी जनम लेल

त्रिभुवन यश छाय

जतय लषण ओ रामचन्द्रजी पैदल अयला

कष्ट उठाय ॥[8]

``भक्ति आन्दोलनक`` प्रसंगे कही तऽ मिथिलाक महात्म्यक अत्यंत मनोहर ओ पृथ्वी पर आत्मगौरव सँ लबालब भरल सनातनी सँ अराध्यक धाम थिकीह मिथिला। हिन्दी संत साहित्यक मध्य मात्र निर्गुण परंपरावादी के संत बुझवाक जे किछु भूल केने छथि जखनकि एकर समाहार रामविलास शर्माक आशय, सगुणपंथी परंपराके कवि लोकनि सेहो संत परंपराक अनुयायी होइत छथि। आशय विद्वान निबंधकार पूज्य रामविलास शर्मा जीक नजरिमे त्यागी महात्माक अर्थ लेनाइ उचित नहि, संत ओहो नहि जे हिन्दू महात्मा बोध करबैत अछि वा त्यागी बनि संत शब्दक संग अपना के जोड़ैत छैक। हिनकर कहब छनि संतमे स्त्री, पुरुष, संन्यासी आ गृहस्थ, हिन्दू-मुसलमान-इसाई सगुणवादी, निर्गुणवादी सब अवैत छथि। कहब छनि संतक साहित्यक विशिष्टता लोकधर्मक संस्थापक रूपें होइत छनि से हिन्दूधर्म, इस्लामधर्म, कर्मकाण्डी, कट्टर आचार-विचार, पुजारी ओ मोलवी आदिक रीति-नीतिक विरुद्ध संत मूलत: प्रेमक आधार पर मुक्ति आ ईश्वरक प्राप्तिक पक्षमे रहैत छथि।[9] संतक आम धारणा वा कही हुनक दृष्टिकोण एहि संसार के आसार बुझैत छथि। संत आ संतक भाषा लोकजन लेल होइत अछि। एतय हमर विषय प्रविद्ध जे ``भक्ति आंदोलनक फलस्वरूप मिथिलाक संत साहित्य पर प्रभाव`` कतेक ओ कोना पड़ल, ताहि परिवेक्ष्यमे हिन्दीक कतिपय विद्वान एहि प्रसंगमे कहैत छथि जे दक्षिणसँ आरंभ भेल ``भक्ति आंदोलनक प्रभाव`` उत्तर भारत मे पड़लैक। जे हो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जीक विचारक खंडन करैत आचार्य द्विवेदजी जीक भक्ति आंदोलनक जे आचार्य ग्रियर्सन स्वाभाविक मानलनि अछि। जखनकि राम विलाशशर्मा भक्ति आंदोलन के विराट जनवादी आन्दोलन कहलनि अछि। जकरा हम भक्ति आंदोलन के नाम सँ जनैत छी। से योगी आ वामाचारी सिद्धक प्रेरणाक मोहताज नहि छलैक जे सांस्कृतिक आंदोलन योग बनाम भक्तिक संघर्षक फल छलैक।[10] जखनकि मैथिली संत साहित्य वा अध्यात्म ओ धर्म

आदिक अध्ययनसँ आ ओकर विवेचनाक पश्चात् मैथिली साहित्यक इतिहासवेत्ता पं. राजेश्वर झा, डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, सुरेन्द्र झा `सुमन` - आचार्य प्रो. डॉ. रामदेव झा आदि कतौक विद्वान लिखैत छथि ``जे मिथिलामे अध्यात्म चिंतन आमजनक भक्ति भावना संग सतत समन्वयवादी रहल अछि।`` जखनकि भक्ति आदोंलनक शुरुआत दक्षिणा भारतसँ मानल जाइत छैक। मुदा आचार्य रामदेवबाबू लिखैत छथि - ``धार्मिक ओ सांस्कृतिक परंपरा मिथिलामे अदौकाल सँ जकरा सीमावद्ध नहि कयल जा सकैत अछि।`` मैथिली भक्ति काव्यक धार्मिक आन्दोलन अथवा सम्प्रदाय विशेषक दार्शनिक अभिव्यक्तिक परिणति नहि भऽ कऽ, आराध्यक प्रति सहज प्रीति, श्रद्धा, आस्था आ विश्वासक उपज मिथिलावासीमे शिव, शक्ति, कृष्ण, राम एवं अन्य देवी-देवता सभ एवं हुनक अन्यान्य रूप सभमे समान रूपसँ भक्ति-भावना रहैत अयलनि अछि।[*] मैथिली संत काव्य मुख्यरूप सँ अवतारमे (``रामावतार एवं कृष्णावतार`क``) महिमा पर खूब रचना कयल गेल अछि। ओना मिथिला वासीक भक्त आंदोलनक कोनोटा प्रभाव नहि पड़ल छैक जकर खंडन करैत आचार्य डॉ. रामदेव झा लिखैत छथि -``मिथिला वासीक धार्मिक आस्था पर विचार कयला उत्तर किछु एहेन विशेषताक परिचय भेटैत अछि जकर अन्वेषण मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराक भक्ति काव्यमे धार्मिक आन्दोलन अथवा सम्प्रदायक विशेषकऽ दार्शनिक अभिव्यक्तिक परिणति नहि भऽ कऽ, आराध्यक प्रति सहज प्रीति, श्रद्धा आस्था आ विश्वासक उपजैत थिक। मिथिलाक लोकमे शिव, शक्ति, कृष्ण, राम एवं अन्य देवी-देवता सभ मे हुनक अन्यान्य रुप सभमे समान रूपसँ भक्ति-भावना रहैत अयलनि अछि।``

मैथिली संत काव्यक रचैता लोकनिमे बहुत थोड़ जे कोनो विशेष देवी-देवता मात्र मे आस्था रखलनि अछि। ओ लोकनि एक दिश जँ हर-गौरीक गीत, तऽ भगवतीक स्तुति आ राधा-कृष्ण ओ राम-सीताक प्रति सेहो हुनक समर्पित भाव रहैत छनि। मिथिलाक संत विष्णुपुरी पद सबके अवलोकन कयल जाय - कृष्ण प्रेमक प्रसंग ई पद कतेक भावुकतासँ भड़ल अछि-

प्रथम बएस जत उपजल नेह।
एक परान एक जनि देह।
तइसन पेम जदि बिसरह मोर
काठहु चाहि कठि(न) हिअ तोर।।ध्रुव।।
ए प्रभु ठाकुर न तेजह नारि
तोह बिनु लागब कओन ओहारि
सुपुरुष चिन्हिअ एहे परिनाम
जैसन प्रथम तेसन अवसान।
टुटल पेम नहि लाग एक ठाम
विष्णुपुरी कह बुझसि विराम।।

एहि उपर्युक्त पदमे कृष्णक प्रेम आधार बनाय मानवीय प्रेम कें जागृत कय प्रेमक जे भाव ओ मांसलेटा नहि अध्यात्मक सतत संग रहैत छैक नीक पुरुष वएह कहबैत अछि जे सतत एक समान बनल रहैत छैक। आब हिनकहि दोसर पद -

हे सखि हे सखि कहियो न जाहे।

नन्दक अङ्गना कइसन उछाहे।

नन्दक नन्दन त्रिभुवन सारे।

यशोदा पाओल तनओ कुमारे

मन भेल हरखित देखि तनुरूपे

जनि भेल उदित दीप अंधकूपे ।।

आसलता पल्लव जनि देला

मेदिनी सुरतरु आंकुर भेला

विष्णुपुरी कह सुनह गोआरी

परम जोति अवतरल मुरारी।।

विष्णुपुरी एतय श्रीकृष्ण बालरूपक वर्णन कयलनि अछि तऽ दोसर ठाम शिव विषयक पद अवलोकन करी ध्यान देवाक छैक संत विष्णुपुरीक अध्ययन आचार्य रामदेव झा एहि पद सबहक सृजन परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत नामक निबंध जे मिथिला भारती अंक-2, भाग-1-4 सँ प्रकाशित भेल अछि।' विष्णुपुरी पर बृहद प्रकाश देने छथि।

भल शिव शंकर मोरा

बुझल जतीपन तोरा

अति गोरा लो ॥

तपोबन अछल तपसी

थिकह सकल गुण रसी

शिरशशी लो।।

जपतप सब दुर गेला

रमणी रङ्ग मन देला

ई कि भेला लो।।

कपट बोलथि मधुवानी

हरलहिन मोर भवानी

अति ज्ञानी लो।।
कांधहि रूण्डेरि माला
पहिरण बाघेरि छाला
फणि माला लो।।
विष्णुपुरी शिवदासे
परिपूरथु मोर आसे
दिसबासे लो।।

`मिथिलामे भक्ति` आंदोलनक प्रभाव प्राय: नहिए पड़लैक तकर मुख्य कारण छैक वेदान्तक जे प्रक्रिया रहल अछि आ बौद्ध साहित्यक प्रचार-प्रसार पर उपनिषदकालमे मिथिलाक सम्पूर्ण भाव ओकरे ब्राह्मण काल कहल जाइत अछि।' सामाजिक तत्वक बीजरोपण एहि कालमे भेलैक। मिथिलाक पड़ोसिये वैशाली मे जखन बौद्ध धर्म ओ सहजताक बोध करा रहल छलाह तखन मिथिलाक जे प्रस्तोता भेल छलथिन्ह तिनकामे हम वएह संत भाव देखै छी - जे ``देह संसार मे आ मोन महाप्रभू रारकारमे।`` रो उद्योतकर, मंडन, वाचरपति, जनक, याज्ञवल्क्य आदि जे अपन भाव सँ लोक जनके प्रभावित कयलनि। जनक जन के द्योतक तैं जकर राजा विदेह तखन ओहि धरतीक धारणा मूल तत्व संत सँ अभिहित होइत अछि।' संतक प्रसंग मानव हृदय परमात्मासँ भेंट करवाक लेल व्याकुल। संत अंत:करणक चरम अभिलाषाकें जे अभिव्यक्ति दैत छथि ओ भेल संत काव्य'' से मिथिलाक धरती पर जाहि भक्ति आंदोलनक प्रभावक मूल आधा भगवान विष्णु के मानल गेल अछि अवतारवाद जे राम-कृष्ण से भक्ति आंदोलनक प्रगतिशील पथ पर अग्रसर करब छलैक। से मिथिलाक एकटा वर्णन संत स्नेहलताक पद सँ अनुभूति करी -

राम राम कहि उठल विभीषण
सुमिरन कयलनि हरी-हरी
साधु जानि हनुमान मगन भेल
चलल विप्र के रूप धरी
हरि मंदिर मे राम लिखल छल
आंगन मे तुलसी मजरी
....
तरु पल्लव सँ खसल अचानक
रामचन्द्र केर कर मुदरी
स्नेहलता सिय चकित विलोकथि
युगल नयनमे नोर भरी।।''

अस्तु मिथिलाक सनातन धर्म मे भक्ति आंदोलनक जे भारतीय जनमानस मे एकटा सामाजिक क्रांति छलैक ताहि प्रसंग कही हमर अध्ययन अन्वेषणक प्रस्तुत अध्याय ``भक्ति आंदोलन`क मैथिली संत साहित्य पर प्रभाव ``एहि प्रसंग कही भारत नाना प्रकारक भाषाक सुरम्य उद्यान अछि। हिन्दीक आचार्य शुक्ल जी लिखैत छथि जे ``भक्तिक जे सोह दक्षिण सँ शनैः शनै उतरक दिशि बढ़ल जे रामानुजाचार्य शास्त्रीय पद्धतिसँ जाहि सँ सगुण भक्ति के निरूपण कयल जाइत छल जकरा दिशि जनता आकर्षित होइत चलल जा रहल छलै।" कहवाक आशय धर्मक प्रवाह कर्म, ज्ञान ओ भक्ति तीनूक धारसँ बहैत सामंजस्य ओ धर्मक पूर्ण सजीवता समाजमे स्थापित करैत अछि। जकरा कालदर्शी भक्त जन जनताक हृदयकें सम्हारैत हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई आदि-आदि धर्म संप्रदायक भक्तजनमे संत हृदयक विकास होइत गेल आ जनताक दबल भक्तिक भावनाके आस्थाक दिशि बढ़बैत गेलाह। मुदा हिन्दी साहित्यक कतिपय विद्वान संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण मात्र निर्गुणिया संत कबीर सँ तत्यपर्य बनबैत रहलाह जे संत साहित्यक विमर्श के सिमित करैत अछि। मिथिलाक अन्तर्गत एहि भक्ति आंदोलनक केनो टा प्रभाव नहि देखल गेल तकर प्रसंग आचार्य द्विवेदी एहि कथन सँ अदृश्य रूपें स्वीकार्य छनि जे ``मिथिलाक धार्मिक संत ओ अध्यात्मिक भाव भिन्न छलनि ओ लिखैत छथि भक्ति आंदोलनक मादे- अनुदित शब्दमे - नाथ सिद्ध ओ बौद्ध धर्मक उत्तर भारत के पंडित वर्ग पर केहेन प्रतिक्रिया भेलनि? तकर प्रतिउत्तर करैत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के मत के आचार्य सर जार्ज ग्रियर्सन एवं प्रो. हेवेल स्वीकार करैत छथि जे ``शास्त्रज्ञ विद्वान पर सिद्ध, योगी बानी आदिक कोनो असर नहि पड़लनि, एम्हर-ओम्हर पंडितक शास्त्रार्थ आ दार्शनिकक खंडन - मंडन सँ ग्रंथ लिखल जाइत छलैक। पुनः आगू लिखैत छथि शंकर, कुमारिल भट्ट आ उदयन आदि लोकनि वेदान्तक ओ मिमांसाक दार्शनिक पंडित जिनक विद्वता ओ दार्शनिक अध्यात्मिक विचार सँ सम्पूर्ण भारतवर्षमे बौद्ध धर्मक निर्वासन ओ निरसनक मूल कारण बनलैक, बौधक तत्वबाद सँ आम भारतीय जनताक कोन आवश्यकता, एहिठाम भक्तिवाद सँ उत्साहित जनता ईश्वरीय आस्थाक केन्द्रविन्दु बनैत छलैक।`` उपर्युक्त आचार्य लोकनि (रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य ग्रियर्सन, प्रो. हेवेल आदि विद्वान खुलि कऽ नहि मुदा हृदयक भीतर मिथिलाक अध्यात्मिक ओ संतकीय पृष्ठिभूमि कें स्वीकार कयलनि अछि। कारण शंकर, कुमारिलभट्ट, मंडन, उदयन आदि मिथिलाक छलाह आ भक्ति आंदोलन मार्फत हिनक विचार मिथिलाक संतकीय भाव आ साहित्य के अपन गरिमायुक्त ओ सम्पूर्ण भारतक बीच जे ``भक्ति आंदोलन`` आवश्यकता बुझेलैक तकर पृष्ठिभूमि मे मिथिलाक अवधारणा, अपन नेतृत्व प्रदान करैत सन प्रतीत होइत अछि, प्रभावित नहि। जाहि क्राँतिक उत्थान दक्षिण सँ मानल जाइत अछि, से कही एकर उत्थानकर्त्ता मिथिला छलैक। मैथिली भाषाक सब विद्वान मर्मज्ञ द्वारा आचार्य प्रो. डॉ. रामदेव झाक कथन के परिपुष्टि कय रहल अछि। भारतीय साहित्यक लेल ई संत तत्व सौन्दर्य माधुर्यक अभिव्यक्तिमे अद्‌भुत सामर्थ्य रहैत अछि, भक्ति तत्वक एहि सूत्रके पकड़ि कऽ भारतीय काव्य-श्रष्टा लोकनि मानव मानसक सूक्ष्मतम् भावक शब्दार्थक माध्यम सँ व्यक्त करैत रहला अछि।"

मिथिलाक `भक्ति तत्व` कही तऽ वएह `संत तत्व` मानल जाइत अछि। राजा जनकके विदेह कहल जाइत अछि। कहवाक आशय मिथिलाक जे भक्तिक मार्मिकता केने बिना संत आ संत साहित्य के बुझब संभव नहि। अस्तु मिथिलाक संत साहित्यके विशद अध्ययन नहि भेल से तऽ हमरा देखल अछि। कतेको संत रचनाकार ईश्वर पर ध्यान रखैत गामे-गाम भिक्षाटन करैत मुदा अपन परिचय नामपर किछु नहि छोड़लनि। समाज अपन स्वार्थमे पीड़ित हुनका नगण्य ओ घृणाक भाव दैत रहलनि, जे एक प्रकारक हमरा समाजक नाकारात्मक पक्ष अछि। जखन आब ओहिमे कतेको मैथिल अपनहि रचित पद के गबैत सनातन धर्मी संत छलाह।

मैथिल संत साहित्य के लौकिक आ परलौकिक धारणा आचार्य रामदेव झा जे मैथिली संत साहित्यक विशद अन्वेषक छथि, श्रृंगार ओ भक्तिकें जे फराक केलनि से लौकिक श्रृंगार परलौकिकमे भक्ति काव्य कहल जाइत अछि। अही भक्ति पक्षक काव्यमे तीनटा प्रमुख अराध्यदेव रहलाह अछि (राम-कृष्णमे दशावतार रूपक आ विष्णुक भिन्न-भिन्न अवतारमे भक्ति आंदोलनक वहरहाल भक्तिक आंदोलनक क्रममे संतक द्वारा वैष्णव संप्रदायक भक्ति जाहिमे राम-कृष्ण माने वैष्णव भाव अनुरक्तिमे संत साहित्यक उपजीब्य बना ``आत्मानं विद्धि`` - आत्मा के बुझियौ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा प्रसंग संत साहित्यक जे अवधारणा सनातन धर्मक अन्तर्गत श्रीमद्‌भगवद्‌गीतामे स्पष्ट अछि जे क्षर आ अक्षर पुरुषक चर्चा कयल गेल छैक।`` एकर व्याख्या जड़ आ चेतन सँ लगेवाक चाही हमर कहवाक आशय मिथिलाक संत सतत सगुणोपासनाक संग तादात्म सम्बन्ध बना कृष्णकें त्रिगुणमयी धारासँ जोड़बाक प्रयास (सत, रज, तम) कयल गेल अछि। मिथिला आ मैथिलीक अध्यात्म साहित्यक अध्ययन सँ मात्र एकटा श्रीकृष्णक आधार बनाय मिथिला संत ब्रह्म, जीव, माया जगतक आधार बना जे रचना कयलनि अछि, तकरा सम्पूर्ण रूपें मिथिलावासी वैदिक सनातन धर्मी संत लोकनिमे कोनो विशेष संप्रदाय मे बान्हब वा कोनो अन्यान्य सिद्धान्त के स्वीकार कय कोनहुँ अन्यत्र सम्प्रदाय आदिक विकास करबा सं बेसी ओ सदैव समन्वयबादी रहलाह अछि। स्वयं महाकवि विद्यापति कें अध्ययन ओ अनुशीलन कयल तिनका छद्म स्वार्थी सांसारिक जीवनमे मिथिलाक प्रति दोयम भाव रखनिहार सब, संत नहि मानैत छथि। जखन कि हुनक एक-एक रचनामे कृष्णक भावके दर्शित एना कराओल गेल अछि जे कृष्णकें ओ सर्वश्व मानलनि अछि ओ पंचोदेवोपासना ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या मानि, स्वीकार्य कयलनि अछि। गौड़ीय आचार्य लोकनि विद्यापतिक रचनाके द्वारा महान स्फूर्ति प्राप्त करैत हिनका सँ अनुप्राणित जे सब भेलाह से संत मुदा साहित्यक समाजक बीच हिनक पदके गावि चैतन्यमहाप्रभू मुर्च्छित होइत छलाह। आशय राधा-कृष्णाक पदक मार्मिकता वैष्णव भक्तिभाव (1360 सँ 1440 ई. धरि) सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र ततेक प्रभावित भेल जे एतय महलसँ लय पर्णकूटी धरिमे कतहु कोनो धर्म सम्प्रदाय वा आम जनतामे धर्मक प्रति अन्यान्य भाव नहि छलैक। विद्वान आचार्य साहित्यकार पंडित चन्द्रनाथ मिश्र `अमर` लिखैत छथि - जे ``मिथिला पंचोदेव उपासना मे सततलीन अहिठाम संत, मुनि, महात्मा, ऋषि आमजन संत रूप वेशधारी महाकवि विद्यापतिक गीतक कीर्तन कय अनुष्ठान करैत छलाह।`` पुनः आगू लिखैत छथि जे एहिठाम सनातन धर्मी संत सहित आमजनमे कोनहु अनुचित कृतमे राम ! राम ! आ कोनहुँ

अविश्वसनीय धारणा पर जनताहि दाता दिनकर दिनानाथ, सबटा जनथिन्ह `उगलहे पर छोड़ैत छियैन्हि।" अस्तु अहिठाम विद्यापति के संत नहि मानव विद्वानक नाकारात्मक पक्षकें उजागर करैत अछि। असलमे भक्ति आन्दोलनक प्रस्तोता तऽ महाकवियें छलाह।

भक्ति आंदोलन समग्र रूपें राष्ट्र अर्थात् भारतवर्षमे युगांतकारी घटनाक रूपें रेखांकित कयल जाइत अछि। मुदा मिथिलाक जन-साधारणक भावना अध्यात्म संत साहित्यक मादे कही तऽ बहुतरास सिद्ध लोकनिक नाम अबैत अछि। ज्योतिरीश्वक बर्णरत्नाकरमे ढेंढसक चर्चा हठयोग प्रदीपकामे सेहो भेल अछि एकटा सिद्ध छलाह जे सहजज्ञानी छलाह।" एतय हमर उद्धृत करवाक आशय मिथिलाक सनातनी धारणा समग्र रूपें आम जनताक मानवीय चेतनाक प्रतीक रहल अछि। एतवे नहि मिथिलाक मध्यकाल कतेक सशक्त छलैक जे सूरदास, मीरा, तुलसीदास, विद्यापतिकें अपन आदर्श माललनि अछि।" मिथिलाक परंपरामे जखनसँ महाकविक पदार्पण भेलैक तहियासँ धर्मक जगतमे आमूल चूल परिवर्तन भेलैक विद्यापतिक गीतमे-भजनमे ओ भक्ति सरसता सानल रहैत छलैक जकरा प्रसंगमे कहल जाइत छैक जे महाकवि विद्यापतिक श्रृंगार-साधना खाली नहि गेल। बल्कि मानवीय सौन्दर्य आ विशेषतः नारी-सौन्दर्य के सिंधु मे निरंतर आलोड़न करयवला ई कवि प्रेमक नाना आवर्त रूप तरंग आ तन्मात्राक अनुभव सिद्ध साक्षात्कार प्राप्त कयल अछि। भावनाक अतल समाधिमे डूबि कऽ ओ जाहि मोहन रूपक रूपरेखा प्रस्तुत केलनि अछि ओ कृष्णाक भावनात्मक स्वरूप कें जेना उभरिकऽ राखि देलनि अछि।" से हुनकहि एहि पदसँ अनुभव कयल जाय :-

सखि कि पुछसि अनुभव मोय
सेहो पिरीत अनुराग बखानिए
तिले-तिले नूतन हेय।।
जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल-॥
सेहो मधुबोल श्रवनहि सूनल श्रुतिपथ परस न भेल-।।

एहि उपर्युक्त पाँतीमे रूप आ शब्दक नीचा आर पाँती देखू -

कल मधुजामिनि रसभ गमाओल न बूझल कइसन केल-।।
लाख लाख जुग हिय हिय राखल तइयो हिय जुड़ल न गेल -॥
कत विदग्ध जन रस अनुमोदई
अनुभव काहु न पेख - ॥
विद्यापति कह प्राण जुड़ाएत लाखे न मिलल एक ॥

भारतीय संत साहित्यक मध्य विद्यापतिक काव्यक पंचत्मात्राक सर्वाधिक संगत कयल गेल अछि। गौड़ीय सम्प्रदाय विद्यापतिक पदावलीसँ स्फूर्ति प्राप्त करैत अछि। चैतन्यदेव गौड़ीय सम्प्रदायक आचार्य सदृश से संतक भाव हुनका देखल गेल मुदा विद्यापति मैथिल छला से कोनो

षड्यंत्र अछि से भक्ति आंदोलन के जे दक्षिण सँ विद्वान आरंभ मानैत छथि, यदि सहृदयी बनि अध्ययन ओ अनुशीलन होइत तऽ मैथिली संत साहित्यक खास कऽ सनातन धर्मी ज रचना क्रम आ ताहिमे पूर्वोक्त ओ लोककाव्य मे नायक आ नायिकाक रूपें श्री कृष्ण आ राधा मूलत: पुराणसँ लेल गेल छथि जे प्रेमक श्रृंगारदेव भक्ति कविक भावमे श्रृंगार सरिताक मध्य भक्ति कृष्ण काव्य उन्नतिक शीर्ष पर मंदिर सन प्रतीत होइत अछि।[*] एहिठाम मानवताक चेतना आनंद विभोर भय उच्च-नीच, धनिक-गरीव, ब्राह्मण-शुद्र, वैश्य-राजपूत आदिक समाहार भऽ जाइत अछि। संत साहित्यक जे विशिष्टता सबसँ उपर मानवीय एकटा जाति संसारमे अछि तक चरितार्थ भेल अछि। पुन: कविक परवर्ती जे काव्यकार भेलाह सेहो पद चिन्ह पर चलैत मैथिली संत साहित्यक भंडार कें भड़ैत गेलाह, आ भक्ति आंदोलन आदि प्रसंगमे मैथिलमे लेसमात्र अनुभवो नहि रहनि ओ समाजक बीच घूमि-फूरि कीर्तन-भजन करैत समाजक मार्ग दर्शन करैत छलाह।

भारतीय भक्तिकाव्यक ओ संतकीय भावसँ परिपुरित भाव कें मिथिला आ मैथिली संत साहित्यक उपर कहीं सनातनी संत उपर कोनो प्रभाव नहि पड़ल छलैक मुदा मध्यकालीन समयमे मुसलमान राजाक प्रभाव मे मिथिला सेहो छलैक। मुदा मिथिलाक अध्यात्मिकताकें सर्वश्रेष्ठ भूमि आत्मज्ञानी ज्ञानकाण्डक सर्वश्रेष्ट मार्ग प्रवर्तक श्री शंकराचार्य सेहो एहिभूमिके नमन कयने छथि।[*] मिथिलाक अध्यात्मिकताकें सिद्ध-प्रसिद्ध स्मृतिकार याज्ञवल्क्य परम धर्मके निरूपित करैत छथि -

`अयं तु परमो धर्मो यद्योगेनात्मदर्शनम्`[*] आशय संतक जे भाव ओहि ज्ञानपीठ संस्कृतपीठ प्राचीन मिथिलाक प्रभाव परंपरासँ आधुनिक मिथिला ओ भाषा-साहित्य मे ब्रह्म विद्या ब्रह्मास्वादसहोदर: रसानुभूति साधनिका काव्यकलामे मिथिलाक संत साहित्य पर विचार कयला संता वहुविध पंचोदेवोपसानाक संग विभिन्न मार्गक पथिक लेल उपर्युक्त स्थान मिथिला वनल अछि ।

विभिन्न सम्प्रदायगत निर्गुण-सगुण, साकार-निराकार, शैव-शाक्त-वैष्णव मैथिलगण भेदहुमे अभेद ओ ज्ञान वैराग्य महत्वक अपन-अपन रचना सँ जे निर्वेदक दिव्यता देखलनि ताहिसँ भावाभिभूति भय ओ एतय सँ अपनहि शंकराचार्य प्रभावित छलाह। आशय भक्ति आन्दोलनक जे भाव संत गोविन्ददास जे संत भावमे गुरु कृपाक वर्णन कयल अछि -

भजहु रे मन नन्दनन्दन अभय चरणारविन्द्र।

दुलभ मानुष जनम सत्संग तरह ए भवसिन्धु।।

महाकविक रचनाक पश्चात् गोविन्ददासक श्रृंगार रचना भजनक रूपमे परिणत अछि हिनक पदावली (श्रृंगार भजनवली) मे श्रृंगार विशेषण भजन-भक्ति विशेष रूपमे हिनक पदकें सुसंगत बनबैत अछि। गोविन्द दासक भक्तिभावना दास्य भावक भक्तिशास्त्रक अन्तर्गत भागवत धर्मक अनुरूप वैधी भक्तिक व्याख्याता छथि।[*]

उपर्युक्त कथनक परिप्रेक्ष्य मे कहवाक आशय अछि जे मध्यकालीन भारतमे मिथिलाक संत साहित्यमे ब्राह्मणेत्तर ब्राह्मणक इतर समाजमे दशनामी संन्यासी शंकराचार्यक उद्देश्य बात उठैत अछि। उन्नीसवीं शताब्दी मे फ्रांसिस बुकनन 1809-10 ई.क पूर्णिया रिपोर्टमे मिथिलाक ब्राह्मणेत्तर

समुदायमे बेसी शैबमतावलम्बी छलाह। कलांतरमे शंकराचार्यक दशनामी संन्यासीक दश भेद गिरि पुरी, भारती, बन, अरण्य, पर्वत, सागर, सरस्वती यतीदण्डी[54] जे ई दशो दशनामी ओहि उद्देश्य के विसरैत गेलाह आ परिवार बसबैत एहि दशो भेद के गोत्रक रूपें उपयोग करैत गेलाह।

समस्त अध्ययन सँ ई स्पष्ट होइत अछि मिथिलाक अंतर्गत संत साहित्यक जे अवधारणा से कही जे समान भावसँ उदार वहुदेववाद सव जातिवर्ग मे लोक देवताक प्रति सेहो ध्यान लगा कीर्तनभजन-भगैत आदि गबैत रहैत छलाह। दुसाध वर्ग सलहेशक गाथाक गबैत दीनाभद्री मुसहर जातिक देवताक ज्ञान, दुलरा-दयाल मल्लाह, सती बिहुला-नाग सर्पक पूजा-वंदना साल-साल भरि भिक्षाटन करैत अपन-अपन धर्म सम्प्रदायक संग एकटा विशिष्ट रागक बीच हुनकहि भक्ति भावनाक संग तल्लीन रहैत छलाह। हुनकहि ईष्ट-देवक भाँति पूजित करैत काव्य रचना करैत छलाह, मुदा हमर समाजक बीच ई विडम्बना रहलैक आ एतैक पैघ विषय वस्तु पर ध्यान मात्र नहि देल गेल। कारिख पजियारमे सूर्योपासनाक प्रसंग सँ कतेको संत एहि लोक देवताक पूजा-अर्चना हिनकहि पर गीत आदि रचना करैत छलह। मुदा जाहि भक्ति आंदोलनक प्रसंग चर्चा होइत अछि से मिथिलामे जे सामाजिक दशा ओ दिशा कही तऽ ओ सद्भावना भरल छलैक। मुदा आंदोलन ज्ञान ओ भावना कखनो दर्शित नहि भेल। भक्ति आंदोलनक विस्तार जकर श्री के. दामोदरन बात करैत छथि जे अन्यान्य प्रदेशमे गरीब जनताक धर्मक नाम पर दोहन कयल जाइत छल समाज आक्रांत भेल रहैत छलैक जे निहायत समाजमे अतिवाद कायम भऽ गेल रहैक।[55] से स्पष्टत: कहि मिथिलाक दशा तेहन नहि छलैक जे भक्ति आंदोलनक प्रभाव पड़ल रहैक।[56]

अशनातनी धार्मिक पंथ : मिथिलाक

प्रसंग ई सर्वविदित रहल अछि मिथिला वैदिक धर्म एवं विद्याक केन्द्र रहल अछि। मुदा मिथिलाक समन्वयता भावसँ कलांतर मे मिथिलामे असनातनी धर्म सम्प्रदाय आयातित छलैक तें एकर विकास नहि भेलैक बल्कि क्रमिक चलैत-चलैत एहि सम्प्रदायक कमोवेश सनातनी व्यवस्था सनातनी धार्मिक व्यवस्था संग हिल-मिल कऽ ओकर स्तित्व समाप्त भऽ गेलैक। एहि प्रसंग एकटा प्रमाणिक प्रसंग जे मिथिला सँ बौद्ध धर्मक विकास भेलैक ओ मूर्ति पूजा आदि के विरोध करै छलाह। मिथिला मे ओकर विकारा होमय लागल, गीत गोविन्दाकर जयदेव बुद्ध के विष्णुक दराम अवतार मानैत छथि आ हुनकर मूर्ति वना एतय पूजा अर्चना होमय लागल। मिथिलामे संत ओ संत साहित्यक कोनो विशेष विकास नहि भेलैक ओना मध्यकालीन युगमे एहेन कयक गोट असनातनी पंथ, संप्रदाय एतय आयल छलैक। अध्ययन ओ अनुशीलन सँ देखैत छी जे विद्वान डॉ. शंकरदेव झा अठारहवीं शतीमे मिथिलाक असनातनी पंथके दू भाग मे बटने छथि यथा। आयातित असनातनी पंथी।। मिथिलामे उद्‌भुत असनातनी पंथी। एहिमे दू पंथक विशेष रूपसँ उल्लेख भेटैत अछि। कबीर पंथी।। नानक पंथ।[57]

1. कबीर पंथी भारतीय संत परंपराक अन्तर्गत मध्यकालमे कवीर आ तुलसीक प्रसिद्धि सम्पूर्ण भारतवर्षमे पसरल छलनि।[58] कवीर पंथीक प्रसंग विद्वान डॉ. सुभद्रबाबूक दावा छलनि जे

कबीर मिथिलाक छथि आ हुनक रचना सब मैथिली मे भेल छलनि। जे हो कबीर पंथक विकास मिथिलामे अवश्य भेल मुदा स्वतंत्र रचना साहित्यक विकास नहि भेलैक तकर मूलमे एहिठाम सधुक्करी भाषाक विकासमे (जागूशाखाक) विदपुर कबीर मठसँ प्राप्त भेल अछि। जागूदासक शिष्यपरंपराक आठम आचार्य हाथीदारा जे कटक के छलाह जागूशाखाक एकटा मठ अंधराठाढ़ीमे सेहो जीर्ण-शीर्ण अवस्थामे अछि। एहिठाम हाथीदासक अवलोकन करी जे कटक उड़ीसाक छलाह। हुनकर एकटा ई पद प्राप्त होइछ -

प्रथम कबीर जगदीश पग धारे प्रभु
हासी के सपूत पूत चरणमे धाय हे।
गोद मे उठाय प्रमोद सँ बनाबे शिष्य
नाम जागूदास वास कटक वनाय हे।

निष्कर्षत: अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे विषय प्रविध जे मैथिली संत-साहित्य पर भक्ति आंदोलनक प्रभावक क्रममे देखल गेल मिथिला जे निर्गुण खासकऽ कबीर पंथी संप्रदायक विकास मिथिलामे खूब भेलैक मुदा ओहि पर आधारित रचनाकार कही मैथिली साहित्यक विकास नहि भेलैक आ साहित्यक विकास नहि भेल तऽ भक्ति आंदोलन अहूठाम ओकर परिणाम ठोसगर अनुभव नहि होइत अछि।

एहि उपर्युक्त कथन के उद्धृत करव प्रासांगिक बुझल मे एक-एक मठ आ विधा पर खोज करब किछु कठिन छै, समाज अपन धरोहरक प्रति उदासीन भेल जा रहल छै, ओना हमरा सन-सन किछुओ लोक खोज ओ समाचारो लैत अछि तऽ ई अवश्य जे शांत जलमे एकटा हिलकोर उठैत छैक। मिथिलाक अपन परिवेश रहलैक अछि सनातन धर्मक ओ संतक जड़ि ततेक मजगूतगर जे कोनो असनातनी धर्म सम्प्रदाय आयल सब सनातनी समान बनि जाइत छैक। आब कबीरक मूर्ति पर पूजा अर्चना होइत अछि मुदा ओहि महान आत्माक प्रसंग रचना नहि प्राप्त भेल।

मिथिलामे इस्लाम आ ओकर संत साहित्य पर भक्ति आंदोलनक प्रभाव :- मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था भारतीय शासन पद्धतिक अन्तर्गत गुलाम वंशक शासनक पश्चात् मुगल वंशक शासन पद्धति आ इएह काल अछि जे भक्ति आंदोलन मानू तऽ गुलाम कालक शासन सँ आरंभ होइत छैक। मिथिला मे मुसलमानक संख्या तऽ खूब 1883 ई. मे प्रकाशित आइना-ए-तिरहुत सँ प्राप्त जानकारी अछि प्राय: 43 सूफी संत परिवार एतबे नहि आधा दर्जन मसजिद आ आ इदगाहक सूचना प्राप्त सेहो अछि मुदा एहन कोनो संतक रचना प्राप्त नहि होइत अछि। मुदा हमर जे विषय संत साहित्य पर भक्ति आंदोलन प्रभाव हम नहि मानि सकैत छी।

मिथिलामे हिन्दू-मुसलमानक बीच धार्मिक समन्वय अदौकाल सँ आबि रहल अछि। फलस्वरूप सत्यनारायण देवताक पूजा अर्चनाक तदनुरूप मुसलमान मे सत्यपीर प्रकट भेलाह आ मुसलमानमे सत्यपीर पूजित होमय लगलाह।

एहि उपर्युक्त अध्ययन ओ अनुशीलन करवाक ध्येय जे भक्ति आंदोलनक प्रभाव कोनहु

धर्म, संप्रदाय पर नहि पड़लैक। बल्कि सब धर्मावलम्बी मिथिलाक परंपराक सम्मान करैत सांप्रदायिक सौहार्द कायम तऽ राखल गेल मिथिला लोक संस्कृति मे रचल-बसल अपन-अपन पूर्वाग्रह कें त्यागि, कट्टरता ओ विद्रुप्तता कें त्यागि कोनहु धार्मिक आंदोलन वा विचारकें अपना अनुकूल बनेवाक परिवेश, एतुका संस्कृति अछि। ओकरा अनुरूप स्वंय के तेना ने विकसित कऽ लैत छथि जेना दुनियाँ आइ जाहि वस्तु के आवश्यकता बुझलक अछि, मिथिला ओहि धार्मिक, सामाजिक व्यवस्थाक अनुभव कऽ गेल रहैत अछि। आ विश्वक सामने तेहेन ने सम्बन्ध सूत्रक उदाहरण विकसित करैत अछि जे कोनो धार्मिक वा भक्ति आंदोलनक प्रभाव नहि पड़लैक। बल्कि एतुका जे धार्मिक पंथगत समन्वय आ सौहादिक जे फोटो खिचायल से सम्पूर्ण भारत वर्ष मे अपन मिशाल कायम कयने अछि ताई ऐहि सौहार्द्रक मिथिलाके धर्म शास्त्रक अन्तर्गत अध्यात्मिक भूमि कहल गेल अछि।

।। इति षष्ठम अध्याय।।

संदर्भित ग्रंथ

1. विभिन्न धर्म के मिमांसा मत पृ. 58 डॉ. प्रभाकर माचबे प्रकाशक वि.हि. ग्रंथ अकादमी, पटना संस्करण।

2. गीता प्रेसक संत अंक 12 वर्षक विशेषाकं पेज - 27।

3. ``भक्ति आंदोलन के सामाजिक आधार`` सं. गोपेश्वर सिंह अध्याय भक्ति आंदोलन - लेखक के. दामेदरन पेज - 27।

4. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव (गौरीनाथ भाषण मालाक प्रथम पुष्प पेज-42 भाषणकर्त्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`।

5. स्नेहलता - मोनोग्राफ - लेखक - योगानन्द झा सा. अ. दिल्ली, पेज - 35

6. ``भक्ति आंदोलन के सामाजिक आधार`` संपादक गोपेश्वर सिंह अध्याय `संत साहित्य के अध्याय की समस्याएं - पेज - 97, लेखक रामविलास शर्मा।

7. भक्ति आंदोलन के सामाजिक आधार संपादक गोपेश्वर सिंह अध्याय `संत साहित्य के अध्याय की समस्याएं - पेज - 19, लेखक रामविलास शर्मा।

7A. पक्षधर (विशेषांक) जनवरी 2016, पेज-11।

8. मैथिली भक्ति काव्य -आलेखकार आचार्य डॉ. रामदेव झा मैथिली पत्रिका `पक्षधर` विशषांक अतिथि संपादक - श्री अर्जुनमुण्डा (पूर्व मुख्यमंत्री) झारखंड सम्पादक - कुमार शीतांशु कश्यप, पेज - 11।

8. मैथिली भक्ति काव्य - आलेखकार आचार्य डॉ. रामदेव झा मैथिली पत्रिका `पक्षधर` विशषांक अतिथि संपादक - श्री अर्जुनमुण्डा (पूर्व मुख्यमंत्री) झारखंड सम्पादक - कुमार शीतांशु कश्यप, पेज - 11।

9. मैथिली भक्ति काव्य - आलेखकार आचार्य डॉ. रामदेव झा मैथिली पत्रिका `पक्षधर` विशषांक अतिथि संपादक - श्री अर्जुनमुण्डा (पूर्व मुख्यमंत्री) झारखंड सम्पादक - कुमार शीतांशु कश्यप, पेज - 8।

10. पं. राजेश्वर झा जीक पोथी ``मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य``, पेज - 26 एवं 27 सँ लेल अछि।

11. प्रभुदयाल मीतल चैतन्यमत और ब्रजसाहित्य पृ . 136 एवं (म.पू.वै.सा. पेज-4) 144।

12. मिथिलाक इतिहास डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, पेज-1 एवं 2।

13. फौस्वॉल 56 : महाभारत (12, 17, 17, 19, 219, 50) मे इएह कथन जनकक जनदेवक मानल गेल अछि।

14. संत अंक गीताप्रेस पेज - 205।

15. स्नेहलता मोनोग्राफ लेखक योगानन्द झा, प्रकाशक साहित्य अकादेमी, पेज-18।

16. ``भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य`` शिवकुमार मिश्र, पेज-36।

17. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य शिवकुमार मिश्र लोकभारती प्रकाशन, पेज 49 एवं 50।

18. मैथिली मे भक्ति काव्य आचार्य रामदेव झा - पक्षधर मैथिली पत्रिका अंक जनवरी - 2016 विशेषांक पेज -11।

19. दाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च

क्षर: सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते - श्रीमद् भागवतगीता, 15/16 संत कवीर के राम विहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पेज - 40।

20. अठारवहीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास - डॉ. शंकरदेव झा, पेज-166-कला प्रकाशन, बी.एच.यू., वाराणसी।

21. अठारवहीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास - डॉ. शंकरदेव झा, पेज-167-कला प्रकाशन, वी.एच.यू., वाराणसी।

22. नाथ सम्प्रदाय पेज-35 एवं भगवान बुद्ध आ हिन्दी काव्य पेज-105।

23. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, पेज-124ष

24. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन - प्रथम खण्ड पेज 115, विहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना। डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव।

25. विद्यापति पदावली 228 विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन - डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पेज-116।

26. मैथिली साहित्य पर संस्कृतक प्रभाव - गौरीनाथ - भाषाणमालाक प्रथम पुष्प भाषणकर्ता स्व. सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-43।

27. मैथिली साहित्य पर संस्कृतक प्रभाव - गौरीनाथ - भाषाणमालाक प्रथम पुष्प भाषणकर्ता स्व.

सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-42।

28. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव गौरीनाथ भाषाण मालाक प्रथम पुष्प भाषणकर्ता श्री सुरेन्द्र झा सुमन, पेज-57।

29. अठाहरवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास डॉ. शंकरदेव झा, पेज-167।

30. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य, लेखक शिवकुमार मिश्र, पेज-67।

31. रामदेव झा सं.-3 (पूर्वोक्ति-21) पृष्ठ - 119

32. अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास, पेज-203 लेखक शंकर देव झा।

33. मो. हिदायनुल्लाह, कबीर-द एपोस्टल ऑफ हिन्दू-मुस्लिम युनिटी मोतीलाल बनारसीदास 1977 ई. पृ.134।

34. सुभद्र झा, संत कबीरक जन्मभूमि तथा हुनकर किछु मैथिली पद, जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ विहार, बोल्युम-2, मुजफ्फरपुर, नवम्बर - 1956 ई. पृ.-1।

35. अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास, डॉ. शंकरदेव झा, पेज-206।

36. विहारी लाल फितरत (पूर्वोक्ति-255A) पृ. 81-93 एवं 145-147।

37. फ्रांसिस बुकनन (पूर्वोक्त-19) पृ.-189।

●●●

श्रोत-ग्रंथ

1. वैष्णव साहित्य नामक ग्रंथ सुशील चक्रवर्ती।
2. Early History of Vaishnava faith and Moovement in Bengal - S.K. De 1942, Page - 14.
3. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत रामदेव झा मैथिली साहित्य परिषद विराटनगर, नेपाल-1972।
4. भागवत्संप्रदाय - लेखक बलदेव उपाध्याय।
5. संत साहित्य के प्रेरणास्रोत - आचार्य पं. परशुराम चतुर्वेदी।
6. वृहदाण्यकोपनिषद- ``अहं ब्रह्मास्मि`` कहल गेल अछि। 1/4/10
7. छन्दोग्योपनिषद जाहिमे तत्वमसि श्वेतकेतो कहल गेल अछि - 6/8/7
8. पतंजलि योगसूत्र।
9. महर्षि मेंहीदास पदावली।
10. कबीर वचनावली प्रथमखण्ड।
11. गोरखवाणी सं. डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल प्रयाग तृतीय संस्करण -
12. संतवाणी संग्रह, भाग-1, इलाहाबाद, पंचम संस्करण।
13. संत-समागम, स्वामी रामसुखदास, गीताप्रेस।
14. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन विहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी।
15. संत उद्‌गार - स्वामी श्रीराम सुखदास जी महाराजक विचार।
16. मध्यकालीन संत साहित्य।
17. `चौदहो देवान`, प्रफुल्ल कुमारसिंह मौन मैथिली अकादेमी, पत्रिका पटना सितम्बर-अक्तूबर 1988 ई.।
18. मिथिला तत्व विमर्श (उत्तरार्ध) परमेश्वर झा परमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी।
19. बामन शिवराम आप्टे (पूर्वोक्ति) पृ.1152।
20. वैदिक युगक क्रांति पुरुष : याज्ञवल्क्य प्रवासी-6, हैदराबाद 1997-19 ई. पृ.-16 सँ 22 धरि।

21. ``राष्ट्रनिर्माता सदाशिवावतार भगवत्पाद आदि शंकराचार्य`` दरभंगा 2003 ई. पृ. 4 जयमंत मिश्र।

22. ``मिथिला भाषामय इतिहास`` विद्याविलास प्रेस बनारस सिटी 1926 ई. पृ. 174 सँ 76 - म.म. मुकुन्द झा `बख्सी`।

23. ``मैथिली संत साहित्य एवं मैथिली मैथिली शैव साहित्यक भूमिका`` डॉ. रामदेव झा।

24. वृहद विष्णुपुराण मे मिथिला माहत्म्य संकलन धर्मनाथ शर्मा द्वारा - कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय।

25. शिवपुराण रुद्रसंहिता (सती खंड) अध्याय 22-23)।

26. मिथिलातीर्थ प्रकाश संवत 1943 पृ.-1, श्रीकृष्ण शर्मा।

27. मैथिली गीत रत्नावली - संकलन बदरीनाथ झा, ग्रंथावली प्रकाशन 1961 ई.।

28. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता (द्वितीय भाग) वैदेही समिति, दरभंगा, जुलाई, 1955 पृ. 1 सँ 13, लेखक - म.म. उमेश मिश्र

29. विद्यापति कालीन मिथिला - डॉ. इन्द्रकान्त झा।

30. प्रशस्तिमाला रमानाथ झा (सं.) राजप्रेस दरभंगा 1948 ई, पृ.107।

31. हिन्दी साहित्य और बिहार प्रथम खण्ड पूर्वोक्त पृ. 174 संदर्भ -5।

32. लक्ष्मीनाथ गोसाईं, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, संपादक - प्रो. खुशीलाल झा।

33. गोविन्द गीतांजलि सं.पं. सुरेन्द्र झा `सुमन`।

34. मैथिली लोक महागाथा कारिख पजियार हिरा प्रकाशन, लेखक - डॉ. महेन्द्र ना. राम।

35. विहारक ग्राम जीवन अनुवाद - मै. अकादेमी, पटना - जार्ज ग्रियर्रान।

36. ``द फार्मेसन ऑफ द मैथिली लेग्वेंज`` प्र. मुंशीलाल मनोहरलाल प्रा. लि., नई दिल्ली - पृष्ठ 173 सँ 193।

37. ताराचंद इन्फ्लूएंस ऑफ इस्लाम ऑफ इंडियन कल्चर, इण्डिग प्रेस इलाहाबाद-1936।

●●●

सातम् अध्याय

मैथिली संत साहित्यमे राधा-कृष्णक काव्य परंपरा

संतक प्रसंग शास्त्रमे कहल गेल छैक :-

सन्तोऽपेक्षा मच्चित्ता: प्रशान्ता: समदर्शिन:
निर्ममा निरहंऽकार निर्द्वन्दा निष्परिग्रहा: ।।

आशय भेल जिनकामे निरपेक्षता भगवत्परायणता, शान्ति, सम दृष्टि, निर्ममत्व अहंकारशून्यता, द्वन्दहीनता आ निष्परिग्रह आदिगुण सँ समन्वित रहैत छथि वएह संत थिकाह। मानवीय जीवनमे एहि गुणग्राह्य यथा साधनाके प्राप्त करवाक प्रयास करवाक चाही। भागवद् सम्प्रदाय के माध्यम सँ संतक मार्ग के निर्देशन कयल गेल अछि। खासकऽ मिथिला आ भाषा मैथिली साहित्यमे संत प्रसंग उठैत छैक तऽ सर्वप्रथम सनातन धर्ममे `संत`क भावके भाग्वद्गीताक प्रसंग लैत छथि। लिखैत छथि सत्संग, जे मनुष्य भीतर जे दु:संग तकरा दूर करैत छैक आ मनुष्यक भीतर योग, सांख्य, धर्म, स्वाध्याय, तप-त्याग, इष्टतापूर्ण आदि साधन के अपना वशमे सत्संगसँ प्राप्त करैत छथि। से सत्संगक समीप रहला सँ होइत छैक। आ ओ ग्राह्य केला पर ओ संत श्रेणीके प्राप्त होइत छथि। रामायणमे कहल गेल अछि ``सठ सुधरहि सत् संगत पाई`` आशय श्रीमदभग्वतगीतामे `संत` साधुतासँ निरुपित कयल गेल छैक। सत् शब्दक ऊँ-उत्सत् वाक्यमे ब्रह्मक निर्देश करैत गेल अछि। सत् शब्दक रूप परमात्मा वा कही ब्रह्म सँ कयल जाइत अछि।꞉ संत साहित्यक प्रसंगमे मैथिली भाषा-साहित्यक स्थान भारतीय साहित्यमे इतिहास वेद-पुराण, उपनिषद आदिक बीच अन्यतम स्थान अछि। ताहिमे मैथिली भाषाक प्रसंग कही तऽ सारस्वत अभिव्यक्ति ओ सशक्त माध्यम बनि गेल अछि। मैथिली साहित्यक जे भावक विपुलता छैक से कही तऽ भाषा साहित्यक संसारमे अद्वितीय आ मानव संस्कृतिक अमूल्यनिधि अछि।

मैथिली भाषा-साहित्यमे प्रसंगावस **राधा-कृष्णक काव्य परंपरा** से कही जे भारतीय संस्कृति भेदाभेद मूलक अछि। विभिन्नतामे अभिन्नताक ध्योतक अछि। मैथिली भाषा साहित्यक प्रसंग विद्वानक मत छनि जे संतक ह्रदय भगवानमे विश्वास रखैत अछि संत ह्रदय जीवात्मा ओ परमात्माक रूपें प्रकृति ओ पुरुषक अभेद ज्ञानक आलोकसँ यद्यपि भेदक निविड़ तिमिर दूर भय जाइछ। दुनूसँ एकात्मकता उद्भासित भऽ उठैत अछि। औपनिषद ज्ञानकाण्डक चरम परिणति `विदेह`मे भेल। उपनिषदमे वृहदारण्यक महत्त्व एवं वृहदारण्यकहुमे विदेहजनक एवं ``मिथिला स्थ: स योगीन्द्र: याज्ञवल्क्यक योग्यता सर्वविदित अछि। मिथिलाक अध्यात्मिकता सिद्ध-प्रसिद्ध अछि। स्मृताकार याज्ञवल्क्य के द्वारा परम धर्मके निरुपित करैत कहैत छथि :-

``अयं तु परमो धर्मो यध्योगेनात्मदर्शनम्` ।

ज्ञानपीठ ओ संस्कृति पीठ मिथिला, तकर भाषा मैथिली तकर काव्य कला अस्पृष्ट रहय से संभव नहि। मिथिलामे व्रह्म विद्याक शिक्षा खेल-खेलमे देल जाइत छल। ओतय ब्रह्मवाद सहोदरक रसानुभूत नहि कराओल गेल हो, से किन्नहु संभव नहि। एहि धारणा ओ विचार के विभिन्न मार्गक पथिक रहितहुँ कवि रचनाकार निर्गुण, सगुण, साकार-निराकार शैव-शाक्त-वैष्णव आदि सम्प्रदायगत रहितहुँ मैथिलीक कविगण भेदहुमे अभेद ओ ज्ञान वैराग्यक संग संत-साहित्य पर अपन अपूर्व अभिव्यक्ति देलनि अछि।

एहन अनुभव कयल जाइत अछि जे संत ब्रह्म होइत छथि, व्रह्म स्थिति, ब्रह्मज्ञानी, व्रह्मपरायण ओ व्रह्म मय छथि। संतहि परमात्माक आश्रय होइत छथि। ओ तत्व दर्शी आ कवि सौन्दर्यान्वेषी होइत छथि। मैथिली संत साहित्यक अधिष्ठाता आचार्य रामदेव झा मैथिली संत साहित्यक प्रसंग मैथिली संत काव्यक दू गोट प्रेरक तत्व माननलनि अछि। लौकिक प्रेरक तत्वक रूपमे श्रृंगार आ परलौकिक प्रेरक तत्वक रूपमे भक्ति' एतद् मैथिली संत साहित्यक प्रसंग आचार्य मुख्य रूपें दू गोट धाराक वर्णन कयलनि अछि। प्रथम ओ काव्य जाहिमे श्रृंगार प्रधान रस पक्षक काव्य आ दोसर भक्ति प्रधान काव्यक पक्ष।

उपर्युक्त भक्ति प्रधान काव्य पक्षक प्रसंग मुख्यत: तीनगोट आराध्य रहलाह अछि - विष्णु, शिव एवं शक्ति। हमर विषय प्रविध अध्याय **``मैथिली संत साहित्यमे राधा-कृष्णक काव्य परंपरा``** मे विष्णुक भिन्न-भिन्न अवतारक रूपें कृष्णावतारक महिमा मिथिलामे सभसँ वेसी काव्यारधना भेल अछि। ओना मिथिलामे संत साहित्यक प्रसंग मूल रूपें चारिगोट धाराक विकास भेल छैक। मैथिली संत साहित्यक रचनाकारक आस्था पर विचार-विमर्श कयला संता एहने विशेषताक परिचय भेटैत अछि जे मिथिला ओ भाषा मैथिलीक उपर सामाजिक, संस्कृतिक धार्मिक परंपरा पर दृष्टिपात ओ मननशीलसँ अन्वेषणात्मक भावसँ संत काव्य पर धार्मिक आन्दोलन वा सम्प्रदाय विशेषक दार्शनिक अभिव्यक्तिक कोनो प्रभाव वा परिणति नहि अयलैक। स्मार्त आचरणक कठोरतासँ पालन कयनिहार मैथिल `संत` पञ्चोदेवोपासनाके अनिवार्य कृत्य बुझैत रहला अछि। मिथिलावासीक समस्त देवी देवताक प्रति समान श्रद्धाभाव रहलनि अछि। मैथिली संत साहित्यक काव्य रचैतामे एहेन अत्यल्पे जे कोनहु एकहि देवरूपमे सिमित रहल अछि। मिथिलाक संत जाहि तन्मयताक संग राधा-कृष्णक मधुर लीलाक वर्णनक गान करैत छथि, ओतबी तन्यमताक संग हरगौरीक दाम्पत्यक चित्रण, ओहिना राम-सीताक स्नेह भक्तिमे संत भाव समर्पणक वर्णन होइत छथि।

एतद् जे हो, `श्रीमद्‌भागवत्` वैष्णव संत दर्शनक छिर सागर अछि। मिथिलामे एहि महापुराणक स्थान महत्वपूर्ण ओ आदरणीय संग पूजनीय मानल जाइत अछि। ओना विश्वक अन्तार्गत भारतीय वाङ्गमयमे भक्ति महत् मिथिला प्रेरणाक श्रोत रहल छैक। संत हृदय काव्यक

मार्मिकता भगवानक सौन्दर्य मे देखैत छथि। जकर उल्लेख विष्णुपुराणक रचनाकाल तक परम्परासँ प्रचलित कृष्णकथामे एकटा नवीन विचारधाराक समावेश भेल जे भक्तिक आवरणमे कृष्ण ओ गोपीक बीच उदात - श्रृंगारक कल्पनाकें स्वीकार कऽ परवर्ती साहित्य सर्जनमे नव दिशाक सर्जना भेलैक। जकर विकसित दिग्दर्शन भागवतपुराण मे होइत छैक जे परवर्ती कृष्णभक्तिक उद्‌गम स्रोत मानल जाइछ।[8] वैदिक कर्मकाण्डक विपरीत एकटा निवृत मार्ग कहि दुनू प्रमुख विचारधाराकके गठबंधन के सम्पन्न कयल गेल तथा एहि अभेदके अनुमोदन कय वासुदेव कृष्ण तथा विष्णुक एकीकरण गीताक पश्चात् पौराणिक कालमे भेल एहि निगूढ़ धार्मिक मतभेदकें समाप्त करबाक निमित्त विशिष्ट द्वैतवादक संग एकेश्वर वादक स्थापना कय व्यवहारिक दृष्टिसँ व्यापक धर्मक स्थापना कयल गेल जे कलान्तरमे वैष्णव धर्म कहौलक। एहि विशिष्ट अध्ययनक `वैष्णव`` शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम महाभारत मे उपलब्ध अछि।[9]

राधा-कृष्णक काव्य वैष्णव मतावलम्बीक उपासना कयनिहार `संत` उपलब्ध प्रमाणक अनुसार ब्रह्मवैवर्तपुराणमे जे मूल ब्रह्मवैवर्तपुराण सँ भिन्न ब्रह्म राधाक विवाह कृष्णक संग करौलनि अछि। पुराणक अनुसार कृष्णक अवतार लेबासँ पहिनहि विष्णुक आदेशानुसार राधा मर्त्यलोकमे जन्म लेलनि। पद्म पुराणक अनुसार वृषभानुकें यज्ञ हेतु पृथ्वी शुद्ध करवा काल सीता जेकाँ राधा प्राप्त भेलखिन्ह। अस्तु एहि बिवेचनाक प्रसंग वैदिक कालक पश्चात् जे धर्मशास्त्रक मान्यताक अनुरार कृष्णावतारक जे तर्क राब प्ररतुत भेल अछि ताहिराँ रपष्ट अछि जे विष्णुपुराममे वर्णित रूक्मिणी स्वयंवर[7] आदिक प्रसंगसँ स्पष्ट अछि जे विद्वाग लोकनिक मत अछि जे गोपी-आत्मा आ कृष्ण-परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण द्वापर युगमे गोलोक वा अपन निजधाम व्रज-वृन्दावनमे भगवान श्रीकृष्ण अपन आनन्द शक्ति सहित रसात्मक रूपसँ अवतरित भऽ जे रास एहि जगतमे ओ अवतरित रास वा बल्लभ सम्प्रदायक अनुसार नैमितिक रास कहौलक। जाहि रसक कृष्णभक्ति भावनामे मानसिक अनुभव होइत अछि से अखण्ड रसक भान होइत छै। कृष्णक भक्त लोकनिक कहब छनि जे गोपी-कृष्ण रासक अनुकरण अनुभव निरोधक साधना थिक।[8] ई जे निरोध शक्ति भगवानक भक्तिक मार्गमे संत के श्रीकृष्णक संग भावात्मक रास-रसक अनुभूति से संत के चारि प्रकारक भक्तिक भेद करैत छथि से भेल दास्य, वात्सल्य, सख्य आओर कान्ता अथवा माधुर्य। मिथिलाक संत भगवानक संग जे प्रेम भक्तिके दास्य रस सेहो कहल गेल अछि। दासभावक चरम अभिव्यक्ति `प्रपति` तात्पर्य भगवानक प्रति आत्म समर्पण जे प्रेमक अनिवार्य अंग थिक। आशय ब्रह्म स्वामी, जीव दास थिक। इएह कारण अछि जे वैष्णव संत लोकनि अपन उपाधि ``दास`` रखैत छथि।[10]

भागवतक पुराणक मधुराभक्तिक रसावर्णनक योग समस्त भारतमे चौदहम शताब्दी सँ कृष्णभक्तिक प्रचण्ड धार प्रवाहित भेल। मधुरभावक हेतु लक्ष्मी आओर रूक्मिणीकें उपर्युक्त नहि बुझि ``राधाकें प्रादुर्भाव भेल। कृष्णक सखीक रूपमे राधाक एतिहासिक उल्लेखमे श्रृंगार भक्तिक

अलौकिक तत्वज्ञानक शैलीमे विरह, मिलन, आसक्ति आदि लौकिक गुणके समावेश भक्तिक क्षेत्रमे मधुर भावक प्रधानता बढ़लैक जाहिसँ `मधुर' भक्तिक संतक प्रधानता बढ़लैक अयलैक। बौद्ध धर्मक प्रभावमे पूर्वी भारतीय क्षेत्र छलैक जे कालक अभ्यंतरमे एकर अंत होइत गेलैक। पूर्वी भारत जयदेव ओ विद्यापतिक पश्चात् चण्डीदास साहित्यमे एकटा विशाल मोड़ अनलनि आ राधा-कृष्णक लऽ संभोग श्रृंगार विप्रलंभ श्रृंगारक पुटदय सुन्दर चित्रक निर्माण कयलनि। भक्तिक निरूपणक निमित शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदिक संयोग दय ब्रह्मानन्दक अनुभूति भारतीय भक्ति काब्येटा मे नहि संसारक सभ धर्म मे उपलब्ध अछि। सूफी पंथमे इश्कवाजीके (मानवी प्रेमकें) एकगोट सोपना मानल गेल अछि।[1]

श्रीमद्भागवत वैष्णव संत दर्शनक महासागर थिकैक। मिथिलामे एहि महापुराणक प्रतिलिप स्वयं महाकवि विद्यापति अपनहि हाथे कयने छलाह। जखनकि हिनकहि समकालीन मुदा महाकविसँ प्रभावित तैरभुक्तावासी संत विष्णुपुरी ``श्रीभक्ति रत्नावली' ग्रंथक रचना कयने छलाह। विष्णुपुरी श्रीमद्भागवतसँ भक्ति सम्बन्धी विचार रत्नक संग्रहसँ ``श्रीभक्ति रत्नावली'' ग्रंथक रचना कयलनि। तहिना महाकवि विद्यापति सेहो श्रीमद्भागवतसँ प्रेरणा ग्रहण कए राधा-कृष्णक पदक रचना कयने हेताह। वैष्णव चिन्तक मतावलम्बी लोकनि एकर व्याख्या करैत महाकविक पदक भाव, भाषा, छन्द, ओ शैलीक अनुसरण करैत चैतन्य महाप्रभूक जे काव्यधारा प्रवाहित भेल जाहिसँ ``ब्रजबुलि साहित्यक'' काव्यधारा नामे प्रसिद्धि प्राप्त कयलक। राधा-कृष्णक विषयक पदक विशिष्टताके अनुभव करैत आधुनिक विद्वान राधा-कृष्णक पदक मादे महाकवि के रहस्यवादी रूपें व्याख्या करैत छथि।[2]

अस्तु राधा-कृष्णक पदक रचना कयनिहार महनीय संतक पदके एतय जे महाकविक परवर्ती छथि तिनकर पदक साहित्यिक विवेचन एहि प्रकारे अछि :-

1. **परहंस संत विष्णुपुरी** : - संत विष्णुपुरीक दोसरनाम ``वैकुण्ठपुरी'' सेहो छलनि। हिनक गुरुक नाम मदनगोपाल छलनि। मिथिला निवासी संत बेसी काल काशी मे रहैत छलाह। हिनक चारिगोट लिखल ग्रंथ प्राप्त भेल अछि। I. भगवद्भक्तिरत्नावली, II. भागवतामृत, III. हरि भक्तिकल्पता, IV. वाक्यविवरण[3] एहन बहुत रास प्रसंग आयल अछि जे संत विष्णुपुरी के मुख सँ साक्षात्कार भेल अछि जकर प्रमाण चैतन्य महाप्रभुक मुहे सुनल गेल अछि।

विष्णुपुरीक प्रसंग हुनक जन्म ओ वंश प्रसिद्धिक आधार एहि प्रकारें अछि ओ करमहे तरौनी मूलक श्री धरक पौत्र ओ श्री रतिधरक पुत्र छलाह। हिनक समयक अनुमान 1425 ई. सँ 1500 धरि मानल गेल अछि। एखनो तरौनीमे हिनक डीह अछि। अहिठाम विष्णुपुरीक राधाकृष्णा विषयक उत्कृष्ट पद देखल जाओ -

हे सखि, हे सखि, कहिओ न जाहे
नन्दक अङना कइसन उछाहे।।

नन्दक नन्दन त्रिभूवन सारे
यशोदा पाओल तनञे कुमारे।।
मन भेल हरखित देखति नुरूपे।
जनि भेल उदित दीप अन्धकूपे।।
आसलता पल्लव जनि देला
भेदिनी सुरतरू आँकुर भेला
`विष्णुपुरी` कह सुनह गोआरी
परम ज्योति अवतरल मुरारी।।'

विष्णुपुरी मात्र परहंस वैष्णव संतेटा नहि छलाह संगहि संस्कृतक विद्वान छलाह। चैतन्य महाप्रभू सेहो विष्णुपुरीसँ प्रेरणा ग्रहण कयने छलाह। विष्णुपुरी मैथिली साहित्यक आदि कवि रूपें मानल जाइत छथि। विद्यापति राधा-कृष्ण भक्तिक गीत गओने छलाह ओहि आधार पर असम, बंगाल ओ उड़ीसाक वैष्णव संत लोकनि प्रेरणा ग्रहण करैत गेलाह। विष्णुपुरी वैष्णव भक्तिक रूपें ओ पंचोदेव उपासक छलाह। विष्णुपुरी राधा-कृष्णाक पदक रचना कय आनन्दक अनुभव करैत छलाह। हिनक रचनाक आ संतकीय भावक प्रसार-प्रचार पूर्वांचलीय भारतमे विशेष भेल रहैक।

``भक्ति रत्नवली``मे भागवतक नवधा भक्तिक वर्णन संग्रहीत अछि। भक्ति रचनावलीक टीका गुजराती मे सेहो प्रकाशित भेल रहैक।

संत विष्णुपुरीमे जे गुण छलनि से अन्यत्र कोनहु ठाम नहि पाओल जाइत अछि। ओ कहैत छथि हे प्रभो ! ``नै हम भुक्ति जनै छी, ने मुक्ति जनै छी, ने हमरा गामक पता अछि, आ ने काशीक जिज्ञाशा, आ नै हमरा मथुरा-वृन्दावनक स्थानक पता अछि। अस्तु संत विष्णुपुरी परमहंस श्रेणीक संत छलाह।`` संत विष्णुपुरी मे दिव्यअंश छलनि। मिथिलाक विशिष्टताक अनुरूपें ओहो शिवभक्ति सेहो छलाह। आचार्य रामदेव बाबूक समर्थन छनि जे विष्णुपुरी श्रीधर स्वामीक अनुयायीय एवं अद्वैत वेदान्ती छलाह।`` अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे विष्णुपुरी मानवीय जीवनके सार्थक करवाक दिशामे अपन रचना जे राधा-कृष्णाक नामे अत्यल्प अछि जाहिमे हम एकटा सम्पूर्ण पदमात्र एतय राखल अछि। अध्ययन विस्तृत सब संत पर संगोपांग वर्णन संभव नहि मात्र एतय परिचय उल्लखित कयल अछि।

2. **महाकवि विद्यापति** - संतक प्रसंग अखन धरि जतबा अध्ययन ओ अनुशीलन कयल अछि ताहि मे महाकविक काव्य मे पाठक, अपना रूपें जे जाहि भावसँ देखलनि हुनका वएह प्राप्त भेलनि अछि। हम अग्रिम पेज मे लिखल अछि जे भागवत सम्प्रदायमे राधा-कृष्णक प्रसंग शब्दक संगत जोड़ि महाकविकें श्रृंगारिक कहब अतिउक्ति अछि। सम्पूर्ण भारतवर्ष मे मिथिलाक भूमि अपन सांस्कृतिक ओ साहित्यक परंपराक लेल प्राचीनकाल सँ प्रसिद्ध अछि। विदेह जनकक

समयमे जाहि सांस्कृतिक सूत्रपात भेल रहैक से विद्यापतिक कालमे अपन पूर्णोत्कर्ष पर छलैक। हमर विषय प्रविद्ध संतक लेल अछि जे संत चारि प्रकारक बनि सकैत छथि ``शं सुखं ब्रह्मानन्दात्मकं विद्यते मस्य`` आशय ब्रह्मानन्द सम्पन्न व्यक्ति संत होइत छथि। अस्तु महाकवि ब्रह्मानन्द सम्पन्न महापुरुष छलाह। विद्यापति युगीन मिथिलामे सामाजिक विषमता अत्यधिक छलैक। महाकवि ओहि विषमताकें दूर करवाक वास्ते अपन रचनामे राधा-कृष्ण विषयक भक्ति ओ माधुर्य भावक जे प्रतिपादन कयलनि सएह वैष्णव मतक विकास भेल जकर प्रभाव संपूर्ण संसार लेल प्रेरक सिद्ध भेलैक।

महाकवि विद्यापति पर अपन पूर्वज विशेषकऽ विष्णुस्वामी आ निम्बार्कक प्रभाव कहि सकैत छी मुदा से स्पष्ट नहि अछि। परंतु एतवा तऽ अवश्य जे वैष्णव संत साहित्यक प्रथम रचयिता छथि। ई बात स्मरण राखक चाही विद्यापति राजदरबारी कवि तऽ छलाह ताहि सँ ई कहबाक जे राजदरवारक बात व्यवस्था अनुकूल चलैत छलाह मुदा से जीवन के अंतिम दिनमे ओ राधा-कृष्णक विरह ओ विरहांतर ओ मिलनक प्रसंग लिखि ओ गावि ओ वैष्णव सम्प्रदायक अमूल्य निधि बनलाह। जकर चरमोत्कर्ष चैतन्य देव पर देखल जा सकैछ।

जखन प्रसंग कृष्ण काव्यक पाछू महाकवि लिखैत छथि :-

``हे सखि मानुष जनम अनूप``

उपर्युक्त पंतिक माध्यम सँ विद्यापति मानवीय जीवन के महान सत्येक उद्घाटित करैत छथि। अस्तु हमर कहवाक आशय अछि जे महाकवि सँ परवर्ती आ पूर्ववर्ती हुनकहि सदृश्य रचना कयनिहार `संत` से राजा जनक संत भेलाह। जयदेव संत छथि, चण्डीदास के संत कहल गेल अछि। संत विशिष्ट अध्ययन प्रस्तुत करैत संत विशेषांक बहुत रास विशद अध्ययन प्रस्तुत करैत गार्हस्थ संतक प्रसंग सेहो लिखल अछि। महाकवि तऽ सम्पूर्ण जीवन ईश्वर मे समर्पण कय ईश्वर के साक्षी राखि पंचोदवोपासना करैत जीवन अर्पण कएने छलाह। किंववदंति अछि मात्र सएह नहि प्रमाणिक अछि जे साक्षात् महादेव, हुनाक टहल-टिकोरा आ गंगा स्वयं हुनाका लग पहुँचल रहथिन्ह तें ओ संत कवि छलाह ताहिमे कोनो आ कत्तहु संदेह नहि।

काव्यभाषाक प्रसंग महाकविक जे संतभाव अहूठाम दर्शित होइत अछि। धर्मक दृष्टिसँ सौन्दर्य रंग स्पर्श ओ स्वाद आदिक प्रकार्यक (फंक्शन) दृष्टि वर्णनात्मक सूचनात्मक ओ व्यंजनात्मक जे कवित्वदृष्टि शक्तिशाली ओ शक्तहीन वस्तुतः दू वर्गमे विभाजित कय रचना कयलनि अछि। एतवे नहि साहित्यिक भावसँ देखी तऽ विशेष्य सँ विशेषणक समायोजन अन्यत्र नहि भेटत। बेनीपुरी जीक पदावलीक 66 वाँ पदक अवलोकन करी : विशेषणक प्रयोग कतेक विलक्षण विद्यापति कयलनि अछि -

काहे हरसि सखि चलु हम संग
माधव नहि परसब तुअ अंग-2

इह रजनी फुल कानन माझ
के एक फिरत साजि वहु साज-4
कुसुमक घोर धनुष धरि पानि
मारत सर बाला जन जानि-6
अतय चलह सखि भीतर कुंज
जतय रहय हरी महाबलपूंज-8
एत कहि आनल धनि हरि पास
पूरल वल्लभ सुख अभिलास-10

एहिठाम सम्पूर्ण पदक अवलोकनसँ इएह भाव स्पष्ट होइत अछि जे राधाक विकलता परिहार हरि हुनक रक्षा करथुन्ह भगवानक माने हरिक दर्शन करबा लय बेकल छथि किएक तऽ हरि महाबलपूंज आशय एहि पदक चमत्कार `हरि` एहि पदक साभिप्राय विद्यापतिक पदमे नव, आध, अपरूप, वर आदि शब्दक प्रयोग बेर-बेर भेलैक अछि। यथा -

नव वृन्दावन नव-नव तरूगन
नव-नव विकसित फूल।
नवल वरांत नवल मलयानिल
मातल नव अलिकूल-2
विहरइ नवल किशोर
कालिंदी पुलिन कुंज बनशोभन
नव-नव प्रेम विभोर-3
नव रसाल-मुकुल-मधु मातल
नव कोकिल कुल गाय
नव जुबतीगन चित उमताअइ
नव रस कानन धाय-6
नव जुबराज नवल वर नागरि
मीलए नव नव भाँति
निति-निति ऐसन नव-नव बेलन
विद्यापति मति माति-8 "

अस्तु काव्यभाषामे महाकवि जे चिंतनधारा राधाक क्रिया-कलाप ग्रहण ओ सृजन कयलनि जेना ओ मानवीय जीवनके जैविक आन्दोलन सदृश भेल अछि। महाकविक पदावलीमे पर पीड़ता मे आत्मपीड़ताक गौन भेल अछि, एतद् संत समाज कल्याणक धारणासँ समन्वित कही तऽ श्रृंगार-

सरिताक बीच भक्तिकालीन कृष्ण-काव्य महाद्वीपमे उन्नतिशीर्ष मंदिर सन प्रतीत होइत अछि।

संत गोविन्ददास - मिथिलाक कुजौलीवार गामक गौड़ीय वैष्णव संत सम्प्रदायमे संत गोविन्द दासक नाम अग्रगण्य अछि। एतय गोविन्ददासक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर प्रकाश देव आवश्यक नहि, एहि प्रसंग हम अग्रिम अध्याय मे वर्णन कऽ गेल छी। पं. रमानाथ झा, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, डॉ. रामदेव झा प्रभृति विद्वान गोविन्ददास पर अद्यात्मिक विवेचन ओ मनन कय गेल छथि। श्रृंगार भजन-गीतावली संकलन दृष्टि गोचर होइत अछि।[6] गोविन्ददासक प्रसंग मैथिली साहित्यक निर्माताक रूपें ओ 'संत' साहित्यक अधिष्ठाताक रूपें कही तऽ गोविन्ददास विद्यापतिक कनिष्ठा पर अबैत छथि तऽ गोविन्द दास अनामिका पर। गोविन्द दास वैष्णवसंत मे कृष्ण एवं राधाक दासक रूपमे अपनाकें प्रस्तुत करैत छलन्हि तखन एहेन व्यक्तिकें सांसारिक राग सँ कोन सरोकार। अध्ययन ओ अनुशीलन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक महापुरुष लोकनि अपन प्रसंग कतहु किछु नहि लिखने छथि तकर अपवाद गोविन्द दास नहि भेलाह। वैष्णव संत जिनकर बैधी एवं रागानुराग भक्तिये सर्वोपरि लक्ष्य छलनि।

गोविन्ददास खाहे बंगाली होउथ वा मैथिल, प्रसंगवश ओ वैष्णव संत भेलाह से कहब छनि विद्वान पंडित राजेश्वर झाक। ओ निर्विवाद वैष्णव संत छलाह। जिनका संस्कृतिक कोनहु टा ज्ञान नहि छलनि।[7] मुदा हिनक पद्यक शब्द अत्यंत दुरुह होइत छल। जखन हिनक रचनाक अर्थ लागि जायत तखन आनन्द सँ हृदय प्रफुल्लित भय जायत छैक। हिनक रचना नारियलक समान होइछ।

संत गोविन्ददासक जतेक भणितायुक्त पद प्राप्त भेल अछि तकर भाव-भाषा-ओ-काव्य सौष्ठव तेहेन भेल अछि, जे श्रृंगार-भजनावली'क पद कोनहु एके रचनाकारक होयब से तार्किक ओ समीचीन नहि लगैत अछि। संत कविक रूपें हिनक राधा-कृष्णयुक्त रचना पर ध्यानाकर्षण कयल जाओ :- वन्दना शीर्षक सँ हिनक हृदयगत भाव स्पष्ट भय रहल अछि :-

भजह रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द।
दुलह मानुष जनम सतसंग तरहसए भवसिन्धु।।
सीत आतप बात बरषा ए दिन जामिनि जागि।
विफल सेवन कृपन दुरजन चपल सुख सभ लागि।
ए धन जौवन पुत्र परिजन एत कि अछि परतीति।
कमल दल जल जीवन ढलमल भजहु हरिपद नीति।।
श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वन्दन, पाद-सेवन दास।
ध्यान पूजन आत्मनिवेदन गोविन्ददास अभिलासे।।[8]

गोविन्ददासक श्रीमद्‌भागवतक प्रभावे नवधा भक्तिक जे भाव से गौड़ीय सम्प्रदायक महनीय साधक संत रूपमे ख्याति अर्जित करैत छथि। मैथिली भाषामे कीर्तनियाँ नाटक अभिनय जे

संत साहित्यक लेल भगवत् सम्प्रदायमे विशिष्ट मानल गेल अछि।

आब राधाक सखीक भावमे हुनक उद्‌गार भरल पद -

हृदय मंदिर मोर कान्ह नुकायल प्रेम प्रहरि
रहु जागि
गुरुजन गौरव चोर सरिस भेल दुरहि
दूर रहु भागि -2
निन्दहु निन्द नयन नहि हेरिअ न जानिअ की
भेल आँखि
एत परमाद कहए नहि पारिअ गोविन्ददास एक
सखि-4

कृष्णक प्रति अनुराग भेला पर राधाक जे हाल भेलनि तकर सांगोपांग वर्णन जे हमर हृदयरूपी घरमे कृष्ण नुका गेल छथि, प्रेमक प्रहरी जागल अछि....। वैष्णव काव्य शास्त्र मे विप्रलम्भ श्रृंगार उत्तम मानल गेल अछि। आ गौड़ीय सम्प्रदायक वस्तु कहल गेल अछि। वास्तव वैष्णव कवि लोकनि आ ताहुमे वैष्णव संत लोकनि अपनाके विप्रलम्भे धरि सिमित रखैत छथि से गोविन्द दासक रचना मे अपूर्व समायोजन भेलै अछि। विद्यापति के अपन काव्यगुरु मानैत छलाह। संतभावक अद्वितीय कवि छलाह।

4. संत साहेबराम दास :- साहेव रामदासक जन्म मधुबनी जिलाक अन्तर्गत बेनीपट्टी अनुमंडलमे जरैल परगन्नाक कुसमौल बस्तीमे 1690 ई. सँ किछु पूर्व 1680 ई.क बाद मानल जा सकैछ।[5] गंगेश उपाध्यायक कुल मे उद्‌भुत एकांत साधक साहेवराम दास वैष्णव वैरागी संत कवि छलाह। हुनक उपलब्ध सामग्री हुनक व्यक्तित्त्व काव्य प्रतिभाक परिचायक अछि। हुनक काव्य प्रतिभाक प्रसंग विशिष्टता इएह अछि जतय वैष्णव संत कवि राधा-कृष्णक प्रसंग श्रृंगारिक गोपीक रास, मान-मनुहार, प्रेम-आलिंगनक संग राधाकें शक्ति स्वरूपा मानि जीवन इहलौकिक धारणामे मानवीय जीवन के कृष्णक प्रति अपना आपके समर्पित कय रचना कयने छथि। से हुनकासँ पूर्ववर्ती आ परवर्ती संत कवि यथा विद्यापति, गोविन्ददास आदि सँ प्रभावित रहितहुँ साहेबरामदास लीकसँ कने हटिकऽ कृष्णकें अराध्य मानि परब्रह्म ओ राधाके महाशक्ति स्वरूपा मानैत अवश्य रहलाह मुदा श्रृंगारिकता सँ दूर हिनक रचना मिथिलावासीक कंठे-कंठमे सतत विराजित रहल अछि।

संत साहेबरामदासक नेनपनक नाम साहेबराम झा छलनि। संत समाज अध्यात्म हो वा गार्हस्थ्य जीवनमे दीक्षाक वा कही गुरुक शरणमे भारतीय मानव जीवनक परंपरा रहल अछि। साहेबराम झा जखन अपन गुरू क्योटा निवासी बलिराम दास सँ दीक्षा लेने छलाह जे बाल बैरागी घर परिवार के त्यागि वैष्णव धर्ममे लीन छलाह। संत साहेबरामदासक प्रसंग अछि जे ओ

गोकर्णभागवत सदृशहि अपन पुत्रक उपदेश सँ हुनकर संन्यासक कारण बनल ई कथा अत्यंत मार्मिक अछि। पुत्र प्रीताम हिनक मार्गदर्शन केलकनि जीवन धाराकें मोरि कऽ राखि देलकनि।

साहेब रामदासक स्थान पचाढ़ी महत्वपूर्ण अछि। ओना हिनक प्रसंग एक वात महत्वपूर्ण अछि जे जनसंपर्क सँ दूर रहब बेसी श्रेयस्कर बुझैत छलाह। हिनका प्रसंग बहुतरास दंत कथा अछि से कही विश्वक समस्त संतक संग किछु ने किछु प्रसिद्ध कथा ओहि संतक प्रसिद्धिक कारण बनैत अछि। पूरीक कथा हो वा कन्दर्पी घाटक कथा सब प्रसिद्ध अछि।

काव्य सौष्टव : एहि प्रसंग लिखैत कही साहेब रामदासजीक 478 पदक संकलन जे साहेबराम दासजीक **पदावली** जकरा कवीश्वर पोथीक रूप दियाओल दोसर खेप ललितेश झा 1955 ई. मे ओ अपन प्रथम संस्करण रूपें प्रकाशित करौलनि। जे हो संत साहेव रामदासक प्रसंग अखन एतबे जे ओ ``कृष्ण भक्ति`` संत रूपें प्रसिद्धि पओलनि हिनक पदमे साहित्यक भाव देखल जाओ -

है ! मोन मन राजी निस दिन वृंदावन के बासी सँ।
ध्यान धरी हरि चरण मनाबी काज कौन मोरा काशी सँ
जनम-जनम केर प्रीति बनल अछि मुरलीधर सुखरासी सँ।
कहि न रही मन भए परवश नेह लगाय अविनाशी सँ
या ब्रज मे उपहास करो केओ डर नाहि मोहि हासी सँ
राजिव नयन रसिकनन्दन बाँधी प्रेमक फाँसी सँ
अब तँ संग कबहि नहि छुटिहैं यमुना कुंज विलासी सँ

अस्तु साहेबराम दासक काव्य सौष्ठवक भक्ति भावना संग संतारूपक परिचायक अछि. भाषा शैली ब्रजभाषा युक्त मैथिली संतलोक साहित्यक रूपें मान्य अछि। भाषा पर राजनीतिक प्रभाव अदौ सँ होइत आयल अछि। तकर वानगी संत साहेब राम दासक पद पर फारसी-अरबीक प्रभाव सेहो देखल जाइत अछि -

भरन दे विदेशी मीता पनिआ हो
पैया परवो करबो हरि विनती कुंज गलिन के दुनिया हो
हम तू एक नगर के बासी द्वन्दव छोड़हूँ मधुबनिया हो।
....
नैन झझाए सुमरि हम साहेब दरदो न बुझए गुमनियाँ हो।।

एहि प्रकारें मैथिली साहित्य कें समृद्ध करावक विदेशी भाषाक शब्द व्यवहार एहेन स्वाभाविक रूपें सन्त कवि साहेब रामदास सँ आरंभ होइत अछि जकरा पं. गोविन्द बाबू रत्नपाणि झाक उदाहरण सँ मानैत छथि आ चंदा झाक मिथिलाक भाषा रामायण सँ स्वीकार कयलनि से बहुत

पहिने शुरु भऽ गेल छलैक। साहेब रामदासक रचनामे अलंकार योजना सेहो अनुपम अछि। पुराण आदिक प्रभाव देखल जा सकैछ :-

लेलायित गोपाल पद पंकज विहारी
श्रीगोपाल नंदवलाल श्यामसुन्दर बनमाल।"

अनुप्रासक समायोजन अपूर्व भेल अछि। फेर गीताक कृष्णक वस्तु स्वरूप भक्त अपूर्व आ भगवानक बीच सम्बन्धमे पद देखू -

संत जगत अनन्त लुबधै भनि जानिके सार
जाहि हारि अपगाय गिन्हौं तनि तेज वस्तुअसार।।
काम क्रोध मद लोभ तृष्णा जे जन झोके भार।
से जन हरि से मिलै साहेब निगम करत पुकार।

आशय अज्ञागता मे वशीभूत भय ईश्वरीय अंश रूपकें विस्मृत कय इन्द्रिय धर्मक वशीभूत भय क्लेशक कारण बनवैत छथि। अस्तु संत साहेबराम दास श्रीमद्‌भागवतक बहुत करीब बनल छथि। साहेब रामदासक पदावलीमे संगीत तत्व छन्द विन्यास आदिक भरमार अछि। राधाक वर्णनक प्रसंग अपूर्व विस्मयकारी, आशय ओ राधाकें ``राध साध संसिधौ धातुसँ ब्युत्पन्न मानैत छथि। साहित्यिक भावमे आत्म निवेदन भगवानक समक्ष हृदयखोलिकऽ राखि देने छथि। सर्वद्रष्टा हृदयदेब संत दास्यभाव सँ भागवत सम्प्रदायक अनुशरण करैत लिखैत छथि -

राधा कृष्णा भजन धन प्रान।
जकर भजन तेहि मिलि भगवान।
जे जन भजन केल मन चित लाय।।
तेहि दरवारहि लेल बोलाए।
अमर भेल ते धेल नहि देह।
रहि रहला हरि सौं के नेह।।
चित चिंता जेहि हरिके होए।
से जन अपन जनम नहि लोए।।
साहेब बस मन वृन्दावन घोर।
कब मिलिहैं वो नन्द किशोर।।"

दास भावमे इष्टक सौन्दर्य बोध आत्म निवेदन सँ परमानन्द आनन्दक अनुभूति करवैत छथि।

एहि प्रकारे कहि सकैत छी जे सम्पूर्णतामे ``हरि अनंत... हरि कथा अनंता`` संतक जीवन अराध्यक प्रति समर्पित भय मानवीय जीवन धाराकें सांसारिक कपटताक जे दुःफल होइछ ताहि

दिशि अगाह करैत अछि। संत रामदासक भाव - रचनाक प्रसंग अध्ययन ओ मनन सँ इएह प्रेरणा दैत अछि जे हुनक जीवन मानवीय जीवनक विधिपूर्वक यापनसँ भवसागर सँ पार उतरल जा सकैछ। अंतत: शास्त्रविहित भावसँ देखल जाओ तऽ साहेबराम दास सेहो परमहंस कोटिक श्रेणीक संत छलाह।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं :- संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म मिथिलाक अंतर्गत कोशी प्रमण्डक सुपौल जिला मे अवस्थित परसरमा गाम मे 5 सितम्बर, 1787 ई. मे भेलनि। स्वर्गारोहण 85 वर्षक अवस्थामे 1872 ई. मे भेलनि। एहिठाम हिनक बंशज विद्यमान छथि।[7] हिनक पिता पं. बच्चा झा धार्मिक विचारक कुजिलवार दिगोन मूल आ गोत्र कात्यायन छलनि। गार्हस्थ्य जीवन-यापन करैत छलाह। माता अत्यंत साध्वी प्रवृतिक व्रतोपवास रहयवाली छलीह। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर जीवन-चरित्रक अध्ययन पं. छेदी झा `द्विजवर`क रिसर्च बहुत किछु लिखि गेल छथि। लक्ष्मीनाथ गोसाईं योग साधित संत परमहंस छलाह। लक्ष्मीनाथ गोसाईंक मठ आश्रम मिथिला मे जतेक विकास कय रहल अछि ओतेक कोनो संतक स्थान जगजियार नहि भऽ रहल अछि। तकर मूलमे हमरा जनैत हिनक वंशज नीक आर्थिक औ संत मियाजक संग स्वयं संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं सतत भ्रमणशील आ हुनक शिष्यक संख्या यत्र-तत्र पसरल तैं एखन हिनक स्थान कुटी, मठक निर्माण भेल अछि।

संत श्री लक्ष्मीनाथ गोसाईं जीक रचना संसार मध्य कृष्ण विषयक रचना :- संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक प्रमुख रचनामे **`गीतावली`** जाहिमे **`श्रीकृष्ण गीतावली`** एवं **`श्रीराम गीतावली`** प्रमुख अछि। सतं लक्ष्मीनाथ गोसाईं पंचोदेवोपासक छलाह। हिनक रचना संसार विशाल अछि। विनय गीतावली, अध्यात्म गीतावली, आत्मोपदेश परोपदेश, होली चैताबरि प्रात:कालीय एवं महेशवाणी आदि।[8]

मैथिली कृष्णकाव्यक आलोकमे मिथिलाक अन्तर्गत हिनकर रचना खूब लोकप्रिय भेल छैक। कृष्णकाव्यक प्रसंग कहल जाय तऽ हिनक रचना सर्वांगीण मानल जा सकैछ। सुरसागर पद्धतिक आधार पर बाल-वर्णन, मुरली वर्णन, संयोग-वियोग आदिक पूर्ण वर्णन भेल अछि। असुर संहारक वर्णन, द्वापरमे दानव महिमाक प्रकोप आदिक संग। भागवतक सम्प्रदायिक अनुगामी संत, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक काव्यक प्रथम समीक्षक ललितेश्वर झा लिखैत छथि - विद्यापति ओ गोविन्ददास के बाद रचनाकार मे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कें नाम अग्रगण्य पंक्तिक रचनाकारमे अबैत छथि। हिनक रचना कृष्णगीतावलीमे जन्मसँ लऽ कऽ रूक्मिणी परिणय धरिक कथा पद्यबद्ध अछि। हिनक काव्य साधना विशाल अछि कहल जाइत अछि प्राय: 25000 पदक रचना कएने छलाह। जे हो संत परमहंस जकर परिव्राजक आसन, शयनादि भूमिपर हो सबदिन भूमि आसन-बासन रहलनि। एतद् लक्ष्मीनाथ गोसाईं आधार ग्रंथ श्रीमद्भागवत कहल अछि।

नन्दक अहिठाम जखन कृष्णक जन्म भेलनि ताहि प्रसंगके आधार बनाय काव्य रचना

अपूर्व भेल अछि। आनन्द सँ नन्दक आँखिसँ नोर बहय लगैत छनि।⁴ लक्ष्मीनाथ गोसाईंक काव्य भाव ओ भाषा तत्वबोध पुराण ग्रंथक भाव उद्धृत करैत अछि। यथा -

नमो नमो गीता हरिवंश। सुर नर सुनि-सजन
अवर्तशं।। ध्रुव।।
कोमल पद उपनिषद् श्रुति अंश। हरिमुख कथित संत
हिय हंस।।2।।

सुनत सकल मन होत हुला सँ लक्ष्मीपति अति पाप विनाशं।।30

आशय शास्त्रीय आचरण मिथिलाक ब्राह्मण परिवार मे एखनहुँ स्थान-स्थान पर विद्यमान अछि। कृष्णाक जन्म पर नन्दक अहिठाम व्रजवासीक आनन्दक भावकें गोसाईं लक्ष्मीनाथक वर्णन देखू :-

आजु देसु नन्द घर वाजु वधाई।
सुनि-सुनि घर-घर से ब्रजबासी
जो जैसे सो तैसे धाई।

लक्ष्मीपति कर जोड़ि के मांगत देहु यशोमति
सुयश बनाई-5

संत साहित्यक मध्य कृष्ण आ राधाक प्रसंग रचनाक भाव जे देखब ब्रजभाषाक शब्द विन्यास मैथिली भाषाक अत्यंत समीप सन प्रतीत होइत अछि। यथा सूरदासक एहि पद कें देखू-

सिखबन चलति यसोदा मैया
अरबराइ कर पानि महावति, डगमगाइत घरनी घरे पैसा

पुनः लक्ष्मीनाथ गोसाइं के पद देखल जाओ -

यशोदा जी चलन सिखावे, श्याम सीखे चलना।
चहु ओर से आय गोआलिनि, धाए नन्द अंगना।

श्रृंगार : - लक्ष्मीनाथ गोसाईंक श्रृंगार सम्बन्धी रचना अल्प अछि। राधा-कृष्णाक गुणगान करवाक कृष्णाक सुन्दरता पर लुब्ध गोपीक आकर्षणक केन्द्र तकर वर्णन -

मनमोहन छवि बेन मनोहर

....

श्याम जलद तन तरित वसन दुति
चमकत धरा चलत चहुँ जलधर।

लक्ष्मीपति नख शिख की शोभा

रचि डारो मनु विधि अपने कर।

अस्तु लक्ष्मीनाथ गोसाईंक राधा-कृष्णक प्रसंग कही ततेक रचना छनि जे मात्र रचनाक उपर शोध प्रबंध कायम कयल जा सकैछ। संत श्रेष्ठ कृष्ण विषयक रचनामे कल्पनाशीलता आओर काव्य प्रतिभाक अनुपम उदाहरण उपस्थित कयने छथि। श्रृंगारक संयोग आ वियोग, गोपी विरह, कृष्ण गमनक, संग-सखा गोवर्धन, वृन्दावन, यमुना, रास-बास-सुख ठाँव आदिमे कल्पनाक प्रौढ़ता, काव्यक मार्मिकता, विरहक-व्यथाक श्रेष्ठता कृष्ण, राधा, यशोदा, नन्द, बलराम आदिक संग रूक्मिणी परिणय वातावरण, व्यवहार संस्कार पर जे रचना हृदय स्पर्शी भेल अछि।

6. **भवप्रीतानन्द** :- सांसारिक जीवनमे कहब छैक - ``य: प्रीणयेत सुंचरिते पितरं स पुत्र:`` अर्थात जे अपन सचरित्रक बले दिवंगत पितरो के प्रसन्न कऽ दिएय असल मे सएह पुत्र थिक। से जखन वैद्यनाथधामक निकट स्थिति कुण्ड ग्राममे सरदार पंडाक घर भारद्वाज गोत्रमे आश्विन कृष्ण नवमी बुद्ध संवत 1943 अर्थात् इस्वी 1886 मे बालक भवप्रीतानन्दक प्राद्रुर्भाव भेल छलनि। कहल जाइत अछि भवप्रीतानन्दक जीभ पर सरस्वतीक वास छलनि से पिताक नाम त्रिपुरानन्द आ माता नूना देवी जन्म भने दऽ देलथिन्ह मुदा पालन-पोषण पितामह स्व. शैलजा नन्द जे बाबाधामक सरदार पंडा छलाह आ पितामही गृहलक्ष्मी सुमित्रा देवी कयने छलथिन्ह।

संत भवप्रीतानन्द जीक जीवन चरित्रक अध्ययन ओ मनन संभव नहि मात्र एतवे जे हुनक जन्मक बाद पालन-पोषण अपन गोत्रीय गुण सम्मन्वित भाव सँ कठिन परिस्थिति मे भेल। हिनक जीवन कठिन परिस्थिति सँ बहराइत गेल। जेहो हम एतय हिनक कृष्ण विषयक पद सँ हिनक काव्य विषयक लोक-गीत जाहि मे नवो रस, अलंकार, छन्द समन्वित हिनक रचना प्रो. रमानाथ झा अभिनव अपरूप कहने छथि। सदुपाध्याय कविवर भवप्रीतानन्द कें आधुनिक विद्यापतिक नामसँ विभूषित कयने छलाह।

हिनक रचना प्रसंगे कृष्ण विषयक प्रसंग हिनक रचना वत्सल्य रसमे कतेक मार्मिक भेल अछि देखल जा सकैछ -

आँगनमे नन्द रैया, देखी देखी नितरैया

दैया नाचत कन्हैया।

ताली दैथि यशोमति मैया, झमकि ठमकि तातक थैया।

राग झूमर कृष्णक बाल लीलाक वर्णन आनन्द विभोर कय दैत अछि। एहिठाम कृष्ण शिशुरूप आलम्बन, झूमि-झूमि नाचब उद्दीपन नन्द यशोदाक थोपड़ी बजायब संचारी भाव अस्तु वात्सल्य रसक पूर्ण परिपाक स्पष्ट रुपें झलकैत अछि।

श्रृंगार रस भावमे हिनक रचना श्रीमद्‌भागवत पुराणक आधार पर संयोग आ विप्रलम्भ मे देखू :-

जेना -

नन्द के छैला कृष्ण वयसे नवीन गो,

बजाबये वंशी पैसी विपीन गो।

प्रेम चारा गाँथी वंशी फेकले गोबीन गो।

....

एहिठाम कृष्ण तरुण रूप चिताकर्षक निर्जन विपिनान्तर वंशी-वादन, उद्दीपन, कृष्णक प्रति राधाक तीब्राकर्षणक एहि ठाम संयोग श्रृंगारिक अपूर्व वर्णन भेल अछि। भवप्रीता नन्दक अभिरुचि हिनक काव्य स्वयं सिद्ध प्रकाण्ड साहित्य कोमलाकान्त पदावली के पढ़ैत जयदेव, विद्यापति ओ चण्डीदाराक अनायारा रमरण भय जायत। एहेन कहल जाइत अछि। रांत कविवर भवप्रीता नन्द सम्पूर्ण प्रकृतिये मे प्रेम लीला देखैत छलाह। कवि कृष्ण आ राधाक मिलन महिमा पक्षक विविध भाव लय उद्घाटित केने छथि। हिनक अभिसार वर्णन - राग झूमर मे

रिमि-झिमि बरिषय झरिया हो राम !

राति अन्हरिया।

गरजय वदरिया कि विजुरीक लहरिया

....

मोहन बजाबय बँसुरिया, हो राम ! राति अन्हरिया।।

....

भवप्रीता नन्द माँगय पद तरिया हो राम

राति अन्हरिया ।

संत कवि भवप्रितानन्द वंगालसँ प्रभावित क्षेत्रक समीप रहला सँ हिनक काव्य छटाक प्रकाशन बंगला भाषामे एके समान भेल अछि। मुदा हिनक नाम आ काव्य भाषा मैथिली अछि जे हिनका उपर पी.एच.डी. कयने छथि हिन्दीक विद्वान प्रो. डॉ. शंकर मोहन झा स्पष्ट रूपें स्वीकार कयने छथि।

स्पष्ट अछि जे अध्ययन ओ प्राप्त जानकारीक माध्यम सँ एतवा तऽ कहले जा सकैत अछि जे रांत कविवर भवप्रीता नन्दक रचना प्ररार बिहार, बंगाल, उड़ीरा, झारखंड, मिथिलामे हिनक पद खूब गाओल जाइत अछि। हिनका प्रति जनमानसक ततेक ध्यान नहि गेल जतेक जेबाक चाही. विद्यापतिक पश्चात् मैथिली भाषा ओ साहित्य मे आधुनिक कालक चूड़ान्त काव्य मर्मज्ञ छलाह। हिनक प्रत्येक पदक शव्द ओ हुनक तीक्ष्ण बुद्धि ओ आचरण संतकीय भाव सँ लबालव भरल स्वयं जेना संगीतक अनादि नादक अंश मे संत छलाह।

7. **रामरूपदास** : संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं के समकालीन छलाह। हिनक प्रसंग

मात्र एतबे प्राप्त भेल अछि जे संत रामरूप दास समस्तीपुरक `मारी` मठक संस्थापक छलाह। हिनक भजन मिथिलाक अन्तर्गत विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कयलक। कृष्ण विषयक हिनक रचना :-

नहि आयल गोपाल लागत सुन्न भवनमा रे
बटिया हेरइत दुखित भेल देहिया रोए रोय
लाल नयनमा रे।।
मधुपुर अँटकि रहल मनमोहन क्यो कयल जादू
टोनमा रे।
रामरूप कहल बहुरि आओत निरखव कोमल
वदनमा रे।।[७]

संत रामरूप दास ऊँच्च कोटिक संतमे अबैत छथि तकर प्रमाण ओ लक्ष्मीनाथ गोसाईंक एकटा पद लिखने छलाह ताहिमे कहै छथि -

``कौन कहे प्रभु कैसी मूरति
कोउ कबहुँ नहि देखा है

एहि उपर्युक्त पदक जबाव दैत रामरुप दास लिखलनि -

अलख अगोचर है अविनाशी, हरि को हरिजन देखता है।
मीरा प्रकट कीन्ह मूरति सो, नामदेव दूध पिलाया है।

अस्तु संत रामरुप दास अपन मठमे रहैत ओहि क्षेत्रमे राधा-कृष्णक भावके अध्यात्म ओ मानव जगतक पुराण वेद सम्मत भावकें मानव जगतक पुराण वेद सम्मत बनेवाक अद्‌भुत सद्‌भावना ओ देखाओल।

8. पंचमदास - संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समकालीन संत पंचमदास कृष्ण भक्त छलाह। दुखद बात अछि जे ई कतौ दरभंगाक समीपक छलाह मुदा विशेष जानकारी नहि प्राप्त भेल हुनक एकटा पद प्राप्त भेल अछि -डॉ. फुलेश्वर बाबूक पोथी संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाई मे सँ

पलना गढ़ि ला दे बढ़ैया-भैया मोर।
जैसो श्याम सुन्दर है मेरी तैसो बनैयो कोर।
....
पंचमदास यशोदा भुलैहैं झुलिहैं नन्द किशोर।

एहि प्रकारें राधा-कृष्णक मिथिलामे भागवत सम्प्रदायक भावे विशेष महत्व रहलैक अछि।

9. **वेणीदत्त गोसाई :** - महाराज माधव सिंहक समकालीन ओ संस्कृतक पंडित छलाह। हिनक समय मोट-माट लक्ष्मीाथ गोसाईंक समकालीन संत कवि भागवत सम्प्रदायक अनुशरण करैत मैथिलीमे श्रृंगार पदक रचना कयने छथि। मुदा हिनक पद प्राप्त नहि भेल अछि।

10. **हरिकिंकर दास** - हिनक जन्म कोइलख गामक कुलीन मैथिल परिवारमे भेल रहनि। मिथिलाक संत ओ साहित्यक विशिष्टता प्रसंग मूलरूपेण श्रीमद्भागवताक स्नेही आशय राधा ओ कृष्णक अनुग्राही छलाह। आ ओ ब्रजभूमि चलि गेलाह।[9]

संत स्नेहलता :- मैथिली साहित्यक मध्य संत साहित्यक अन्तर्गत संत स्नेहलताक नाम बड़ आस्था सँ लेल जाइत अछि। भारतीय समाजमे रामकाव्यक परंपरामे हिनकर पद सब मिथिलाक घर-घरमे महल सँ पर्णकुटी धरि कीर्तन-भजन मे भावसम्पन्नताक संग गायल जाइत अछि। संत स्नेहलता आधुनिक कालमे अद्भुत मैथिलीक प्राचीन भक्ति काव्यक शिष्टचारक विशिष्ट रचनाकार छथि।

मिथिलाक सम्प्रति समस्तीपुर जिला अवस्थिति दरभंगा शहरक लहेरिया सरायसँ 25 कि. मी. दूर ड्योढ़ी गाम अवस्थित अछि। ताहिठाम स्नेहलताक जन्म 1909 ई. मे भेल रहनि। हिकनर प्रारम्भिक नाम कपिलदेव ठाकुर छलनि। जे हो हिनक जीवन अभावग्रस्त छलनि। बल्याकालहिसँ हिनक संस्कार किछु भिन्न रहनि आ शनैः शनैः मार्ग खुजैत गेलनि। मूल रूपें रामावत सम्प्रदायक निष्णात्त्व भक्तिक भावमे तल्लीन मुदा ओ मिथिलाक विशिष्टता पंचोदेवोपासनाक भावना सँ तल्लीन रहैत छलाह। श्री कृष्णसँ सम्बन्धित जन्मकालक परिवेशक उल्लेख करैत ग्वालरी प्रभेदक रचना जे बाललीला अंश होइछ ताकर एकटा वर्णन :-

शीश पर कन्हैया लेने सोचथि वसुदेव जी
से भरल जमुनमा कोना उतरब हो राम।
भादो के अन्हरिया राति बटिया हेरायल मोरा।
से गोकुला नगरिया कोना पहुँचब हो राम।
नीचा घेरय बाघ सिंह नाग मणियरबा
से एहेन विपति से कोना उतरब हो राम।
जमुना हँसैत पग छूबि कऽ सूखाय गेल
से कोना कऽ एहन दिन बिसरब हो राम।
लतिका सनेह छवि निरखिमगन भेल
से हमहूँ चरण पर लतरायव हो राम।[10]

श्रीकृष्ण लीलाक प्रति स्नेहलताक अनुराग ग्वालरि पदक सृजन, कृष्ण ओ गोपीक बीच नोकझोंक सुहृदयक विष्मयकारी अभिव्यंजना - स्नेहलताक एहि गीतमे देखल जा सकैछ -

यशोदा केर कोखिया से जनमल बालक।
सुनु-सुनु मुरली केर तान माइ हे।
सुतिका भवनमामे बाजय इहो मुरली

नाचय केओ नर्तक महान माइ हे

मुरली के धुनि सुधि-सुधि सब हरि लेल

हरि लेल सबहक ज्ञान हे माइ हे।*

उपर्युक्त पदमे स्नेहलता कृष्णक आलंबन आ मुरलीक ध्वनि उद्दीपनक संग विस्मरणादि अनुभवपाक सँ बात्सल्य रसक परिपाकमे अन्यान्य रसक संपोषक सेहो भेल छथि।

वस्तुत: स्नेहलताक समस्त रचना सामाजिक जीवनमे व्यापक रूपें शान्त, हास्य, सख्य ओ वत्सल्य रसक प्रधानता संग भक्ति रसक संपोषक छलाह। मैथिली संत साहित्यक आचारसँ संपृक्त चिरकाल धरि समादृत रहताह।

मैथिली साहित्यक मध्य महाकविक पश्चात राधा-कृष्णक जे भावधाराक चित्रण भागवतक आधार पर चित्रित भेल अछि, जकर आरंभ जयदेव कएने छलाह। से सनातनी संत लोकनि वैष्णव धर्मक सिद्धान्त के परमोत्पासनाक स्थान पर आत्मोपासनाक उपर विशेष महत्व देलनि। एहि क्रममे धार्मिक विचारधारा जकर उपास्यदेव विष्णु बासुदेव छलाह। वैष्णव संत लोकनिक भाषा, माध्यम लोकभाषा बनल से ताहि लऽ कऽ धरातल पर उतरलाह। जे कमोवेश राधा-कृष्णक मतक संत कड़ीमे अबैत छथि। ओ लोकनि कीर्तन गायन पदक रचना तऽ नहि कयलनि मुदा भक्तिक चरमोत्कर्ष पर साहित्यक जे गंभीर भाव लय अवतरित भेलाह ताहि मे प्रमुख -

लोचन - रागतरंगिणी :- विद्यापतिक पश्चात् राधा-कृष्णक भाव लय श्रृंगार विरह, माधुर्य शब्दालंकार, अर्थालंकार, कल्पनाक चमत्कार भाव बैविध्य लय जे लोचनक रागतरंगिणी मे वर्णन भेल से कृष्ण विषयक प्रतिनिधि पोथी अछि यथा :-

आनन्द कन्दा पुनर्मिक चंदा सुमुखि वदन तह मंदा

अधरे मधुरी सामरि सुन्दरी विहुसि जितए

सित कुसुम सिरी।

अस्तु, रागतरिङ्गिणीकार म.म. लोचन झा एकहरे मूलक कन्हौलीक श्रोत्रिय मैथिल ब्रह्माक रचल प्रस्तुत पोथीक एतिहासिक महत्व अछि। अपनाकोटिक सर्वप्रथम मैथिली काव्यधाराक संस्कृत सम्मन्वित तात्कालीन मिथिलाक एतिहासिक ओ सामाजिक सांस्कृतिक ग्रंथ होइत अछि। रचनाकार अध्यात्म ओ संत प्रवृतिक छलाह।

मनबोधक कृष्णजन्म :- मनबोध 18वीं शताब्दीमे भेल छलाह। हिनक रचना "कृष्ण जन्म" संत साहित्य मध्य अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। तैं हम एहि पोथी के अध्यात्म ग्रंथ सदृश मानैत छी। तकर मुख्य कारण अछि मैथिली साहित्यक अन्तर्गत पद्यक इतिहास पर जखन दृष्टिपात करब तऽ विद्यापतिक पश्चात् इएह एहेन भेलाह जे हिनक रचना मे एकटा नवीन परंपराक आविर्भाव भेल। भगवानक लीला सबहिक भक्ति भाव ओ कीर्तनियाँ नाटक मादे यथार्थ चित्रणक उद्येश्य सँ लिखल गेल अछि। एहिमे श्रृंगारक उद्दामक तऽ कथे नहि लेसो मात्र उपयोग नहि भेल अछि। प्रस्तुत पोथी मे

``जीवन जन्म सुफल कए लेखती`` द्वारा जे पोथीमे-भक्ति उद्‌गारमे मनबोधक काल कही तऽ नाटककाल छलैक एहिमे राधा मात्रक वर्णन नहि, अपितु रूक्मिणी, सत्यभामा आदिक चित्रण सेहो एहिकालक विशिष्टता मानल जायत अछि।

मनबोधक ``कृष्ण जन्म`` यथा नामहिसँ स्पष्ट अछि ``वात्सल्य रसक`` उद्रेक होइत अछि ताहि पर जे ई पोथी महाप्रभुक मथुरागमन, कंसक बध, जरासन्धक युद्ध आदिक संग कही तऽ हरिवंश पुराण ओ श्रीमद्‌भागवतक कथाक सामंजस्य बना वर्णन ततेक रोचक भेल अछि जे अपना समयमे सबसँ चर्चित पोथी रहल अछि। सम्पूर्ण ग्रंथ सरल सँ सरल शब्दावलीक प्रयोग आ ठाम-ठाम पर लोकोक्ति आदिक प्रयोग अलंकार विलोड़न, ठेठ शब्दक प्रयोग यथा -

कतओक दिवस जखन बीति गेल।
हरिपुनि हथगर गोर गर भेल।।
से कोनठाम जराय नहि जाथि।
कए वेर अङ्‌गनेहुँ सँ वहराथि।।"
2. गोवर गोंत सगर लपटायल
बल वस गाए सताबितेहि आएल।
1. कहला तरू जकाँ खसु अड़राय - उपमा
2. तारक तरु जनि लबनी लागल - उत्प्रेक्षा
लोकोक्ति -कर्मक लिखल मेटयके पार
`जसोमति के हिय हाथ हेरायल``

उपर्युक्त वर्णन सँ स्पष्ट अछि जे मनबोध कृष्ण जन्मक वर्णन कय मैथिली महाकाव्यक मार्ग सेहो प्रशस्त कयलनि। एतवे नहि हमर विषय प्रविध `संत साहित्यक` प्रसंग मिथिला मे एहि ग्रंथक महत्व अपूर्व अछि। मनबोधक पोथीक प्रसंगे यदि कहल जाय तऽ हिनक जन्म कतऽ ओ कोनठाम कोन परिवारमे आ किनकर पुत्र छलाह ताहि सभसँ उपर उठि देखला संता स्पष्ट अछि जे ओ संत ओ अध्यात्म जगतक मध्य मिथिलामे संत ह्रदयी व्यक्तित्वक लोक छलाह।

उमापतिक `परिजात हरण` :- मैथिली संत साहित्यक अध्ययनमे हमरा जनैत आवश्यक कारण कतौक विद्वान एहि पोथीके विद्यापतिक पूर्ववर्ती मानैत छथि। हमरा जनैत ताहि बातके ग्रियर्सन आ पश्चात् जयकान्त बाबू स्पष्ट कयलनि अछि - Umapati was older contemporary of M.M. Gokulnath Upadhyaya lived during the reigns of maharaja Narpati Thakur and Maharja Raghab Singh and his drama under the patronage of Bundelkhand Chief Hindupati. ``मथिली नाटक` काल जे महाकविक पश्चातक काल मानल जाइत अछि एकर भाषा विद्यापतिक `गोरक्षविजय` नाटकसँ

कठिन संस्कृतियाह छैक। एहिमे कृष्ण सत्यभामाक मान-मनौअल भेल अछि। एहि नाटकक आधारशिला उमापति - हरिवंश, श्रीमद्भागवत एवं विष्णुपुराण सँ पारिजात हरणक कथा-वस्तु के विन्यस्त कयलनि अछि । नाटकक लेल पाँच अंक होयब आवश्यक मुदा पाँच अंक मे नहियो रहैत प्रस्तुत पोथी हमर चर्चित प्रसंग नाटक कारक जगतमे एहि नाटकक उपर अपन मुग्धता से जाहिर कयलनि अछि।

यथा एकर पाँतिमे -

कि कहब माधव तनिक विशेषे अपनहुँ तन धनि पाव कलेशे
अपनुक आनन आरसि हेरि, चानक भरम काँप कत बेरी।
वर्णन सुमुमुखिक द्वारा, दोसरठाम सत्यभामाक आकुलता
हरिसञो प्रेम आस हम लाओल पाओल परिभवठामे।
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ आपप भेल परिनामे।।

कृष्णक भाव प्रिय प्रसीद मानिनि कहि क्षमाप्रार्थी अपूर्व विलक्षण वर्णन :-

कमल वदन कुबलयदुहु लोवन अधर मधुर निरमाने
सगर शरीर कुसुम तुअ सिरजल कियऽ तुअ हृदय पखाने।
असकति कर कंकण नहि परिहसि हृदय हार भेलि भारे
गिरि सम गरूअ मान नहि मुंचसि अपरूप तुअ बेवहारे।।

एतद् कीर्तनिया नाटक नवीनरूपमे लघु रहितो सकल गुण सँ युक्त अछि। एहिमे 11 गोट मैथिली गीतक संग एकर विष्णु पद आ सोहर एकरा प्रसिद्धि दियौलक। विद्वान रमानाथ झा एहि पोथीक प्रसंग समीचीन उक्ति - ``मैथिली काव्यभाषाक विकासक दृष्टिसँ लोकभाषा त्यागि पंडितक भाषा हनकहि काव्यमे विशेष रूपें प्रयुक्त भेल अछि। जे पंडिते मंडली धरि सिमित रहल।

मैथिली संत सहित्यमध्य राधा-कृष्णक भाव मात्र नहि एहिठाम शास्त्र-पुराणक भाव जगजाहिर अछि संत भावनाक प्रस्फुटन मिथिलामे ओहिठाम सँ चलि आबि रहल अछि। जतय संत सतत हरिक मान-मनौअलि मे मानवीय चेतना जगबैत आयल छथि से उमापतिक परिजात हरणक चर्चा कयने बिना हृदय शांत नहि होइत छल भाव मुग्धता एहि पोथीमे जे अछि, से ताहि आधार पर निश्चय कहल जा सकैछ जे उमापति संत प्रवृत्तिक छलाह आ हिनक ई रचना संत भाव सँ भरल अछि।

एहि प्रकारे निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे अनादिकालसँ मिथिला ब्रह्म विद्याक केन्द्र रहल अछि। विश्वविख्यात पंचोदेवोपासना ओ सहिष्णुता लेल अपन साहित्य मैथिली के प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। अहिठाम कृष्णपूजा कोनो देवी-देवता सदृश करैत आबि रहल अछि। कवि मनीषिक बीच हरिवंश, ब्रह्मवैवर्तपुराण ओ श्रीमद्भागवतक व्यापक प्रभाव रहलैक अछि। लौकिक

जीवनमे विरक्ति भक्ति पद संत पथिकक लेल उपरग्रंथसँ नि:सृत पद-भजन श्लोकक मादे अन्त:ज्ञानक प्रस्फुटन होइत अछि। आ मानी तऽ मैथिली संत साहित्यक मार्ग प्रशस्त भेल अछि।

मैथिली संत साहित्यक मध्य कृष्णाश्रयी शाखाक पृष्ठभूमि बूझब सेहो आवश्यक छलैक मैथिली संत साहित्यक परंपरा कही तऽ युगधर्म समानरूपें रहल अछि। मैथिल परंपरामे संत साहित्यक सर्वप्रथम कृष्णाश्रयी शाखा सँ आरंभ भेलैक जकर आदि पुरुष भेलाह कवि कंठहार महाकवि विद्यापति, पश्चात हिनक समकालीन विष्णुपुरी, हिनक सबहिक भावनामे भावना विभोर भेनिहार चैतन्य महाप्रभु कृष्णाक माधूर्य लीला मिथिलाक चैतन्य समकालीन रघुपति उपाध्याय भक्तिमूलक कविता संत जीवनक आधार बनल। साम्प्रदायिक संकीर्णता सँ सतत दूर मिथिला वैष्णवभावापन्न रहल अछि। हरि उपासना मे मैथिली संत साहित्यक निर्माणमे मध्ययुगीन शंकरदत्त उमापति, विद्यापति, लोचन, रामदास, चन्द्रकला हरिदास, यदुसिंह, यशोधर, भवप्रीतानन्द, धरणीधर, मधुसूदन, मनबोध, नन्दीपति आदि बुझू मैथिली भाषा-साहित्यक संत साहित्यक निर्माता रूपें वेदान्त अनुयायीक योगदान महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। से देखू नृसिंह ठाकुर वंशीवट पर शयन करयवला कृष्णाक वर्णन तऽ चण्डेश्वर ठाकुरक पूजा रत्नाकर कृत्यरत्नाकर, हरिकिंकर रूपें प्रस्तुत कयलनि अछि। स्कन्द सहित बामन आदि पुराणक संग कृष्ण कथाक वर्णन गीत गोविन्दक परंपरामे `रास` माने उदात श्रृंगारक कल्पना कहबै तऽ भागवतमे वर्णित सदृश्य कथावस्तुमे विद्यापति विष्णुपुरी ओ रघुपति उपाध्याय आदि स्वतंत्र ग्रंथक प्रणयन कय वैष्णव संत ओ परमहंस संत समाज मे अपन अराध्यक परंपरा ओ गुरु-शिष्टक जे भावना उजागर कयलनि अछि। वैष्णवक संत साहित्य मे मिथिलाक संत साहेब रामदास, लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रघुवरदास, रोहिणीदत्त, कमलादत्त, चक्रपाणिझा आदि संत द्वारा जे रचना साहेब रामदासक विरहवर्णन, भावात्मक रहस्यवादिता, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक विष्णुपद, साहेब रामदासक संगीत प्रणाली द्वारा भक्ति परक संत निर्वेद्यजन्य वैराग्यक मार्मिक अभिक्ति देलनि अछि।

●●●

संदर्भित-ग्रंथ

1. न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव

न स्वाध्यायस्त पस्त्यागो नेष्टापूर्व न दक्षिणा।

व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमा:

यथा बरुन्धे सत्संङ्गं सर्वसङ्गापहो हि माम्।।

श्रीमद्भागवदपुराण - स्कन्ध ।।

अध्याय - बारह

श्लोक - 1 एवं 2

2. ॐ तत्सदिति निर्देशो, ब्रह्मणस्त्रिविध: स्मृतय: गीता 17,23 विशेष अध्ययन ``उत्तरी भारत की संत परंपरा`` - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पेज - 14।

3. आचार्य शंकरक प्रसिद्ध उक्ति -

सत्यापि भेदाऽपगमे

नाथ ! तवाऽहं न मामकीनस्त्वम्।

समुद्रो हि तरङ्गा:

क्वचन समुद्रो न तारङ्गा:।

मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - आचार्य पं. सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज - 39।

4. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - आचार्य पं. सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज - 42।

5. `पक्षधर` मैथिली पत्रिका - सं. कुमार शीतांशु कश्यप, आलेख रामदेव बाबू, पेज -।।

6. वैष्णव धर्म ओ साहित्यक उदगम् - पं. राजेश्वर झा, पेज - 7।

7. महाभारत - 18/6/97

8. विष्णुपुराण 50,26

9. मध्यकालीन पूर्वांचलीय वैष्णव साहित्य पं. राजेश्वर झा, पेज-12।

10. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य - पं. राजेश्वर झा, पेज-13।

11. मध्यकालीन पूर्वांचल क वैष्णव साहित्य - पं. राजेश्वर झा, पेज-14।

12. आचार्य विद्वान डॉ. रामदेव बाबूक आलेख ``मैथिली मे भक्ति काव्यक प्रसंग`` वैष्णवभक्ति-काव्य जे प्रसिद्ध प्रकाशित मैथिली पत्रिका पक्षधर जे झारखण्डसँ प्रकाशित, पेज-12।

13. संत अंक गीताप्रेस, गोरखपुर, पेज-938 एवं 939।

14. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं प्रकाशक मैथिली अकादेमी, पटना। लेखक डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज-21।

15. स्कंदपुराणमे कहल गेल अछि :-

कौपीनाच्छादन वस्त्रं कन्थां शीत निवारिणीम्।

अक्षमालां च गृह्ययाद वैणवं दण्डमव्रणम्।।

माधूरकरमथैकान्नं परहंस समावरेत।

शिखां यज्ञोपवीतं च नित्यं कर्म परित्यजेत।

नोट : - संत अंक गीताप्रेम, पेज-203।

16. अर्ली हिस्ट्री ऑफ वैष्णव फेथ एण्ड मुवमेंट इन बंगाल एस.के.डे 1942, पृष्ठ-14।

17. संत अंक - गीताप्रेस, गोरखपुर, पेज-72।

18. विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन विहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना, डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पेज-14।

19. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पेज-212।

20. गोविन्ददास भजनावली संपादक - पं. गोविन्द झा, पेज-2।

20ए. पोथी मध्यकालीन पूर्वांचल वैष्णव साहित्य, पेज-113।

21. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव राहित्य-लेखक, पं. राजेश्वर झा, पेज-175।

22. गोविन्ददास भजनावली, संपादक - पं. गोविन्ददास, पेज-1।

23. गोविन्ददास भजनावली, संपादक पं. गोविन्द झा, पेज-3।

24. साहेब रामदास मोनोग्राफ, श्री शंकर झा - साहित्य अकादेमी, दिल्ली, पेज-10 एवं 11।

25. साहेब रामदास मोनोग्राफ, श्री शंकर झा - साहित्य अकादेमी, दिल्ली, पेज-36।

26. साहेब रामदास मोनोग्राफ, श्री शंकर झा - साहित्य अकादेमी, दिल्ली, पेज-81।

27. संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज-24 एवं 25।

28. विवेक पंचरत्न : संपादक- पं. छेदी झा द्विजवर।

29. गीतावली - परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, पृष्ठ - 66।

30. गीतावली - परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, पृष्ठ - 116।

31. भवप्रीतानन्द ओझा - मोनोग्राफ, लेखक - रामकिशोर झा `विभाकर` साहित्य अकादेमी, पेज-30 एवं 31।

32. भवप्रीतानन्द संगीत साधना - डॉ. मोहना नन्द मिश्र, मैथिली पत्रिका - `श्री मिथिला` अंक-2, वर्ष-2004।

33. सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाईं डॉ. फुलेश्वर मिश्र - मै. अ., पटना, पेज-....

34. मैथिली साहित्यक इतिहास, पेज-209, डॉ. जयकान्त मिश्र।

35. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. बालगोविन्द झा `व्यथित`, पेज-119।

36. स्नेहलता मोनोग्राफ - सा.अ. नई दिल्ली, लेखक - योगानन्द झा, पेज-68।

36A. स्नेहलता मोनोग्राफ - सा.अ. नई दिल्ली, लेखक - योगानन्द झा, पेज-118।

37. मैथिलीक प्रवेशिका - पेज-97।

●●●

श्रोत-ग्रंथ

1. महाभारत 18/6/97।
2. विष्णुपुराण।
3. श्रीमद्भागवतमहापुराणम् (मूलात्रम) गीताप्रेस, गोरखपुर।
4. वेदान्त दर्शन - ब्रह्मसूत्र, गीताप्रेस।
5. संत अंक, गीताप्रेस।
6. कल्याण भगवत्प्रेम - अंक संख्या 1, गीताप्रेस।
7. व्रतपर्वोत्सव - अंक गीताप्रेस।
8. गीतगोविन्द - जयदेव।
9. गीतगोविन्द मैथिली - पद्यमय अनुवाद - पं. श्यामानन्द मिश्र `महात्माजी प्रकाशक - मिथिला संस्कृति परिषद्, कोलकाता।
10. चण्डीदास लेखक सुकुमार सेन, अनुवादक - गोविन्द झा, प्रकाशक साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
11. डॉ. दीनदयाल गुप्त अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय।
12. नित्यरास रस नित्य नित्य गोपीजन वल्लभनन्ददास रास पंचाध्यायी, पंचम अध्याय।
13. मिथिला तत्व विमर्श, पृष्ठ - 165।
14. चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स।
15. कीर्तिलता आ लिखनावली।
16. पुरुष-परीक्षा - ग्रियर्सन सम्पादित।
17. Journal of Prihar & Orissa Research Society - XXXIII
18. मैथिली साहित्यक इतिहास (डॉ. श्री दुर्गानाथ झा `श्रीश`, डॉ. जयकान्त मिश्र, डॉ. वालगोविन्द झा।
19. मिथिलाक व्यथित इतिहास - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, मैथिली अकादेमी।
20. गोरक्ष विजय।
21. विद्यापति - डॉ. शिवप्रसाद सिंह, तृतीय संस्करण।

22. वर्णरत्नाकर - प्रो. आनन्द मिश्र, पं. गोविन्द झा - मैथिली अकादेमी।

23. परमहंस विष्णुपुरी : हिज आइडेंटिटी एंड एज, स्व. पं. रमानाथ झा, पटना यूनिवर्सीटी जर्नल, जिल्द-1, खण्ड-2, 1995।

24. विद्यापति सं. प्रो. आनन्द मिश्र।

25. सॉग्स ऑफ विद्यापति - डॉ. शुभद्र झा।

26. विद्यापति काव्यलोक - विहार हिन्दी अकादेमी, नरेन्द्रदास विद्यालंकार।

27. अत्याधुनिक मैथिली गद्य : प्रगतिशील, मैथिली प्रकाशन, भगवान पुस्तकाल, भागलपुर।

28. प्रवेशिका मैथिली साहित्य प्र. पुस्ताक भंडार, लहेरियासराय।

29. लोचनक रागतरंगिणी।

30. मनबोधक - कृष्णजन्म।

31. उमापतिक - पारिजातहरण।

32. राधाकृष्ण भक्ति कोश।

33. मिथिलाके कृष्णभक्ति काव्य।

डॉ. राधाकृष्ण चौधरी

डॉ. मोहनानन्द मिश्र

डॉ. प्रेमशंकर सिंह

34. मलयालम का कृष्णभक्ति काव्य -

डॉ. एन.रामन नायर

35. मलयालम के कृष्णभक्ति -

डॉ. एन.रामण नायर

डॉ. एस तांकमणि अम्मा।

●●●

अष्टम् अध्याय

मैथिली संत साहित्यमे राम काव्यक परंपरा

ब्रह्माण्ड पुराणक उतर खण्डक अन्तर्गत, अध्यात्म जगतक विश्वविख्यात आ विश्वबंध्य भारतीय काव्य साहित्यक निर्माता, संस्कृतक विराट चेतना आ भावनाकें आत्मसात केनिहार, एकटा एहेन श्लोकक अभिव्यंजनाक खोज कएने छलाह जाहिमे करूणा आ मंगलभावसँ सराबोर, जीव ओ जगतक बीच तादात्म्यरुप स्थापित केनिहार आदिकवि वाल्मीकीक मनोदशा सँ एकटा कालजयी काव्य-कृति ``रामायण`` हुनक अंतस् सँ प्रस्फुटित भेल। सन्मनुष्यताक सात्विक अन्वेषण वाल्मीकि `रामायण` प्रणयनक मुख्य प्रयोजन एकटा एहन नायकक महाकवि वाल्मीकि कें खोज रहनि जकर मानवीय मनोहारिताक तुलनामे ओकर परदर्शिता ओ सम्प्रेषणीयतामे देवतो मंद पड़ि जाइत अछि।

``रामक-अयन`` जकरा वाल्मीकि रामायण कहैत छथि, राम नरत्वक गरिमा आभाक भीतर दिव्यत्व सँ संसारमे विराट प्रेम, स्नेह, दया पुनुरुत्थान आ पुनर्वासनाक सुगंधि पसरि मानवमूल्यक/उद्‌बोधन धरि मात्र नहि अपन आचरण परिधानमे प्रस्तुत कयलनि अछि। महाकवि वाल्मीकि सत् आ असत्क जे संप्रदान आ आपादान **`राम आ अयनक`** एकटा अंतर्धाराक जे रूप देखने रहथि मानव-मूल्यक गवेषणात्मक सुन्दर कलाकृत मानव हृदयक जे रूप अपन महाकाव्यमे नायक रूपे ``राम`` संसारक सर्वश्रेष्ठ परिकल्पना कयने छलथिन्ह से सत्य आ धर्मक साकार रूप होअय, जाहि मानवक रूपकल्पनामे ओ लागल छलाह एनमेन `नर` केर उदाहरण `नारद` प्रस्तुत करैत छलाह। नर आ मानव वास्तव मे जे अर्थ नीक नीक गुण सम्मन्वित ``बहुजन हिताय बहुजन सुखाय`` लोकहिताकारी प्रवृतिकें चिन्हवाक प्रयास कयलनि से वएह थिका इक्ष्वाकुवंशक शिरोरत्न `राम`। जनिक शारीरिक सौष्ठव, बौद्धिक चिद्विलास कण-कणमे अध्यात्मिक अजेय पराक्रम पारदर्शी, रामक-अयन से मात्र ओ जीवन चरित्रे टा नहि, राम कोना चलैत छथि, कोना बजैत छथि, हुनकर क्रिया-प्रतिक्रिया वाह्य-अभ्यंतर आदिक परिपूर्ण, राज पुरोहित वशिष्ट सुझाव दैत छथिन्ह जे राम `मुनिपुंगव` छथि, पुन: ओ कहैत छथि राम सत्व सम्पन्न कारण - जन्मा पुरुष छथि जे देवताक अभीष्ट कार्यक सम्पन्न करक हेतु जन्मल छलाह।' विश्वामित्र हुनका माने दशरथ के कहैत छथिन्ह जे हुकनर बेटा `राम` महात्मा छथि।'

वाल्मीकि रामायण भाषा-संस्कृत मुदा सरल सहज रहितो ओहिमे गतिशीलता माने प्रवाह छैक अभिव्यक्तिक काव्यात्मकता, अनुभूतिक रमणीयता, सामान्यसँ सामान्य पाठकक हृदयकें आकृष्ट करैत अछि। तकर बानगी किष्किंधा उपवनक मनोरम वातावरणक वर्णन जखन ओ सीताक दर्शनक शुभ समाचार पबैत छथि से देखू....

ततश्चनुमता: सर्वे प्रहृष्टा काननौकस:।
मुदिताश्च ततस्ते च प्रनृत्यंति ततस्तत:।
गायन्ति केचित् प्रहसन्ति केचित्।
नृत्यन्ति केचित् प्रणमन्ति केचित्।।

पर्तान्त केचित् प्रचरन्ति केचित्।
प्लवन्ति केचित् प्रलपन्ति केचित्।।
परस्परं के चितदुपाश्रयन्ति।
परस्परं कचित्तिबुवन्ति।।
द्रुमाद् द्रुमं केचिदभिद्रवन्ति।
क्षितौ नागाग्रान्नपतन्ति केचित्।।[^]

जखन हनुमानजी सीता दर्शनक समाचार देलखिन्ह पश्चात् वानर वीरक जे उत्साहक वर्णन आशय वाल्मीकि अपन रचनामे मानव स्वभावक पश्चात् प्रकृतिक सौन्दर्य, भौगोलिक भव्यता आ ऋतुचक्रक निरंतरताक परिचय आदि देवामे जे सजीवता आदिक वर्णन सँ भारतीय जन जीवमे ``राम कथाक`` महत्व, जगजननी जानकी-अपनहि प्रसवभूमि पर दुखी रहलीह, वेदना सहैत रहलीह। राम विश्वामित्रक आश्रमसँ मिथिलाक जनकपुर धरि पदयात्रा कय जनक तनयाक स्वयंबरमे राहभागिता कयलनि। हमर कहवाक आशय राम कथाक उद्बोधन वाल्मीकीक रामायण आदिकाल सँ आदिकाव्य रूपें विश्वकोशात्मक सँ कतेको भाषामे रामायणक प्रणयन भेल। अवधी मे तुलसीदास रचित ``रामचरितमानस`` जे सबसँ बेसी प्रसिद्ध प्राप्त कयलक। बंगलाक कृतिवासक, मराठीक श्रीधरस्वामीक, तेलगू संत रंगनाथक, तामिलक कम्बनक बुझू विशाल साहित्यक सृजन भेल।[r]

आचार्य विद्वान प्रो. डॉ. रामदेव झा लिखैत छथि ``जे रामायणक महान विभूति जगज्जननी सीताक जन्मभूमि मिथिला आ भाषा मैथिलीमे राम काव्य पर प्राय: किछु विशेष नहि लिखल अछि, यदि लिखलो होयत तऽ एम्हर-ओम्हर मुदा तकर प्रमाणिक आधार नहि प्राप्त होइत अछि।`` उन्नैसम शताब्दीमे अबैत-अबैत मैथिल संत सबहिक मार्फते रामकाव्य पर रचना प्राप्त होइत अछि। तकर मूलमे ई एकटा विचारणीय प्रश्न अछि? अपनहि अध्यात्मिक भूमि पर जाहिसँ दुनियाँ प्रभावित ओ प्रकाशित भेल फेर ओही विषयपर रचनाक कमी ताहि प्रसंग हमर तर्क अछि जे मिथिला सीताक धरती एतय कवि आ दर्शन व्यापक आ गूढ़ शास्त्रक मनन-चिंतन तत्वोपलब्धि मार्गदर्शन करयवला पंडित लोकनि भेलाह तखन एतेक विलंब से कही औपनिषद वेदान्त चिंतन, ब्रह्म, जीवन, जगत, माया, मुक्ति द्वारा शास्त्र विरोधक अर्थ नहि लेबय चाहैत छलाह। धर्म सम्बन्धी व्याख्यान पर दार्शनिकता हाबी छलैक हमरा जनैत इएह भावना महाकवि सँ लऽ मध्यकाल धरि चलि आबि रहल छलैक तैं राम आ सीताक आधार वना कऽ रचना नहि भेलैक। एहि प्रसंग आर बहुत रास विमर्श कयल जा सकैत अछि। सम्प्रति हम अपन विषय प्रसंग पर केंद्रित कयलहुँ अछि।

संतक भावना सतत् परम सत्ताके बुझबाक प्रयास करैत अछि ``ब्रह्महिं माहि विराजत ब्रह्महि`` ।[४] ब्रह्म आ राममे अंतर नहि छैक

``ब्रह्मै कथि-कथि अन्त न पाया।
राम भगति बैठे घर आया।।``

आशय निर्गुण ब्रह्म जखन रामक रूपमे संत हृदयमे प्रवेश वा कही अवतरित भऽ जाइत छैक तखन सगुण भऽ जाइत छैक। मिथिलामे राम काव्यक विकासमे सबसँ बाधक रूपें बुझी तऽ शास्त्र विरोध मानल जाइत छलैक तैं राम काव्य पर रचना अत्यल्प अछि।

संत कवि परम सत्ता वा कही ब्रह्म के बुझावाक आ ओकर स्वरूप के कायम करवाक लेल ब्रह्म आ रामक बीचके अन्तर नहि मानैत छथि। ओ राम सर्वव्यापक बुझलनि ``ब्रह्महि माहि विराजति ब्रह्महि`` अर्थात् संत शास्त्र विरोध नहि अपितु ओ तऽ रामकें जगत कें कण-कणमे व्याप्त बुझैत छथि - लक्ष्मीनाथ गोसाईंके पद अवलोकन कयल जाय -

सदा एक राम नाम सत् सार।
जो कुछ आओर देखल हो आँखन।
सकल असत संसार
निर्गुण आइ सगुण है व्यापित
लक्षमीपति जो जाने यही विधि
उतरे भव नद पार।[6]

अध्ययन-अनुशीलन सँ मैथिली साहित्यक मध्य राम काव्यक प्रसंगे स्पष्ट अछि आचार्य रामदेव बाबू मैथिली भाषा साहित्य मध्य अध्यात्म साहित्यक गहन अध्ययनक संग लिखैत छथि जे मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत रामकाव्यक वा रामाश्रयी भक्ति काव्यक रचना साहेबराम दास तथा लक्ष्मीनाथ गोसाईंक पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी सँ पहिने विरले कोनो रचना वा स्तुति भेल होयत। हँ ! तखन नेपालक मल्ल राजा लोकनि द्वारा रामायण आधारित किछु नाटक अवश्य प्राप्त होइत अछि। मुदा मैथिली भाषा साहित्य मध्य राम काव्यक आधार बना अध्यात्म रामायणक आधार पर सर्वप्रथम ``मिथिला भाषा रामायणक`` रचना ``कवीश्वर`` 19वीं शताब्दीक उत्तरार्धमे कयल जे 1830 सँ 1907 धरि हिनक युग रहलनि। मैथिली भाषा-साहित्यक मध्य आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छथि। एतद् आब हम मैथिली भाषा-साहित्यक संत आ हुनक राम काव्य पर रचना संसारक अध्ययन ओ विश्लेषण करवाक प्रयास कऽ रहल छी ताहि क्रममे निम्नांकित संत आ हुनक रामकाव्य पर रचित रचनाक वर्णन कयल जा रहल अछि:-

1. साहेब रामदास : - मिथिला अध्यात्मक भूमि, भक्ति परंपरा भूमिक रज-कणमे आवेशित। एतुका वैष्णवी विचारधारा कही तऽ संत कवि लोकनिमे अति विशिष्ट, एहितामक काव्य परंपरा तत्वत; ओहि काव्य रचना पद्धतिक दिशि संकेत करैत अछि जे मानव समाजक मूल प्रवृत्ति पर आश्रित छैक। मिथिलाक भूमि पर अध्यात्मिक चिंतनक पंचगब सदृश्य, माने पंचोदेव उपासक मैथिल संत कवि रामाश्रयी शाखाक प्रसिद्ध काव्यकार संत साहेबराम दासक जन्मक प्रसंग कृष्णश्रयी शाखा अर्थात् सप्तम अध्यायमे कयने छी। संत साहेबराम दासक बेसी समय ईश्वरोपासनामे वितैत छलनि। ओना जन्म-मरणक प्रसंग कोनो निश्चुतिकी प्रमाणिक साक्ष्य नहि अछि। परंच महाराज नरेन्द्र सिंहक प्रसंग स्वयं संत हुनक पराक्रमसँ अभिभूत छलाह आ हिनक पचाढ़ी आश्रमक लेल भूमि महाराज नरेन्द्र सिंह देने छलथिन्ह।

`गोकर्ण' भागवत सदृश पुत्रक उपदेश पाबि गृह त्यागि संन्यास ग्रहणकय पंचोदेवोपासना मे लागल खासकऽ हिनक रामाश्रयी शाखाक भीतर काव्यादर्शनतुलसीक काव्यादर्श पर आधारित ककरो गुणगान करब हिनक धारणा नहि छलनि मुदा ताहि समयक राजनीतिक परिदृश्य एहने रहैक जे मुसलमान शासकक आक्रमण सँ त्रस्त मिथिलाक रक्षा करवाक प्रतिबद्धता ओ प्रजाक सुरक्षा प्रदान करवाक जे अभीष्ट महाराज राधव सिंह (1701-1739 ई.) आ महाराज नरेन्द्र सिंहक समय (1743-1760 ई.) धरि संपूर्ण रूपें मिथिला नरेशक गुणगान करब से हुनक कोनो चारण कविक दृष्टियें नहि बुझल जयबाक चाही अपितु हिनक समय काल के उजागर करैत अछि। जे हुनक एकटा पदक एक पाँती -

``साहेब गिरिधर हरहु नरेन्द्र दुख कहहु सुखित मिथिलेश रे की।``[7A]

उपर्युक्त पंक्तिसँ स्पष्ट भेल जे संत साहेबराम दासक काल 1701 ई. सँ 1760 ई. धरि मानल जयबाक चाही। जहाँ अन्तः साक्ष्य पर हिनक जन्म 1680 सँ 1690 ई.क बीच मानल जाइत अछि। तहिना हिनक स्वर्गारोहणक समय सेहो कोनो प्रमाण नहि अनुमानतः 1770 ई. निर्धारण कयल जाइत अछि।

संत साहेबरामदासक उद्‌भुत गंगेश उपाध्यायक कुलमे भेल छलनि। आधुनिक युगक संत भक्त कवि रूपमे मैथिली भाषाक अन्तर्गत हिनक रचनाक महत्वपूर्ण स्थान छैक से तकर मूलमे अछि श्रृंगार रससँ विहीन रचना मैथिली भाषाक अन्तर्गत जतवा संत कवि भेलाह ओ भागवत सम्प्रदाय मे राधाकृष्णक आधार बनाय मधुर भक्ति भागवत पुराणक रासवर्णनक योग सं कृष्ण भक्ति वर्णन कयने छथि श्रृंगारक पराकाष्ठा सन प्रतीत होइत अछि। एतद् संत साहेबराम दास `प्रपत्ति' मार्गक अवधारणामे अपन गुरुक प्रति हुनकर भावना कतेक मार्मिक जे भगवानक स्वरूप दर्शित होमय लगैत छनि यथा -

गुरू बलिराम चरण धरि माथे
साहेब हरि अपनौलनि हे।
अब तौ जरा मरण छुटि जैंहे
संशय सकल मटौलनि हे।

हिनक गुरु क्योटा गाँव जे सम्प्रति मिथिलाक अन्तर्गत बेनीपट्टी अनुमंडलमे मधुबनी जिलाक अन्तर्गत परिसरे मूलक ब्राह्मण बलिराम दास छलथिन्ह। संत ज्ञान आ भक्तिक समन्वयसँ हुनकामे अनुपम व्यक्तित्व बनल रहैत छनि। समाज मे संत साहेब रामदासक प्रेम-भजन-स्मरण-जप मे हुनका भगवानक दीव्यस्वरूप दर्शित होमय लगलनि, गुरु एहि सब रूपसँ प्रभावित भगवान भय शिष्य रूपें गनल जाइत छथि। संत हृदयक परिचायक साहेबरामदासक प्रति लोकक आकर्षण बढ़ल जाइक ओ अपन कुटी रूपें सर्वप्रथम वसन्तपुर, दोसर दिगौन तेसर केओटा चारिम जमैला पाँचम केथाही छठम ओ अंतिम पड़ाव रूपें ``पचाढ़ी`` भेलनि। जे दरभंगा जयनगरक मार्गमे केवटी-रनवेक पूब रैयाम लग अवस्थिति जतय एकान्त निरा पद स्थान जकरा बुढ़वन कहल जाइत छलैक। साहेब रामदास अपन त्रिसूल गारि एकटा पाकड़ि गाछ लगबैत छलाह, से लगौलनि।

एकटा कुटीक घर बना कमलाक कछैर पर संत साहेब रामदास अपना समाधिक लेल उपयुक्त स्थान मानलनि, आइयो पाकड़िक गाछ स्मरण ओ दर्शन करवैत अछि।

संत साहेबराम दास यशस्वी संत रूपें मैथिली भाषा-साहित्यमे काव्य निर्माण कयलनि अपन इष्टक प्रति भजनक माध्यम बनौलनि मुदा अपन नाम प्रसिद्धिक स्पृहा तऽ छलनि नहि जे एकर संकलन करितथि। अस्तु हिनक गीत आ मुक्तक यत्र-तत्र छिड़ियायल छलनि। जकरा कवीश्वर एकत्रित कय युनियन प्रेस राज द्वारा छपबौलनि ``साहेवरामदासक गीतावली`` नामे प्रकाशित करबोने छलाह। दोरार खेप डॉ. ललितेश्वर झा करबौने छलाह। ``राहेबरामदारा - पदावली`` नामे। वस्तुत: चंदाझाक `गीतावलीक` पर्याय अछि। जे हो संत साहेबराम दासक जीवनक जे किंबवदंति से हुनक देवरूप दर्शित करवैत अछि। अस्तु विषय प्रसंगसँ किछु संत प्रसंगक विश्वसनीयता भाव प्रवण वर्णन आवश्यक अछि, जे संतक महात्म्यकें दर्शित करैत छैक। आब प्रस्तुत अध्यायक प्रसंग ``रामाश्रयी शाखाक`` काव्य बिबरण प्रकारें संत साहेब राम दासक काव्य विवरण कयल जा रहल अछि :-

साहेबरामदासक रचनामे रामक चरित्रक वर्णन : मैथिली भाषा-साहित्यक एकटा अन्यतम विशिष्टता अछि जे एहिठाम रचनाकार खासकऽ संत शिरोमणि कवि पंचोदेवोपासना मे विश्वास रखलनि अछि। जे अन्यान्य भाषा-साहित्यमे सर्व सम्पन्नताक भाव काव्यकारमे नहि देखवा मे अबैत अछि। मध्यकालक जे काव्यकार एकपक्षीय कृष्ण पर जखन रचना करय लगलाह तऽ रामके विसरि गेलाह, रामक रचना करय लगला तऽ कृष्ण कें विसरिलाह। ओना साहित्यक दृष्टि सँ एकरा जे नीक मानल जाइक मुदा प्रतिभाक दृष्टिसँ एकपक्षीय तकरा उचित नहि कहल जयतैक। मिथिलाक भूमि अध्यात्मक भूमि पंचोदेवोपासनाक भूमि जकर परिचय ज्योतिरीश्वर महाकवि विद्यापति, साहेबरामदास, रामस्नेहीदास आदि रचनाकार मैथिलत्व होयवाक परंपरानुसार मानल जायवाक चाही। `राम` नामक ब्याख्या जे जाहि रूपें कयल जाओक, मुदा एहि व्याख्यामे वाल्मीकिक नाम छोड़ि देला सँ ओ अपूर्ण मानल जयतैक। वाल्मीकि जे रामकाव्य पर रचना केनिहार प्रथम आदिपुरुष छलाह जे संस्कृत भाषामे ``रामायण``क प्रणयन कयलनि से ``राम`` शब्दक व्याख्या व्याकरणीय दृष्टियें कयलासँ एहि शब्दक सम्पूर्णताक अनुभव होइत अछि। यथा- रमु क्रीड़ायाम धातुसँ निष्पन्न शाब्दिक अर्थ आनंदक वाचक, संत योगीमे रमणक अर्थ करैत कहल जाइत अछि जे `रमन्तो योगिनोऽन्तो सत्यानंदे चिदात्मनि` दोसरठाम ``अखिलं राति महिस्थिति: राम:`` अर्थात् रातिक शोभा तथा महिक अर्थ पृथिवी - ``राम`` शब्दक सम्पूर्णतामे भूमण्डलक शोभा वढ़ेनिहार वनैत अछि।[१] महाकाव्यकार बाल्मीकि सेहो अपन नायक ``राम`` के जीवमात्रक करूणा आ मंगलभाव सँ सराबोर प्रवुद्ध चेतनाक भावुक भाव कालजयी साकार पुरुषक गौरव-गाथाक गुणगानक संकल्प कऽ लेलनि। अस्तु साहेबराम दास जाहि रामक परिकल्पनामे पूर्ण रूपेण बालमीकि सँ प्रभावित बुझना जाइत छथि :-

झुरवहि जानकि नृपसुजस सकल दूरि गेल
चौह भुवन तिहु पुर सुरमुनि एहन कतहु नहि भेल

मेटल सुयश शम्भु हे नृपत्ति के अजस रहल महिघाए।
धनुष तोरए जत आएल महाबल देखिकें रहल लजाए
सेहो-अन्धर दुहू नैना भेल जे जे देल विचार
प्राण तेजि सुरुपुर जाएत भूपति लै अपयशकें भार
एहेन कठिन प्रण एहि महिमण्डल काहु कयल नहि ठान
जकरे वलें कएल से सभ टसमस भेल
आब नृप निरसत प्राण।।
प्राण तेजत नृप प्राण नहि तेजते होएत नै दोसर निदान
साहेब सोच छोड़हु सिआ पितु के धनुष तोरत भगवान।"

मिथिलाक कविक विशिष्टता रहलनि अछि जखन ओ रामक वर्णन करय चलता तऽ सीताक वर्णन करबे करता सेहो जखन सीताक वर्णन होयत तऽ रामक अपेक्षा सीताक विशिष्टता देखेता जखनकि ``युगल जोड़ी`` ``राम और सीताक`` जोड़ी युग-युगसँ चलि आबि रहल अछि। मिथिलाक विधानमे सर्वविदित अछि मिथिला स्वयं माँ जगदम्बाक जन्मस्थली शक्तिपीठ बनल अछि। सिद्ध कवि संत साहेबरामदास उपर्युक्त पदमे सीता-स्वयंवरमे राजा जनक अधिरता स्वयं सीता सेहो अधिर छथि जे देश-विदेशक राजकुमार हारि कऽ चल गेला आब रामक सुकुमारता-कोमलता आदिके देखि सब व्याकुल छथि स्वयं सीताकें आँखिमे नोर छनि ओ मनहि-मन रामके वरण कय लेने छथि मुदा डर सता रहल छनि जे धनुष यदि हिनकासँ नहि टूटत तऽ की होयत? जनक प्राणान्त करता सीता आजन्म कुमारि रहती... आब दोसर पद देखल जाओ :-

वसलि जानकी हेरे अबध नगर के ओर।।
दुर्ग्ग शरासन हर शंकर के सुमरि नयन ढ़रै नोर
चतुरानन सनकादिक शंकर भुलै गौतम व्यास

....

होहु सहाय गौरी मिथि कर मेटहु हमर दिनवाम।
एह दुहू नैन देखावहु दरबरि चरन कमल श्रीराम।।
साहेब टूटत सरासन हरि के हरिषित होएत विदेह।
जह तह सुनल श्रवम भरि किरति भेल सबहिकें नेह।।

अंतिम उपर्युक्त पदक पाँतीमे मिथिलाक ललनाक विशिष्टता ओ सतत मर्यादामे अपन विचार प्राक्ट्य दर्शन करबैत छथि मुदा बूझयमे नहि आबय दैत छथिन्ह।

अस्तु संत साहेबराम दासक भावना पंचोदेव उपासना रामक रामाश्रयी शाखाक दिशि हिनक रचना अल्प मुदा जे किछु जतबा मिथिलाक विशिष्टता आ रामक संग सीताक चरित्रकें उत्कृष्टता देखबैत छथि ताहिमे रामक चरित्रक अवमानना नहि केलनि अछि। संत साहेब

रामदासक भाषा सधुक्करी लौकिक अध्यात्म जगतमे परलौकिक कामना सँ भरल सनातन संगीत तत्व संत साधनाक जे भावना, आकर्षित करैत अछि।

2. संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं :- परमहंस कोटिक संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं मिथिलाक विशिष्टताक अनुरूप पंचोदेवोपासनामे विश्वास रखैत छलाह। `रामाश्रयी` शाखा मे हिनक विशेष रचना नहि छनि मुदा रामकाव्य परंपरा तऽ वाल्मीकि लगसँ आबि रहल अछि एहि परंपराक गोस्वामी तुलसीदास जिनक अवधीमे लिखल रामचरित मानस अपन अद्भुत प्रसिद्धि प्राप्त कयल। प्राचीन कालक रचना संस्कृतमे, विरचित आ तुलसीदासक अवधीमे लिखल ``रामायण`` तदुपरांत मिथिलामे रामाश्रयी शाखाक उन्नायक संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कें कहल जयबाक चाही। जे तुलसीदासक गीतावली सदृश ``**रामगीतावली**``क रचना कयलनि जाहिमे ओ रामक जन्मोत्सव सँ आरंभ कयने छथि। रामगीतावलीमे कृष्ण गीतावलकी अपेक्षा कम पद अछि। मुदा जतबे सरल ओ सुन्दर भाषामे वाल्मीकीय रामायण सदृश रामजन्मसँ आरंभ कएने छथि।[6] रामकाव्यक रचना सेहो हिनक कृष्ण काव्य सदृश उँच्चकोटिक भेल छनि। रामक जन्म राजा दशरथक अहिठाम होयब पुत्रेष्टि यज्ञक पश्चात् एक तऽ राजा तखन पुत्रक जन्म आ सो पूर्ण रूपेण एकटा अकल्पनीय भेल, हारल जीवनक बीच सफलताक दर्शन आशय सम्पूर्ण अयोध्या उत्सव-महोत्सवक वातावरण चहुदिशि पसरि गेल छलैक। दशरथके तीनटा रानी तीनूसँ कौशल्या सँ राम, सुमित्रासँ लक्ष्मण ओ शत्रुघ्न आ कैकेयीसँ भरत। एहि प्रकारें जन्मोत्सव आधार बना संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक रचना चैतावरमे कतेक सुमधुर भेल अछि :-

दशरथ जी के धाम अवध बधाई बाजे।
जनमे जगत हित रघुवर श्री राम।।
सुनि-सुनि धाये आये याचक, गुणि ग्राम हो रामा।।
जेहि जो मनोरथ रहे तेहि पूरे सो काम हो रामा।।
बाजत बधाई आज राजा दशरथ राजा हो रामा
नगर महल धार, घर-घर सजे साजे हो रामा
कौशल्या के सुत लखि पूरित `लक्षन` काज हो रामा।।

गोस्वामी तुलसीदास जीक रचनामे अयोध्याक वातावरणक वर्णन भेल अछि जखन कि गोसाईं जीक वर्णन मिथिलाक दृष्टि सँ कयल गेल छैक।

काव्य दृष्टि सँ ``अनुप्रास`` अलंकारक वर्णन लक्ष्मीनाथ गोसाईंक रचनामे मधुरताक घोल श्रुतियानुप्रास मे अपूर्व भेल अछि। लक्ष्मीनाथ गोसाईं ओहि सब प्रमुख अवसर परहक पद रचना कयलनि यथा-बाल-लीला। अहिल्योधार, जनकपुर मे सीता, रामक-सौन्दर्य, भरतक-भ्रातृत्व, शिव धनुष भंगक वर्णन पद देखल जाय -

शिव पिणाक तोड़े केहि कारण।
परम पुनीत दनुज कुल मारण।।

सुनत वचन बोले रघुनन्दन, विप्र नाहि कछु दोष हमारण।।
जनक राम प्रण राखन कारण, धुव्रत टुटेउ धनु देखत लाखन।।
को है जनक जो किन्ह प्रतिज्ञा, धनुष लाय मेरे पुरुखाजन।।
सो धनु तोड़ि जान की लेकर, देखत हौं जैहें को राजन।।
बीर बात सुनि बोले लछुमन, करहुँ जाय द्विज भिक्षायाचन।।
जव तप होम नेम व्रत पूजा, शिष्य पठाबहु वेद पुरानन।।
परशुराम अनुमान कियो मन, ये दोउ देव लिये अवतारन।।
``लक्ष्मीपति`` कर जोड़ि नाइ शिर, राम चरण उर किन्हों धारण।।

आशय परहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक रचना यद्यपि अल्प मुदा रामायणक सब घटनाक वर्णन किछुए पदमे खूब मार्मिक चित्रण कयलनि अछि। यथा बनवासक, मंथरा-कैकेयी संवाद, भरत-राम संवाद में निषाद राजक सेवा साधनाक वर्णन, चित्रकूटमे वाल्मीकिसँ भेंट, सीता हरण, जटायु-भेंट, शबुरी-भक्ति-भावना, हनुमान - सुग्रीव मित्रता, राम-वियोग-वर्णन, हनुमानक द्वारा लंकादहन आ सीताक खबरि आनब, रावण सँ मन्दोदरीक सलाह, रावण बध, विभीषण के लंकाक राजगद्दी पर वैसायब आ अंतिम रामक राज्यक अभिषेक। यथा पद अवलोकन करी परमपूज्य परमहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक रचनाक शब्द विन्यास ओ प्रवाहके देखैत कही बहुत हद धरि तुलसीकृत रामायणक समीप बैसैत अछि :- संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक पद विस्तारण जतेक चाही नहि भेलैक, संत सान्निध्य धरि किछु हद तक भेल - देखल जाय -

मंगल राम सिंहासन राजे
बाम भाग मे जनक नन्दनी दायें लखन छत्र लै राजे।।
पीछे भरत लिए कर चामर, आगे मुँह हनुमान विराजे।।
....
किन्ह प्रणाम सकल नृप सादर, भेंट चढ़ाय चले सुरराजे
लक्ष्मीपति के पुरे मनोरथ, जवही राम अयोध्या राजे।

अस्तु उपर्युक्त पद सबहिक अवलोकनक पश्चात् ई पूर्णतया स्पष्ट अछि जे परमंहस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक पदमे सधुक्कड़ी बोलीक शब्द विन्यास जे भेल अछि जाहिसँ मैथिली भाषाक अन्तार्गत जे भेल अछि अनुपमेय उपयोग भेल अछि। कबीर, नानक प्रभृति निगुर्णोपासक लेल स्वामी जीक रामावतार चरित्र चित्रण अध्यात्मिक उपदेश अछि सगुणोपासनाक लेल रामावतरणक चरित्र चित्रण भेल अछि।।' अस्तु योगी संत सर्वत्र समानभावमे आत्मोपदेश मे आत्म सुधि सम्बन्धी विनयशील भेल सांसारिक जीवक लेल संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं मैथिली भाषा साहित्यमे सुष्टु ओ अलौकिक साहित्यक सृजन कयलनि।

3. संत रामसिनेही दास : - दरभंगा जिलाक मधुरा नामक बस्तीक 1876 सम्वत मे

जन्मित पतिसरे नौच्च मूलक कौण्डिल्य गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण छलाह।[2] अतिशय अभावमे जीवनयापन करैत स्वाध्याय मे लागल छलाह कतेको ग्रंथ ओ अपन हाथसँ उतराने छलाह। हिनक पिताक नाम हनुमान दत्त आ माता मनहरि दाइ। अध्ययनशील संत रामसिनेहीदास काशी आदि घुमैत कतेको विषय मे आचार्य कय 35 वर्ष बाद अपन घर घुरि अएलाह। पश्चात् श्री चंडीगोस्वामी सँ श्री संप्रदाय मे दीक्षित भेलाह। संत शिरोमणि रामसिनेही दासक अपन एकटा भजन संग्रह प्रकाशित भेल छनि -``रामसिनेही भजनावली``। जे अत्यधिक ख्याति अर्जित केने रहैक। संत शिरोमणि रामसिनेही दास मूल रूपे ``रामश्रयी-शाखाक`` संत भेल छलाह, ओना पंचोदेवोपासनाक संत रामसेनेहीदास सेहो छलाह। जे तात्कालीन राजनीतिक व्यवस्था अंग्रेजक हाथमे छलैक, शासन व्यवस्थामे व्याप्त कुरीतिसँ व्यथित अंग्रेजक विरोधी छलाह। ओ अपन एकटा रचनामे विरोधस्वरूप कहैत छथि :-

ब्रिटिश राज करत पाप, जनगण विच बढ़ल दाप।
आबि आब हरहुँ ताप, सत्व सुखदाई।।

उपर्युक्त पदमे रामसँ अनुनय-बिनय करैत मानवता पर आक्रमण लेल पापी अंग्रेज के नाश करवाक लेल आग्रह करैत छथि। रामसिनेही दासक एक अन्य पदसँ अपनेकें अवगत कराबी। राम उपासनाक हिनक एकटा उल्लेखनीय पद अछि :-

जगतमे राम नाम छथि सार।
शिव-गणपति-आदिम कवि जानथि
महिमा हिनकर आपार।।1।।
मातु-पिता-गुरू-मित्र-सहोदर पुरजन-कुल-परिवार।
सभ कियो माया-मोहक संगी छथि करू मनहि बिचार।।2।।
अबध-जनकपुर की वृन्दावन जा कए हो हरिद्वार।
पुरी-प्रयाग वराणसि मे भव सदिखन इएह उचार।।3।।
गणिका गीध गजेन्द्र अजामिल पापिनि अधम गँवार
लए-लए नाम प्रेम सँ प्रभु केर उतारल भवनिधि पार।।4।।
सतयुग जोग, जाग-त्रेता छल, द्वापर-दान-उदार।
`राम सिनेही` जनहितं केवल कलियुग नाम आघार।।5।।[13]

संत राम सिनेही दासक अध्ययनक गहीरता आ भावक गंभीरताक संग पदमे दार्शनिकता सेहो झलकैत अछि। रामस्नेही दासक परमहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाई संगे कथोपकथन दोहा मे होइत छलनि। अस्तु रामस्नेहीदास युगानुकूल वर्णनसँ संत हृदय सतत मानवीय पीड़ाकें उजागर करैत रहलाह।

4. अपूछदास :- संत अपूछदास दरभंगा जिलाक अंतर्गत ``बाँकी`` गामक सतलखे सतौर

मूलक काश्यप गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण छलाह। ई चतुर्भजी संप्रदाय सँ अबैत छलाह, संत लक्ष्मीनाथ समकालीन अपूछदासक समय काल (1791-1882 ई.)क वीच पड़ैत अछि। हिनक 318 पदक एकटा संग्रह शिष्य मोहन दास "जन प्रकाश" नामसँ प्रकाशित करबौने छलाह। कहल जाइत अछि जे संत रामस्नेही दासक पुत्र रामअधीन दास सेहो किछु पदक संग्रह कएने छलाह। हिनकर मतक अभिप्राय राम आ कृष्ण अभेद छथि। प्रात:कालीन उषाकालमे नित उठि अपन बनाओल पद गबैत घूमि-घूमि लोक के जगबैत छलाह जनश्रुतिक आधार पर हिनक पद प्रस्तुत अछि :-

जेहि राम से लौ लागी, दुर्जन का करत रे भाई।

जल ते काठि अगिनि मह डारो, गिरितें दियो गिराई।

देखो जन प्रहलाद कारण, पृथ्वी तुराई।

अपुछदास एक बाँकी रह गए अर्जी ले के सुताई।।"

अस्तु मैथिली भाषा-साहित्यक संत साहित्यमे सधुक्कड़ी बोलीक प्रचार-प्रसार एकर मुग्धता आर बढ़ा दैत छैक से विशिष्टता हिनकहुँ पदमे प्राप्त होइत अछि।

5. गिरवर दास :- संत गिरवर दासक प्रसंग विशेष आ स्पष्ट उल्लेख नहि प्राप्त होइत अछि। किछु छिट-फुट स्तर पर हिनक जे परिचय प्राप्त भेल अछि। ओ दरभंगा जिलाक अन्तर्गत, बालब्रह्मचारी भागवताक विद्वान पंडित अपन खर्च सँ संस्कृताक विद्यार्थी कें पढ़बैत छलाह - हुनक एकटा खंडित पद रामश्रयी शाखा मे प्राप्त होइत अछि -

मानुख तन दुर्लभ रे भाई।

... ...

गिरिवरदास प्रताप राम के, तरत उदयम अन्यायी।

अस्तु एतेक कम रचनामे साहित्यिक व्याख्या करब मात्र एतवे जे सहृदयी संत रामाश्रयी शाखामे मानव हृदय कें उद्वेलित कयलनि।

6. रामकाव्यक प्रणेता चंदा झा :- मैथिली भाषा-साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान आचार्य डॉ. रामदेव झा अपन एकटा लेखमे लिखैत छथि जे उन्नीसवीं शताब्दीमे मैथिली भाषा-साहित्यक मध्य रामकाव्यक आधार बनाय छिट-फुट रचना कतहु कोनो ठाम विरलेक भेटैत अछि। जेना नेपालक मल्ल राजा सब द्वारा बनाय रामायण पड़क नाटकक प्रणयन वा दशावतार वर्णनक प्रसंग पश्चात् साहेबरामदास (जिनक चर्चा एहि अध्याय के आरंभ मे भेल अछि) आ लक्ष्मीनाथ गोसाईं आदि समतुल्य पड़क रचना कयने छथि से गीत, पद आदि भेटल छैक। मुदा अध्यात्मिक अवधारणा प्रसंगे आचार्य लिखेत छथि जे उन्नीसवीं शताब्दीक उतरार्धक चरणसँ आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक उन्नायक कवीश्वर चंदा झा जिनकर समय 1830 ई. सँ 1907 धरि रहलनि अछि। अपन मिथिला भाषा रामायणक मौलिक रचना कय मैथिली भाषा साहित्यके भारतीय अध्यात्म साहित्य जगतमे मर्यादित करवाओल। पश्चात् रामकथा पर आधारित प्रवाह होइत रहल। एहि कड़ीमे लालदास कृति एकटा आर रामायण आयल **रामेश्वरचरित मिथिला रामायण**क बाद कही तऽ राम कथा पर

आधारित क्रमिक परिपुष्टि होइत गेल। कएक गोट महाकाव्य-खण्ड काव्य आदिक शास्त्रीय धारातल पर रचना होमय लागल। जाहिमे सीताराम झा, विश्श्वनाथ झा `विषपायी`, वल्लभदास सुजन, छेदी झा `द्विजवर`, वैद्यनाथ मल्लिक `विधु`, रामलोचन शरण आदिक नामकें विशिष्ट स्थान प्राप्त अछि।

मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत चंदाझा कृत **``मिथिला भाषा रामायण``**क महत्व साहित्यक दृष्टिसँ खूब छैक। कवीश्वर चंदा झा यश: पताका स्तम्भ सदृश छथि। हिनक रामायणक महत्व ओहिना जेना अवधीमे तुलसीकृत रामचरितमानसक महत्व अछि। ओड़िया क्षेत्रमे बलराम दासकृत ``दाण्डि रामायण``, बंगलामे कृतिबासी रामायणक सदृश मानल जाइत अछि। मैथिली भाषा साहित्य ओ मिथिलाक क्षेत्रमे मिथिलाभाषा रामायणक महत्व एहि वास्ते विशेष जे एहिमे घटना आ परिस्थितिकें मिथिलाक संस्कृति, संस्कार, आचार-विचार, रीति-नीति परिवेश, कुमारि पूजाक प्रधानता आदि। पाँती देखियौक -

नानावर्ण पताका तोरण मणि मुक्तामय टाँगू।
स्मारक पत्र लिखल अछि जेहेन राजपुरुष सौं माँगू।।
प्रात:काल सकल भूषणयुत सत्कुल वुत कुमारी।।
मध्य कक्षमे पूजन हेतुक पूर्वहि रह तैयारी।।[14]

लंका विजयोपरांत अयोध्यागमन पर रामक चुमाओन कयल गले अर्थात् भारतीय परंपराक बीच मिथिलाक जे विशिष्टता शुभ ओ विशिष्ट उपलब्धि पर चुमाओन करायब अध्यात्मिक शुभकामना देव बुझियौक - पाँती देखल जाओ -

अमरपति पुर तुल्य शोभा, लसित दशरथ धाम।
सकल लोक कृतार्थ करयित, पहुंचला श्रीराम।।
देवतामति मृतलोकक, कयल चरण प्रणाम।
प्रभु-चुमाओन विविध उत्सव, भेलि विधि तहिठाम।।[15]

अस्तु हमर जे विषय ``मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषण`` से कही संतक द्वारा रचित काव्यके परिचय प्रसंगके उजागर करब अछि। विषय प्रविध रामाश्रयी शाखाक प्रसंग मात्र एतबे जे कवीश्वर चंदा झा मैथिली भाषा साहित्यमे रामाश्रयी शाखाकें प्रतिष्ठापित कयलनि आ काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ एकर शैली, वर्ण्यविषय, भाव वैविध्य, रघुकुलक रामक उदात चरित्र, ओज ओ प्रसाद गुणसँ युक्त, कोमल मधुर शब्द विन्यास सँ अवलोकित एहि रामायण सँ मिथिला भारतीय साहित्य जगतमे जगमगा गेल रहैक। तैं शब्दावली विन्यासक औदार्य देखल जाय-

पुरवासी जन सकल निहार। दुर्वादल-श्यामल सुकुमार।
....

पीताम्बर वरमुक्ता हार.....। भाग्य अपन मन प्राण विचार।।

अस्तु एतबा अवश्य कवीश्वरक प्रसंग हमर जे विषय प्रविध ताहि रूपें अध्ययन अनुशीलन मात्र अध्यायक संग राम काव्यक पुरोधा कवीश्वर परिचय प्रसंग देव अतिश्योक्ति मानल जायत। मैथिली भाषाक अन्तार्गत विद्यापतिक बाद जाहि कविक ख्यातिनामाक झंडा उँच्च भेल अछि से कवीश्वर छथि। सर्वोतभावने विचार कयलाक बाद मिथिला भाषा रामायण भक्ति काव्य ओ मिथिलाक जातीय गरिमाक समवेत रूप प्रतिनिधि ग्रंथ अछि। आ यावतधरि मैथिली भाषाक अस्तित्व रहत कवीश्वर आदरणीय रहताह।

7. रामकथा गायक : हरेकृष्ण लालदास :- मिथिलाक सांसारिक जगतमे शास्त्रीय रामकाव्यक प्रणयन तऽ पूर्वो सं सोहर-समदाउन संस्कार गीतक माध्यमे रामकाव्य विद्यमान छलैक। मुदा रामकाव्यक परंपराक प्रसंग आचार्य रामदेव बाबूक समर्थन विद्वान डॉ. योगानन्द झा सेहो कयलनि अछि; जे शास्त्रीय जगतमे रामकाव्यक प्रणयन उन्नैसम शताब्दी सँ भेल अछि। जकर चर्चा हम कयने छी। वैष्णव सम्प्रदायमे आधुनिक कालमे रामकाव्यक परंपराक सम्पुष्टि धार जे प्रावहित भेल से मोदलता, स्नेहलता, रसनिधि, नेमलता, कनकलता नारायण भक्त श्रीमाली ओ रूपलता आदि। इएह विशिष्ट निधि लोकनि मे एक गोट विशिष्ट कवि छलाह हरेकृष्ण लालदास।

हरेकृष्ण लालदासजी कें प्रसंग हम जाहि प्रकारें अध्ययन ओ अनुशीलन दिशि तत्पर छी ताहि अनुसारें हमरा जनैत ओ सभ संते छथि शास्त्रीय पद्धतिमे सेहो हिनका सभकें संत कहबा मे कोनो तारतम्य नहि अछि। भक्त सहृदयी संत मे रामकाव्यक रचैताक रूपें हरेकृष्ण लालदासक नाम प्रमुख अछि। हिनक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि - हरेकृष्ण विनोद, श्री सीताराम जन्म संकीर्तन एवं `सीतास्वयंवर` संकीर्तन। हिनक जन्म ई. सन 1891 ई. मे भेल छलनि। मूल निवासी हाटी सरिसबपाही मधुबनी मुदा सम्प्रति हिनक आश्रम कविलपुर चट्टी मे स्थायी आवास छनि। हिनक पिताक नाम गुरुलाल दास छलनि। रमानन्दी मतमे दीक्षित रामाश्रयी शाखाक मधुरोपासना सम्वन्धी रचना करैत संकीर्तन मंडलीक कंठहार बनैत छलाह। हिनक लोकप्रिय पद -

रामचन्द्र प्रिय पाहुन हे सखि ! पंखा डोलाउ।
फेर न एहन दिन पायब हे, प्रभु हियमे बसाउ।।

----- ----- ---- ----

हास्य-प्रेम-रस पूरित हे, रचि विनय सुनाउ
`हरे-कृष्ण` शुभ कोबर हे, सब मोद मनाउ।।

एहि प्रकारें श्री हरेकृष्णलाल दास जीक पोथी सीता स्वयंबर मे छियालिस गोट पदक संग्रह सहित सब विधि-व्यवहार ओ विशिष्ट अवसरक पद सृजन कयने छथि। आरती, पराती अनुगुंजित पद सँ ओ सब विख्यात भेलाह। 1956 ई. मे अपन शरीरसँ गोलोक बासी भेल छथि। सकल अध्ययन ओ अनुशीलन रूपें हुनक पदक मनन कयल जाइत अछि जे ओ रामाश्रयी शाखाक राखी राम्प्रदायकक काव्यधाराक मूलमे आधुनिक कालक रामेकित मूल्यांकन कयने छथि।

8. लालदास :- आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक उद्‌गातामे प्रगाढ़ पाण्डित्य चेतित सांस्कृतिक भावनासँ प्रादुर्भूत सर्जनात्मक प्रतिभाक सम्पन्न कहल जाइत छनि। जे कविके ब्रह्माक पर्यायवाची मानल जाइछ -``कवि मनीषी परिभुः स्वयंभुः`` से एहेन मर्मज्ञ ब्रह्मविध मैथिली भाषाक चेतनाक संवाहक साहित्यक ऊर्जावान आविष्ट लालदासक आविर्भाव कवीश्वर चंदा झाक ``मिथिला भाषा रामायण``क बाद मैथिली भाषा साहित्यक अन्तार्गत देदिप्यमान नक्षत्र सदृश्य 1856 ई. मे भासमान भेलाह। मधुबनी जिलाक अन्तर्गत खरौआ ग्राममे महादेवक कृपासँ पिता श्री बचनकनदासक आश्रममे हिनक आविर्भाव भेल। कहबै तऽ कवीश्वर चंदा झाक पश्चात् आ मिथिला भाषा रामायणक वाद समग्रता रूपेण निरूपण कयल जयतैक तऽ सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य-मातृभूमि ओ मातृभाषाक लेल लालदास द्वारा ``रामेश्वर चरित मिथिला रामायण``। तथा ``महेश्वर विनोद`` वृहद प्रवंध काव्यक सृष्टि के मानल जयतैक। एतद् हिनक एहि व्यक्तित्वक समग्रता प्रति प्राचार्य सुरेन्द्र झा ``सुमन``क कथन अत्यंत समीचीन अछि।

``निगमागमक समन्वय जीवनहुँमे ओ रचनहुँमे तंत्र ओ स्मृति-पुराण दुहूक सामंजस्य। शक्तिमानक अपूर्व व्याख्याता, साक्त ओ वैष्णव मतक समन्वेता। कवीत्व ओ पाण्डित्य हिनक रचनामे समन्वित भेल अछि। प्रारंभिक शिक्षा फारसी अरबीक किन्तु दीक्षा संस्कृत भाषाक छलनि। भारतक प्रत्येक तीर्थक श्रद्धालु रहलाह तथपि सर्वाधिक महत्व मिथिला तीर्थक देलनि अछि। से कहब तऽ ओ जन्मभूमिक प्रति असीम स्नेह छलनि।``

``रामेश्वर चरित मिथिला रामायण``क कथा वस्तु वाल्मीकिये रामायणक अनुसरण रूपें कयल गेल अछि। कतहु-कतहु अपन अभिनव प्रयोग किछु कयलनि अछि। यथा -

आदि कवीन्द्रक सुधा समुद्र।
कथा हमर कृत सरिता छुद्र।।
तेहि समुद्रसौ भरि-भरि नीर।
पूरित करब सरित गंभीर।।
जे नहि जा सकता तत दूरि।
अओता एहि सरिता तट घूरि।।
सरिता भिन्न मधुर रस सैह।
मुनिकृत सुधासिन्धु मे जैह।।

कहवाक आशय लालदासक रचनामे वैष्णव राम कथामे शाक्त दर्शनक प्राणवायु समाहित जे भेल अछि से मूल रामायण पर मात्र निर्भर नहि रहि अन्य पुराण ओ अपन शाक्त विचारधारक अनुरुप तंत्र वाङ्‌मयक तत्व सब सेहो ग्रहण करवाक संकल्प व्यक्त करैत कहैत छथि :-

आदि कविक आशय कतोक, आशय विविध पुराण।
कतहु तन्त्र मतसौ करत, लाल राम गुण गान।।

आशय मैथिल परंपरानुसार पंचदेवताक पूजन, शारदाक अर्चना ओ रामेश्वर चरित

मिथिला रामायणमे वाल्मीकि अनुसार सात गोट काण्ड यथावत देलाक बाद लालदास एकटा नव ओ आठम काण्ड `पुष्कर काण्ड` सेहो देने छथि। एहिमे रावणक वधक वर्णन भेल अछि। जे दशानन रावणक जेठ भाइ श्वेतदीपक शासक, अत्यंत बलशाली ओ अत्याचारी छल? जकर अंत भेल।

लालदासक रामेश्वर चरित मिथिला रामायणमे घटना प्रसंग संवाद मिथिलाक भौगोलिक परिवेश संस्कृति ऋतु, नदी, समुद्र, पर्वत, वन इत्यादिक नैपुण्य वर्णन वैशिष्ट्य अभिनत्व संगहि लोकचलित, अकृत्रिम वाग्धारा-संवलित प्रसाद गुण सम्मत भाषा प्रयोग आह्लादक अछि। छन्द बैबिध्य नहियो तखनहुँ बारह गोट छन्दक प्रयोग भेल अछि। जाहि मे चौपाई, दोहा, सोरठा प्रमुख रूपें भेल अछि ग्रंथक समापन प्रस्तुत सोरठा सँ भेल अछि -

लाल मधुप लखि लाल भव, किंशुक पर जनु भूल।
वैदेही पद कमल मधु, सेव सकल सुक मूल।।[7]

अस्तु कविवर लालदास अपन मनोभावनाक ``रामेश्वर चरित मिथिला रामायणमे`` बहुविध भाषाक ज्ञाता रहितो अपन बिपुल शब्द सम्पदा गंभीर-अभिव्यंजना, शक्ति ओ समृद्ध साहित्य अभिज्ञान सहज ओ असीम अनुरागसँ श्रद्धा ओ भक्ति सँ मातृभाषाक प्रति जे भक्तिभावना तकर निरूपण करैत आरंभहिमे से केहेन अपरूप वर्णन कयने छथि : -

निज भाषा जननी निज देश।
स्वर्गोसँ जानथि जन वेश।।
तँ हम कथा कहब तेहि रीति।
नहि विद्या कविता-गुण-गीति।।

....

पुण्य देशमे भाषा नीकि।
मिथिला सभक शिरोमणि थीक।।
तेहि भाषामे करब सुबंध।
सीतारमक चरित प्रवंध।।

अस्तु कविवर अपन भावयत्री आ कारयत्री प्रतिभासँ सर्वाधिक अवदान मैथिली भाषाकें प्रदान कयलनि। कविवर लालदास कवीश्वरक अनुसरण करैत छन्द-राग-भास-गीत ओ मुक्तक सँ बेसी इतिवृतात्मक आख्यान काव्य ओ प्रबंध काव्यमे प्रवृत्ति भेलाह। चंदा झाक गद्यात्मक शैलीकें परिष्कृत करैत वैविध्य ओ समृद्धि प्रदान कयल। एहि प्रकारें मैथिली भाषाक एहि महनीय पंडित भाषाविद् विद्वान लालदास अपन समस्त रूपें मैथिली भाषाक सेवा संवर्धना करैत सन् 1328 साल (1920 ई.) लालदास मोनोग्राफ मे 1921 ई. देल गेल अछि। ई 65 वर्षक अवस्थामे महाप्रयाण कयलनि।

9. स्नेहलता :- मिथिलाक समस्तीपुर जिलाक अन्तर्गत करोड़ी ग्राममे 1909 ई. मे

आविर्भूत भेल छलाह। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक विशिष्ट मार्गक संत भक्त कवि स्नेहलताक प्रारंभिक नाम कपिलदेव ठाकुर छलनि। हिनक पिताक नाम नथुनी ठाकुर जातीय कर्मसँ भूमिहार ब्राह्मण छलाह। स्नेहलता नेनपनहिसँ संस्कारी छलाह। हिनक पिता खलिफा एकमात्र जीविकाक आधार कृषि से कही स्नेहलताक आरंभिक जीवन अत्यंत दयनीय छलनि जे हो... ई एकटा विडम्बना जे मैथिली रामकाव्यक विकासधाराके सशक्त केनिहार रामकाव्यक साहित्यिक मर्यादा दियौनिहार एहि मनीषी कें शिक्षाक नाम पर मात्र छठे वर्ग धरि भेल छलनि।

स्नेहलताक कदकाठी सुसंगठित काया धोती-कुर्ता पहिरैत छलाह। वैष्णव सम्प्रदायमे दीक्षित मुदा सब देवी-देवताक प्रति आस्थावान छलाह। जे मिथिलाक विशिष्टता छल। स्नेहलताक जीवन प्रसंगे बहुतरास बात प्राप्त होइछ मुदा विषय प्रविध हम मात्र हिनक रामकाव्यपर आधारित प्रसंग के संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करब, हमर अभिष्ट मात्र अछि।

स्नेहलता काव्यस्फूरण :- स्नेहलता जीक कीर्तन मे भक्तिमार्ग तकर ओ अनुगामी छालह। 1934 ई. क भूकम्प सँ मिथिला तबाह छल। एहन विपरीत कालमे गाम-गाम ओ शहर-बाजारमे भजन-कीर्तन होमय लागल। अस्तु स्नेहलता वल्लीपुरमे स्थिर भेलाक पश्चात् मंडली बनेलनि आ जनकपुर विवाहपंचमी मे जाइत छलाह। मुदा एकबेर हुनका सबके खूब कष्ट भेलनि। मंदिरक नेपाली पुलिस दर्शन नहि करय देलकनि तहिया सँ ओ सब अपन गामेमे विवाह पंचमीक उत्सव मनवय लगलाह। रामाश्रयी वैष्णव सम्प्रदायक मधुरा भक्ति काव्यक सखी मार्गक संत भक्तिक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करैत वैदेही विवाह संकीर्तन सम्पूष्टि कयलनि। जकर विशिष्ट दिशा मिथिलाक कीर्तनियाँ नाट्य परंपरामे विवाहोत्सव संवर्धन कयलनि।

स्नेहलता पहिने भक्त पुनः संत बादमे `कवि` बनलाह। अध्ययन ओ मनन सँ ई स्पष्ट अछि जे भगवतप्राप्तिक अभिलाषा भगवदनुकूलता भक्तिभावमे भगवानक नाम, रूप, लीला धर्मक प्रति एकनिष्टता आ आसक्ति जे हिनक काव्यकलाक मूल् मे दृष्टिगोचर होइत अछि। हुनक अराध्य `सीता` आ हुनक माध्यमे `राम`क प्रति जे भक्तिभावना युगलोपासक हिनक अर्थात् स्नेहलताक संत हृदयमे मिथिलाक प्रति जे असीम अनुराग अभिव्यंजित होइत अछि से अन्यत्र मिथिलाक प्रति ओ अनुराग कतहु ओ किनकोमे दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। तकर हुनक भाव एहि पदमे गुनल जाय :-

हे हम मिथिले मे रहबै

अपन किशोरी जी के टहल बजेबै

घरही मे हमरा चारू धाम

......

हे हम मिथिले मे रहबै।"

स्नेहलताक कृतिमे काव्यत्व :- स्नेहलता गीतकाव्यक भावावेशमे मूलतः रामाश्रयी शाखा पुनः पंचोदेबोपाराना मे रोहो अछि। मुदा अखन हमर विषय ओ अध्यायक विशिष्टता रूपें रामक प्रति जे हिनक भावक तीव्रता, गतिमयता, स्वाभाविक संक्षिप्तता वर्णन, अनिवार्य बुझल गेल अछि।

स्नेलताक पदावलीमे जे रचना से ओ अपन स्वान्त: सुखाय मानल जाइत अछि। हिनक भाषाशैली अत्यंत हृदयस्पर्शी, शब्दविन्यास विलक्षण, लाक्षणिक छन्द विन्यास, छन्द विधान, यति-गति लयक योजना, अपूर्व भाव सौन्दर्य हिनक काव्य विशिष्टता रहल अछि।

स्नेहलता पदावीलमे तत्सम शब्दक प्रयोग खूब कम आ ललितगर शब्दक विन्यास सँ ओ प्रसाद गुणक चलते श्रुतिमाधूर्यक आम जनमे खूब समादृत भेलाह। यथा हिनक रचनामे देशज शब्दक विन्यास यथा - गोरथारी, वेकहल, रकटब, हुलसब, विलटब आदि शब्दक प्रचलन व्यापक रूपें भेल अछि।

छन्दक विन्यास पदक-मात्रा, यति-गति ओ तुकक प्रति स्नेहलताक रचनामे अद्भुत अनुशासनक प्रयोग कयने छथि। हिनक एहि पद के अवलोकन करु :-

हे कमल नयन हे करूणाकर - 16 मात्रा
अपराध बहतु हम कएने छी - 16 मात्रा
तैओ अपना कल्याणक हेतु - 16 मात्रा
अपनहि पर आशा धयने छी - 16 मात्रा

मात्रिक छन्द रूपें जे विन्यस्त भेल अछि से काव्य शास्त्रीय धारणा स्नेहलताक भाव विस्तारकें श्रोता तक पहुँचेबामे आ लोकप्रिय वनेबामे खूब सहायक भेलनि। एतद् संत कविक जे भावना ताहिमे स्नेहलताक तुलना आधुनिक समयमे हिनक तुलना किनको सँ नहि कयल जा सकैछ। हिनक रचनामे चोपाई, दोहा, सोरठा, गेयधर्मिता, हिनक रचनाक विशिष्टता लेल मात्राक विचलन सेहो भेल छैक मुदा रसक उद्रेकमे श्रृंगारक स्थायीभाव रति नायकक-नायिकाक परस्पर आकर्षण विलक्षण भेल छैक से देखू :-

चलिअउ चलिअउ पाहुन राम
पहिरु फूलक खराम।
चलिअउ करिअउ आराम कोहबर घरमे।।

संयोग श्रृंगारक उत्कर्षक देखल जा सकैछ। भक्ति-रस-वात्सल्य-रस ओ शान्त-रस हिनक प्रिय छलनि।

अलंकार योजना :- हिनक रचनामे अलंकार अपूर्व रूपें व्यंजित भेल अछि -

कोमल कमल सन ललन के अंग अंग।
वसहा जेकाँ सव घुमथिन हे नहि चले प्रभुताई।

उपर्युक्त पद मे स्नेहलता जीक उपमा अलंकारक प्रयोग सुन्दर भेल अछि। रूपक, उत्प्रेक्षा, रूपकातिशयोक्ति आदिक प्रयोग सँ हिनक काव्य गरिमामय बनल अछि।

एहि प्रकारें निष्कर्षत: एतावा तऽ अबस्से जे संत स्नेहलताक जे कीर्ति सामाजिक जीवन मे बृहद् ओ व्यापक रूपें गृहित भेल। ओना मैथिली साहित्यक मुख्यधारामे अवढारल गेल अछि।

मिथिलाक आचार-विचार, सभ्यता संस्कृति अनुकूल ओ सम्पृक्त रामाश्रयी वैष्णव भक्तिक सखी शाखाक श्रेष्ठकाव्य सर्जनाकार रूपें संत स्नेहलता जिनक ``वैदेही विवाह पदावली`` विनय पदावली; आदि विद्यापतिक रचना सदृश अनंतकाल धरि समाजमे कायम रहतैक।

10. मोदलता :- आनन्द रसके रसिक मोदलता सद्गृहस्थ सरल संत ओ सरल-निर्मल कवि वैष्णव परंपरा के सखी भावमे मधुरोपासक संत गीताकार अपन सधुक्कड़ी भाषामे भावक जे प्रवाह कयलनि ताहि प्रसंग हिन्दी साहित्य के मार्तण्ड शिवपूजन सहाय जी कहैत छथि जे मोदलता मैथिली साहित्यक काव्य-कृतिक अनुपम भेंट छलाह। कहे छथि मोदलता मैथिली साहित्यके उदात बना देलनि।"मोदलताजीक असल नाम श्री लक्ष्मणशरण मोदलताजी छलनि।

मोदलताक राम`क `रा` आ सीताक `सी` `ई`कार आ `स` साकार बनल `रस` जे कहवाक तात्पर्य मोदलताक रचनामे विवाह पदावली सँ गवियौ-नचियौ-झुमियौ माने आनन्द रसमे सराबोर भय जाउ। राम काव्यक श्रद्धाबनत मोदलता लिखैत छथि :-

जो आनन्द सिंधु सुख-रासी।
सीकरते त्रैलोक सुपासी।।
से सुख धाम राम अस नामा।
अखिल लोक दायक विश्रामा।।

जाहि युगमे हम जीवि रहल छी अत्याधुनिक युग, तइ युगमे ओहि संतकें महान बनेवाक प्रयास होइछ जे संत करोड़पति बनबऽबला मशीन होइथ। मुदा संत तऽ इहलौकिक दुनियाँक जीवनकें क्षणिक मानैत छथि। से कही मोदलता नामक जीवनक ओ समाजक बीच रामनामक मंत्र सँ मानवीय जीवन कें भव पार करेबाक प्रयास होइत छनि। यथा - पाठक, कीर्तन प्रेमी, ओ भगवद् प्रेम मे विहुबल लोक कौतुहलता के शांति करवाक लेल ओ हुनक एकटा पदक संक्षिप्त पद 120 मे -

``चारू दुलहा देहि भंवरिया ए
संग सोहति दुलहिन नागरिया ए।।``
---- ----- ---- ---- -----
लली-लाल लजोरियाए।।

संत मोदलता श्री राम आ कही रामाश्रयी शाखाक रामभक्ति मधुरोपासना साहित्यक एकटा विशिष्ट अंग अछि। राम कथा काव्य कहबै तऽ लोक जीवनसँ जोड़ने रहैत छै। श्री मोदलता सद् गृहस्थ, सरस, संत ओ सरल निर्मल कवि छलाह।

अध्यात्म जगतहि मात्रमे नहि अपितु गुरूक महत्व मात्रे नहि अपितु मानवीय जीवनक कोनो कार्य लेल गुरुक खोज सबके रहैत छै। ताहिना संत कवि गुरु पयवाक लेल व्याकुल छलाह से हिनका चित्रकूटक अनुसूइया वनमे श्री नरहरयान्दाचार्य जे अपन भाव जागृति समाधिसँ

गोस्वामी तुलसीदास रूपें आविष्कृत कऽ लोकमंगल कार्यक संपादन करवाक लेल निर्देश देने छलथिन्ह, तहिना संत परमहंस रामदास जी सुरबाबासँ जे चित्रकुट सँ चलि अवध आयल रहथि अहीठाम श्री मोदलता जीकें सत्संग प्राप्त करवाक अवसर भेटलनि आ ओ शिष्यत्व स्वीकार कयलनि। तहियासँ हुनक प्राण-गीत-प्रसून सँ, मिथिला, खिलखिला उठलैक। मुदा दुर्भाग्य कहियौ जे मोदलता सन आशुरचनाकार कें जे उरप्रेरक रघुवंश विभूषणकें मैथिली साहित्य कें इतिहासकार मैथिली भाषाक अनुपम निधि संत मोदलताक काव्य साधना सँ अज्ञात रहि गेलाह। विवोहत्सवचार्य मोदतला श्री रामक लीला लीलाचार्य आचार्य लिखैत छथि - अठोंगर वैवाहिक क्रिया पद पर आधारित रचना :-

चितचोरवा आजु बन्हौलनि ए।

सब सानगुमान गमौलनि ए।।

ई चितचोरवा के सिर मणइमौरवा।

....

पार करेजवा कएलनि ए।।

....

चोरवा के भाग्य पर मोद बलिहरबा।

शुभ अठौंगरबा गाओलनि ए, चित ^^

अस्तु, हिनक रचनामे अनेकानेक समीक्षक, शोधकर्ता साहित्यानुशीलनुशीलनकर्ता लोकनि मोदलता जीक रचनामे एकटा विशाल भव्य महल सदृश्य भाषा-साहित्यक अनेकानेक पक्ष जेना शैली, भाषा भाव-अलंकार, छंद, योजना, वस्तु-विन्यास, अध्यात्मिक-न्यास ओ रचनाक मर्मोल्लास विवेचन विस्तार सँ आबय वला पीढ़ीकें मधुरोपासनाक परिपाटी आओर मधुरोपाषक ``मोदलता``जीक उपर गवेष्णात्मक पीपासुकें हिनक रचना आदि खोजवा मे अत्यंत दुरुहुताक अनुभव होइत छैक।

यथा छंदक रूपें मोदलता जी `कवित` मुक्तक वार्णिक छंदक प्रयोग विशेष रूपें कयने छथि। यथा -

सहज श्रृंगार सजि धाई निमिपुर नारि

निरखि निहाल भई माधुरी नमकदार।

चित्र अवरेखी सँ जाहि की तही थमकि गई

रोम रोम रमकि गये दम्पति दमकदार।

धीरज धराय धरि अंसन भुज परस्पर

झमक्यो झमाक झमझम भूषण झमकदार।

लुभिगे लुभीले हिय मोद मुखि हेरि-हेरि,

चुभि गे चुभीले चोखे चितवन चमकदार।।

एहि प्रकारे उपर्युक्त `कवित` छंदमे राचनाक विशिष्टता जे अनुप्रास अलंकारक योजना अनुपम भेल अछि। भाषा शब्दक संग सधुक्कड़ी। मोदलताक प्रसंग आचार्य शिवपूजन सहाय जी लिखैत छथि जे हिनकर सधुक्कड़ी भाषा मैथिली साहित्यक सरितामे स्नान कय निखरि उठैत अछि।

उपर्युक्त अध्याय ``मैथिली साहित्यमे राम काव्यक परंपरा`` शीर्षक मे निष्कर्षतः राम भक्तिक शाखाक सखी सम्प्रदायमे आस्था रखनिहार कवि लोकनिमे बिविध पक्षक वर्णनकारमे मोदलता, स्नेहलता, रामस्नेही दास आदि फुलवाड़ी सँ लऽ धनुषभंग वैवाहिक विधि व्यवहारक मनोहारी वर्णन कयलनि अछि। रामस्नेही संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं रामजन्म सँ लऽ राज्याभिषेक तक के अपन रचनामे कलात्मक अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण ओ सफलतम् प्रायः 118 पदक निर्माण कयने छथि। रामाश्रयी वैष्णव भक्त कवि लोकनि लोकानुरजक समसामयिक मिथिलाक परंपरिक कीर्तनिआ नाट्यशैलीक प्रयोगमे आचार्य जगज्ज्योतिर्म्मल जयदेवक दशावतार स्तुतिक अनुशरण कयलनि अछि। स्वभावतः रचनाकार लोकनि प्रत्येक वर्णन नव-नव भाव विस्तार भेल अछि।

●●●

संदर्भित-ग्रंथ

1. वाल्मीकि मूल पाण्डुरंग राव अनुवाद अशोक कुमार ठाकुर, साहित्य अकादेमी, पेज-15।

2. वाल्मीकि मूल पाण्डुरंग राव अनुवाद अशोक कुमार ठाकुर, साहित्य अकादेमी, पेज-15।

3. `मिथिला भाषा रामायण` कवीश्वर चंदा झा, मैथिला अकादेमी, पेज-... पुनर्प्रकाशन सँ।

4. कबीर ग्रंथावली श्याम सुन्दर दास पृ.80 नोट.... मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ। पेज-107।

5. सुन्दर विलास, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ, पेज-91 सँ संकलन रामेश्वर मिश्र।

6. संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज-95।

7. साहेब रामदास मोनोग्राफ, पेज-9। सा. अ. नई दिल्ली।

7A. साहेबरामदास मोनोग्राफ, लेखक - श्री शंकर झा, प्रकाशक साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, पेज- 9 सँ 14।

8. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, पेज-13, लेखक, पं. राजेश्वर झा, प्रकाशक - मैथिली अकादेमी, पटना।

9. साहेबरामदास मोनोग्राफ, पेज-86।

10. तुलसीदास का कथा शिल्प : डॉ. गंगेय राघव म.प्र. साहित्य प्रकाशन, विलासपुर-सम्प्रति 6 गढ़, संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं, पेज-82।

11. गीतावली - प्र. परमहंस, ल.ना. गो. समिति, जमशेदपुर, पेज-41।

12. अत्याधुनिक मैथिली गद्य: प्रगतिशील, मैथिली प्रकाशन, भगवान पुस्तकालय भागलपुर, पृ.-48, सम्प्रति - लक्ष्मीनाथ गोसाईं, फुलेश्वर मिश्र, प्र. मै. अ.प. पेज-24।

13. अत्याधुनिक मैथिली गद्य: प्रगतिशील, मैथिली प्रकाशन, भगवान पुस्ताकालय भागलपुर, पृ.-48, सम्प्रति - लक्ष्मीनाथ गोसाईं, फुलेश्वर मिश्र, प्र. मै. अ.प. पेज-48।

14. लक्ष्मीनाथ गोसाईं, फु. मि., पेज-26।

15. चंदा झाक ``मिथिला भाषा रामायण`` मैथिली अकादेमी, पटना, पेज-59।

16. चंदा झाक ``मिथिला भाषा रामायण`` मैथिली अकादेमी, पटना, पेज-328।

17. मिथिला भाषा रामायण, पेज-5 एवं च (भूमिका सँ)।

18. लोक साहित्य ओ शब्द स्पदा, डॉ. योगानन्द झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कविलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, पेज- 86 एवं 87।

19. लोक साहित्य ओ शब्द सम्पदा, डॉ. योगानन्द झा, पेज-89।

20. रामेश्वर चरित मिथिला रामायण, पेज-भूमिका नं. 5।

21. रामेश्वर चरित मिथिला रामायण, पेज- 448।

22. स्नेहलता मोनोग्राफ, सा.अ. दिल्ली, पेज-32 एवं 33।

23. स्नेहलता मोनोग्राफ, सा.अ. दिल्ली, पेज-115।

24. मोदलता - विवाह-पदावली, पेज - प्रक्कथन।

24A. मोदलता - विवाह-पदावली, पेज -57, अठोंगर पद -108 प्रक्कथन।

25. मोदलता - विवाह-पदावली, रचनाकार मोदलता, संकलन प्रकाशक - श्री जानकी रमण शरण मुजफ्फरपुर, पेज - 17 एवं 172।

श्रोत-ग्रंथ

1. History of Maithili Literature First Part.

2. भारतपथिक, राममोहन राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

3. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुन्दर दास, वाराणसी।

4. गुरुनामक : जीवन, युग और शिक्षाएं ; संपादक गुरुमुख निहालसिंह, दिल्ली 1970 ई.।

5. गोरखावनी : पीताम्बरदत बड़णवाल, इलाहावाद, 1979।

6. तुलसी दर्सन मीमांसा; उदयभानु सिंह, लखनऊ।

7. मद्यकालीन संत साहित्य : रामखेलावन पांडेय, वाराणसी, 1965 ई.।

8. संत काव्यमे परोक्षसत्ता का स्वरूप : बबूराव जोशी, ग्वालियर, 1968 ई.।

9. हिन्दी काव्यधारा, राहुल सांकृत्यायन, इलाहावाद, 1945।

10. भारतीय दर्शन : बलदेव उपाध्याय, वाराणसी, 1979।

11. भारतीय दर्शन, उमेश मिश्र, लखनऊ, 1957।

12. श्री श्री भक्तमाल ग्रंथ - संपादक दुर्गादास लाहिड़ी, कलकत्ता।

13. साधु तुलसीदास ओ महात्मा कबीर : संपादक वैष्णव चरण वसाक।

14. राधाकृष्ण चौधरी ``पूर्वांचल भाषा साहित्य एवं संस्कृत`` ।

15. तुलसीदास का कथाशील्प, डॉ. रांगेय राघव, मध्यप्रदेश साहित्य प्रकाशन, विलाशपुर (छ.ग.)।

16. मैथिली नवीनगीत - सं. डॉ. अमरनाथ झा, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

17. मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि, मेधातिथि ग्रंथालय, दरभंगा।

18. मैथिली साहित्यक आदिकाल - श्री राजेश्वर झा/श्री अमरनाथ झा, रसआर (सहरसा), 1968।

19. रामचरित मानस - सार-सटीक, पंचम संस्करण।

20. साहित्य विमर्श, डॉ. दुर्गानाथ झा `श्रीश` श्री एकनाथ झा दिवानतकिया, कटहलवाड़ी, दरभंगा, 1956 ई.।

21. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रफुल्ल कुमार सिंह `मौन`, प्रकाशक : मैथिली परिषद्, विराटनगर।

22. कला एवं साहित्य प्रवृत्ति ओ परंपरा, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना।

23. मैथिली लोकगीतों का अध्ययन (शोध प्रबंध), डॉ. तेजनारायण लाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

24. मैथिली कवि दर्शन डॉ. बालगोविन्द झा `व्यथित` शिक्षामंदिर सुपौल, सहरसा-1968।

25 मैथिली प्राचीन गीतावली, चन्द्रनाथ मिश्र `अमर` मैथिली अकादेमी, पटना-1985।

●●●

नवम् अध्याय

संत साहित्यमे शैव परंपरा

भारतीय जनमानसक कोनहु प्रकारक उद्देश्यके ध्यानमे राखिकऽ ओहि निमित जे कार्य सम्पन्न करवाक जे क्रिया तकरा प्रायः साधना कहल जाइत छैक। आ ओ साधना प्रधानतः ज्ञानक आधार वा भक्तिक आश्रय लऽ कऽ चलैत अछि। आ एहि प्रकारक साधनामे सात्विक रहन-सहन के विशेष महत्व देल गेल छैक। हमर विषय प्रविध मिथिला आ मैथिली भाषा साहित्य मध्य ``शैव परंपराक`` जे भाव अछि शिवक उपासनाक प्रसंग मिथिलामे कहिया सँ शुरू भेलैक से कत्तहु स्पष्ट नहि छैक। आचार्य रामदेव झा मिथिला ओ मैथिली भक्ति साहित्यक प्रसंग व्यापक अध्ययन ओ अनुशीलन केने छथि ओ लिखैत छथि ``शिवोपासनाक मिथिलामे व्यापक प्रचार रहल अछि।`` वर्तमानहु मे मिथिलाक जनमानस शिवोपासनाक साधना मे लागल संत लोक-चेतनाक प्रतीक मानल गेल छथि। मिथिलाक भूमि पंचोदेवोपसनाक भूमि एहिठामक शिवोपासनाक जे भाव आम जनके जीवनमे देखल जा सकैछ।'

शैव परंपराक उल्लेखक प्रसंग अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे ऋग्वेदमे उल्लेखित मंत्र सँ शैव परंपरा ऋग्वेदकाल सँ पूर्वहुँ कायम छल।' शिवक ब्रतशील साधक संतक आचरण एवं वेशभूषासँ अनुमान कयल जा रहल अछि जे वैदिक कालसँ पूर्वहुँ शैव साम्प्रदायक विकास भेल छल। हमरा जनैत विद्वान डॉ. रामदेवबाबू तकरे आधार बनाय कहैत छथि ``मिथिला मे शैव भक्तिक उपासना जखन चरम पर पहुँचैत अछि तखन ओ संत श्रेणीक रूपमे अबैत अछि।`` शिवकें उपासक संग आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जी योग-विद्या कें एवं शैव सम्प्रदायक अस्तित्व प्रसंग एकत्व स्थापित करैत छथि। हुनकर कहब योग शास्त्रक विद्वान प्रवर्तक अपन ईष्ट शिवकें मानैत छथि आर इएक कारण छैक जे शिवकें `योगीश्वर` कहल जाइत छनि। शिवक अनेक रूपमे देखल जाइछ जे योगासन पर बैसल समाधिस्थ भेल छथि। शिवक सांगोपांग वर्णन प्रसंग जे विवरण प्राप्त भेल अछि।' मिथिलामे लोक जीवनक संग जे `पद` एहि अद्य सत्यकें निर्धारित करैत अछि। यथा देखल जाओ :-

``योगिया हमर जगत सुखदायक``
दुख कककरो नहि दैत, महादेव...

दोसर पद :-

जोगिया एक हम देखल गे माइ
अनहद रूप कहलो नहि जाई।।

आशय मिथिलाक सामाजिक जीवनमे शिवक उपासनाक प्रसंग विद्वान लोकनि अपन-अपन आलेख मे लिखलनि अछि। मिथिलाक दार्शनिक लोकनि अपन ग्रंथक आदिमे मंगल श्लोक

रूपमे शिवक वन्दना कयलनि अछि। ताहि लेल दू गोट आधार प्रस्तुत कयलनि आ लिखैत छथि कोनो प्रकृतिकें स्पष्ट करबा लय मिथिलाक महान दार्शनिक वाचस्पतिमिश्र - ब्रह्मसूत्रक `शङ्करक` भाष्यक टीका भामतीमे वेद ओ शिवक स्तुति संगे-संग कयलनि अछि।' दोसरठाम सुप्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य अपन ``आत्मतत्व विवेक`` न्याय-कुसुमाञ्जलि तात्पर्य परिशुद्धि आदि विश्रुत ग्रंथमे शिवक वन्दना कयलनि अछि।' मैथिली साहित्यमे ओना शैव प्रथाक विवरण सातवीं शताब्दीसँ जारी अछि। मुदा एकर स्पष्ट विवरण ``प्राकृति पेंगलम्`` 14वीं शती सँ स्पष्ट दर्शित होइत अछि। मूल रूपमे अविकल मैथिली लगैत अछि -

सो हर तोहर। संकट संहर।।'

एतबे नहि एतिहासिक दृष्टिसं हरिब्रह्म द्वारा सुप्रसिद्ध मिथिलाक सप्तरत्नाकार विद्वान संत सदृश म.म. चण्डेश्वर ठाकुर मिथिला अपभ्रंषक वन्दना, मिथिलाक सम्बन्ध शैव धरतीक संग जे अदौ सँ कायम भेल अछि :- ताकर वर्णन। प्रकृत पैंगलमक एहि पदक अवलोकन करी -'

बालो कुमारे स छमुंधारी।
उप्पाअ हीणा हउ एक्क नारी।।
अहण्णिसंखाहि विसं भिखारी
गय भवती किलकाह मारी

महाकवि विद्यापति उपर्युक्त पदक निम्न रूपें बिबरण रूपें लिखलनि अछि -

पाँच मुखें शिवशंकर जेमथि
छओ मुख जेमनि बेटा गे माई।
सहस्त्र फणा लय वासुकी जेमथि
केओ ने कहए भेरि पेट। गे माई।
वासुकि जीवथि पवन पीबथि
शङ्करक जहर खाए गे माई
स्वामी हमर एहि विधि खेपथि
हमर कओन उपाय गे माई।

तत्वत: शैव साहित्यक भारतीय भाषा-साहित्य मध्य सर्वप्रथम मैथिल कोकिल विद्यापतिये छथि जे संस्कृतक अभेद गढ़ कें तोड़ैत दृढ़तापूर्वक मध्यकालमे काव्य रचना आरंभ कयलनि।' हिनक एहि प्रसंग डॉ. रामदेव झा अपन लेखमे आर स्पष्ट कएने छथि जे महाकवि पूर्णरूपेण पंचोदेवोपासक संत हृदय छलाह।' अध्ययन ओ मननसँ ई प्राप्त होइत अछि नौवीं शताब्दी मे शैव ओ वैष्णव बीच भयंकर कलह भेल रहैक जाहिसँ महाकवि विद्यापति युग धरि समन्वयात्मक भाव

कार्य करैत रहल। जकर प्रभाव महाकविक रचना धरि देखल जा सकैछ। यथा तकर प्रमाण अछि -

भल हर भल हरि भल तुअ कला

खन पित-वसन खनहि बघछाला-2

खन पंचानन, खन भुजचारि

खन शंकर खन देव मुरारि-4

------ ------- ----------

भनइ विद्यापति विपरित वाणि।

ओ नारायण ओ सुलपानि।।

पुनः दोसर ठाम लिखैत छथि -

जय जय संकर जय त्रिपुरारि

जय अध पुरुष जयति अधि नारि।।2।।

------ ------- ----------

भने कविरतन विधाता जाने।

दुइ कए बाँटल एक पराने।।9

एहि प्रकारें शिव आ विष्णुक संग समन्वय स्थापित करवाक जे महाकविक भावना से कही शिव शक्ति सम्बन्धी काव्यक विकास संत कविक रचना जकरा हिन्दी साहित्यमे संत माने निर्गुण परंपारवादी कहल गेलैक मुदा मैथिली साहित्यक विशिष्टता संत दुनू सम्प्रदाय सगुण आ निर्गुण दुनू मे भेलाह। श्रीमद्भागवतक श्लोकमे कहल गेल अछि, आनन्द स्वरुप ब्रह्म के तीन रुप होइत अछि - ब्रह्म, परमात्मा आ भगवान, ब्रह्म चिन्मय सत्ता जे भक्ति एहि ब्रह्म विषयक स्वरूपके साक्षात्कार करैत छथि। आ ओहि अंश के अपन ज्ञानस्वरूप सम्पूर्ण शक्ति सँ भजन कयलासँ भक्तिक प्राप्ति होइत छैक। भक्ति परम साधना भगवानक लीला दर्शन मात्र सबहक उद्देश्य रहैत छैक। महाकवि विद्यापति भक्ति सँ महादेव प्रसन्न भय उगना नाम सँ हुनक भृत्य (चाकर) बनि संग-संग रहैत छलथिन्ह।

शिव विषयक प्रसंग महाकविक प्रचूर रचना अछि। जाहिमे महाकवि उगनाक वियोग गीत विह्वल भावसँ निःसृत रचना भाव स्तवन शिव-पार्वती लीला, शरणागति, आत्मनिवेदन विवाह गार्हस्थ जीवनक झाँकी आदि कें देखैत आचार्य रामदेव झा शिव विषयक जे महाकविक रचना तकरा निम्न शीर्षकमे बटलनि अछि :- (क) पूर्व लीला - पूर्व राग II. वर-वरियाती मेना विलाप, IV. विवाह विधि एवं गौरी परिणय, V. स्वसुरालय लीला।

(ख) उत्तर लीला -I. शिव संसार, II. पारिवारिक कलह, III. कलहान्तरित, IV.

भावोल्लास।, V. उत्सवानन्द।' एहि प्रकारे कहि तऽ महाकविक साहित्यिक साधना ततेक विशाल जे विद्वान लोकनि प्रेरणा ग्रहण करैत रहैत छथि। मैथिली साहित्यक अन्तर्गत महाकविक रचनाक मूलतः दू भागमे बाँटल जयवाक चाही। प्रथम - महाकविक शिव-विषयक संस्कृत रचना आ दोसर शिव विषयक पदावली नामे एहि प्रकराक रचना `हर-गौरी पदावली` अभिहित कयल जाइत अछि। हम अखन महाकविक संस्कृतमे जे शिव विषयत रचना ताहि पर केंद्रित करब, अपितु मैथिलीक पदावलीमे हम संक्षिप्त भाव ग्रहण करैत पहिने हम `शम्भुवाक्यावलीक` प्रसंग निम्नांकित अछि -

1. शम्भुवाक्यावली - महाकविक संस्कृत विषयक शिवक पूजा महात्म्य, प्राचीन कालसँ आबि रहल विभिन्न पद्धतिक धर्मग्रंथ, तत्संबंधी श्लोक, वाक्य सबहिक जे शिव पूजनक प्रयोजन आदिक जे व्याख्या भेल अछि तकरे नामकरण - ``शंभु वाक्यावली`` कयल गेल अछि। ई बात प्रस्तावनाक समापन श्लोक सँ संपूष्ट भेल अछि। यथा -

प्रमाणामूला नव पल्लवाढ्या सुपुष्पिका रम्यफलोपपन्ना।
अभीष्टसिद्ध्यै विबुधैरूपेया वाक्यावली कल्पलतेव शम्भो।।

अध्ययन सँ स्पष्ट भेल अछि जे 1057 श्लोकक एहि ग्रंथमे प्रतिपादित एहि रूपें भेल अछि - जाहिमे शिव महात्म्य, भक्त ओ भक्तिक लक्षण, शिव पूजनक अधिकारी, स्मरण, वंदन-कीर्तन, यात्रा, स्पर्शन ओ आलय-सम्मार्जन, अभ्यंग, उदवर्त्तन ओ स्वप्नक फल, नृत्यादिक फल, पुण्यकालमे पूजाक फल, आवाहन, अर्घ्य: अनुलेपन पुष्प ओ माल्य, धूपदीप, नैवेद्य, शिवकें विविध पुस्तक दान नीराजन, जप, प्रदक्षिणा, प्रणाम एवं ध्यान, रूद्राक्ष-धारण, शिवालय निर्माण, भष्म-स्नान, तपस्वीक अर्चना, शिव भक्तक हेतु अपेक्षित निषेध, निषिद्ध एवं विहित पुष्प-पत्र शिव व्रतक विधान एवं फल जयासन मंत्र आदि। कहवाक तात्पर्य शिवपूजन हेतु अपेक्षित विधि महात्मय् सम्प्रमाण एकरा वर्णित कयल गेल अछि।'

अस्तु हमर जे विषय-प्रविद्ध ``मैथिली संत साहित्यक अध्ययन विश्लेषण`` ताकर नवम अध्याय मे ``शैव`` परंपराक प्रसंग से तथ्य प्रसंग बहुत रास विवेचन `हर गोरी पदावलीक अध्ययन अनुशीलन सँ स्पष्ट होयत।

हर-गौरी पदावली : सामान्यतया ई देखल गेल छैक जे एहि पद सबहिक प्रचार-प्रसार जनसामान्य मे वर्ण्यभेदक दृष्टिसँ कयल गेल छैक जकरा तीन भागमे बाँटल जा सकैछ - (क) नचारी (ख) महेशवाणी (ग) शिवक प्रार्थना एवं प्रशस्ति। एहि प्रकारे शिवलीलाक रुपायन कयल गेल अछि। एहि सबमे महाकवि अपन दीनताक वर्णन करैत दयाक याचना करैत अपन संतकीय भावसँ, मानवीय जीवनमे शिवक, औढरदानीक भावनाकें उजागर कयलनि। सिद्धिदाता स्वरूपक वर्णन ततेक तन्मयताक संग भावातिरेक भेल अछि जे मानवीय चेतना स्वतः आकर्षित भेल अछि।

आचार्य रामानाथ झा लिखैत छथि : - जे शिवक विवाह और पारिवारिक जीवनक वर्णन सहित शिव भक्ति सम्बन्धी गीत सभ अछि, शिव सम्बन्धी विद्यापतिक ई गीत सभ नचारी नामसँ

अभिहित कयल जाइत अछि। अबुल फजलकें विद्यापतिक गीत लोकप्रिय एवं विख्याताक चलतें श्रृंगारिक गीत सभकें सेहो अपन आइने अकबरी मे नचारीक बदला लचारी कहि अभिहित कयने छथि। मैथिली साहित्य संस्थानक पत्रिका `मिथिला भारती` (अंक-1, भाग-3-4) मे डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा विद्यापतिक ओहि रचनामे जे शिवक प्रति भक्तिभावना, आत्म निवेदन स्तुति जयगानकें महेशवाणी कहलनि अछि। तथा विवाह, बरियात, भिक्षाटन, उन्मतता ताण्डव, हुनक दाम्पत्य, घर-परिवार, आर्थिक-विपन्नता, गौरी ओ मेनाक विषाद आदि जे व्यक्त भेल अछि से भेल नाचरी। हर गौरीक तत्सम्बन्धी विद्यापतिक रचना जे सामाजिक चेतानाक उद्‌बोधन भेल अछि महादेव कें ईश्वरक तत्वभावनासँ जन सामान्यक रीति पद्धतिक मिथिलाक सामान्य वर-कनियाँ, गृहस्थ ओ गृहिणीक रूपें सामाजिक जीवनमे शिवकें महाकवि अपन भक्तिभावनासँ कहल जाइत अछि जे तादात्म्य संबंध स्थापित कय लेने छलाह। आ हुनकर रूप आ जीवनके निर्धनक प्रतीक बनाकऽ मानवीय चेतना जगेवाक जे विद्यापतिक रचनामे ततेक सरल ओ बोधगम्य शब्दक विन्यास भेल अछि जे सबहक ध्यान स्वत: आकर्षित कय लैत छथि। यथा -

प्रथमहि शंकर सासुर गेला

विनु परिचय उपहास पड़ला

पूछियो न पुछलक वैसलाह जहाँ

निरधन आदर के कर कहाँ।

महाकविक इएह भाव जे हिनकामे संत भाव दृष्टिगोचर करबैत अछि। संतक प्रति जे भाव से कहल जाइत अछि **``संत ह्रदय जस निर्मल बारी``** अर्थात् जकर ह्रदय पूर्णरूपेण अपना वस मे रहैक, ओ संत छथि। **``महाकवि राजदरवारमे रहैत, नहि रहैत छलाह``**। हुनक ह्रदय सतत मानवीय कल्याण ओ निर्वैरी भाव सँ राजदरवारक कार्य करैत छलाह यथा राजा जनक राजा रहैत `संत` छलाह तहिना राजकवि रहितो महाकवि ओ ईश्वरक भावमे तेना लीन रहैत छलाह जे महादेव उगनाक रूप धारण कय सेवक बनि रहए लगलाह -

बर सुख सार पाओल तुअ तीरे

छाइत निकट नयन बह नीरे

-------- --------- --------

भनइ विद्यापति समदओं तोहि

अंतकाल जनु बिसरब मोहि।

एहिठाम स्पष्ट करी गंगा सेहो महादेवक जटा सँ नि:सृत होइत इहलौकिक दुनियाँ मे इत्यादि प्रकारक पाप-पुण्यक जे तत्संबंधी भावना से एक डूब आशय स्नान मात्र सँ मुक्ति होमक जे सनातन धर्ममे अवधारणा महाकवि अपन रचनाक मादे चेतना मात्र जगेवाक प्रयास, अध्यात्म

हृदयमे संवेदित भावना हिनक वास्तविक रूपें `संत` हृदयक परिचय दैत अछि।

शिव विषयक पुराणकथा एवं लोककथा दुनूक संयुक्त रूपें विद्यापतिक भावना कें पंडित दीनानाथ झा लिखैत छथि - महादेव सँ बेसी उदार, बेसी त्यागी बेसी निस्पृह के भय सकैछ ! महादेवक जाति-पातिक कोनो ठेकान नहि। हिन्दू पैथियनक देवता थिकाह कि नहि से सन्देहास्पद। तात्पर्य ई जे कोनहुँ तरहें महादेव शोषक होएवाक कि वर्णाश्रम धर्मक, पोषक होयवाक अभियोग नहि लगाओल जाए सकैछ..., प्रत्युत-सोसलिष्ट वा कोनो पैटर्नमे महादेवक महत्व बढ़िते छनि, आ जँ भेल तऽ विद्यापतिक नचारी-महेशवानी नवका विहाड़ि-बसात सँ कोनो भय नहि, भय सकैछ जे विद्यापतिक शैव साहित्यक मूल्य किछु बेसिये हेतनि।`

महाकविक संत भावना सतत आमजनक संग रहैत, शिवक संग तादात्म्य संबंध स्थापित करैत, लौकिकता आ आध्यात्मिकताक समन्वय स्थापित करैछ मिथिलाक संत साहित्य एकटा एहन मार्गक खोज करैत अछि जे सम्पूर्ण भारतमे संत साहित्यक जे अवधारणा मात्र निर्गुण परंपरा कें संत बुझैत छलाह जे एक प्रकारक हिन्दी साहित्यमे मिथक बनि गेल छल। तकरा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य कें पं. रामचन्द्र शुक्ल एवं शिवप्रसाद सिंहक भावनाक जे अपन इष्टक प्रति आत्म समर्पण, आत्मग्लानि दीनता आ अनन्य प्रेमक जे अभिव्यक्ति से सगुण ओ निर्गुण मतक साम्य देखबैत अछि।` तकर अनुभव एहि पदमे जे वर्णन महाकवि कयलनि अछि से ओ लेकनि हृदय सँ स्वीकार कयलनि अछि।

उगना रे मोर कतय गेलाह।
कतय गेला शिव कीदहुँ भेलाह।।
....
विद्यापति भन उगनासँ काज।
नहि हितकर मोरा `त्रिभूवन` राज।

एहि पदसँ स्पष्ट अछि जे महाकविक इएह भाव संत-भाव त्रिभूवन राजक अपेक्षा भगवानक संपर्क चाहियनि जाहि पर विद्वान सब साहित्यिक संत भाव स्पष्ट अछि पश्चात् कबीर मे तकैत रहलाह।

सम्प्रति अनुसंधानक क्रम मे जे अबुल फजल लिखैत छथि : Those in Tirhut language called Lachari were composed by Bidyapati and are on the voilence of passion of love. से कही जे नचारी मात्र शिव विषयकें नहि सब देवी-देवताक प्राप्तिक लक्ष्य अछि।`

वस्तुत: महाकविक संतभाव अपरिमेय भावसँ भड़ल, भाषा सहज ओ निराभरण, शाब्दिक परिष्करण, अलंकारक चारूता, भाषा प्रयोग साभिप्राय गार्हस्थ्य जीवनक परिवार आदिमे पैसल जे

संकट ताकरा महाकवि महादेव वा कही शिवक प्रति अपन अनन्य भक्तिक परिचय दैत सांसारिक जीवन के एकटा ``शिव`` नामे ईश्वरीय रूप दय आशय शिवक मिलनक उद्देश्ये अपन त्रिभूवन राजसँ निर्लिप्त भाव रखैत छथि से मानल जयवाक चाही, इएह भाव विद्यापतिक संत श्रेणीमे आनि कऽ ठाढ़ कऽ दैत छनि।

संतलक्ष्मीनाथ गोसाईं - प्रस्तुत अध्यायमे विद्यापतिक पश्चात् शैव काव्य रचैतामे संत लक्ष्मीनाथ परमहंसक नाम अग्रगण्य अछि। कुल 25000 पदक रचैता रहलाह, जिनकर भक्ति, ज्ञान आओर वैराग्य पर अठारह सय पदक भजन संग्रह भेल छैक। संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंकें मैथिली आ संस्कृत भाषा पर जन्मजात अधिकार छलनि। मैथिली भाषा के संत साहित्यमे एकटा सधुक्कड़ी बोलीक विकास भेल छैक जे मूलत: मैथिली भाषा-साहित्य सँ सम्मन्वित अछि। जकरा सुनला सँ व्रजभाषाक समीप सेहो अनुभव होइत छैक। जे हो **``परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति जमशेदपुर``** द्वारा प्रकाशित पोथी `गीतावलीमे` शिव पार्वती पर आधारित पूर्ण रूपेण मैथिली पदक विन्यस्त कयल गेल अछि। जाहिमे शिव प्रार्थना, भजन, महेशवाणी, नचारी आदिक वर्णन भेल छैक। रूसल शंकरक खोज पुछारि मध्य, शिव-पार्वती होली शीर्षक आदि नामे किछु रचना प्राप्त भेल अछि।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक काव्यभाषा मैथिली मिश्रित सधुकड़ी भाषा छैक एहिठाम हिनक शिव विषयक प्रार्थना मे देखल जाओ :-

एक बेरि हर ! हमरा दिश हेरू
पारवती पति दारिद फेरू।। ध्रुव।।
करिय अनुग्रह निज जन जानी
होउ सहाय शिव सहित भवानी।।
--- --- --- --- --- --- --- ---
निज जन जानि धरु करुआरू
लक्ष्मीपति हर पार उतारू।।

महाकवि विद्यापतिक मैथिली साहित्य मध्य विशिष्ट अंश मानल जाइत अछि। चाही महेशवाणी एवं नचारीक बीच विद्वान डॉ. शैलेन्द्र मोहन बाबू लिखैत छथि जे - शिवक प्रति भक्तिक आत्म निवेदन स्तुति ओ जयगान से **महेशवाणी** अछि। जखनकि नचारीक प्रसंग विद्वान डॉ. शैलेन्द्रमोहन बाबू लिखैत छथि - बिवाह बरियात, भिक्षाटन, उन्मतता आदि नचारीक प्रसंग होइछ। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक रचना प्रसंगकें आर स्पष्ट करवाक दृष्टिसँ फुलेश्वर बाबू सेहो अपन शोध ग्रंथक अनुसार महेशवाणी चारिगोट, नचारी छौ गोट छैक। एकटा महेशवाणी भजन वर्णित अछि -

शीष जटा जूट भाल तामे शोभे गंगाधर

चान तिलक भृकुटि कुटिल नैन अनलवार

भस्म भूषित शेत गात

पंच वदन बिमल साथ।

कंठकाल कुण्डल ललित, नागहार शोभे।।

उर विशाल मुण्डमाल, दिशा वदन बाघ छाल।

बैल के सवार शंभु, डमरू त्रिशुल धारे

आक धथुर छोरि भांगे पिवलन्हि गौरी संग

बनविहार करत - फिरत, काम अगिन डारे

लक्ष्मीपति हर दयाल शरणागत करत पाल

शिव-शिव शिव कृपाल तीन लोक तारे।।

शिव महिमासँ संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं मिथिलाक अध्यात्म जीवनमे शिवक भक्तिभावना आम जनमे कतेक अंतर्गृहीत भेल छल, तकर अनुभव करैत ओ बुझैत छलाह जे भगवान छथि तऽ एकेटा ताहि प्रसंग ओ निर्गुण संतक साधनाके सेहो अपन काव्य जगतमे पूर्ण स्थान देलनि अछि। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं परमहंस कोटिक संत छलाह, समाज सुधारक आम जन सँ हुनक भाव पिता-पुत्रक सदृश्य रहैत छलनि। ओ भगवानक भाव परम-सत्ताक रूपें परब्रह्ममे लीन ओ आम जनक उत्कंठाकें शांत करवाक भाव सँ भगवानक स्वरूपक अपन रचनाक माध्यमे गुनगाण करैत छलाह। हुनक नचारी नामे हुनक कीर्ति -

बम-बम बम वैद्यनाथ बरदानी - ध्रुव

----- ------- ------ -------

लक्ष्मीपति हर पद मन मानी।

उपर्युक्त पदक सबसँ पैघ विशेषता ग्राम्य-मनोवृत्तिक अद्‌भुत चित्रण कयलनि अछि। ग्रामीण राग-अनुराग, आशा-आकांक्षा, घृणा-संवेदना, तीत-मीठक अत्यंत स्वाभाविक चित्रण लोकगीत पद सँ लय नचारी-महेशवाणी ओ स्तुति वर्णित विषयकें आत्मसात करवाक हुनक कवीत्व भावमे हुनक विश्वास सर्वदा आत्मीय प्रतीत होइत अछि।

3. साहेब रामदास :- मिथिलाक मैथिल संतक विशिष्टता इएह रहल अछि जे ओ परमात्माकें अनन्त मानैत छथि। साहेबराम दास जगत रूप सम्पूर्ण देवताक एहि संसारमे अंश रूप कार्य करैत अछि। अक्षर ब्रह्मरूप छथि वएह ब्रह्मा, विष्णु, आओर शिव छथि। एहि भावमे पदावलीमे विभिन्न प्रकारें अभिव्यक्ति देलनि अछि। यथा -

शेष महेश सनकादि जाके चरण के धरय ध्यान।

चारि वेद षट शास्त्र भागवत सतत करत हे गान।।

वरनै गौतम व्यास सुदामा महिमा सिंधु समान।

ओहि प्रभु पूरन पुरातन साहेब जन के प्राण।।[16]

साहेबराम दास जीव संबंधी दार्शनिक विचार ब्रह्म अपन अंशमे विभिन्न रूपमे जीवक अन्दर स्थिति अछि। तैं ओ सतत पंचदेवोपासना मे विश्वास रखैत छलाह।

संत साहेवरामदासक रचनामे काव्य छन्दक विवेचन सँ स्पष्ट अछि ओ संत योगी छलाह, भजनानंदी छलाह। हुनक गीत काव्य छन्दवद्ध पदावलीमे `**हरिगीतिका**` छन्दमे जाहिमे 28 गोट मात्रा होइत अछि।

यथा -

सब परिहरि हरि चरण अराधहु होहु भजन अधिकारी।

होहु सचेत चेतहु चिन्तामनि हरि को शक्ति पिआरी।

शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक कहत निगम परचारी।

वेरि वेरि कहत साहेब सिर धुनत लेहु मन मुगुद सभारी।।

आशय एकर पाँतीमे छंदक महत्व अपूर्व भेल छैक। लघु-गुरुक गणनासँ 28 मात्राक योग अबैत अछि (हरिगीतिका) मात्रिक छन्द होइत छैक।

एहि प्रकारे संत साहेबराम दास संसारिक नाम आ रूपक संग एहि शरीरक सम्बन्ध ब्रह्मक सत्-चित आ आनन्द व्याप्त परिवर्तनशील छैक जे नाशवान अछि, मुदा संसारमे ओ कहैत छथि जे भागवत् पुरान मे कहल छैक - जीवन नित्य आओर अहंकार रहित प्रारंभिक अवस्था मे रहैछ। आशय हिनक रचना पर शास्त्र आदिक प्रभाव रहैछ।

4. चंदा झा : - संत साहित्यक मध्य कवीश्वरक प्रति इएह भाव जगबैत अछि जे मैथिली साहित्यमे हमसब हुनक शैव काव्यक विवेचन करी। विशेष कऽ हमर विषय प्रविध देखैत अति संक्षिप्त होमक चाही जे कवीश्वर आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक अधिष्ठाता जे मनबोध आ नन्दीपतिक रचनासँ भिन्न तात्विक दृष्टिसँ अन्तर रखैत छथि। चंदा झाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पृष्टिभूमि पर विचार कयला संता हुनक अधिकांश रचनामे धार्मिक स्वर भेटैत छैक। हुनक जीवन शैली के मर्म जखन अत्यंत समीप ओ हृदयग्राही भाव सँ देखल जयतैक तखन हुनक हृदय कें संतकीय भाव दर्शन होयत। हुनक क्रिया-कलाप हुनक जीवनशैली, हुनक रचना पद्धति के अध्ययन, मननशील कयला संता कराहु शंका नहि रहि जाइत छैक जे ओ संत नहि छलाह।

हम एतय कवीश्वरक शिव सम्बन्धी रचना पर विहंगम दृष्टि निक्षेप करब। हिनक ``चन्द्र पदावली`` हिनक शताधिक उत्कृष्ट गीतक रचना संगृहीत भेल अछि। कवीश्वर चंदा

झा महादेवक अद्भुत स्वरूपक चित्रांकन अपन भक्ति-भावमे अर्पित कयने छथि -

शोभा देखू सखिया
वरकें वदन पाँच तीन अँखिया।
अमृत अरुचि विष-तिष चखिया।
वलय पन्नगराज वायु भखिया।।[17]

कवीश्वरक `महेशवाणी` मे अपन जीवनक कयल गेल पश्चाताप कें उजागर कयलनि अछि -

साधन कोन करब हम दुर्मति से नहि किछु मोहि फूर।
मानुष जन्म निरर्थक जाइछ वयस वितल नहि धूर।।
आश-पिशाची नै होथि पराधिनि से बुझि मन होइ झूर।।[18]

- कविता कुसुम

हिनकर एहि महेशवाणी पद सबहिक अवलोकन कएला सँ संता विद्वान डॉ. जयकान्त बाबू लखने छलाह : -

The best part of his work consists of his Maheshvanies they are remarkable for their simplicity and sincerity. He has powred out his devotion and his moods and feelings of directly and as feelingly as he could.

अस्तु कवीश्वर शास्त्र मर्मज्ञ पंडित संत ज्ञानी विशेषज्ञ छलाह। जिनकर प्रभाव मिथिलाक उपर आधुनिक कालमे सबसँ बेसी पड़ल छैक।

5. स्नेहलता :- संत स्नेहलता सनातन धर्म ओ पंचोदेवपासनामे विश्वास रखैत छलाह। हिनक व्यक्तित्वक प्रसंग ओ संत जीवनक वहुत प्रसंग पूर्वहिमे आबि गेल छैक। एतय हम मात्र हिनक शिववाणी संकीर्तन पर दृष्टि निक्षेप करब। स्नेहलताक रचना धर्मिता बहुआयामी छनि, मूलतः रामाश्रयी शाखाक संत मुदा शिव विषयक ओ मिथिला ओ मैथिली संत साहित्यक आधुनिक कालक श्रेष्ठ रचनाकार जिनक पद सब मिथिलामे अत्यंत प्रभावकारी ढंगे प्रचार-प्रसार भेल छैक।

स्नेहलता "शैव पदावली" के शिव वाणी संकीर्तन शीर्षक सँ संकलित कयने छथि। मुदा पोथी आब अप्राप्य अछि। शिव विषयक हिनक दर्जन सँ अधिक रचना अछि। ओना लोक जीवन मे शिव विषयक नचारी, महेशवाणी, विद्यापतियोक रचना सँ पूर्व प्रसिद्ध छलैक। मुदा महाकविक रचनाक पश्चात् एहि पद सभहिक गरिमा बढ़लैक। सामाजिक जीवनकें आधार बना, महादेव कें शरणमे जाय रचना होमय लागल। एहि क्रम मे हम हुनक अर्थात् संत स्नेहलता जीक एकटा प्रसिद्ध नचारी अछि -

बाबा बैद्यनाथ हम आयल छी भिखरिया

अहाँ के दुअरिया ना।

अयलहुँ बड़-बड़ आश लगाय होइयौ हमरा

पर सहाय।

एक बेर फेरि दिअउ गरीबो पर नजरिया

अहाँ के दुअरिया ना।

हमरा नहि चाही दरमाहा मंगनी मे चाकर चरवाहा

राखब खबरि सनेहक कहुना कऽ गुजरिया

अहाँ के दुअरिया ना।"

एहि प्रकारें संत स्नेहलता भजनानंदी संत, कीर्तन स्मरण पादसेवन दास से कही सतत अपना रचनाक मादे भक्ति ओ स्तवनक संग ईश्वरक संग तादात्म्य संबंध स्थापित कय संत स्नेहलता वहुआयामी प्रकृतिक संत छलाह। समाजक अटूट विश्वास हुनका संग छलनि।

यद्यपि अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे कालेक्रमे मानवीय प्रकृति ओ मनोवृत्तिमे परिवर्तन होइत रहैत छैक। तथापि हमर विषय प्रविध "संत-साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषणक प्रसंग" संत-साहित्य मे शैव परंपरा शीर्षक अध्यायक प्रसंगमे कही तऽ अदौकाल सँ आबि रहल छैक। हमरा जाहि रचनाकार कें साहित्यिक चर्चा-परिचर्चा करवाक ध्येय अछि जे मूल रूपें संत छथि हुनकहि रचनाकें आधार बनाओल अछि। ओना आध्यात्मिक अध्ययन अहिठामक परंपरा रहल अछि। विद्वान डॉ. रामदेव झा शैव भक्ति काव्यक रचनाकार मे वर्तमान समयक वरीष्ठ रचनाकार मानल जाइत छथि - जीवन झा, राज पंडित बलदेब मिश्र, भुवनेश्वर झा 'भुवनेश', मूसे कवि, हरेकृष्ण दास, मुकुन्द शर्मा, आनंद झा न्यायाचार्य, काशीकान्त मिश्रि 'मधुप', सुरेन्द्र झा 'सुमन', वेदानन्द झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'" प्रभृति विद्वानक रचना अपूर्व छनि। तें स्पष्ट अछि जे मिथिलाक सन्त परिवार समाजमे सन्त सदृश आचरण करैत अपन धर्मोपदेशक माध्यमे लोक कल्याणक प्रति सतत् जागरूक रहैत छलाह। तें मिथिलाक सन्त कें भक्त संत कहब उपयुक्त लगैत अछि।

●●●

संदर्भित ग्रंथ

1. मैथिली पत्रिका `पक्षधर`, जनवरी, 2016
संपादक कुमार शितांशु कश्यप - आलेखकार - डॉ. रामदेव झा, पेज-16।

2. ऋग्वेद मंत्र 10 सूक्त 136।

3. योगोपनिषद `संग्रह` ए. महादेव शास्त्री, सम्पादित (अडवार लाइब्रेरी, मद्रास एवं उत्तरी भारत की संत परंपरा, पेज-48, स. परशुराम चतुर्वेदी।

4. पक्षधर, जनवरी अंक-2016, पेज-17 सं. कुमार शीतांशु कश्यप, राँची।

5. पक्षधर, जनवरी अंक-2016, पेज-17 सं. कुमार शीतांशु कश्यप, राँची।

6. मैथिली साहित्यक इतिहास पं. दुर्गानाथ झा `श्रीश`, पेज-63।

7. मैथिली साहित्यक इतिहास पं. दुर्गानाथ झा `श्रीश`, पेज-63।

8. विद्यापति, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, पेज-88 एवं 89 ।

9. विद्यापति पदावली - रामवृक्ष बेनीपुरी, पेज-149, 150 आ 150।

10. पक्षधर, जनवरी अंक, पेज-18।

11. मैथिली साहित्य प्राचीन अध्ययन सामग्री, पेज - 76।

12. ग्लेऽपिनक अनुवाद - जगदीश मुखोपाध्याय द्वारा सम्पादित पृ.730 एवं मैथिली साहित्यक प्राचीन अध्ययन सामग्री, पेज-78।

13. विद्यापति - शिवप्रसाद सिंहक पोथी, पेज-91।

14. विद्यापति - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, मै.अ.प. पेज-94।

15. गीतावली - प्रकाशक परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, जमशेदपुर, पेज-414।

16. साहेबराम दास - मोनोग्राफ - श्री शंकर झा सा.अ. नई दिल्ली, पेज-38।

17. मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास लेखक - डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, पेज-103।

(चन्द्रपदावली -43)

18. कवीश्वर चंदा झा कीर्ति `कविता कुसुम` पद संख्या - 27, मैथिली गीतिकाव्य संकलन डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, पेज-105।

19. स्नेहलताक मोनोग्राफ - संकलनकर्त्ता - योगानन्द झा, मै. सा. अकादेमी, नई दिल्ली, पेज-57।

20. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका, डॉ. रामदेव झा।

श्रोत-ग्रंथ

1. पुरोहित हरिनारायण शर्मा द्वारा सम्पादित सुन्दर ग्रंथावलीक प्रक्कथन।

2. जर्नल आब रायल एशिएटिक सोसाइटी सन् 1907 मे प्रकाशित निबंध ``हिन्दूक उपर नेस्टोरियन `ईशाइक ऋण` नाम सँ प्रकाशित भेल अछि। दोसर विद्यापति, डॉ. शिव प्रसाद सिंह संकलन।

3. गीतगोविन्द काव्यम् - जयेदव कृत, गंगेश रामकृष्ण तैलग द्वारा राम्पादित।

4. प्राकृत पैंगलम - सं. मनमोहन घोष - 1902 ई.।

5. रागतरंगिनी - लोचन कृत।

6. विद्यापति - श्री जनार्दन मिश्र।

7. विद्यापति - श्री खगेन्द्रनाथ मिश्र और बिमान विहारी मजूमदार द्वारा संपादित हिन्दी संस्करण, पटना, सम्वत् - 2010 ।

8. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन - डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, विहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना।

9. पुरुष परीक्षा - मैथिली अकादेमी।

10. मणिमञ्जरी-नाटिका, संपादक - डॉ. चन्द्रधर झा, मैथिली अकादेमी।

11. कीर्तिलता - संपादक म.म. उमेश मिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य, इलाहाबाद-211002 ।

12. विद्यापति ठाकुर - डॉ. उमेश मिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद - 11937 ई।

13. मैथिली साहित्य आदिकाल - पं. राजेश्वर झा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना।

14. विद्यापतिकालीन मिथिला प्रो. डॉ. इन्द्रकान्त झा।

15. वर्णरत्नाकर - डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी एवं वबुआजी मिश्र रायल एसियाटिक सोसाइटी, 1, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता।

16. विद्यापति गीतशती - उमानाथ झा - साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

17. विद्यापति पुनर्मूल्यांकन - दीनानाथ झा, मै. सा. संस्थान, पटना।

18. विद्यापति बाङ्गमय - डॉ. मुनीश्वर झा।

19. परिचय निचय - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा।

20. कविता संग्रह - संकलन डॉ. आनन्द मिश्र।

21. पूर्वांचलीय गीत साहित्य - संकलन गोविन्द झा।

22. पूर्वांचल भाषा-साहित्य एवं संस्कृति प्रो. नवीन चन्द्र मिश्र।

23. थारू लोकगीत प्रफुल्लकुमार सिंह `मौन`।

24. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास प्रफुल्ल कुमार सिंह `मौन`

●●●

दसम् अध्याय

मैथिली संत साहित्यमे शाक्त परंपरा

``मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनक`` क्रममे, हिन्दी साहित्यमे जे संत ओ साहित्यक अवधारणा मैथिली साहित्य सँ प्राय: पूर्णताया भिन्न अछि। हिन्दी साहित्यक मध्य निर्गुण, बौद्ध ओ नाथ सिद्ध संप्रदायसँ प्रभावित निर्गुणियाँ भक्ति योग, ज्ञान आ प्रेम अनाहद सुरति के जोड़ैत जे रहस्यक निकट तिनका संते बुझै छलाह। पश्चात् पं. रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य मे सगुण संत साहित्यक परिपेक्ष्यमे सगुण भक्तिक श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन बंदन दास शरण ओ आत्मनिवेदन भावनाक विकास, हिनकहि मार्फत भेलै। मुदा से मैथिली भाषा साहित्यक अन्तर्गत संतकीय अवधारणाक स्वरूप अदौकाल सँ आवि रहल अछि। जाहिमे निर्गुण संतक अहम् स्थान छैक। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भक्त संत कविक अष्टछाप सूरदास ओ तुलसीदास के मानैत पर महाकवि विद्यापतिक आदर्श स्वरूपे स्वीकार कयलनि। पद रचना आदि पर स्पष्ट प्रभाव देखल जा सकैछ। उल्लेखनीय प्रसंग अछि जे महाकवि सँ प्रभावित सूर, तुलसी, चैतन्य आदि संत भेलाह मुदा महाकवि के राजदरबारी कहि संत कहबामे परहेज करैत छथि। ई जे मैथिलीये नहि अपितु हिन्दी जगतमे सेहो महाकवि के सरस ओ श्रृंगारिक मानल जाइछ जे सर्वथा अनुचित अछि।

सन्त सम्प्रदायक विकासक प्रसंग कहल जाइत अछि जे मुल्ला, मौलवी, पंडित आदिक विचारधारा सँ बेसी उपयोगी सिद्ध संप्रदाय, नाथ आ सुफी विचारधाराक उपयोगी तत्व के लऽ कऽ एहि संप्रदायक विकास भेल अछि। संत सम्प्रदाय जाति, वर्ण, वाह्यआडम्बर, कर्मकाण्डक त्याग आ विरोध करैत अछि। निर्गुण धारा पर बौद्ध के प्रभाव देखल जाइत छैक। मध्य काल मे मुसलमानक बढ़ैत प्रभाव आ समाजमे आतंकक वातावरण बनि रहल छलैक। हिन्दू के मुसलमान सँ लड़वाक स्थिति नै रहैक। विद्वानक ऋग्वेद कालीन धारा लोक भाषाक माध्यम ग्रहण करैत अपभ्रंश काव्यके प्रभावित कयलक। संत साहित्य बज्रयानी पारिभाषिक शब्दक प्रभाव सँ साहित्यक विभिन्न रूप भेटैत अछि यथा सिद्ध काव्य, नाथ काव्य जैन काव्य, रासो काव्य, कृष्णकाव्य, रामकाव्य आदिक विकास भेलैक। जाहि सँ एकटा पंचसखाक रूपें बौद्ध प्रवृत सँ मेल खाइत सम्प्रदायक विकास भेलैक।

मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलन ओ विश्लेषण सँ स्पष्ट अछि, जे सगुणधाराक अन्तर्गत संत मायाके जीतवाक लेल उपर्युक्त पंचसखाक वर्णन भेटैत अछि। इएह कमोवेश मैथिली भाषाक अन्तर्गत पंचोदेवोपासना अछि। मिथिलाक संत आदि काल सँ वैष्णव, शैव, शाक्त, आदिक संग धार्मिक भावे उदारताक परिचय दैत रहलाह। मिथिलाक संत साहित्य मे निहित्त भाव-शक्तिक प्रसंग प्रसिद्ध पाँति **``सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गणेश पाँचो मिलि रक्षा करे ब्रह्मा-विष्णु-महेश।``** एहि ठामक विशेषता शिव भक्त संत त्रिपुण्ड ओ विभूत, विष्णु भक्त लंबकार श्रीखण्डक चानन आ शक्तिक उपासक सिन्दुरक ठोप शाक्त भावना मिथिलामे कम

प्रचलित नहि अछि। मिथिला शक्ति-पीठ नामे प्रसिद्ध अछि। एहि ठाम मिथिलाक प्रसिद्ध मंदिर उग्रतारा स्थान (महर्षि) उच्चैठ (बेनीपट्टी), कात्यायन स्थान, जयमंगला आदि अत्यंत प्रसिद्धि रहलैक अछि। मिथिला मे शक्ति उपसनाक प्रसंग प्राचीन आगम ग्रंथ वर्णरत्नाकरक पृष्ठ 60 मे भेल अछि। बौद्ध धर्मक महायान शाखा गुह्य राधनाक प्रभाव रोहो तन्त्रोपाराना पर पड़लैक जे मिथिलाक शाक्तभावनाक अभिन्न तत्व वनि गेल जकरा मिथिला समाजक सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवनक विशेषता कहल जा सकैत अछि।

मैथिली भाषा साहित्य मे संत साधनाक विशिष्टता मे अपन अराधना गोसाउनिक गीत ओ दशो महाविद्याक ध्यान मूलक गीत रचना शक्तिमूलक भक्ति काव्य अछि। गोसाउनिक गीत जकरा देवीपद वा भगवतीक गीत सेहो कहल जा सकैत अछि। शक्तिक अनेको स्वरूप होइत छैक। भक्ति परक स्तुति होइत अछि। एहि प्रकारक गीत विशिष्ट प्रशंसनीय रूपें विद्यापति, नेपालक मल्ल राजा लोकनि रत्न.. आ गणनाथ झा आदि लिखलनि। पश्चात् आधुनिक शिक्षा पद्धतिक प्रवेश भेला पर अंग्रेजी गीतक रूप विधामे मुख्य अछि -साधारण गीत, सोनेट, ओड एवं साहित्यिक बएलेड़। (मै. सा. इ. जयकान्त बाबू पेज-39) आ अंतमे मुक्तक काव्य रूप सभ अछि जकर मिथिलाक संत पुरुष लोकनि खूब बेस व्यवहार कयने छथि।

मिथिलाक संत भावना प्रसंग जखन सांगोपांग वर्णन कयल जायत तखन मानल जाइत अछि जे हुनक जीवन विरक्ति प्राप्त कयलाक पश्चात् मानवीय चेतनाक उत्कृष्ट विकास संत भावना मानल जयतैक मे आ जखन ओहि भावनाक विकारा हेतैक तखन इएह भाव ``हरि के भाजय से हरि के होई`` वसुधैव कुटुम्बकम् के सिध्यान्तक कसौटी पर संत आ तखन हुनकर संवेदनाक स्तर सँ हुनका ई होमय लगैत छनि ``निरर्थक जन्म गतं नलिन्यां एहना अवस्था मे इन्द्रीय ग्राह्य पदार्थ सहृदयताक अपूर्व भाव उद्रिक्त-उद्दीप्त होइ तकरा चमत्कारी अक्षरमे निबद्ध भेल वएह बनैत अछि संत साहित्य। संत लोकनि अपन प्रतिक्षा सँ तेहेन दिव्य-सरस वस्तुक सृष्टि करता जे पुस्तक मे पढ़ल-गुनल वस्तु सँ भिन्न होइत अछि। हिनका सब पर सरस्वतीक असीम कृपा रहैत छनि। मिथिलाक नाम प्राचीन कालहि सँ अध्यात्म भूमि नामे प्रसिद्ध रहल अछि। संतक जीवन जगतक कल्याण वास्ते होइत छनि, लोक सेवाव्रत ओ जाहि कर्म के धारण करैत छथि वएह सत्कर्म मानल जाइत अछि। अर्थात्

तीर्थीकुर्विन्ति तीर्थानि, सुकर्मीकुर्वन्ति, कर्माणि,
सच्छास्त्रीकुर्वन्ति शास्त्राणि।[2]

मैथिली भाषा साहित्यमे संतक जे अवधारणा से अन्यान्य भाषा साहित्यक मे जे अबधारणा ताहि सँ भिन्न अछि। अहिठाम संत के शास्त्रोचित भाव सँ देखल जाइत छैक। कहल गेल अछि-

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था
वसुन्धरा पुण्यवती व तेन
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिल्लीनं
परे ब्रह्मणि यस्य चेतः[1]

मिथिलाभूमि तप्त, तपस्वी सभक तेजोबल सँ वेष्ठित अछि। दार्शनिकताक आकर्षण केन्द्र अछि। अपन अध्यात्मिक गरिमाक कारणे विश्वक दर्शनके गौरवान्वितक संग महिमा मंडित होयवाक सौभाग्य पावि चुकल अछि। मिथिला भूमिक महानताक कारण स्वरूप सदासँ एहि ठामक ऋषि मुनि, महात्मा-मनीषी, तपस्वी, जोगी साधक - साधु-संत एहन देवोपम व्यक्तित्व युक्त दिव्यात्मा महामानवगण सदस्वरूप लोकनि छथि।

अहिठामक संत परंपरामे सुप्रसिद्ध विदुषीगणक विशेष योगदान रहलनि अछि। अम्बा, उम्बा जे अपन शास्त्रनिपुणता गुणक कारणे भारती शारदा, उभय भारती वा सरस्वती ओ मिथिलाक महान दर्शनकार मंडन मिश्रक विदुषी धर्मपत्नी भारतीक प्रसंग विश्व दर्शन मे कहल जाइत अछि -

विद्याभारेण सम्पूर्ण: सर्वभारं परित्यजन

दु:स्वभारं न जानाति भारती परिकीर्त्यते।।

मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्कर्ष मे संत कवि लोकनिक अवदान अर्थात् जे विद्याक भारसँ सम्पूर्ण अछि। संसारक-सांसारिकतासँ दूर दुखक बोझक कोनो स्तित्वे नहि रहि जाइत अछि तकरे नाम भारती कहबैत अछि। आ सारस्वतीक प्रसंग -

स्वरज्ञातोनित्यं स्वरवादी कवीश्वर

संसार सागरासारहन्तासौ हि सरस्वती।।

अर्थात् `शाक्त` परंपरा मे संत साहित्यक भीतर स्वरक ज्ञान मे शाक्त विषयक बिवेचन ऋषि कवि लोकनि जे कयलनि अछि से श्रेष्ठ भेल छैक। संसार रूपी सागरक असारताक दूर करयवाली देवी भारतीक मुकुल विलक्षण आदर्श चरण नुपूर सँ मिथिलाक भूमि अनुगुंजत भेल अछि। साधु संत अपन कर कमल सँ धर्मक पराग झारल ताहि सँ मिथिलाक धरती आप्लावित भेल अछि। एहि दिव्य-दर्शनक इजोत चहुदिस पसरल तकरे फल शंकर स्वयंमे कही दर्शनकारे नहि अपितु संतेक श्रेणीमे कहल जा सकैत छथि। एहि प्रसंग के फरिछायब फेर विषयाँतर होयत शंकर शक्तिक प्रसंग स्वयं कतेक सुन्दर बाजि उठलाह -

भगवती भारती विभावती
धर्मक धात्री गायत्री शुचि सावित्री सम
मन्दार-द्रुम-कुसुम हार तुल्य पावनी परम
ध्योतित नित नूतन तर्क अर्क
विज्ञान ज्ञान श्रुति-विश्रुतमयि
प्रतिभा विद्युतक प्रभा समान
जनु चिदानन्द लतिका लत्वरल हो भासमान।

पुन: कहलनि :-

मण्डन छथि ब्रम्हा आर भारती वाणी छथि।

छथि एक परम शिव अपर विश्व कल्याणी छथि।

वस्तुत: संत साहित्यक जे अवधारणा साहित्य जगत सँ अछि। वस्तुत: मैथिली साहित्य हो वा अन्य साहित्य, संत साहित्यके अध्यात्म जगत सँ मानल गेल अछि जकरा आधुनिक साहित्यमे भिन्न मानल गेल ओकरा अध्यात्म ओ धर्म सँ घेर कऽ साहित्य सँ दूर करवाक प्रयास भेल, जखनकि ई अवधारणा साहित्य जगतक एकटा घोर निन्दनीय अवधारणा अछि। साहित्य समस्त मानवीय सूत्रमे आवेष्ठित करैत छैक। हिन्दी साहित्यक अवधारणामे एकरा धर्म सँ देखल गेल, अध्ययन ओ मनन सँ देखल गेल अछि जे जहिया सँ `कबीर` पटल पर अयला तहिया सँ हिन्दीक विद्वान संत साहित्यक कीर्तन करय लगलाह। जखनकि मिथिला ओ मैथिली साहित्यक अध्यात्म प्रवणता कण-कणमे मुक्ति मंत्र सभक स्वर सतत आ सभ युगमे ध्वनित होइत रहल। मुदा देखी-देखी संत वा अध्यात्म जगतक साहित्यके मूल अवधारणा सँ विलग रखबाक साजिश भेल। ताहि सँ समाज ओ शिक्षा जगत के छति जे भेलैक ताकर अनुमान ककरो नहि लगलै। आइ समाज जाहि मोर पर ठाढ़ अछि साहित्यक सोच-ततेक निम्न भेल अछि जकर कोनो परावार नहि। साहित्यो मे प्रोफेशनल `शब्द` आबि गेल अछि आ एहेन मे संत साहित्यक स्थान नहिये जेकाँ बनैत छैक मुदा समाजक व्यथा एहन जे हमर विषय ``मैथिली संत साहित्य अध्यन ओ विश्लेषणक`` उपयोगिता संसारक लेल असीम कहवाक चाही। एहि प्रसंग शक्ति आधार बना मिथिलाक संत लोकनि जे पंचोदेवोपासना दिशि प्रवृत्ति कयने रहैत छथि आ मिथिला ``शक्ति पीठ`` मानल जाइत रहल अछि। दक्षिण सँ स्वयं शंकराचार्य आबि एहि शक्ति पीठक महात्म्य बुझि गेल छलाह। एतय संत-योगी-साधक धरती सँ अंतरिक्ष धरि शुचिताक किरणसँ चेतनाक संचार करबाक लेल तत्पर भेल। `भारतीक इएह अध्यात्मिकता देवत्व शक्तिक उत्तमता आ उत्कर्ष सौविद्य रहल अछि। जन-जनक बीच शक्तिक भावनाक साकार कयल जयबाक जे अवधारणा कही तऽ विदुषी भारतीक अध्यात्मिक उत्कर्ष हुनक संत भावनाक परिचायक भेल अछि। अहि उत्कर्ष चित्र केदारनाथ लाभक स्वरमे हुनक भावनाक अभिव्यक्ति देखल जाओ :-

भारती न्याय केर तुला दंड सन छलि भासित
सत्यक सिंहासन पर बैसलि
आलोक-पुंजिता नय-नीता
मर्यादा-मणि, मुकुलिता द्युता
विद्या-विलासिता शील युता
कर्मक कालिन्दी साँ नहाय जनु बहरायलि
सुकृता शुभा सरला सुधर्म-संमीता सन
जनु अग्नि कुंड सँ निकसलि सस्मित्त सीता सन।।

पुन: विश्ववंधुक नजरि मे विद्युतमा अछि विदुषी भारती

अछि जेना मंडित ई मिथिला

जगत जानकी सीता सँ

तहिना सन अछि मुखरित

हमरा सभक ई मिथिला

भारती, मैत्रयी, गार्गी विद्युतमा सँ।

दिव्यताक उत्कर्ष मिथिलामे एक सँ एक अवतारिणी एतय भेलथि।

मिथिला मे अध्यात्म पथक सत्यान्वेषी साधक संत लोकनिमे पंचोदेवोपासना प्रसिद्ध रहल अछि। भक्त संत कविमे अष्टछाप देखल गेल अछि से - विद्यापतिक प्रभाव तुलसीदास, बिहारी आदि पर देखल जा सकैत अछि आ सभ संत श्रेणीमे अबैत छथि। भावक एहन पार्थक्य हिन्दीक साहित्यकार लोकनि कयलनि से वएह लोकनि जनैत छथि। खासकऽ हिन्दी साहित्यक विद्वान संत साहित्य कें कबीर सँ मानलनि जे एकर पुष्टि भूमि बौद्ध सिद्धि संत ओ नाथ सम्प्रदाय लगसँ आरंभ भेल बुझना जाइत अछि। जे हो हम एंहि विषय-वस्तु सँ भिन्न हम अपन विषय पर केन्द्रित करी। मैथिली भाषा-साहित्य संसारक मनीषि-प्रवर मानव स्वभावक अन्वेषण आ विश्लेषण मनुष्य वा जीव-मात्र कें राम्पूर्ण चेतनाक लेल हमरा जनैत तीन शक्तिक उपर ध्यान राखि कऽ धर्मक व्याख्या कयल गेल से क्रमश; ज्ञानकाण्ड, भक्तिकाण्ड तथा कर्मकाण्ड आदि के ध्यान मे रखैत कहव तऽ सनातन धर्म अथवा संसारक कोनहुँ धर्म अथवा मार्ग मे एहन निष्ठा नहि भेटैत अछि। संत साहित्यमे भक्तिक जे स्वरूप तकरा नारद विभिन्न रूपके अपन ``भक्त मीमांसा`` मे लिखने छथि -

पूजादिरुवनुराग इति पाराशर्ध्य:

कथादिष्विति गर्ग्ग:

आत्मरत्यविरोधेनेति शाण्डिल्य:

तदर्पिताखिलाचारतदिस्मरणे परमव्याकुलतेति नारद:

आशय ज्ञान काण्ड वा कर्मकाण्डक समान भक्तिकाण्डक संगे कोनो एक स्वरूप नहि होइत छैक। भक्ति मार्गक अभ्यंतर संत भावना जे स्वरूप से सख्य, दास्य वा दाम्पत्य भाव सहज सुलभ रूपें महाभावक उपाधि सँ अलंकृत कयल जाइत अछि। तैं कहल जाइत अछि ``भावमिच्छन्ति देवता:`` से स्पष्ट कही जे भावुकताक चिरंतन सत्यक आधार मात्र भक्तसर्वस्वक उक्ति :-

युवतीनां यथा युनि यूनांच युवतौ यथा

मनोऽभिरमतो तद्वत् मनोऽभिरमतां त्वति।।'

इएह भाव जीवात्मामे कहबै तऽ गोपी, राधा वा प्रकृति एवं परमात्माकें पुरुष यथा गोविन्द एक ``पुरुषो ब्रह्मध्यास्त्रिय एव् च`` वा वासुदेव:, पुमानेको नार्यश्च सकल जगत`` एंहि प्रकारे कही तऽ परमात्मा प्रेमी जीवात्मा प्रेमिका रूपें कल्पित होइत अछि। अही प्रसंग के डॉ. ग्रियर्सन लिखैत छथि : - To understand the allegory it may be taken as a general rule that

Radha represents the soul the messengar or duty the evange lest or else the mediator and Krishna of Course the Diety.``" अस्तु संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलन क्रममे हमर ई प्रस्तुत अध्याय ``मैथिली संत साहित्य मे शाक्त परंपरा`` कहल जाय तऽ एकटा महत्वपूर्ण अध्याय अछि से सत्यतः बुझयौक जे मिथिला आ मैथिली साहित्यक अन्तर्गत संत साहित्य मे ``मधुर भाव`` कें भक्ति रसक ओ उत्कर्षक पराकाष्ठा मानल जाइत अछि। महाकवि विद्यापति सँ लऽ कऽ संत मैथिली पुत्र ``प्रदीप`` धरि आ तकर बादो मुधर भक्ति भावक रहस्यक श्रेष्ठ साधनाक संग शान्त दास्य, सख्य, वातसल्य भावक समावेश कयल गेल अछि। एकटा प्रश्न उठैत अछि मधुर भावक श्रेष्ठताक कारण जे कहबै तऽ विद्वान लोकनि लिखैत छथि `सोऽहम` भाव दर्शनक लेल सबसँ उत्कृष्ट ओ सर्वश्रेष्ट मानल जाइत अछि। अर्धनारीश्वरमे महादेवक उत्तम स्वरूप आ अभिव्यक्ति गौरी शंकरक जे परस्पर भाव दृष्टिकोण जीवात्मामे प्रेमक-प्रचूर भक्तिभाव के बुझब कठिन अछि। संत साधक एहि मार्गीकें कठिन मार्ग कहलनि अछि। मनुख भावुक जीव होइछ तैं ओ प्रेम ओ भक्तिक भावुकतेक विषय अछि।

महाकवि विद्यापतिक श्रृंगारिक रचना जे अश्लील कहल जाइत अछि वैष्णव समाजमे अत्यंत आदरक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि। एहि प्रसंगमे श्रीयुत सुशील कुमार चक्रवर्ती अपन ग्रंथ ``वैष्णव-साहित्य`` मे जे भाव व्यक्त कयलनि अछि, से ध्यान देबा योग्य अछि यथा -

``श्री चैतन्य स्वयं कान्त भावे भजन करितने बलियाइ, जयदेव, चण्डीदास ओ विद्यापतिर पदाबली ते अमन मुन्धा हइया पड़ितेन। एइ सकल पदे, याहा इह सर्वश्व अन्तर्दृष्टि शून्य खोसा भक्षण कारीर निकट रूप वर्णना ओ नायक-नायिकार शारीरिक सम्बन्धेर चित्रांकन ताहा श्री चैतन्य ओ ताँहार साधन-पथाबलम्बी दिगेर निकट मधुर रसेर प्रेम साधनार-भजन-गीति ओ परम प्रियतमेर निकट आत्म-निबेदनेर मधुर झंकार`` पुनः - ए विषयेर आर आलोचना करिते गेलै अनाधिकार चर्चा हइया पड़िवे कारण अनेक अनेक भक्त वैष्णव एइ अश्लीलता दोष दुष्ट पदगुलि गाहिते-गाहिते पुलकाश्रपूर्ण लोचन भावे विह्वल हइया यान, अनेक बृद्ध वैष्णव निशीथे नितान्त अन्तरंग संगे एइ सकल पदेर आलोचना करिया अविरल अश्रुमोचन करिया थाकेन। साधारण पाठकेर निकट याहा निन्दनीय भोगविलासेर सम्भोगेर विस्तृत निपुण वर्णना सेइ पदइ भक्त वैष्णवेर निकट ये मधुर तत्वेर द्वार उद्घाटन करिया देय ताहा बुझिबार साध्य आमादेर नाइ।`` (पृष्ठ 139, 284)

मिथिलाक शाक्त भावनाक विस्तार मिथिलाक भूमि पर होइत रहल अछि शाक्त रूपें राधा,

सीता, सभ माँ भगवतियेक रूप मानल जाइत छथि। शक्तिक व्यापक रूपसँ इष्ट देवताक अराधना कुलवदेवता मिथिला सिद्ध पीठक रूपें ख्याति प्राप्त अछि। साधना-तपस्या शक्तिपीठमे कामरूप-कामाख्या सर्वाधिक महिमा मानल गेल अछि। मिथिलाक संत प्रसंग कही ओ लोकनि माँ भगवतीक राधना मे रहि मानवीय चेतनाक प्रति आग्रही रहैत छलाह। मैथिली शाक्त काव्यमे संत भावनाक जे विस्तार से कही लोक साहित्ये सँ आरंभ भेल अछि। ई कहवामे कोनहु तारतम्य नहि जे मैथिली साहित्यक मध्य संत भावनाक विस्तार लोक कल्याणक भावना सँ जागृति भेल अछि। संत सतत समाज ओ लोक कल्याणक भावनासँ समन्वित सांसारिकता सँ दूर लोक जीवनमे कर्म पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्थापक जटिल प्रक्रियासँ सामाजिक स्तरीकरण के समय-समय पर बुझबाक मनोवृति कें देखैत उच्च उठबाक भावनाक विकास होयब छैक। सरिपहुँ लोकमे अवस्थिति संत अपन गेयात्मक भावना सँ मानवीय जीवनक स्तर कें अपन भजन-कीर्तन भाव-भगैत सँ जबगैत रहैत छथि। मिथिलाक संतक जे भावना अपूर्व, बेसी संत अपन छोट-छिन खोपड़ी आदि बना कए रहैत छलाह। समाज ओ समाजक दूर रहितो हुनक ह्रदयक वास समाजमे रहैत छलनि। संतक प्रसंग कहल गेल अछि -

सन्तोऽनपेक्षा मच्चिता: प्रशान्ता:

निर्ममा निरहङ्करा निद्वन्दा निष्परिग्रहा:6

अर्थात् जिनकामे सब छनि, जे सभमे छथि जे सबसँ भिन्न छथि जिनकामे सबहक अत्यन्ताभाव हो वएह संत छथि। मिथिलाक जे संत तिनकर अपन खास विशिष्टता छनि अहिठाम मानवीय सृष्टिक आत्मतत्व बोधक अक्षय दिव्य ज्योति रहल अछि। मिथिलाक कण-कणमे शील सभ्यता, नम्रता, निष्ठा, पवित्रता, न्याय, मीमांसा सामाजिक आचार-विचार व्यवहार काव्य-संगीताक भावना एना व्याप्त अछि जेना प्रकृति अपन समस्त मधुमय वैभव एतहि रखने हो। अहिठाम मैथिली साहित्यक अन्तर्गत संत साहित्यक प्रसंग कही अध्यात्ममे एतय जन-जनक जे चरित्र ओ भावना शाक्त भावना सँ परिबोधल रहैत अछि। अहिठाम गामे-गाम शीतलामैयाक कीर्तन भजन करैत कतेको संत एक स्थान सँ दोसर स्थान धरि परिक्रमा करैत छलाह ओ उचित देख-रेख के चलते नष्ट-नाबूत भऽ गेल। मुदा ओ स्तुति-विनय प्रार्थना आदि होइत छल। विषहारा देवीक पूजा अर्चना आदि कण-कणमे देवी आ शक्तिक उपासना, कामरूप कामाख्या ओ मोरंग, तांत्रिक देवी नैना जोगिन, मैथिल शाक्त साहित्यमे संत अध्यात्म भावना सँ अभिशिक्त समाजमे सभ देवीक एहि शक्तिपीठक पर्याय मानल गेल छनि। मिथिलाक संत साहित्यक समृद्धक आरंभ लोक साहित्यसँ भेल छैक जे क्रमिक सिद्ध साहित्य सँ होइत अभिजात्य साहित्य धरि तक भेल। कही तऽ समाजमे गामसँ दूर गहबर मे ओतऽ भगत रहैत छलाह जे अपन साधनामे लीन भगवती देवीक कोना गोहरऽबैत रहैत छलाह से देखू :-

आइनि गुण वन्हिहें गे दुर्गा

आइनि गुण बन्हिहें गे

… … … … …

सभुआ के लाज हे माता जी

तोहीं आइ रखिहें गे।।"

उपर्युक्त कथन सँ हम स्पष्ट करय चाहैत छी जे शाक्तक भावना मिथिलाक जन-जनमे कतेक भाव-प्रवणताक संग वास करैत छैक मैथिली लोक साहित्य मौखिक अछि एहि हृदयक भावके बुझि शब्दक बखान मुखसँ होइत छल। कालक्रमे पूर्वमे लिपि बद्ध होयवाक अवसर पाबि गेल। जाहि सँ संत साहित्यक विकास भेलैक । प्राक विद्यापति सँ होइत शिष्ट साहित्यमे महाकवि विद्यापति लगसँ मूल रूपें मैथिली संत साहित्यक वा कही शाक्त साहित्य पटल पर अबैत अछि -

महाकवि विद्यापति : महाकवि मानवीय चेतनाक वाहक छलाह, मिथिला आ मैथिली संत साहित्यमे नहि, अपितु सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक अराध्य देव सदृश छथि। फलतः सदगतिक लेल कोनो-ने-कोनो देवी-देवाताक प्रार्थना अनुनय-विनय, वन्दना गीत गोसाउनिक गीत आदि कहि प्रचलित शक्तिक रूपमे महाकविक प्रशस्त गीत -

जय-जय भैरवि असुर-भयाउनि

पशुपति-भामिनि माय।

सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि

अनुगति गति तुअ पाया

… … … … …

… … … … …

घन-घन घनन घुघुर कत बाजय

हन-हन कर तुअ काता

विद्यापति कवि तुअ पद सेवक

पुत्र विसरु जनि माता

शक्ति ई स्तव ओ स्वरूप वर्णन जे भेल अछि मार्कण्डेय पुराणमे देवी महात्म्यपर आधारित दुरितहारिणी दुर्गाक प्रति जे ई स्तुति गीत देखल जाओ :-

जगति पालन जनम्-मरण

रूप कार्य सहस्र कारण

हरि विरंचि महेश शेखर

चुम्वयान - पदे।

एहिमे शक्तिकें सर्वोपरि जे मिथिलाक विशिष्टता ताहि अनुरूपें, महाकवि संत पुरुष अपन `पुरुष परीक्षा`क मंगलाचरणे अभिव्यक्ति कयने छथि ``जनिका देवता लोकनिक प्रणम्य ब्रह्मो प्रणाम

करथि सभक पूज्य चन्द्रशेखरो पूजा करथि, सभक पूज्य ध्येय विष्णुओक ध्यान करथि। ओहि आदि शक्ति भगवतीकें हम माथ नमाय प्रणाम करैत छी।[1] मिथिलाक भूमि अध्यात्म भूमिसँ जे सहजताक भाव विस्तार से भारतक जनमानसके अत्यंत मार्मिक रूपें अभिशिक्त कयलक। मातृसाधनाक जे वैशिष्ट्य निरूपण ओ दुर्गाभक्ति तरंगिणीक प्रणयनमे रार्वव्यापिनी विश्व व्यापिणी माताक धर्म लक्षण भिन्न-भिन्न देवी स्वरूपक वर्णन महाकवि अपूर्व वर्णन करैत लिखने छथि -

विदिता देवी विदिता हो...

अविरल केश सोहन्ती

सँ दिग्दर्शन करवैत शक्ति वन्दनाक एहेन विलक्षण उदाहरण पायब दुर्लभ अछि। शक्तिस्वरूपा गंगाक महात्म्य वर्णन -

व्रह्म कमण्डल वास सुवासिनि

सागर नागर गृहबाले

पातक महिष विदारण कारण

घृत करवाल बीचि नाले

जय गंगे जय गंगे

शरणागत भय भंगे।

कहने छी मिथिलाक भूमि अध्यात्मक भूमि अहिठाम महाकवि गंगाक वन्दना, तटवाससँ सुखक अनुभव सनातक धर्ममे प्रकृति देवी, आद्याशक्ति कालिका पुराण वाणभट्टक देवी शतक आदिक प्रसंग महाकवि विद्यापति मिथिला भूमिक कण-कणसँ संप्रिक्त एहि शक्तिपीठ सँ संपृक्त बुझी तऽ ओ शक्तिकवाहक बनल रहैत छथि। तैं, मिथिलाक कोनहुँ शुभकार्यमे सर्वप्रथम ``जय-जय भैरवि असुर भयाओनिक`` गायन प्राय: अनिवार्य भऽ गेल अछि। ताहि सँ सिद्ध होइछ जे मिथिलाक मूल भावना शक्तिक उपासनामे निहित अछि।

संत महेशठाकुर : खण्डबाला कुल नरेश मिथिलेश, महेशठाकुर - विद्यापतिक पश्चात् मिथिलाक विशिष्टता रूपें एहिठाम संतक परिभाषमे कालीदास लिखैत छथि - **सन्त: परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढ़: परप्रत्ययनैय बुद्धि: । तं सन्त: श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतव:**[2]

आशय मिथिलाक संत उपर्युक्त संस्कृतक पाँति सदृश छथि वेद विहित ध्यान अपन ध्येय पर समाजक बीच रहैत देवीशक्तिक अधीन छथि। एतद् संत महाराज ठाकुर शाक्तक उपासक माँ ताराक ध्यान वन्दना देखल जाओ :-

जय जय जय भय - भंजनि भगवति

आदिशक्ति तुअ माया।

जनि नव सजल जलद तुअ तन रूचि

पद रूचि पंकज छाया।।

....

भनथि महेश कलेश निबारिणि

त्रिभुवन तारिणि माया

शववाहिनि दाहिनी देवी यदि

कि करत कोपि विधाता।।[१०]

अस्तु उपर्युक्त पद परिपेक्ष्यमे कही महेश ठाकुर विद्यापतिक पश्चात् शाक्त संतक श्रेणीमे राखब अतिशयोक्ति नहि, पक्षधर मिश्रक शिष्यपरंपरामे अबैत छथि संस्कृत विद्वान पंडित शास्त्रीय वचनाक अनुकूल, आशय संतक जे भावना ताहिसँ अभिशिक्त छलाह।

3. **महिनाथ ठाकुर** :(1668-1690) महिनाथ ठाकुर सेहो महेश ठाकुरक वंशज छलाह भगवती कंकालीक स्तुति-गीत मनन कयल जाय -

वदन भयान कान शव कुण्डल विकट दशन धन पाँती।

फूजल केश वश तुअ के कह जनि नव जलधर काँती।।

....

....

बसिअ मसान ध्यान शव ऊपर योगिनिगण रहु साथे।

नरपति पति राखिअ जग ईश्वर करु महिनाथ सनाथे।।

आशय मैथिली संत साहित्यक प्रसंग जे कहल जाइत अछि जे रचना अध्यात्म प्रसंगे लिखल अछि से संत श्रेणीमे नहि छथि तिनको रचना लेबाक चाही, हमरा एहि प्रसंगे कही तऽ असोकर्य होइछ। महिनाथ ठाकुरक जीवन चरित्रक पश्चात् अनुभव होयत जे सब संत छलाह सतत शक्ति उपासना मे राजकाज सौंपने रहैत छलाह।

कहबाक आशय जे अपन विचार ओ भावमे संतक जे ज्ञानमयी साधना, भक्ति साधना ताहिमे अनुराग, श्रद्धाभाव बहुविधि प्रेम आ स्नेहक अभावमे ओ रचना संत श्रेणीक रचनामे राखब हमरा जनैत उपयुक्त नहि अछि। तकर प्रसंग शाक्त रचना प्रसंगे किछु एहन रचना प्राप्त भेल अछि जे सनातन धर्मक वीच संतकीय भावना रखैत रचना कयलनि अछि यथा ओहि रचनाकें शाक्त संतकीय रचनामे राखब उपयुक्त भेल अछि :-

1. रमापतिक रचना :-

जय-जय त्रिभुवन तारिणि देवी

सभ अभिमत पुर तुअ पदे सेवि।।

जूटक वैविध जटा धरू एक ।

तीन नयन लोहित अतिरेक।

2. भानुनाथ :-

जय-जय त्रिभूवन सुन्दरि भगवति
कृत बहुविध वर रूपे
सिन्दूर पूर रूचिर तुअ अम्बर
त्रिनयन घलित अनूपे

अस्तु रचनाक दश महाविद्याक ध्यान धारणाक जे आगम शास्त्रीय वचन अछि तदनुकूल मैथिलीक उपर्युक्त रचना संत साहित्यक विषय-वस्तुमे शाक्त अध्यायक कोटिमे राखब अनिवार्य अछि।

3. हर्षनाथ झाक रचना :-

जय-जय भयहरनि मंजुहासिनि मधु दमनि
कंज आसनि शिव सेवित पद कमल तारिणी
....
भनत हर्षनाथ नाम जनकनगर नृपति धाम
पुरिअ परम करूणधाम भक्त तारिणी।।

4. राजपंडित बलदेव मिश्र :-

नूतन जलधर तन रूचि सुन्दर छवि सौदामिनि राजे
चुम्बित चरण-कमल चिकुराबलि निरखि मधुप मन लाजे
शिव शव मानस आसन शोभित पद युग आपरम्पारे।
सकल अंग सब भूषण मंडित रंजित गगन अपारे

5. कविवर सीताराम झा-

सेवि सुखि देवगण, क्यौ सुरतरु सुरधेनु
हमर सकल सुख जगतमे जगदम्बा पद रेनु।

6. स्व वल्लभ झा :-

लखि स्व शक्तिक शक्तिक तीव्रता
चरण मे रण मे खसला शिवो
जनिक से तनि से कए पालिका
रहथु दक्षिण दक्षिण कालिका

7. भुवनेश्वर सिंह `भुवन` :-

कोटि मयंक`क रश्मि राशिमुख विमल सुधा बरिसाबय
अशरण शरण छरणतल लुण्ठित हरिक मुकुट छबि पाबय
भुवनेशी अज ईश शेष रत रहथि अहिक पद ध्याने
हम भुवनेश चरण मधु-मधुकर मत रही गुणगाणे।।

एहि प्रकारे मैथिलीक अदौसँ चलि आबि रहल आ वर्तमान धरि मिथिलाक अध्यात्म जगतमे शक्तिक उपासनाक लेल कवि लोकनि अपन काव्यप्रसून चढ़बैत अपन देवी पदावली बाहुल्यक अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैत अछि जे मिथिलाक कतेक शाक्तक प्रधान केन्द्र अछि।

मैथिली संत साहित्यक अन्यतम् विशिष्टता जे एहिठामक संतक प्रसंगके दर्शायब अत्यंत मार्मिक अछि। कारण संतक कतेक प्रकार अछि ! मात्र भगवान वा देवी-देवताक नाम कें रमझौआ कयला सँ कियो संत नहि भऽ जाइत अछि। संत सभ सामुदाय, जाति, वर्ग ओ गार्हस्थ आश्रम ओ अपन व्यापार आदि कार्यक सम्पादन करैत भऽ सकैत छथि। अपन ध्यान ईश्वर-देवी ईष्टक साधना संग भगवान हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आशय अपन ईष्ट गृहदेवता आदिक ध्यान करैत संसारक कल्याणक लेल साधनामे लागल रहैत छथि। परंच स्वार्थमे पीड़ित समाज ओहि देव पुरुष के नहि चिन्हि सकलैक, खास कऽ मिथिला क्षेत्रमे देखल गेल अछि।" जे ब्राह्मण सामुदायक वैदिक अनुष्ठान स्वरूप आडम्बरी होइत छथि आ सिद्ध करवाक कोशिश करता वएह देवता-पितर आ माँ भगवतीक करीब छथिन्ह से कहू अध्यात्म जगतक संग बुद्धि-बधिया कहल जाइत छैक। मैथिली संत साहित्यमे ओहेन व्यक्तिके संत कहब परहेज करैत अछि।

मैथिली `संत` साहित्यक अन्तार्गत महाकवि विद्यापतिक स्थान महत्वपूर्ण अछिए। इमानदारी पूर्वक अध्ययन आ विश्लेषण कयल जायत तऽ सभ मानबे करताह। आब अछि जे मैथिली संत साहित्य मध्य शाक्त पर आधारित रचनाक प्रमुखता दय के सब काब्य रचलनि? से कही शाक्त साहित्यक रचना संसार विशाल अछि। कहबाक आशय मिथिला शक्तिपीठ एहि ठाम घरे-घर भगवतीक पूजा-अर्चना होइछ, दुर्गाशप्तशती मे 108 नाम आ सभटा नामक अपन महात्म्य अनुरूपे अछि एतबे नहि 64 योगिनी आदिक चर्चा सेहो भेल अछि।' मैथिली शाक्त साहित्यक गंभीर विद्वान आचार्य डॉ. रामदेव झा अपन एकटा आलेख मे शाक्तक चर्चा कयने छथि जे दश महाविद्या नवदुर्गा एवं दुर्गा सप्तशती मे वर्णित देवीक स्तुतिमे देवीक ध्यान हुनक महिमा सँ असुरदलक शौर्य एवं पराक्रमके अध्याशक्ति भक्तिक रचैता संतमे शंकर, सदानन्द, महाराज महेश ठाकुर, महाराज महिनाथ ठाकुर, देवनाथ, जयकृष्ण, बागीश्वर, रामनाथ, कृष्णपति दुर्गापति ओ उनैसम शताब्दीमे पंडित रत्नपाणिक दशमहाविद्या देवी रूपक क्रमबद्ध अध्ययन वर्णन कयने छथि। पुन: कहैत छथि शाक्त काव्यमे कवीश्वर चंदा झा एवं कविवर लालदास नाम सेहो प्रमुखता सँ लेल जा सकैत अछि।'

ओना कवीश्वर श्यामा, काली, तारा आदिक स्तुति कएने छथि आशय विनय-स्तुति, स्पष्ट करी स्तुति जे होइछ से संत हृदय करैत छथि। जिनकामे समाजक कल्याण करवाक कामना बनल

रहैत छनि। आचार्य पुन: लिखैत छथि जे लालदास दुर्गासप्तशतीक `चण्डी चरित` मैथिलीमे अनुलेखन कयने छथि एहि प्रकारें कही तऽ मैथिली संत साहित्य मध्य एकर भाव विस्तारक परंपराके मैथिलीक अन्यान्य सामान्य कवि सभ सेहो आगू अनलनि ताहि मे प्रमुख छलाह वेद। नन्द झा, मैथिली साहित्यक पुरोधा `सुमनजी`, मधुपजी आदि प्रमुख छथि।

मिथिला शक्तिपीठ कहल जाइत अछि, शक्ति साधना एहिठामक संस्कारमे निहित छैक। देवी महात्म्य चरम परिणत एतय दर्शित होइत अछि। मैथिल शक्तिक प्रति जे अनुरक्ति भक्तिक अपरिमित लाभ उठबैत छथि।

संत मैथिलीपुत्र प्रदीप :- मिथिलामे ``माताक`` महत्व देवी शक्ति शाक्तक महत्वक रूपें मानल गेल अछि। संत समाज मे गुरुक महत्व देव रूपमे मानल गेल अछि मुदा माताक महत्व गुरुओक उपर मानल गेल अछि। शास्त्रकार लिखैत छथि -

गुरूणां चैव सवेषां माता परमको गुरू:।

महाभारतक आदिपर्व 195/16

नस्ति मातु: परो गुरू:

अत्रिसंहिता 150

नास्ति मातृसमो गुरू:

महाभारत, शान्ति 105/18

आशय पतित गुरू त्याज्य होइछ परंच माता कोनहु प्रकारें त्याज्य नहि छथि। तकर विशेष मे कहल जाइत अछि गर्भकालमे धारण-पोषण करवाक वास्ते माताके ई गौरव प्राप्त होइत छनि। आ `संत` संस्कृति कही वा मानवीय जीवनक आधारक प्रसंग कहल जाइत अछि जे - महाभारतक शांति पर्वमे लिखल गेल अछि :-

``प्रीणाति मातरं येन पृथिवी तेन पूजिता।।``

आशय मनुष्य अपन आचरणसँ माताकें प्रसन्न कऽ लैत अछि ओहि संपूर्ण क्रिया सँ पृथ्वीक पूजा भऽ जाइत छैक। अस्तु शाक्त संत साहित्यक मध्य उपर्युक्त विवेचनक पश्चात् किछु वर्तमानमे `संत` रूपे व्यक्तिगत अध्ययन ओ मनन सँ भान होइत अछि जे `स्वयंप्रभा` निकुञ्ज स्वयंप्रभा नगर इस्माईलगंज) लहेरियासराय दड़िभंगा निवासी श्री मैथिली पुत्र `प्रदीप` जिनका प्रसंग कहल कहल जाइत अछि जे भगवती दर्शन पओने छथि ओ स्थान पर पंचोदेवोपासनाक संग सिद्धि स्तुति ओ भजन-कीर्तनक रचना करैत संसारक इत्यादि प्रकारक विषय-वासना सँ दूर माताक पूजा अर्चना करैत संसारक कल्याण लेल शक्तिक उपासनामे सतत तल्लीन रहैत छथि। हिनक भावनाक परिचय एहि सिद्धि स्तुतिसँ स्पष्ट अछि जाहिमे हिनक पञ्चोदेवोपासनाक भावना प्रबल भेल अछि।

जय जय श्री गणपति गणनायक

....

सकल यज्ञ निर्विघ्न सहायक

जय-जय श्री.........

जननि सारदा संग निहारी

सज्जन हित ज्ञानक भंडारी

जय-जय श्री.........

....

शिव गौरीक कृपा दृग दायक

जय-जय श्री.........

संत श्री मैथिली पुत्र `प्रदीप`क विशेषता छनि जे ओ जतेक शाक्त प्रसंगे रचना कयलनि अछि ओतेक अखन धरि किनको रचना प्राप्त नहि भेल अछि। उपर्युक्त पदमे स्तुति प्रार्थना पंचोदेवोपासनाक परिचायक अछि जे मिथिलाक मूलभूत सिद्धान्त आ विशिष्टता छैक। संत श्री मैथिली पुत्र `प्रदीप` मूलतः भगवतीक गीत सँ सम्पूर्ण मिथिला के खूब प्रभावित कयलनि। हिनकर गीत मिथिलाक प्रायः घर-घरमे पूजा-अर्चना, विवाह-उपनयन आर कतौक संस्कारक अवसर पर गायल जाइत अछि :-

जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर।

जँ माय अहाँ दुःख नहि सुनबइ, तँ जाय कहू ककरा कहबै।।

देखू हम परलहुँ बीच भँवर, हे माय अहाँ बिनु आस ककर।

हम भरि जग सँ ठुकरायल छी, माँ अहिंक शरणमे आयल छी।।

करु माफ जननि अपराध हमर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर।

काली, लक्ष्मी, कल्याणी छी, तारा अंबे ब्रह्माणी छी।

श्याम, सीता सर्वांगी छी, राधा नित्य मा वाणी छी।

अछि पुत्र बनल दूगर हे माय अहाँ बिनु आश ककर।

संत मैथिली पुत्र प्रदीपक संपूर्ण जीवन भक्ति गीतक प्रति रचना करैत-करैत ओ माँ भगवती किंवंदति अछि जे भगबती हुनका ठाढ़ीक परमेश्वरी स्थानमे दर्शन देने छथिन्ह। तादात्म्य संबध बनाय कहल जाइत अछि जे हुनकामे किछु अदृश्य देवीय शक्ति छनि। गार्हस्थ संत जे सतत अपने जीवन-जगतमे रहैत अपन भजन-गीत आदि के माध्यमसँ समाजक कल्याण करवाक कामना करैत भगवती मे लीन रहैत छथि। हिनकर सिद्ध स्तुति एवं आराधना गीत जे त्रिशूलनी मंदिरमे प्रति दिन आरतीमे गाओल जाइत अछि। यथा एहि गीतके देखल जाओ :-

जय हे जगदम्बिके माँ कामा ! माहेश्वरी शुभं वामा।

शिव-शंकर प्रिय माँ कामा ! अहीं माहेश्वरी शिव वामा।।

---- ----- ----- ----- ----- ----- ----- -----

भक्त रक्षाहितं ई अदले दुष्टनाशिनि शंभू ई त्रिशूले।

हम करी वन्दना ईश धामा अहीं महेश्वरी शिव वामा।।

---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ----

हम सब मिथिला निवासी, प्रवासी साधनारत श्री शक्तिक उपासी।

हे मा शक्ति श्याम प्रणाम। अहीं माहेश्वरी शिव वामा।

हम अहींक पुत्र पापी `प्रदीप` नित्य राखी चरण समीपे

सिद्धिदात्री शिवे-शक्ति धामा। अहीं माहेश्वरी शिववामा।

अस्तु संत ``मैथिली पुत्र प्रदीप``क रचनामे अलंकार आदि प्रयोग कतहु-कतहु भेटैत अछि ओना साहित्यिक व्याख्या कयल जायत तऽ सभ पद-गीत ओ काव्यमे रस अलंकारक व्याख्या कयल जा सकैछ। मुदा संत मैथिलीपुत्र `प्रदीप` शब्द स्नेही छथि।

मूलत: हिनका लग शब्दक विशाल भंडार छनि। शब्दक विन्यासी एहेन संत साहित्यक अन्तर्गत बहुत कम छथि। मैथिली पुत्र `प्रदीप` स्नेहलताक कड़ीक संत छथि। मुदा स्नेहलता शाक्त प्रसंग कही तऽ जगत जननी सीताकें आधार वनाय रचना कयने छथि जे हमर संत साहित्यक अध्ययनक क्रममे ``सीता जीक आधार`` बनाय अलगे अध्याय अछि। विस्तृत अध्ययन हिनका प्रसंग ओतहि भेटत। संत मैथिली पुत्र `प्रदीप` भगवती ओ शाक्तक अनेक रूपक वर्णन अपन रचनामे कयने छथि, हमरा लग प्राय: दू गोट पोथी भक्ति गीत नामे प्राप्त अछि, एकटा मे 152 एवं दोसरेमे 108 गीतक संग्रह अछि। एक-एक गीतक अध्ययन मनन सँ संत मैथिली पुत्र-प्रदीप जीक हृदयक भाव उद्‌गारित अछि तकर अध्ययन आ मनन सँ स्पष्ट अछि जे शाक्त संतक रूपें श्री `प्रदीपजी` कें राखब सतत समीचीन अछि पर आधारित श्लोक अछि :-

अनाश्रितं कर्मफलं कार्यं कर्म करोतिय:।

स संन्यासी च योगी च न निर्राग्निर्न चाक्रिय:।।

अर्थात् मात्र अग्निरहित आ क्रियारहित (श्रौतस्मार्त सर्व क्रम त्यागि) जे पुरुष छथि वएह संन्यासी वा योगी बनि सकैत छथि वएह संत बनि सकैत छथि से नहि बुझबाक चाही। अपितु पुरुष कर्मक फल के अभिलाषा के बिरारि कर्तव्य कर्म के राकाम कर्मक विपरीत अग्निहोत्रादि नित्यकर्म करैत छथि ओहो संत संन्यासी वा योगी छथि।" स्पष्ट अछि जे उपर्युक्त श्लोकक मादे मात्र संन्यास आश्रम मे रहि गृहत्याग कय तप दानादि क्रियाक निषेध करैत कर्म के निषेध कय जे रहैत छथि वएह संत नहि, संत ओहो छथि जे गृहस्थाश्रमे रहैत अग्नियुक्त श्रोतस्मार्तकर्म करैत सु-साध्य मार्ग प्रदर्शित करैत समाजक बीच रहिकऽ जे समाजक मार्गदर्शन करैत छथि से सबसँ पैघ `संत` होइत छथि।" आब काव्यक प्रसंग कही तऽ मानव हृदय परमात्मा सँ भेंट करबाक लेल सतत व्याकुल रहैत छैक आ ओहि उत्कंठा के शांत करबाक जे प्रकृति ओ बुझल जाय तऽ ओ अनंत आब

ओहि अनंत के तकवाक लेल दू मार्ग काव्य आ धर्म सौन्दर्य आ सत्य संत तत्वदर्शी आ कवि सौन्दर्यान्वेषी सौन्दर्य आ सत्यक अन्वेषी दुनू मुदा एके वस्तुक दू हिस्सा माने एके सिक्काक दू पहलू आ दुनूक साक्षात्कार भावावेश आ जिज्ञासापूर्ण श्रद्धाक अवस्थामे होइत अछि एहि प्रकारें संत आ कविक जीवन एके प्रकारक आनन्द पयबा लेल उत्कंठित रहैत छथि।

एहि प्रकारें देखला सँ स्पष्ट कही मैथिली पुत्र `प्रदीप` जिनक मूलनाम श्री प्रभुनारायण झा ``प्रदीप`` संत आ हुनक रचना संत काव्य। ताहिमे हमर प्रस्तुत अध्याय ``शाक्त परंपराक मध्य मिथिलाक वर्तमान समयक एकटा मानल संत छथि। जिनक एक सँ एक रचना भगवतीक 108 रुपक चर्चा प्राय: कयने छथि। हिनक प्रकाशित ग्रंथ 23 गोट अछि। ई. प्राय: 1998 धरि 17 गोट प्रकाशित पोथी छलनि पश्चात् आठ गोट रचना अप्रकाशित जाहिमे आब प्राय: सभ प्रकाशित भऽ गेल छनि।

पं. शिवनाथ मिश्र ``शिव`` - मिथिला धरतीक विशिष्टता जे एतुका भाव आ भाषा मे संत ओ संत साहित्यक निर्माता होइछ। पं. शिवनाथ मिश्र `शिव` भक्ति संत जिनकामे अनुरागक साधना रहैत छनि। हमरा जनैत मिथिला नब्य नैयायिक केन्द्र रहल अछि अहिठामक संत मिथिलाक धरतीक अनुरूपें शाक्त पीठ, एहिठाम ज्ञानमयी साधनाक संत विशेष भेल छथि। भक्ति साधना मे तर्क-वितर्क के स्थान पर श्रद्धा आ विश्वास कार्य करैत छैक। जखनकि तेसर प्रकारक `संत` भेला भक्तिक संग जिनकामे अनुरागक साधना रहैत छनि, दार्शनिक चिंतक ज्ञानी ओ युक्तवादी रहलाह अछि। संत शिवनाथ मिश्रक मिथिलाक प्रसंग कहव छनि जे ``कर्दनभूमि`` पूज्य आर्यगण द्वारा यज्ञ करैत-करैत वास योग्य जाहि भूमि मे देवतुल्य पुरुष ओ शक्ति स्वरूपा नारी जे एखनहुँ जीवित ओ जाग्रत छथि। शिवनाथ रचनावली मे संत शिवनायक सभ रचनाक संकलन अछि। ``श्यामा-गीताञ्जलि`` पाँच अञ्जलिक समावेश, प्रसन्नता-पचीसी, इन्द्रकील-परिचय दैत। संत कविवर शिवनाथ झाक अन्तर्दृष्टि प्रसूत बुद्धिक अनुसार जगदम्बा स्वयं नानारूप मे अवतरित भए नारी जगतकें अपन गौरवपूर्ण आदर्श प्राप्त करवाक सन्देश दैत छथि - यथा कविक पाँती देखू -

कखनहुँ होइछ असह्य जखन ई अपनहि आबि नचैये।
दुर्गबती, अहिल्या, मीरा बनि संकेत करैये।।
कर तप, विरचि पार्वती, सीता, सावित्री बुझबैइए।
प्रहरण्युक्त भुजा दश धए ई महिला कें जगबैयै।।[1]

संत शिवनाथ झा शिवक जन्म सन् 1313 (1906 ई.) मे श्रावण कृष्ण पंचमी सोमदिन ग्राम - खराजपुर, डाकघर रैयाम (चीनी मील) दरभंगा। पिताक नाम स्व. भुटकुन झा छलनि। शिवनाथ झाक प्रसंग कही ई जे हिनक रचना छनि से हिनकर हाथक लिखल नहि अपितु सुन्दर पुर बला जमाय श्री सृष्टिनारायण झा जी द्वारा लिपिबद्ध कयल। पोथीक माध्यमे हुनक पाँच अवस्थाक वर्णन भेल अछि :-

(1) ज्ञान- श्यामागीतांजलि - ज्ञानक सातो भूमिकाक उल्लेख भेटैत अछि।

(i) शुभेक्षा, (ii) विचारणा (iii) तनुमानसा, (iv) सत्वापति (v) असंशक्ति, (vi) पदार्थ भावना (vii) तुर्यगा। आशय उपर्युक्त भावमे हिनक अवस्थामे रचना प्राप्त होइछ। मुदा पाँचम अवस्था मे अन्त:करण समाधिक अवस्था छलनि जाहिमे हिनक रचना उपलब्ध नहि अछि। संत शिवनाथ मिश्र `शिव` भक्ति कवि एकेश्वरवादी, प्रकृतिक, पुरुषक भिन्नता के कल्पना मे भीरूता `शिव`क मन बुझि शिव आ शक्ति मे अद्वैतता से कही हिनक उपासना सगुण अछि। मातृमयी -सहज ममताक आशा सँ कहल हम परब्रह्मकें माता।`` हिनक पाँती देखू -

शिशु पर नेह अतुल माँ राखय
गर्भक अर्भक साजि तनयकें
कूपक बेंग बनाबय।
नहि शिशु लखय मातृमुख
नहि शिशु मुखचंद्र निहारय।

कवि संत शिवनाथ मिश्रक एहि पदमे `रूपक` अलंकार माय गर्भस्थ शिशुकें नहि देखैत अछि आ ने शिशु माय के तथापि दुनूक वीच केहेन अविच्छिन्न सम्बन्ध अछि। आशय संत शिवनाथ दीब्यानुभूति ओ दीब्य दर्शन प्राप्त करबाक जे उद्धरण अह्लादार्थ अछि।

एहि प्रकारें शोध प्रबंधक विषय ``मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषण``क दसम अध्याय ``मैथिली संत साहित्यमे शाक्त परंपरा``क प्रसंग निष्कर्षत: मिथिलाक पृष्ठिभूमि अत्यंत विशाल मात्र एहि प्रसंग पर शोध विषय रहैत तखन किछु सांगोपांग वर्णन होइत, अस्तु हम विशद अध्ययनक क्रममे हमरा लिखय पड़ैत अछि, शाक्त काव्य ग्रंथ अजस्त्र अछि। अथाह भावक प्रवाहमे सीता-राधा, लक्ष्मी, सरस्वती-चण्डी, संगहि गंगा, कोसी, कमला, वागमती आदिक संग आध्या-शक्तिक आधार वनाय महाकविये नहि सिद्ध साहित्ये लग सँ शाक्त साहित्यक परंपराक आरंभ होइत अछि। मिथिलाक शक्ति पीठ रूपें ख्याति अर्जित कयने अछि, भाषाक एतेक विशाल पृष्ठभूमि अछैतो संतक बहुत रास कार्यक वादो साहित्यिक रूपें मैथिलीक विद्वान एकर मूल्यांकन करवा सँ वंचित छथि। महामानवक वास स्थल मिथिला समृद्ध भाषा-साहित्यक सुरम्य वायुमंडल पर मैथिली `शाक्त` साहित्यक पवित्र कीर्ति कें जे किछु उजागर कय सकलहुँ अछि से सर्वदा अबाधित फरहराइत रहत, हमर पूज्य संत मनीषी अपन अध्यात्म जगत मे शक्तिक आधार बनाय मैथिली संत संहित्यक भंडार के ओ अपन काव्य साधना ओ समाजक कल्याणक मार्ग के प्रशस्त कयलनि आ कय रहल छथि।

●●●

संदर्भित ग्रंथ

1. ``भगवान बुद्ध और हिन्दी काव्य`` वसुन्धरा मिश्र शोध प्रबंध, पेज-127।

2. मि.सा.सं. उत्कर्ष मे संतकवि लोकगिक अवदान - संपादक देवनारायाण साह प्रकाशक सा.अ. नई दिल्ली, पेज -

3. विद्यापति काव्य लोक, पेज-2, नरेन्द्र दास विद्यालंकार बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना।

4. पद्मपुराण - विद्यापति काव्यलोक, पेज-4, नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार।

4A. विद्यापति काव्यलोक - नरेन्द्रनाथ दास, पेज-4।

5. विद्यापति काब्यलोक नरेन्द्रनाथ दास, पेज-7 एवं 8।

6. संत अंक - पूज्यपाद उड़ियाबाबाक विचार ``संत-स्वरूप`` पेज - 27, गीताप्रेस, गोरखपुर।

7. मैथिली लोक साहित्य - मैथिलीक भाओ भगति मनुहारि लोकगीत - डॉ. श्री फूलो पासवान।

8. विद्यापति - डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पेज-97, पुरुष परीक्षा मंगलाचरणक श्लोक -

``व्रह्माऽपि य नौति नुतः सुराणां
यामचिंतोऽप्यर्चयन्तीन्दुमौलिः।
याँ ध्यायति ध्यानगतोऽपि विष्णु-
स्तामदिशक्ति सिरसोप्रपद्ये-``

9. उतरी भारत की संत परंपरा - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पेज-13।

10. मैथिल काव्य पर संस्कृतक प्रभाव भाषणकर्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-66।

11. मैथिल काव्य पर संस्कृतक प्रभाव भाषणकर्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-67।

12. मिथिलाक सामाजिक इतिहास पं. गोविन्द झा, पेज - 45 एवं 46।

13. दुर्गासप्तसती, पेज-9, प्रकाशक - गीताप्रेस।

14. मैथिलीमे भक्ति काव्य पक्षधर जनवरी, 2016 विशेषांक, पेज-19 एवं 20, आलेख कार आचार्य डॉ. प्रो. रामदेव झा, संपादक - कुमार शीतांशु कश्यप।

15. संत समागम - गीताप्रेस स्वामी रामसुखदास महाभारत शान्ति पर्व - 108/25।

16. भक्ति गीत - प्रकाशक श्री रामाज्ञा सिंह संत जी श्री बजरंग जेनरल स्टोर्स रचनाकार - श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, पेज-103।

17. श्रीमद्भगवद्गीता - 6/1।

18. संत अंक गीता प्रेस, पेज-205।

19. शिवनाथ रचनावली, पेज-V

श्रोत-ग्रंथ

(निम्नांकित ग्रंथक अध्ययन हम प्रस्तुत अध्यायक अनुशीलनक क्रममे कयल।)

20 मिथिला का इतिहास - रामप्रकाश शर्मा दरभंगा।

21. दार्शनिक शिक्षा का पारंपरिक केन्द्र - मिथिला लेखक - बिनियानंद झा, राँटी।

22. मिथिला की धरोहर - पं. सहदेव झा।

23. धर्मशास्त्र का इतिहास भाग 1 से पाँच पी.वी. काणे अनुवाद श्री अर्जुन चौबे काश्यप (लखनऊ)।

24. भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय।

25. भारतीय दर्शन - उमेश मिश्र।

26. भारतीय दर्शन - बदरीनाथ सिंह, वाराणसी।

27. भारतीय दर्शन और मिथिला - डॉ. उदयनाथ `अशोक`।

28. उत्तरी भारत की संत परंपरा - परशुराम चतुर्वेदी।

29. विद्यापति कालीन मिथिला - डॉ. प्रो. इन्द्रकान्त झा।

30. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय।

31. मैथिली साहित्यक प्रारंभिक अध्ययन सामग्री।

●●●

एगारहम अध्याय

मैथिली संत साहित्य आ सीता

``मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलन``क क्रममे प्रस्तुत अध्याय ``मैथिली संत साहित्य आ सीता`क उपर अध्याय बनायब महत्वपूर्ण बुझायल। सीता विदेह राज जनक`क तनया, `जनक` प्राचीन आर्यावर्तक सु-समृद्धि प्रदेश मिथिलाक सूर्यवंशी नरेश जिनक उपाधि ``जनक`` छलनि। एहि जनक उपाधि प्राप्त राजवंशक बाइसम पीढ़ी मे सीरध्वज अत्यंत गुणी-ज्ञानी पराक्रमी, चरित्रवान, चिंतक, कर्मशील, कर्मयोगी, राजर्षिक राजमे भारी अनावृष्टिक चलते महा अकाल पड़ल रहैक राजा जनक प्रजाक भलाइ लेल यज्ञक संपादन कयल। राजर्षि `जनक` सीरध्वज हर जोति कऽ यज्ञान्न सँ आँकुर बहरेवाक हेतु `वैशाख शुक्ल नवमी` ``तिथि`` कऽ कुलगुरू शतानंद गौतम कें नेतृत्वक मंत्रो चारक संग प्रजाजनक कल्याणक लेल हर पकरि ओहि समय नाश भूमि मे गरल कि तखनहि राजर्षि के एकटा नवजात शिशु प्राप्त भेलनि। घनघोर जलावृष्टि प्रजाक आनन्द चारू कात खुशीक लहरिक संग लोकक विश्वास जे कृषि देवी बहरेली अछि; विदेह राजाक संकट दूर भेलनि। ऋग्वेद मे कृषिदेवीक स्तुति `सीता`क नाम सँ भेल अछि तैं ओहि नवजात शिशुक नाम `सीता` राखल गेल।[1] दोसर हरक `नाश` के रेखा पर जकरा सीता कहल जाइछ तें सीता ताहु लेल कहेलीह। जनकक हर जोतैत काल बहरेलीह तैं जानकी नाम वैदेही विदेहक वंशज राजकन्या बनली तैं ``वैदेही`` मिथिला प्रदेश नामे विख्यात `मैथिली` नाम पड़लनि।

वाल्मीकीय रामायणमे तीन रूप दृष्टिगोचर होइत अछि जनक पुत्री जानकी, दोसर जननी आ तेसर रामप्रिया। तीनू रूपें नारी जगताक सर्वश्रेष्ठ आदर्श कायम कयने छथि। आ प्रेरणास्त्रोत बनल रहलीह।

सीता अवतरण मिथिलाक सुख-समृद्धि आनन्द धर्मग्रंथमे वर्णित भक्ति - आस्थाक राम जँ विष्णुक अवतार तऽ सीता लक्ष्मीरूपा ओ शक्ति स्वरूपा अवतार छलीह। जे मानवीय चेतना के अपन त्याग-तपस्यासँ जगेबाक जे विलक्षण स्वरूप कायम केलनि ताहिसँ मिथिलाक महात्म्यके वैशिष्ट्य प्राप्त होइत छैक। अस्तु कहल गेल अछि :-

अह्ह जनकपुत्री वक्त्रमुद्राम पश्चन्
ब्रजति परहंसो नक्षमोवापि गन्तुम्।
तदुरू विरहवन्हिज्वालया दग्धदेह:
किमुत पवनसूनोर्भूषणैः स्तम्बितोमे।।[2]

आशय जानकी मुखशोभा देखवासँ वंचित हमर ई जीव निकलि किएक नहि जाइत अछि। पवन तनय द्वारा आनल गेल एहि आभूषण कें देखि स्तम्भित ओहिकाल ठाढ़ मानवीय चेतनाक

अभिव्यक्ति छलैक जखन हनुमान सीताक सुधि आनि सभकें हर्षोल्लासित कयने छलाह।

मिथिलाक पार्थिव रूप कही तऽ शक्तिस्वरूपा, जगदम्वा, जानकीक जन्मभूमि नामसत्ता हिनकहि सँ सार्थक होइत अछि। अज्ञातनामा मैथिल संत क्षुब्द भय एक एकठाम लिखलनि अछि - ``**जे दारवीं गुरूतरां स्त्रजमादधाना:**।' आशय ई भेल जे पैघ-पैघ दारवी माला अर्थात् तुलसीमाला धारण कयनिहार, सीताराम टा जपनिहार अहाँ सँ विमुखे जे रहैत छथि तिनकहुँ लेल अहाँ तरणि तारिणि छी। तारा सेहो अहींक नाम अछि। अहाँक नाम नेने बिना, खाहें विमुखे किएक नै रहथि। अहाँ दयामयी सीताराममे अन्तर्निष्ट भय अर्थात् `सीताराम` मे प्रथम आ अंतिम `सी`-म` आवरण `तारा` नाम प्रविष्ट कयने छथि अस्तु अन्तत: नाम मात्र सँ मानव भवसागर रूपी इहलौकिक दुनियाँ सँ पार करैत, परलौकिक दुनियाँ मे प्रवेश करैत छथि।

महाकवि विद्यापति शाक्त सिद्धे प्रसिद्ध। अन्त:साक्ष्य स्पष्ट करैछ मिथिलाक परंपरानुसार आन-आन मैथिल संत कविक परंपरानुसार स्वर सन्धान करैत छलाह। पश्चात् परंपरानुसार खंडवालाकुलक नरेश मिथिलेश `महेशठाकुर` ताराक वन्दना, हुनकहि वंशज महिनाथ ठाकुर संग किछु अन्य संत कवि रमापतिक पद्यांश के मनन कयल जाओ :-

जय-जय त्रिभुवन तारिणि देवि
सभ अभिमत पुर तुअ पद सेवि।।

मनबोध - प्रणमो गिरिवर कूमरि चरन
जे बल कवि सभ त्रिभूवन बरन ।।

एहि प्रकारें भानुनाथ, हर्षनाथ, राजपंडित बलदेव मिश्र आदि सीताकें देवी शक्ति, उपासनाक रूपें अपन काव्य प्रसून चढ़बैत आयल छथि। ब्रह्माण्ड पुराणक उत्तर खण्डक अन्तर्गत सीताराम काव्यक उपजीव्य वना रचना करबामे जे संत कवि मैथिली भाषा-साहित्यमे प्रवृत्ति कयलनि ताहि मे प्रमुख छथि -

परमहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं - संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईंक `संत साहित्य` मध्य जीवन मूल्यक प्रसंगमे चर्चा भेल अछि। संत लक्ष्मीनाथ गोसाई रामकाव्यक अन्तर्गत सीता आ जनकपुरक सौंन्दर्यक वर्णनके विलग नहि राखि सकलाह। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं मूलत: `रामचरित मानस`क मूल कथानक लय ``राम गीतावलीक`` रचना सेहो कयलनि। जे हो रामकथा पर आधारित रचना प्रसंग संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे स्तुति-प्रार्थना अलौकिक दृष्टिकोण कायम केने अछि आजुक परिप्रेक्ष्यमे सीताक चरित्र राम सँ उत्कृष्ट वा एहि तरहक कोनो प्रसंग गोसाईं जी नहि देखौलनि अछि। `राम रत्नावली` मे कुल 118 पदक सृजन भेल अछि। जनकपुरमे सीता-रामक सौन्दर्यक वर्णन करैत गोसाईं जी लिखैत छथि :-

विरहत बगिया मे सिया रघुनन्दन

एतय राम लक्षुमण लधु भाई, ऊहाँ सखी

निच सिया सुहाई।।

यहाँ नील पटलसे गोर तन, उत पीताम्बर कसे श्याम धन

--- ---- ---- --- ---- --- ----

भौंह कमान विशाल भालशुचि, नाशा ललित दंत पंगति रूचि।।

तहिना सीता हरणाक मार्मिक प्रसंग चित्रकूटक वर्णन मे अपूर्व काव्य प्रतिभाक वर्णन कयलनि अछि।

देखहूँ प्रभो कनक मृग आबत,

छवि विचित्र मेरो मन भावत

--- ---- ---- --- ---- ---

--- ---- ---- --- ---- --- ----

रावण आई हरो बैदेही

लक्ष्मीपति विधि गति को जानत

अस्तु उपर्युक्त पदक परिपेक्ष्य मे संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन पद अलंकारक प्रयोगमे अनुप्रास अलंकारक प्रयोगसँ हुनक पद चमकि उठैत अछि। श्रुत्यानुप्रासक प्रयोगमे सीता-रामक सौन्दर्यक वर्णन कतेक अपूर्व भेल अछि यथा -

कमल बिम्ब शशि मृग पद मोचन।

सोहत दोउन तियक लोचन।।

काक पच्छ शिरमुकुट विलासी।

अलका रीरा चन्द्र जुड़ारी।।

एहि प्रकारे लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन ऊँच्च कोटिक काब्य प्रतिभाक परिचय दैत मिथिलाक संत साहित्य कें जे समृद्ध कयलनि। मानवीय जीवनक सामाजिक सांस्कृतिक पटल पर अपन भावाभिव्यक्ति दय अमर विभूति सिद्ध होइत छथि।

संत साहेब रामदास :- संत साहेव रामदास मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत महत्वपूर्ण छथि। ओना राम काव्ये पर रचना खूब बेसी नहि अछि आ ताहुमे `सीताक` आधार बनाय रचना तऽ आर कम अछि। सीताक अवतरण कही मैथिली संत साहित्यक मध्य अपेक्षाकृत खूब बेसी नहि अछि। मैथिल संत लोकनि रामायणमे वर्णित कथा पर आधारित अपन काव्य प्रतिभाक अपूर्व परिचय दलनि अछि। संत साहेव रामदास सीता विषयक गीत वर्णन करबामे कखनहुँ कंजूसी नहि

देखौलनि अछि। मिथिला-मैथिलीक संत सिद्ध पुरुष साहेब रामदास स्वयं मे माँ जगदम्बाक आशीर्वाद लेल भूखल रहैत छथि। संत सतत तत्वज्ञानी भावना सँ भरल रहैत छथि। संत साहेब रामदासक काव्य विशिष्टता खास कऽ ``धनुषभंग`` प्रसंग कें केन्द्रित करैत रामक कोमलता आ धनुषक कठोरता पर आधारित पद हो वा, मिथिलाक शक्ति तत्व `माँ जानकीक वर्णन अपन मैथिलीक चरणमे समर्पित करैत छथि। यथा :-

जनक लली महिमा गुणभारी

चिन्तत कमल चरण ब्रह्मादिक

परहरि हृदय पदारथ चारी

----- ------ ----- ------

----- ------ ----- ------

साहेब भजहु भरम तेजि दृढ़ मै

आखिर भसम होइहें देही।।

सीतारामक वन्दनाक वर्णन करैत अपना कें सेवक सिद्ध करैत आयल छथि। ओ हुनक शक्तिकें अद्वितीय बुझैत छथि। मिथिलाक संत एकेश्वरवादी अनेकेश्वरवादी पंचोदेवोपासनाक प्रमुख संत कवि लिखैत छथि :-

वंका वीर हनुमान लंका फिरल फिरत हैं

ब्रह्मादिक .... गुण करय बखान।

राम सुमरि कपि फेर हैं डंका धरत-सिया पद ध्यान।।

----- ------ ----- ------

----- ------ ----- ------

साहेब दास पवन के नन्दन देहु भगवति वरदान"

उपर्युक्त पद मे संत कवि अपन हृदय ग्राही रूपें पदक वर्णन भावमे दास्य भाव प्रकट कयलनि अछि।

कविश्वर चंदा झा :- ओना प्रस्तुत अध्याय ``मैथिली संत साहित्य आ सीता मे`` लक्ष्मीनाथ गोसाई, साहेब रामदास, आ स्नेहलताक काव्य परिचय प्रस्तुत कय देने छी। मुदा सांसारिक जीवन-चिंतनमे मिथिलाक मर्यादा आ साहित्यक दृष्टिसँ आधुनिक कालक युग प्रवर्तक छलाह। चंदा झा 1830 ई. लय 1907 ई. धरिक बीच मैथिली साहित्यक अवधारणा के बदलि कऽ राखि देलनि। अध्यात्म दृष्टिसँ कहल जाइछ जे जाहि भाषामे रामायणक सृजन नहि ताहि भाषा के भाषा कहेबाक औचित्य नहि। अस्तु संत सदृश विराट व्यक्तित्व ज्योतिषाचार्य काव्य प्रतिभाक बहुमुखी

कहेबाक विशाल व्यक्तित्व पहिने शाम्ब पुराण, पुनः `जानकी परिचय` पश्चात् ``मिथिला भाषा रामायण`क सृजन कयल।

मैथिली भाषा-साहित्यक अन्तर्गत हिनक व्यक्तित्वक जे विराटता जे अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रम मे पबैत छी ताहिसँ अनुभवे नहि वैचारिक स्तर पर ओ सभकिछु ईश्वर आ मिथिलाक विशिष्टता पञ्चोदेवोपासना ताहिके अनुरूप सतत ईश्वरीय आधारित अपन जीवनक विश्वासमे ईश्वरीय अंश सन प्रतीत होइत अछि से एकटा पद अवलोकन कयल जाय :-

कतहु रहब हम आनन्द नहि कम सुयश

छपता की नाम

`चन्द्र` सुकवि भन निश्चय धरू मन सुख -

दुख हो सब ठाम।।

कवीश्वर मानवीय चेतना जगेबाक लेल ओ साहित्य आ ईश्वरोपासनाक आधार वनाय निर्लोभ निर्लिप्त भाव, आ अपन चमत्कारपूर्ण व्यक्तित्वक बलें, संस्कृतक विराट ज्ञाता तऽ छलाहे, सुख हो वा दुख सभ परिस्थितिमे एक समान जिबैत छलाह। राजप्रासादा सँ सम्पर्कित भेनहुँ कहियो अनुचित लाभक कल्पनो मात्र नहि रखैत छलाह। अन्ततः इएह कहल जा सकैछ मैथिली संत साहित्य रूपें मिथिला भाषा रामायण मात्रे नहि अपितु हुनकर साधना सतत मिथिलावासीक भौतिक शरीर मे वास करैत अछि।

अमरकीर्ति मिथिला भाषा रामायणक महत्व : कहल जाइछ जे महाकाव्यक प्रणेता अपन साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपराक ऋणी होइत छथि तैं कही मि.भा.रा. मैथिली भाषा साहित्यक अन्तर्गत एहेन मानल जाइछ जे संसार मे जा धरि चन्द्र-दिवाकर रहता ताधरि चन्द्रकविक नाम रहतनि। हम एहिठाम संक्षिप्तमे रामायणक अन्तर्गत विषय प्रविद्ध ``सीता``क प्रसंग लय जे संत साहित्यक लेल विशिष्ट अछि ताहि पर केंद्रित करैत कही जे मिथिला भाषा रामायणमे आनन्द-उल्लास, रोष, क्षोभ, शोक-संताप आदिक मध्य मानवीय भावनाकें संवेद्य हम सीता प्रकरण मात्र पर कहब चंदा झाक कवीत्वक वर्णन ओ नवयुग नारी स्वातन्त्र्यक दुआरि फोलि देलनि। सीताक अकथनीय व्यथा-कथा जे अभिव्यक्ति कयलनि अछि से विद्वान लोकनि मानैत छथि। मिथिला भाषा रामायणक महत्व ओना तऽ रामचरित मानस, बंगालक कृतिवासी, रामायण, ओड़िया क्षेत्रमे बलराम दास कृति ``दण्डि रामायणक सदृश्य मानल गेल अछि। कही तऽ ``सीता` प्रकरणमे तऽ कहब विकासशील काव्य प्रणेता संत कवीश्वर चंदा झा ``सीता`क परित्यागक समयक जे वर्णन से चरित्रक नव आयाम गढ़लनि अछि कवि यथा -

रघुवर बड़ महराजे, कयल उचित नहि सम्प्रति काजे
हुनकर रमणि कहाये दुखित सब हम धन वन जाये।।
--- --- ---- ---- --- --- ---- ---- --- --- ---

आब बचत नहि प्राणे, रघुवर हृदय कि भेल पषाणे
सहन करत के आने हित जन वचन न धयल काने
--- --- ---- ---- --- --- ---- ---- --- --- ---
कत दिन काटब कानी, कयल कुटिल जन बड़ मन-मानी
--- --- ---- ---- --- --- ---- ---- --- --- ---
नैहर जौं मिथिला चलि जायब, कहत बाप की भाय रे
पुरुष परसमणि कर हम सोंपल, अयली की नाम हंसाय रे।

एहि प्रकारे कहि सकैत छी कवीश्वर मैथिली संत साहित्यक अन्तर्गत रामश्रयी शाखाक एकटा अपूर्व ओ महत्वपूर्ण रचैता संतस्वरूप सन जे सीता के शक्तिस्वरूपा बुझैत छथिन्ह। मिथिलाक तनयाक जे व्यथा तकर मार्मिक चित्रण तुलसी कृति रामायण सदृश कयलनि अछि। चंदा झा महामानव छलाह ओ मानव मूल्यक पूजारी छलाह जे मिथिला भाषा रामायण रचि मैथिली भाषा साहित्यकें गरिमा प्रदान कयलनि। तकर प्रमाण अछि मिथिला भाषा रामायणक प्रथम एवं द्वितीय संस्करणक म.म. मीमांसक चित्रधर मिश्र निरीक्षण मे, तृतीय एवं चतुर्थ संस्करणक सम्पादन राजपंडित बलदेव मिश्र एवं चतुर्थ एवं पाँचम संस्करणक संपादन सहयोगमे स्व. रमानाथ झाक सहयोग भेटलनि। छठम गुटकाक सम्पादन मैथिली अकादेमी कयलक। अंत मे कवीश्वरक भाव सीता कें शक्ति स्वरूपा मानवे कयलनि अछि, मुदा मानवीय रूप दय चेतना जगौलनि आ यथार्थकें अपन काव्यक मूल आधार बनौलनि -

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ.....

... .

देबर-दोष कहू हम की, अपना अपराधसँ काइलि छी।

एहि प्रकारें अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट होइत अछि जे प्रस्तुत शोध-प्रबंध मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषण के अन्तर्गत ``एगारहम अध्याय`` मैथिली संत साहित्य आ सीता`` पर कवीश्वरक रचना सर्वोपरि भेल अछि।

संत स्नेहलता : - संत स्नेहलताक असली नाम कपिलदेव ठाकुर छलनि। मैथिली संत साहित्यक अन्तर्गत ``सीता`क उपजीब्य बना मधुरोपासना साहित्यक एकटा विशिष्ट लोकानुरंजक रचना `वैदेही विवाह संकीर्तन पदावली` नामे जे सृजन कयलनि तकर मिथिलाक अन्तर्गत मात्र नहि, अपितु सम्पूर्ण भारतीय जनमासक उपर विशिष्ट प्रभाव पड़लैक। वैदेही विवाह मैथिलीक परंपराशील कीर्तनियाँ नाट्य के तर्ज पर रचल एकटा जीवन्त स्वरूप अछि। भक्त लोकनि भजन कीर्तन मे विनय, प्रार्थना, चेतावनी, महेशवाणी, नचारी आदि पदक आधार बना भजन कीर्तन तऽ करैत छलाह। मुदा रामकाव्यक परंपरामे लोकजीवन सँ जोड़िकऽ विभिन्न विधा मे एकठाम संग्रह कऽ भाव सम्पन्न कीर्तन-भजन परंपराके `स्नेहलता` चरमोत्कर्ष पर

पहुँचेलनि। संत स्नेहलता शब्द स्नेही रचनाकार छलाह। हिनक शिक्षा मात्र छठे वर्ग धरि रहनि, मुदा राम काव्यक विकासधाराक अन्तर्गत सीता प्रसंग लय जाहि विशिष्ट साहित्यिक मर्यादा के कायम कयलनि से अन्यत्र मुस्किल अछि। मैथिली जगतमे हम हिनका एकटा महामनीषीक कोटिमे राखैत छी से कही अद्भुत अछि हिनक जीवन-चरित्र। जाहि प्रसंग मे पछिला अध्याय सभमे चर्चा भेल अछि। हिनक जीवनमे ड्योढ़ी बा कही मैथिली संत साहित्यक मध्य एकटा विशिष्ट स्थानक नाम जे हिनक जन्म स्थान अछि। से मिथिलाक समस्तीपुर जिलाक अन्तर्गत पड़ैत छैक।

मिथिलाक अन्तर्गत मैथिली संत साहित्यक प्रसंग प्रस्तुत अध्याय ``मैथिली संत साहित्य आ सीता`` पर आधारित अध्यायक सृजन करबाक काल भेल श्री `जानकी` जीक प्रकरण के उद्धृत करव हमर नैतिक धर्म वनैत अछि। राम, विष्णुक अवतार आ सीता लक्ष्मीक अवतार मानल गेल छथि। सीता अवतरण के सुख-समृद्धिक प्रतीक मानल गेल छैक, सीता भूमिजा छथि, हुनक व्यक्तित्व त्यागक प्रतीक मानल गले अछि, अध्यात्म जगतमे जानकीक बिविध रूप प्रख्यात अछि, आ से मानवीय जीवन के गार्हस्थ्य संसारक एक-एकटा बिन्दु पर सीताक जे रूप देवमेयता अछैते ओ जनसामान्यक भाव देखाओल अछि जे यदि राम के मर्यादा पुरुषोत्तम कहल जाइत छनि तऽ संत स्नेहलताक अनुसार सीताक जीवन मे मिथिलाक महात्म्य मे नुकायल अछि। ओ भगवतप्राप्तिक अभिलाषा युक्त भावनाक नाम रूप लीला आसक्ति अपन काव्यमे स्नेहलता अराध्य सीता ओ रामक नाम रूपक विस्तार अपन असीम अनुराग अभिव्यंजित कयलनि अछि से देखू :-

हे हम मिथिले मे रहबै
अपना किशोरीजी के टहल बजेबै
घरीहमे हमरा चारू धाम
हे हम मिथिले मे रहबै
--- ---- --- ---- ----
जाहि विधि रखथिन सीया ओही विधि रहबै
हे हम मिथिले मे रहबै
---- --- --- --- ----
इएह थीक हमर मनकाम
हे हम मिथिले मे रहबै

एहि उपर्युक्त पदमे संत हृदयक भाव स्पष्ट उत्कृष्ट भेल अछि। संत अपन ईष्टक प्रति जे तादात्मय सम्बन्ध मर्यादित समर्पण शरणागत साधन के प्रतीक पद, आत्मगौरवक एहन प्रकाश

आत्म संतोषक एहेन भावाभिव्यक्ति, संत नामदेव आ रविदास वा कही विश्व भरिक संतक इएह मूल दर्शन छनि। हमरा संत नामदेवक एकटा पाँति मोन पड़ैत अछि :-

तीरथि जाऊँ न जल मैं पैसों।

जीव जंतु न सताउँगा।

अठसठि तीरथ गुरू लखाए।

घट ही भीतर न्हाऊँगा।'

आशय संत नामथपंथी संत नामदेव होइथ वा कवीर वा लक्ष्मीनाथ गोसाईं एतवे नहि संत विद्यापति कि गोविन्द दास संसार सँ अपना कें अलग करैत नश्वरता के सिद्ध कयलनि अछि। संत सबसँ पहिने अपना मोन के संबोधित करैत छथि से चाहे ओ कोनो धर्म सम्प्रदाय के होथि ओ अपन-अपन ईष्टक नामके सत्य मानैत छथि। मनके सम्बोधित करैत काल संत आत्म केन्द्रित भऽ जाइत छथि। एहेन कालमे संत अन्तर्मुखी सन लगैत छथि, भाषाक दीनतामे अन्तर्त्माक भाव अत्यंत मुखर रहैत अछि संत सर्वत्र संतोष करैत अपन स्थान पर अपन इष्टक स्मरण करैत छथि। वस्तुतः संत स्नेहलता अपन पदक माध्यम सँ कतहु-कोनो अन्तत्र जयबा सँ मन के शांत करैत छथि। ओ एहि सत्य सँ अवगत भऽ गेल छथि जे नाम रूप लीला सब माँ सीताक उपर आधारित कऽ देलाक बाद एहि माया रूपी संसार सँ मुक्ति पावि जायब।

संत जीवनमे हमरा अखन धरि खासकऽ मिथिला आ माँ जानकीक उपर अपन जीवन के सौंपनिहार संत कही तऽ एहेन अभिव्यंक्ति महाकवि विद्यापतिक कृष्ण सन भेलनि अछि। भाषाक प्रति हुनक आग्रह छनि, मुदा मिथिला आ माँ जानककी प्रति एहेन भावप्रण पद कतहु नहि भेटैत अछि। स्नेहलता संतक भाव मे जे काव्य साधना कयलनि आ मिथिलाके जाहि रूपे व्याख्यायित कयल अछि ओ एहि पवित्र भूमिके लीला-धामक करीब अनैत छथि। अत्यंत सुष्ठु वर्णन करैत लिखैत छथि -

भूमंडल केर अमर गोदमे मुस्काइट सुन्दर मिथिलाके

---- ----- ------ ------ ------ ------

ज्ञान दिवाकर हमर जनक जी सनक जगतमे आन भेला के।।

---- ----- ------ ------ ------ ------

स्नेहलता लतराय चरण पर जनकलली श्रीरामलला के।।

मिथिलाक आ मैथिली ओ जानकीक प्रति जे भक्ति-स्नेह कही तऽ सखी-साधनामे ``दुल्हा-दुल्हिन सीताराम`` कहि पंक्ति मंत्रवत व्यवहृदय करैत छथि जे मिथिलामे विश्वजनीन संतकीय भाव प्रदर्शित होइत अछि। स्नेहलताक पद सँ स्नेहशीलता राष्ट्रीय चेतनाक वाहक आ

जिह्वा सीताक पद गाबि-गाबि निर्वाण प्राप्ति करवाक जे मैथिली संत साहित्यक अन्तर्गत अलौकिक प्रेममे भक्ति रसक उद्रेक संत स्नेहलताजीक रचना अपूर्व भेल अछि।

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे

महरानी सीया अहिंक चरणमा केर आस

--- ---- ------ ----- ----- -----

अहीं पर स्नेहलता आस छथि लगौनि हे

महारानी सिया दिय, सिय पग मे निवास।।

एहि प्रकारें स्नेहलताक समस्त काव्य रचनामे भक्ति रसाश्रित भऽ संत साधनाक प्रतिपादन कयलनि अछि। भक्ति भावना मे संत स्नेहलता मिथिलाक पारंपरिक राग भास वैदेही विवाह कीर्तनक महोत्सव बुझू चैतन्य महाप्रभु कृपाक सदृश कीर्तनयाँ नाट्य शैलीकें प्रवर्तित सन प्रतीत होइत अछि।

कविवर लालदास :- मैथिली भाषा साहित्यक अन्तर्गत कविवर लालदासक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि। कविवर लालदास ``रामेश्वरचरित मिथिला रामायणक`` रचना कय साहित्य संसारमे मैथिली भाषा के शीर्षस्थ स्थान प्रदान कराओल। कविवरक प्रसंग स्व. सुरेन्द्र झा `सुमन`क कथन अति समीचीन अछि :- ``निगमागमक समन्वय जीवनहुमे ओ रचनहुँ मे तन्त्र ओ स्मृति-पुराण दुहूक सामंजस्य, शक्तिमानक अपूर्व व्याख्या, शाक्त ओ वैष्णव मतक रामन्वेता, कवित्व ओ पाण्डित्य हिनक रचनामे समन्वित। प्रासंगिक शिक्षा, फारसी-अरबी किन्तु दीक्षा संस्कृत भाषाक, भारतक प्रत्येक तीर्थक श्रद्धालु रहलाह तथापि सर्वाधिक महत्व मिथिलातीर्थ के देल, छलनि जन्मभूमिक प्रति असीम स्नेह।``

कविवरक जन्म 1856 ई. मे भेलनि आ देहावसान 1920 ई. मे। अपन जीवन अभ्यंतरमे कही हमर विषय प्रविध ``मैथिली संत साहित्य आ सीता, मार्मिक चरित्र-चिंतन कविवर जतेक मार्मिक रूपें कयलनि आ से अध्ययन सँ प्रमाणित होइत अछि हिनक रचनाक आधार सतत वाल्मीकि रामायण रहल अछि। जाहिमे सीताक चरित्रक उत्कर्ष आ श्रद्धा-भक्ति-अनुराग संग मिथिलेश रामेश्वर सन मनोवृत आ शाक्तक उपासक छलाह। हमर अध्ययन ओ विश्लेषण मे सन्तक कयकटा रूप छनि, संतक प्रसंग गीताप्रेस संत अंकमे वेद विहित बात सबके उल्लेख कयल गेल अछि ताहिमे भक्त संत आ ज्ञानी संत जे अविनाशी स्वात्मदर्शनसँ सतत् ब्रह्मानन्दक आनन्द प्राप्त करैत रहैत छथि। संत लालदासक स्थान भक्त-ज्ञानी संतक रूपमे राखल जा सकैछ।

कविवरक वैदुष्य पाँडित्य विलक्षण प्रतिभाक कारण छल हुनका पर ईश्वरक कृपा ओ वैद्यनाथ धाममे वाबाक अर्चना मे पाँच मास धरि रहलाह, किंवदंति अछि स्वप्नमे कुमारि कान्या दर्शन देलथिन्ह आ मनोरथ पूर्ण होमक वरदान भेटलनि। एहिठाम कही जे जीवनमे उछन्नर तुलसी दास आ कवीश्वर भेटल छनि, मुदा से हिनका नहि। ई सर्वत्र अपन समीपस्थ मे समान भाव सँ जीवैत रहलाह।

कविवर मिथिला मैथिलीक संग माता जानकीक एकांत उपासक छलाह। तकर प्रमाण हुनक रचित ``रामेश्वरचरित मिथिला रामायण`` अछि। वाल्मीकिक रामायणक अनुसार सात-काण्डमे विभक्त अछि मुदा एकटा विशिष्टता आठम काण्ड ``पुष्कर काण्ड`` नाम सँ रचित अछि जाहिमे रावणक ज्येष्ठभ्राता श्वेतदीपक जे वलशाली ओ अत्याचारी छल। लंका विजयक पश्चात् रामक वीरताकें बखान पराक्रमक गुणगान कऽ रहल छलाह से सुनि सीता के हँसी लगलनि राम हँसीक कारण पुछलन्हि? हँसीक कारण कहैत छथिन्ह -

ई रावण छल मृतक शरीर।
मृताक मारि क्यौ हो नहि वीर।।
---- ---- ---- ---- ----
दशमुख रावण मृतक शरीर।
---- ---- ---- ---- ----
त्रिभुवन सुयश अवश रह छाय।।

राम एहेन कथा सुनि `सहस्रानन` रावण के हरा नहि पबैत छथि पश्चात् सीता कालिका रूपमे रामके दशा देखि उपस्थिति भेलीह, महादेव सीताक क्रोधानलमे महादेव शान्त करैत छथि अस्तु कही तऽ रामेश्वर चरित रामायणक व्याख्या एना कयल गेल अछि जे राम चरित गान नहि **``रमा`` लक्ष्मीरूपी सीताक गुणगान भेल अछि।** सीता मिथिलाक धरती के गुणगान करैत कहैत छथि : - चौपाइ

पूर्व जखन हम छलहुँ कुमारि, नैहरहि रही पिताक दुलारि।
मिथिला देश परम अभिराम सकल तीर्थमय धर्मक धाम।।

एहि प्रकारें कविवर लालदास अपन रामायणक माध्य सीताक चरित्र कें जे उत्कर्ष देखाओल गेल -

सुनि संदेह करक जनु लोक। सीता चरित सुनौक निश्शोक।।

उपर्युक्त पदमे कथानक विन्यास मार्मिक भेल अछि सम्बाद योजना, तत्व निरूपण, स्थान - स्थान पर यथार्थ तथ्य निरूपण, श्रद्धा ओ उत्सर्ग, अराध्यक प्रति जे आस्था विचारक अपूर्व समन्वय, मर्यादा ओ प्रेम सगुण आ निर्गुण भक्ति ज्ञानक जे सामंजस्य स्थापित कयलनि अछि से आइयो मानव जातिक कल्याणक मार्ग के प्रशस्ति दियेबा मे खूब समर्थ भेलाह अछि। ``सीता नामक अमित प्रभाव चतुर्वग फल जापक पाव जीवन्मुक्त थिकथि जन सैह, सीताराधन तत्पर जैह।।

मोदलता :- उर प्रेरक सखि सम्प्रदायक संत श्री `मोदलता` एकटा सदगृहस्थ सरस-सरल निर्मल कवि ओ संत छलाह। हमर प्रस्तुत अध्यापक ``मैथिली संत साहित्य मे सीता``क प्रसंगक आधार बनाय जे रचना कयने छथि ताहि प्रसंग हिन्दी साहित्यक मार्तण्ड, आचार्य

शिवपूजन सहाय जी द्वारा अभिहित ``संत कवि मोदलता जी मैथिली भाषा साहित्यक अन्तर्गत एक विशिष्ट शैली उद्भुत संत जे किशोरीजु पर अनेकानेक सखि भावमे रचना कयने छथि। ``मैथिली सखी परंपरा मे सधुक्कड़ी भाषाक सरितामे स्नान कय मोदलता जीक रचनामे अपूर्व काव्य-कृति प्राप्त होइत अछि।`` से कही भारतक प्रसिद्ध अध्यात्मिक धाम सभमे सुरभित-सुभाषित करैत अछि।

मैथिली वल्लभ परिमल ``मोदलता-विवाह पदावली``क प्रस्तावनामे लिखैत छथि जे मोदलता जी मैथिली भाषाक अनुपम काव्य साधक थिकाह। मैथिली संत साहित्य ओ साहित्यकार लेल अज्ञात किएक छथि? मोदलता जीक देन जे कही जन-जनक मानसमे श्री सीता जीक प्रत्यक्ष दर्शन अपना रचनामे करबैत छथि। मैथिली साहित्यक पुरोधा लोकनिमे मोदलतासँ विरक्ति किएक रहलनि से विमर्शक गप्प अछि ! जखनकि हिन्दी साहित्यक विद्वान ओ संतानुरागी विद्वान डॉ. प्रो. कृष्णचन्द्र झा `मयंक` गवेष्णात्मक शोध प्रबंध मे लिखैत छथि ``मिथिलाक मैथिली साहित्यक संत साहित्यमे संत श्री मोदलता जीक अवदान श्री सीताराम भगवान परिपाटीमे मधुरोपासक भावना मे जाहि शैली भाषा-भाव, अलंकार-योजना, बस्तु-विन्यास, अध्यात्मिक-न्यास मे जे मर्मोल्लास विवेचन विस्तार भेटैत अछि से प्राकारांतरमे `मधु` शब्दक प्रकृति पुरुष आ जीव तीनू के अभिव्यंजित करैत अछि। यथा पद अछि -

जय-सीते जय सीते सीते

जय सीते जय सीते -

प्रभुक पराशक्तिक आह्लादिनि

वेद बदै गुणगीते।।

--- ---- ---- ---- ---- ----

मोदलता चित चाह यही हौ

तेरी हटै न ही ते।।[6]

प्रस्तुत पद सधुक्कड़ी बोली पर आधारित सीताक महिमाक वर्णन मोदलता जीक पदावलीमे जे भेल अछि ताहि सँ हिनक अन्तर्त्माक भाव प्रकट होइत अछि।

प्रकाशक श्री संतपूर्वाचार्य चरण रज सेवी दीन जानकी रमण शरण संक्षिप्तत: लिखैत छथि जे 1920 ई. मे वेगूसराय मे भक्तक सत्य प्रयास सँ सीताराम विवाहोत्सव मनाओल जा रहल छलैक ताहिठामक प्रधान प्रवर्तक संत भगत भूषण श्री रामा जी महाराज `भांवरि` विधि कय रहल छलाह, गायक गुण के गेबाक लेल प्रेरित कयल जा रहल छलैक मुदा कीर्तन मंडली विलम्बित भेल जा रहल छलैक। आज्ञाक सुयोगपात्र उर प्रेरक रघुवंश विभूषण जू अपन माधूर्या सखी मोदलताजी जे आशु कवि रूपमे छलाह ओ अपन प्रभू कृपा सँ आकस्मिक रचित पद सँ कौतुहल कीर्तन मंडलीकें शांति

कयलनि प्रस्तुत पद -

चारु दलहा दैथि भँवरिया ए
संग सोहति दुलहिन नागरिआ ए

अस्तु हुनक एहि काव्य स्फूरणक भाव एहेन सन भेल जे सबकें लगलनि जे भाव समाधिमे साक्षात् दर्शन करय लगलाह।

एहि प्रकारें संत मोदलता रामाश्रयी शाखाक सखी सम्प्रदायमे सीता जीक भक्ति भावनामे सतत लीन हुनकर अपनाके सखी मानि सीताक उपासना मे गीत शैलीक आश्रय लय जन्म, बालक्रीड़ा, फुलबाड़ी, धनुषभंग, बिवाह विधि आदिक मनोहारी चित्रण कयलनि अछि।

संत श्री मैथिली पुत्र प्रदीप : संत श्री मैथिली पुत्र `प्रदीप` गृहस्थाश्रम संत जे सतत अपन मिथिलाक विशिष्टभूमि जे पंचोदेबोपासना लेल प्रसिद्ध तकर प्रतीक छथि। संत मैथिली पुत्र प्रदीप। जिनकर मूल नाम प्रभुनारायण झा `प्रदीप` छनि। हिनक जन्म प्रसंग हिनक पुत्र श्री रामकुमार झा कहलनि फागुन कृष्ण पञ्चमी जन्मोत्सव वर्ष 1939 ई. मे भेलनि। जे सम्प्रति स्वयंप्रभा निकञ्ज स्वयंप्रभा नगर (इस्माइलगंज) लहेरियासराय दरभंगा-84600 के अपन आश्रम स्थापित कय भजन कीर्तनक आश्रय ग्रहण करैत जीवन लीला बनेने छथि।

मिथिलाक प्रति हिनक कतेक प्रेम ओ श्रद्धा छनि से तकर बानगी छनि हुनकर निज नाम `मैथिली पुत्र` हिनक काव्यक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे ई सखी सम्प्रदायक भक्तिक संत कवि छथि। जे गीत काव्यक विलक्षण रचनाकार शब्द विन्यास, लाक्षणिक प्रयोग, छन्द विधान, गति-यति आ तुक लयक योजनाक संग संत `प्रदीप`क रचनामे प्रासदगुणक बाहुल्यता भाव सौन्दर्य दृष्टियें ऊँच्च कोटिक रचना अछि। जाहिमे मर्मोल्लास मे मधुरोपासनामे झूला विवाहोत्साव, वर्णन आदि के `सीता अवतरण` सम्पूर्ण महाकाव्य `तिरहुत सँ तिरूपति धरि`क चर्चा कएने छथि। आगू हिनक एकटा पद अवलोकन कयल जाय :-

झूला झूलथि सिया सुकमारी,
शोभा जनक दुलारी के
--- ---- ---- ---- ----
गंगाजल प्रदीपित सुविचारी
सरयू केर बलिहारी ना - झूला झूलथि...।।

एहि प्रकारें मैथिली संत साहित्यक मध्य अपन धर्म सम्प्रदायक अन्तर्गत ज्ञान-भक्ति-संस्कार आदिक द्वारा उपनिषत्-प्रणीत पावन यश, संकीर्ण भावना सँ उपर उठि अनन्त भावक अथाह समुद्र सन संत साहित्यक तत्वालोचन करैत कथावार ग्राम निवासी पिता स्व. स्वरूप झा ओ माता बुच्चनि देवीक कोखिसँ बहरायल गार्हस्थ जीवनक नाम श्री प्रभुनारायण झा `प्रदीप`

संतकीय भावक नाम मैथिली पुत्र `प्रदीप` माँ सीताक जगज्जननीक सहज वात्सल्य रसमे आप्लावित पद सँ अनुभव करी -

हे मा सीता जगत जननि हे हम अपराधक भवने
पूर्ण अकिंचन अगति अनाश्रय अशरण गति तुअ चरणे।।

---- ------ ------ ------ ------ ------

श्रेष्ठ भक्ति धन पाबि सकब से दाता दृष्टि अहींक।
चिरानन्द गति पाबि सकी से चाहथि ज्ञान `प्रदीप`।।

अस्तु निःसंदेह ई हुनक अपन अन्तः प्रकृतिक सूक्ष्म निरीक्षण अछि जाहिमे वात्सल्य रसक सूक्ष्मातिसूक्ष्म विषयक सारगर्भित सजीव चित्रण अछि।

एहि प्रकारे अध्ययन ओ मनन कयला संता मैथिली संत साहित्यक अन्तर्गत प्रस्तुत अध्याय ``मैथिली संत साहित्य आ सीता``क प्रसंग मे बहुत रास रचना प्राप्त भेल अछि। मुदा मैथिली साहित्यक सन्त ओ भक्त लोकनिक एकटा परंपरा चलल अछि, सन्त-भक्त कविसँ उपलब्ध सामग्री अछि ओ स्वतः हुनक काव्य प्रतिभाक परिचयाक अछि। संत कवि ओ रचनाकारमे मूल अंतर अछि जे आम जन रचनाकार मात्र हुनका काव्य प्रतिभाक परिचायक बुझैत छथि जखनकि संत कवि ओ रचनाकार अपन अराध्य मानि, परब्रह्म मानि क्रीड़ा, रूसा-फूली विरह-मिलन, श्रृंगारक आलम्बन ओ लीला स्वरूप वर्णन कयने छथि। संत कवि ओ रचनकार जे किछु रचना करैत छथि ओ अपन उपासना स्वरूप कयने छथि। तैं हमर ध्येय स्पष्ट अछि जे संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे हम श्री जानकी सीता जीक प्रसंग जे संत कोटिक रचनाकार प्राप्त भेलाह अछि ओही टा रचनाकारक स्थान देल अछि।

मिथिलाक भक्ति ओ संत काव्यक परंपरा अविरल प्रवाहमान रहल अछि हमर विषय प्रविधि ``संत साहित्य आ सीता`` अध्यायक रूपें हम सुनिश्चित कयल तखन अत्यंत तारतम्य मे रही मुदा जखन अध्ययनक क्रम चलल तऽ भेल जे नहि किछु सार्थक दिशा मे कार्य होयत। मिथिला ओ मैथिली संत साहित्यक परंपरामे ज्ञान ओ भक्ति आधार विशष रूपें अधिष्ठित भेल अछि। संत कवि सीताकें मात्र मिथिलाक पुत्री ``वैदेही`` मात्र नहि मानलनि अछि, बल्कि अध्यात्म जगतमे हुनका `शक्तिस्वरूपा` मानि अपन अभ्यर्थना कयलनि अछि। संत लोकनि सीताक उपजीव्य बना मुख्य रूपमे संत शिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाईं, साहेबरामदास, संत कविश्वर चंदा झा, कविवर लालदास, संत श्री मोदलता, संतश्री स्नेहलता, संतश्री मैथिली पुत्र `प्रदीप` आदि सखी सम्प्रदायमे मधुरोपासनाक आधार बनाय संत साहित्यक भंडार के बिनय पदावली संकीर्तन झुलाक पद भजनियाँ लोकनिक संबल ओ लोकानुरंजक विशिष्ट साधन रहल अछि। आ कवीश्वर आ कविवर ओहि कोटिक संत थिकाह जे धर्मशास्त्र कर्म काण्डक प्रवृष्ट पाण्डित्य निरन्तर साहित्य सर्जना ओ सीताकें शाक्त भावनासँ सन्निवेश कयलनि अछि।

●●●

संदर्भित ग्रंथ

1. भविष्यपुराणराँ उल्लेखित शब्दकल्पद्रुम भाग-3725 मे उद्धृत मिथिलाक इतिहारा डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, पेज-2।
2. मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन लेखक इन्द्रनारायण झा, पेज-89।
3. हनुमन्नाटकम् - चौखम्बा संस्कृत सिरिज वाराणसी ब्याख्याकार पं. जगदीश मिश्र `काव्यतीर्थ` अध्यापक, मारवाड़ी मध्य विद्यालय, सीतामढ़ी।
4. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव गौरीनाथ, भाषणमाला - भाषणकर्ता श्री सुरेन्द्र झा `सुमन`, पेज-64।
5. सन्तकवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं - डॉ. फुलेश्वर मिश्र, पेज-86।
6. साहेबरामदासक मोनोग्राफ सा.अ. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित संकलन-संपादन श्री शंकर झा, पृ.86 एवं 87।
7. `संत सहित्य की समझ` डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय, पेज-31।
8. स्नेहलता - मोनोग्राफ सा. अ. दिल्ली संकलन एवं सम्पादक - श्री योगानन्द झा।
9. मि.भाषा रामायण - कवीश्वर चंदा झा, पेज- IV।
10. चंदा झा मोनोग्राफ, पेज-56 सं. ओ सं. ओ सम्पादन - जयदेव मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
11. मिथिला भाषा रामायण सवैया मुदिरा सुन्दरकाण्ड, पेज-198।
12. रामेश्वरचरित रामायण, पेज-7 एवं 8 कविवर लालदास।
13. रामेश्वरचरित मिथिला रामायण, लालदासकृत, पेज-15।
14. ``रामेश्वरचरित मिथिला रामायण`` चौपाई, पेज-410।
15. लालदास मोनोग्राफ - पेज - 25, संपादक श्री देवेन्द्र झा, प्रकाशक साहित्य अकादेमी, दिल्ली।
16. मोदलता - विवाह पदावली, प्रकाशक - जानकी रमण शरण, पेज-21।

16A. मोदलता - विवाह पदावली, प्रकाशक - जानकी रमण शरण, पेज-61, पद-120।

17. मैथिली विविध कविता एवं भक्ति गीत मैथिली पुत्र `प्रदीप` प्रकाशक श्री रामाज्ञा सिंह `रान्तजी`, पेज-7, पद रां.-108।
18. मैथिली भक्ति गीत - ``प्रदीप`` संत श्री रामाज्ञा जी, पेज-33, पद-69।

●●●

<u>**श्रोत-ग्रंथ**</u>

1. विवेकानन्द साहित्य पंचम खंड,पृष्ठ-150।
2. मिथिला भाषामय इतिहास, पृष्ठ-190 सँ 227।
3. मिथिला तत्व विमर्श पृष्ठ - 62 म.म. परमेश्वर झा।
4. वाचस्पति संग्रहालय अंधराठाढ़ी, मधुबनी। मिथिला के वाद-वेदांत पं. सहदेव झा, पेज-1 एवं 2।
5. व्रजवुली साहित्य डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा।
6. नेपाली लोक साहित्य हिन्दी साहित्य वृहद इतिहास भाग-16, प्रफुल्ल कुमार सिंह, `मौन`।
7. संत साहित्य की परख आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
8. नगर प्रवारिणी पत्रिका भाग-5, संख्या-1991।
9. गोरखवानी - भूमिका सं. डॉ. पीताम्बरदत्त बड़वाल।
10. मिथिला के वेद-वेदांत (पं. सहदेवप झा), पृ. 1-2।
11. मिथिलाक संगती परंपरा (डॉ. चण्डेश्वर झा, पृ. 23)।
12. वाल्मीकि रामायण -
13. मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव - भाषणकर्ता सुरेन्द्र झा `सुमन` - मैथिली अकादेमी, पटना।
14. मिथिला तत्व विमर्श - म.म. परमेश्वर झा।
15. सीता स्वयंवर नाट्क - स्व आनन्द झा।
16. मैथिली गीतांजलि - यदुनाथ झा `यदुवर`।
17. लालदास - मोनोग्राफ साहित्य अकादेमी, संपादन - देवेन्द्र झा।
18. वाल्मीकि - मूल आई पाण्डुरंग राव अनुवाद अशोक कुमार ठाकुर, साहित्य अकादेमी।

●●●

बारहम् अध्याय

आधुनिक कालमे संत-साहित्यक दशा ओ दृष्टि

अति प्राचीन कालहिसँ वा कही वैदिक कालसँ मिथिला शिक्षा, साहित्य, धर्म एवं दर्शनक प्रधान केन्द्र रहल अछि। राजा जनकक दरवार सँ कहल जाइत अछि जे मिथिला मे ब्रह्मविद्या आ दर्शनक सूत्रपात भेलैक। माया, कर्म, मुक्ति आत्मा ओ ब्रह्म विशद विश्लेषण मिथिलहि मे भेल। ``तत् त्वं असि`क मिथिलेक मूल मंत्र अछि। भारतक समस्त भाग सँ विद्वान ओ दर्शनकार राजा जनकक दरवारमे जुटैत छलाह। जतय याज्ञवल्क्यक अतिरिक्त उद्दालक, आरूणि, गार्गी, मैत्रेयी, अश्वबल जारत, कारब आर्तभाग प्रभृति न्याय शास्त्रक प्रणेता गौतम, सांख्य दर्शनक प्रणेता कपिल, योगदर्शनक प्रणेता याज्ञवल्क्य, स्वनामधन्य मिमांसक मंडन मिश्र, वाचस्पति, उदयनाचार्य, गंगेश उपाध्याय सन विख्यात् जाज्वल्यमान नक्षत्र सदा एतय उद्भाषित रहलाह।' फलस्वरूप कर्मकाण्ड मिथिलाक संस्कृतिक मूल अंग वनि गेलैक।

इतिहासक अध्ययन सँ गौरवशाली अतीतक परिचय प्राप्त होइत छैक। पश्चात् मध्यकालमे मिथिलाक धर्म ओ दर्शनमे कोनो तेहेन बदलाव नहि भेलैक। बल्कि धर्मक ओ उपासनाक क्षेत्रमे शिव-शक्ति ओ विष्णुक उपासना विशेष रूपें प्रचलित हुअ लगलैक। शनैः शनैः ब्राह्मण वर्गमे वैदिक अनुष्ठानक स्वरूप बुद्धोत्तर काल सँ बदलैत रहलैक पश्चात प्राग्वैदिक कालक प्रकृतिपूजन मानवाकृति कल्पित इन्द्र, विष्णु, शैव, तारा आदि अगणित देवी आ योगिनी सभक पूजन माने पंचोदेव उपासनाक संगम स्थल बनल मिथिला आ इएह धर्मक संगम मिलन के मिथिलामे सनातक धर्म मानल गेल।' आ उपर्युक्त परिपेक्ष्यमे पश्चाताप क्रमिक लोकाचार अनुष्ठान पर भारी पड़ैत गेल आ भक्तिक चेतना मे धार्मिकताक प्रस्फुटनसँ संत कवि लोकनिमे सामाजिकता ओ साहित्यिकता विलक्षण संगम दर्शित होमय लागल अछि। मोटा-मोटी सम्पूर्ण मिथिलामे प्रथमतः कर्मकाण्डक संक्षेपण होइत गेल। प्रायः संत मतमे एहेन मानल जाइत छै जे चौदहवीं शताब्दीये सँ एकर शुरुआत भऽ गेल रहैक। जे 18वीं, शताब्दी सँ कही मिथिलाक जागरणक काल शुरू भऽ गेल रहैक। मिथिलाक लोक जीवनक संस्कृतिमे एहिठामक सनातन धर्मी देवी-देवताक प्रति आस्था-भक्तिक वीच धार्मिक तत्वक जे उपासनासे मिथिलाक संत ओ भक्त पंचोदेवोपासनामे सतत निम्मज्जित करैत अपनाके मानवीय जीवनक कल्याण ओ जीवन एवं परमात्माक बीच तादाम्य सम्बन्ध स्थापित करबाक लेल सतत साधना मे लीन रहैत छलाह बा छथि। एकरा बहुत कम शब्दमे कही संतक सर्वमान्य अर्थ भेल `साधु` खासकऽ पहुँचल माने ओ ``भक्त संत जीवात्मा-ब्रह्म`` तीनूकें एकठाम अनबालय जे अक्षर-धर्म-प्रार्थनाक आधार बनाय साधनारत रहैत छथि। से ओ मात्र विरक्त त्यागी साधुटा नहि भऽ सकैत छथि, बल्कि गृहस्थ कर्मयोगी महात्मा सेहो संतक कड़ीमे अबैत छथि। प्रसंगे कवि कुल गुरू कालीदास लिखैत छथि-

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्यर्क्तिहेतवः।

हेम्नः संलक्ष्यते हग्गनौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा।।

एहि प्रकारें उपर्युक्त श्लोकक मादे कही संत अग्निक समान होइत छथि जे ठोस आ कमजोरकें परखैत छथि। संत युगानु रूप भाषामे आदर्श शब्दक परमहंस वृतिमे वास करैत छथि। हुनकर जीवन, सभहक जीवन स्वरूप रहैत अछि। मिथिलाक संतक विशिष्टता ज्ञानाश्रयी भक्ति सम्प्रदाय रहल अछि। ओना मिथिलामे सभ जाति धर्म, सम्प्रदाय, वर्गक लोक वास करैत छथि। मुदा एहिठाम सनातन धर्मक बहुल्यता ओ विश्वास आम जन पर कायम रहैत अछि। तें एतय संत लोकनिमे पूजा-उपासना प्रमुखता रूपें देखल गेल अछि। कलांतरमे अठारवहीं शदीक पश्चात् मैथिल अपन परंपरा कर्मकाण्डी न्याय दर्शनक भीतर असीम आस्था रखनिहार तक मात्र वैष्णव सम्प्रदायमे आबि कृष्णाश्रयी ओ रामाश्रयी शाखा बीच विभेद बीच पंचोदेवोपासनाकें तेना ने अपनौलनि जे कहि सकैत छी संत साहेबराम दास भविष्यक संत साहित्यक परिकल्पना करैत लिखैत छथि :- :-

रमि रहओ रमिता राम हिय मे, अलष पुरुष निरंजना।

राम राघब कृष्ण केशव, भक्त जन मनरंजना।।

उपर्युक्त पद वैष्णव सम्प्रदायक आधुनिक कालमे भक्त संत साहेब रामदास भक्ति धाराक जे बदलैत परिदृश्य, संत साहित्यक आधुनिक कालक दशा-दृष्टिक प्रसंगे कही तऽ भगवानक अर्थात् अपन ईष्टदेवक बास ओतहि होइत अछि जतय मनसा-वाचा-कर्मणा सँ रहैत छी। दिव्य-दैव रूपें जे भग्वत शरणमे रहैत अपन रचना ईश्वराधीन कय रचैत छथि, संत कहैत छथि बुझू वएह परमधाम अछि। पुनः पद देखू :-

बसहु तुअ हरि आय ह्रदया, पुरग ब्रह्म पुराग

सुमति उपजय कुमति विनसय मेटय तन अभिमान।।

उपर्युक्त पदक परिपेक्ष्यमे संत साहेबरामदास कहैत छथि जे हे भगवान हमरा ह्रदयमे वास करू आ ताहिसँ हमर सभ ब्रह्म पुरान आदिक मनोरथ पूर्ण भऽ जायत। हमरा सुमति दियऽ कुमतिक नाश करू आ सभ अभिमान आ घमंडक जे भावना से दूर करू। आशय संत साहेवराम दासक रचना मे एहि उपर्युक्त भावमे मानव-चिंतनक जे सिमित भाव अपना आप के स्वार्थ लेपित भाव सँ उपर उठेबाक लेल महाप्रभु सँ प्रार्थना कय रहल छथि।

मिथिलाक संत भावनाक विकास बहु आयामी अछि। सगुण-निर्गुण वा कही प्रेम आ भक्तिक अपूर्व सम्मिश्रण भेल छैक। एतय समन्वयवादी भावना बेसी प्रबल भेल अछि। एहिठाम जनसमान्यक आचार-विचार आस्थावादी रहैत राम-कृष्ण-हनुमान-गणेश-सूर्योपासना शक्ति उपासना मे सीताक जन्मभूमि, पार्वती, गोसाउनि, बिषहरि चंडी, सितला, महामाया काली, राधा-रूक्मणि आदि शक्तिक स्मरणक संग नदी उपासना लोक देवी, तंत्र उपासना, कर्मकाण्ड, उपासनाकांड एवं ब्रह्मकाण्डक संग कहल जाइत अछि। जे कबीरक निर्गुण सम्प्रदायक विकास

बेसी नँहि भेलैक मुदा से कही 1429 ई. मे कवीर जागूदास के दीक्षित कयने छलाह।[6] मिथिलाक इस्लाम स्वरूप धार्मिक भाषा मे अरबी-फारसीक कोनो महत्व नहि छलैक। कुराणक अनुवाद तऽ मैथिली मे करब कठिने नहि मिथिलामे असंभव छलैक। मुदा पैगंबर मुहम्मद साहेबक सहादत के मार्मिक मर्सिया गीत मिथिलामे गाओल जाइत छैक। विद्वान डॉ. जार्ज ग्रियर्सन उन्नीसवीं शदीमे मर्सिया गीत के संकलित कऽ कऽ प्रकाशित करवौने छलाह।[7]

मिथिलाक संत साहित्यक भविष्यक दृष्टि ओ भावना दशा कही अत्यंत सम्मुज्ज्वल अछि। एतय धर्म-ओ सम्प्रदायक बीच समन्वयवादी भावना प्रबल छलैक। बादशाह अकबरक के समयमे चौदह देवानक एकटा मंडली होइत छल जाहिमे मीरबाला जेहेन पीरके शामिल कय लेल गेलैक, बल्कि एकटा लोककवि भक्त लखतराज पाँडें हुनका देवता बुझि स्तुति गीत तक रचि देलनि। यथा: -

कुटाओन कैलहुँ पिसाओन हे केलहुं,
खुद्दी लय भरलहुँ पानि हे।
तोरे लय आहे `बाला` रवि-शनि कैलहुँ
बन्हलहुँ हम सुरुजक डोर हे।
गाओल लखत पाडे मियाँ के चरण धय
आब बाला होइयौ ने सहाय हे।[8]

मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे हमर ई प्रस्तुत अंतिम अध्याय ``आधुनिक काल मे संत साहित्यक दशा ओ दृष्टिक प्रसंग`` उपर्युक्त कयल वर्णन मिथिलाक प्राचीन पौराणिक साहित्य बेद-उपनिषद आशय अतीतक स्वर्णिम पृष्ठिभूमि शतपथब्राह्मण मे वर्णित एतिहासिक स्मरण सँ एतवा तऽ स्पष्ट अछि जे मिथिलाक संतक अपन विशिष्टता छनि। कोनो साहित्य मे संतक उपस्थापना होइत अछि जखनकि मिथिलाक भूमिमे संत शाश्वत रहलाह अछि। एतय चतुर्वेद धर्मशास्त्र स्मृति मिथिला महात्म्यमे कही तऽ अध्ययनक केन्द्र रहल छैक। ब्रह्मविद्या एवं दर्शनक सूत्रपात अहीठाम सँ भेले छैक। महात्म्य माया, कर्म, मुक्ति, आत्मा ओ ब्रह्मक विशद विश्लेषण मिथिलहि सँ भेल छैक। सूर्य पूजाक प्रधानता हो वा लोक देवता गहिल गोड़ैयाक कीर्तन-भजन एहिठामसँ आरंभ भेल अछि।

उत्तर भारतक अंतिम स्वतंत्र राज्य मिथिला, एतय साहित्यिक गतिविधि अत्यंत प्रबल ओ ठोस संगहि एहि धरती पर श्रेष्ठ धर्मोपदेशक भेल छथि। हमर विषय प्रविध कहल जाय तऽ धर्मक सत्यताकें संत लोकनि जीवैत-जागैत प्रमाण छथि। संत एक प्रकारक ज्योतिपूंज होइत छथि जे अपन अस्तिकता ओ धर्मक हृदय सँ अज्ञानता आ नास्तिकताक अन्हार के दूर करैत छथि। कहवाक आशय संतक भावमे उन्मनि-मनोन्मनि इत्यादि प्रकारक सुख-दुखक बंधन सँ ओ मुक्त रहैत छथि।

मारुते मध्य संचारे मन: स्थैर्य प्रजापते
यो मनः सुस्थिरी भाव सैवावस्था मनोन्मनी।

एहेन संस्कृत साहित्यक अमरकोशक टीकामे श्रीकर लिखने छथि जे ज्योतिरीश्वरक कृत मैथिली भाषामे निबद्य वर्णरत्नाकर आधुनिक भारतीय भाषामे सबसँ प्राचीन ग्रंथ अछि। मैथिली राजसभामे संस्कृत साहित्यक काब्यक संग आदर पबैत रहलीह। ज्योतिरीश्वरक पश्चात भविष्यद्रष्टा ओ श्रष्टा महाकवि विद्यापति राजवंशक शासनकालमे अपन समकालीन विभिन्न क्षेत्रक विद्वानक बीच जहिमे प्रमुख ``जगद्धर`` शंकर मिश्र एवं वाचस्पति मिश्र अमर विभूति छलाह। हिनका लोकनिक बीच प्रसिद्ध विद्ववंशक सन्तान सर्वाधिक देदिप्यमान नक्षत्र दार्शनिकता एवं सांस्कृतिक परंपराक विख्यात सगुणोपासक कृष्ण लीला पर पदसभहिक भक्ति रसमे सिंचित चैतन्ययक प्रिय जनकीक भक्तिरस मिथिला पावन भूमि पर संत साहित्यक दशा ओ दृष्टिक स्पष्ट केनिहार भेलाह - 1. महाकवि विद्यापति, 2. विष्णुपुरी, 3. साहेबरामदास, 4. परमहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं, 5. गोविन्द दास, 6. स्नेहलता, 7. मोदलता. 8. रघुवर गोसाईं, 9. स्व. क्रिश्चिन जान, 10. स्व. राजाराम शास्त्री, 11. स्व. मोहम्मद गौसखाँ 12. संत रामरूप दास, 13. सुदर्शन दास, 14. जयदेव स्वामी, 15. सेवादास, 16. गोसाई सत्यनारायण झा, 17. हरकिंकर दास, 18. रामस्नेही दास, 19. गिरवरदास, 20. लाल मिश्र, 21. उमापति उपाध्याय, 22. लोचन, 23. अपूछ दास, 24. संत मेंही दास, 25, हकरू गोसाई, 26. धरमूदास, 27. मंगलदास, 28. संत चंदा झा, 29. लालदास, 30. पं. शिवनाथ मिश्र `शिव`, 31 मैथिली पुत्र `प्रदीप` 32. भवप्रीता नन्द ओझा, 33. बाबा उधवदास, 34. श्री राधिका दास गोस्वामी आदि।

विद्यापति ओ विष्णुपुरी गोविन्ददासक पश्चात् आधुनिक काल अर्थात् अठारहवीं शताब्दी सँ लऽ कऽ अध्यावधि काल तक अनवरत संत मिथिलाक एहि पावन भूमि पर अपन विशिष्टता अनुरूपें अध्यात्मिक उत्कर्षक लेल धर्म साधनामे ज्ञानाश्रयी शाखाक प्रमुखता रहल छैक से संतमत सँ युक्त भक्तक आधुनिक कालमे हिनका लोकनिक जीवन अत्यंत विषमतलीय भऽ गेल अछि। उपर्युक्त उल्लेखित संत लोकनि विद्यापति सम्प्रदायक युगसँ होइत संगीत सम्मति भक्ति रसमे अभिव्यंजित विभिन्न सम्प्रदायक पंचोदेवोपासनाक उपासक भेलाह। ओना काव्य रचनाक क्षेत्र एहि संत लोकनिक रचनामे सुर-तुलसीक सम्प्रदायक प्रभावक चलते भावदृष्टि यत्किंचित परिवर्तनसँ संतक भाषामे भिन्नता तऽ अवश्य भेटैत छैक जे संत साहित्यक अन्तर्गत एकटा सधुक्कड़ी भाषाक विकास भेलैक जे मूलत: मैथिली अछि। एहेन संत साधु सम्प्रदायिक दृष्टि सँ वैष्णव छलाह जे मैथिली संत साहित्यक हमरा जनैत प्रमुख उद्‌गाता छलाह जाहिमे प्रमुख छलाह साहेब रामदास, लक्ष्मीनाथ गोसाईं, मोदलता, परमहंस मेंहीदास आदि संत साहित्यक बल पर समाजक बीच समरसता कायम करब, भ्रम जाल सँ मुक्तिक मार्ग सुलभ करब, संत निष्ठा सँ भक्ति मार्गक, प्रचार-प्रसार भेलासँ संतक अवदान आ हुनक देवोपम व्यक्तित्व सदस्वरूप मानव जीवनक लेल

प्रेरणाप्रद होइत रहल अछि।

प्रस्तुत अध्यायक क्रममे हम ओहि संतक प्रसंग जे अठारहवीं शतीक आ ओकर बाद भेलाह अछि तिनकर विशिष्टताक वर्णन ओ परिचय संग दृष्टि सम्पन्नता जिनकर उपलब्ध अछि संक्षिप्त विवरण दय रहल छी।

1. **संत लक्ष्मीनाथ गोसाई** : - अध्ययन-अनुशीलन सँ आधुनिक कालमे साहित्यक दशा ओ दृष्टिक ``प्रसंग कही समाज एखन धर्मान्धता-भौतिकताक ताप मे मानवीय जीवन अत्यंत दुष्कर भेल जा रहल अछि। एहनामे परहंस संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक नैतिक मूल्यक दृष्टिकोणक हुनक साहित्यक प्रासंगिकता बढ़ि जाइत छैक। गोसाईं जीक काव्य संसार आत्म निरीक्षण करबालय क्षमता प्रदान करैत अछि। गोसाईं जीक जीवनक प्रसंग लोक मे कौखन कऽ भ्रम उत्पनन होइत छनि जे ओ योगी संत छथि कि योगक-साधक, से कही ई प्रश्नक उत्तर हम अध्ययन क्रममे आगू बढ़ैत इएह कहब ई शोधक विषय विशिष्टता भावे कयल जा सकैछ। हमरा जन्तवे हिनक एहि पाँतिमे नहित भाव -

विषय वासना घुटत न मन से
नाहक नर वैराग करे रे।
जल बीच मीन बकै वंशी मे
जीभ के कारण प्राण हरे रे।
सो रसना वश कियो न योगी
नाहक इन्द्रिय साधि मरे रे।।[7]

उपर्युक्त पदमे इन्द्रिय निग्रह ओहि व्यक्तिमे जे विषय वासना मे लिप्त छथि हुनका लेल अपटी खेत प्राण देव भेल। पुनः कहैत छथि जे आत्मा - परमात्माक संग तादात्म्य सन्बन्ध स्थापित करैत बेर-बेर जन्म-मरणक जे कष्टकारक धारणा ताहि सँ मुक्तिक कामना रहैत छनि, संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं निवृत्ति प्रवृतिमे लिखैत छथि -

चला जात संसार दिवश निशि
कोउ भागे पछुआना।
लक्ष्मीपति चित चेत करो नर
काहे भरम भुलाना।।[8]

संत लक्ष्मीनाथक जीवन प्रसंग लय पछिला अध्याय सभमे खूब चर्चा भेल अछि। एतय हम हिनक संक्षिप्त विशिष्टताक वर्णन करैत कही जे गोसाईं जी भ्रमणशील छलाह तैं ई लोकक रीति-नीति, रहन-सहन, कला ओ चेतना आदि पर बिचार करैत मानसिक विकास करैत छलाह। संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं के प्रसंगमे कहल जा सकैछ जे ओ पहुँचल फकीर संत छलैह। हिनक मूल्यांकन प्रसंग कही तऽ मानवीय उत्तरदायित्व के बुझैत मानवीय मनोवृत के खूब करीब सँ अध्ययन करैत

छलाह। सर्वधर्म समभाव जाति-पाँतिसँ उपर उठल सांसारिक जीवकें हृदयस्पर्शी उपदेश दैत कहैत छलाह - पं. छेदी झा द्वारा द्वारा सम्पादित गीतावली सँ लेल गेल पद सँ स्पष्ट अछि जे ओ विभिन्न देवी-देवताक प्रति विश्वास रखैत छलाह। यथा -

निराकार सगुण बनि आये, आपहुँ नाना रूप धराये।
एक अनेक भये हैं बहुविध, आपहुँ आप समाये।।
आपहि भूमि समीर अनल जल, आप आकाश वनाये।।
आपहि चित्त बुद्धि है आपहि आपहि विषय विहार।
आपहि जीब देवता आपहि, आपहि भोगनहार।।"

एहि प्रकारें अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे हिनका एके रूपमे मिथिला सूर - तुलसी - कबीरक उपाधि दय दी तऽ अतिशयोक्ति नहि होयत।

2. साहेब रामदास : मैथिली संत साहित्यक अन्तर्गत अठारहवीं शताबदी सँ आधुनिक काल वा कही वर्तमान युग धारि एहेन अलौकिक सिद्ध संत मिथिलाक धराधाम पर वहुत कम भेल छथि जिनका सँ मिथिला प्रशंसित गौरवान्वित भेलीह। साहेब रामदास प्रसंग एहि सँ पूर्वक अध्याय मे वर्णन भेल अछि। साहेब रामदासक जन्म कुसमौल ग्राम जे मधुबनी जिला अन्तर्गत बनीपट्टी अनुमंडल, जरैल परगनामे सरिसवे छाजन मूलक ब्राह्मण कुलक अन्तर्गत 1960 ई. सँ 1770 ई. के वीव मानल जाइत अछि। हिनक प्रसिद्ध कुटी पचाढ़ी मे रहनि। प्रसिद्ध सिद्ध संत पुरुष हिनक काव्यादर्श तुलसीक काव्यादर्श पर आधारित अछि। हिनक जीवनक सबसँ पैघ मोड़ दियेलक हिनक पुत्र `प्रीतम` विद्वान डॉ. शंकरदेव झा अपन पोथी अठारवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास``मे प्रतीम के भातिज कहलथिन्ह अछि जे हो दन्तकथा मे हिनक प्रसंग बहुत रास किंववदन्ति अछि जकर संक्षिप्त वर्णन हम पछिला अध्याय सभमे कयने छी।

साहेबरामदासक काव्य सौष्ठव सँ अनुभव होइत अछि जे ई ज्ञानक अपेक्षा भक्तिक प्रबलताकें विशेष महत्वे दैत छथि। रामदासक भक्तिभावनामे सहजता अछि। ओ साधनाक सहरजमीन पर अवस्थित रहैत हुनक काब्य मे कृष्णक उपासनमे, हिनक भाषाशैलीमे सजीवता ओ लोकभाषाक प्रचूरताक चलते सामूहिक रूपें हिनक पद गाओल जाइत अछि। भाषाक प्रयोगमे संत साहेबराम दास उदार छथि हुनक पदावली मे अरबी-फारसी शब्दक उपयोग प्रवाह मे खूब-मनोयोग सँ केलनि अछि यथा -

वाभनसँ बभनियाँ, मधुवनसँ मधुबनियाँ
दिलजानसँ दिलजनियाँ, गुमानसँ गुमनियाँ

एहि प्रकारे कहल जाइत अछि जे विदेशी शब्दक प्रयोग अपन पदमे सर्वप्रथम इएह कयलनि।` हमर विषय प्रविध रांत राहित्य मध्य ``रान्त राहित्य दशा ओ दृष्टिक`` प्रराग कही रांत

साहेबाराम दासक वहुविध रचना ओ हिनक `पदावलीक` अध्ययनक पश्चात् स्पष्ट अछि जे ओ पंचोदेबोपासक तत्व ज्ञानी सिद्ध पुरुष संत कवि छलाह। संन्यास लेलाक बाद ओ परिवार छोड़ि देला मुदा मिथिलाक धार्मिक उदारता आ मातृभूमि सँ विमुख नहि भेलाह। लिखैत छथि-

साहेब करुना करए शीश

धुनि मिथिला होइछ अन्हेरि।

स्पष्ट अछि सामाजिक जीवनमे जे मानवीय व्यग्रता के कतेक स्पष्ट शब्दमे व्यक्त कयलनि अछि। संत साहेब रामदास मानवीय प्रेमक अपन रचना मे जे देखौलनि यथा ``पुछइत फिरए गौरा बटिया हे राम।''

एहि प्रकारें संत साहेबराम दास प्राती-सारंग, ललित विहागक माध्यमे भक्तिभावक विविध स्वरूपक दर्शन करवैत एहि वर्तमान युगमे संत ओ संत साहित्यक प्रति उज्ज्वल भविष्यक प्रति आश्सस्त करैत छथि जे मनुष्य के भगवतशरणंमे आबहि पड़तनि।

3. **राम रूप दास :** - कृष्ण भक्त सन्त रामरूपदासक जन्मक कोनो निश्चितुकी समय नहि भेटैत अछि। मुदा ओ समस्तीपुरक `मारी` मठक संस्थापक छलाह। हिनक भजन मिथिला मे खूब ख्याति अर्जित कयलक। संत रामरूप दास संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंकें अपना कए अनुसंगी बुझैत छलाह। हिनक कोनो संग्रह अखन धरि नहि प्राप्त भेल अछि। संत लक्ष्मीदासक एकटा प्रसिद्ध पद छनि -

कौन कहे प्रभु कैसी मूरति
कोउ कबहु नहि देखा है,

अहि पदक जवाब मे संत रामरूप दास लिखैत छथि- यथा -

अलख अगोचर है अविनाशी, हरि को हरिजन देखता है।
मीरा प्रकट कीन्हि मूरति सो, नामदेव दूध पिलाया है।
देखो महाराज दशरथ गृह, रामचन्द्र बनि आया है।।

---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ----

वेद-पुराण-शास्त्र श्रुति सम्मत
राम रूप गुण गाया है।

अस्तु स्पष्ट अछि जे संत रामरूप दास संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समकालीन छलाह।

4. **अपूछ दास :** - संत अपूछदास - सेहो संत लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समकालीन छलाह। सतलखें सतौर मूलक काश्यप गोत्री ब्राह्मण अपूछदास दरभंगा जिला स्थित बाँकी गामक छलाह। जनश्रुतिसँ अवगत होइछ 318 पदक संग्रह हिनक शिष्य मोहनदास ``जनप्रकाश`` नामे प्रकाशित करबौने छलाह। हिनक समयक निर्धारणक क्रममे 1791 सँ 1882 ई.क बीच मानल जाइत अछि।

अपूछदास गार्हस्थ संत छलाह जे चतुर्भजी सम्प्रदायक संत बौधिस्थान मे रहैत छलाह। जनश्रुतिक आधार पर हिनक पदक किछु पाँती एतय लिखल जा रहल अछि -

जेहि राम से लौ लागी, दुर्जन का करत रे भाइ।

---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ----

`अपुछदास` एक बाँकी रहि गए, अर्जी ले के सुताई।।

संत अपूछदास महाराजक प्रसंग कहल जाइत अछि जे हिनक किछु पदक संग्रह संत रामस्नेही दासक पुत्र रामअधीन दास सेहो प्रकाशित करवौने छथि। ओना किंववदंति अछि नित्य प्रात:काल बनाओल भग्वत भजनक अलख घूमि-फिर कऽ जगबैत छलाह। हिनकर विशिष्टता ई जे राम-कृष्ण के अभेद राखय चाहैत छलाह।

अस्तु प्रस्तुत अध्याय प्रसंग संत लोकनि मानवीय जागृत अध्यात्मक संग सम्मन्वित कय एकटा वृहद आस्तिक समाजक निर्माण करब अपन पुनीत कर्तव्य बुझैत छलथिन्ह।

5. **संत परमहंस महर्षि मेंहीदास** - परमहंस संत मेंहीदासक जन्म बिहार राज्यक मिथिला क्षेत्रक मध्य वर्तमान मधेपुरा जिला के अन्तार्गत संवत् 1942 बैसाख शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 28 अप्रैल, 1885 ई. मंगल दिन पिता श्रीबाबूजन लालदास एवं माता श्रीमती जनकीवती देवीक कोखिसँ भेल रहनि। संत मेंहीदास नेनपनहि सँ एकान्त स्थानक ताकमे रहैत छलाह। दशम् वर्गक छात्रावस्थामे घर सँ चुपचाप निकलि कऽ गंगातट पर तप करवाक लेल चलि गेल रहथि। पश्चात् विधबा बहीनक सोह अयला पर आपस आबि गेलाह। अध्यातम पथक सत्यान्वेषी साधक युवा संन्यासी महर्षि परमहंस मेंही दास आजीवन ब्रह्मचारी रहि कऽ ईश्वर प्राप्तिक लेल अपन ध्यान केंद्रित करैत रहलाह। परमहंस महाराज वस्तुत: वाबादेवी साहेबक योगासन शिष्य रूपमे स्मरणीय छथि। संतमत प्रखरवेता रूपमे बाबा देवी साहेबक नाम सेहो प्रसिद्ध अछि। संत मेंहीदास हनकहि शिष्यत्व ग्रहण कय सान्निध्य प्राप्त कय तप तितिक्षा आ कठिन संयम ग्रहण करैत जीवनक सारतत्व कें खूब मनोयोग पूर्वक पयबा लेल तत्पर भेलाह। अही सब क्रममे एकेबर गुरु पुछलथिन्ह एतेक दिनसँ अहाँ की करैत छी? उत्तरक क्रममे ओ वजला -``हम गुरु मंत्रक जाप आओर त्राटक सहित गुरुमंत्रक जाप आओर, त्राटक सहित गुरुमंत्रक ओ मूर्तिक ध्यानाभ्यास करैत छलहुँ।`` बाबा देवी साहेब पुन: पुछलथिन्ह की ! अहाँ गुरुरूपमें ध्यानमे हू-बहू उगा लेल? उत्तारामे संत मेंहीदास कहलथिन्ह - ``एहेन नहि कऽ सकलहुँ मुदा यत्न केला पर स्वल्पकल धरि देखि सकैत छी।``[6] वास्तवमे कोनहु संतक लेल सर्वस्व हुनकर ईश्वर भक्ति होइत छनि। जे ओहि संदेश के जन-जन धरि पहुँचायब महाप्रभुक भक्तिक अलौकिक प्रकाश जाहिसँ ओ सर्वश्रेष्ठ ज्ञानक प्राप्ति करैत छथि। ईश्वरक ओहि ज्ञानके समाज मे शांति, भक्ति, प्रेम, सदभाव, करूणा ओ अहिंसा संग मानव मूल्यक स्थापना करैत छथि।

संत महर्षि परमहंस महाराज मेंही दास जीक दर्शन :- ``दृश्यते अनेन इति दर्शनम`` आशय

युक्तपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करवाक प्रयत्न के दर्शन कहल जाइत अछि। जे हो संत मेंहीदासक प्रथम भाव जे होइत छनि जे अपन गुरूक प्रति आदर सत्कार जे मानवीय जीवनक मूलभूत, गीता आदि अध्यात्म जगतमे आशय गुरूक महत्व कें ओहो स्वीकारलनि अछि। यथा:-

भजो हो गुरू चरण कमल,

भव भऽ भ्रम टारन

---- ---- ---- ----

सर्वेश्वर के तारण

मेंहीं जपू गुरू-गुरू

गुरू-गुरू मन मारणे।

हमर अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे जतेक संत ओ समाजक कोनो वर्ग अपन गुरूक महत्वके सर्वोपरि मानलनि अछि। संत ओ अध्यात्म जगत मे तऽ ईश्वरो सँ बेसी गुरूक महत्वके मानल गेल छैक। एकटा दोहाकमाध्यम सँ जे प्रसिद्ध पंक्ति ``गुरू गोविन्द दोउ खरे काके लागो - पाँव.....`` से तकर महत्वके मेंहीदास महाराज सेहो स्वीकारलनि अछि।

साहित्य एकटा मुख्य उपजीव्यमे दर्शनक महत्वके प्रमुखतासँ मानल गेल छैक। श्रेष्ठ साहित्य दार्शनिक विचार सँ गुम्फित रहैत छैक। संत मेंही दासक दार्शनिक विचारमे ब्रह्म-जीवन-माया आ जगत पर अपन विचार आ मान्यताक संग हिनक चिंतन श्रीमद्भग्वतगीता, सांख्य, नाथ सम्प्रदाय, निर्गुणकाव्य आदि पर सेहो पड़ल अछि।

ब्रह्म - `ब्रह्म` शब्दक अर्थ विशाल माने परमतत्व के ब्रह्म कहलनि अछि डॉ. राधाकृष्णन संवर्धनशील होमय वला वास्तिवाकता के ब्रह्म कहलनि अछि।

संत मेंहीदास माया-ब्रह्म आदि पर विशाल विमर्श ओ विचार रखलनि अछि हुनक एकटा रचना प्राप्त होइत अछि -

तन इन्द्रिन संग माया देखौ, मायातीत धरहु तुम नाऊँ
मेघा मन इन्द्रिन गहें माया, इन्ह मे रहि माया लिपटाऊँ।
इन्द्रिन मन अरु बुधि परे प्रभु हम, न इन्हें तजि आगे घाऊँ
करहु कृपा इन्द संग छोड़ाबहुँ, जड़ प्रकृति करि पारहि जाऊँ।।

आशय संत मेंहीदास मायाके व्रह्मक अधीन मानलनि अछि। हिनक सामाजिक चेतनाक प्रति अलौकिक शक्ति दर्शन लेल 23.6.1955 अपराह्नकालीन सत्संग श्री संतमत सत्संग मंदिर ततेरा जतय हिनक गाम छनि, एकटा अवसर पर स्पष्ट शब्दमे कहने छलाह जे मूर्ति वा प्रतिमाके मात्र प्रणाम कऽ चलि जायब, से नहि छैक तैं कहब प्रतिमाके देखू आ ओकर ध्यान करू।`` हिनक

प्रसंग अध्ययन कयला पर स्पष्ट होइछ जे संत मेंही दास अलौकिक चमत्कारी सिद्ध पुरुष छलाह। हिनका प्रसंग कथक गोट किंवबदंति अछि।

महर्षि संत परमहंस महाराज मेंहीदास 102 वर्षक अवस्था मे 8 जुन 1986 ई.क रविदिन कऽ ब्रह्मलीन भेलाह। एताद् कहि सकैत छी जे संत मेंहीदास मिथिला ओ मैथिली साहित्यक मध्य संत साहित्यक विधाक अन्तर्गत जे विशिष्टत्व एकर अनुरूपें पंचोदेवोपासनाक संग हिनक आर विशिष्ट आयाम छलनि तें हिनक भाषामे सधुक्कड़ीक प्रयोग भेल अछि। हिनक ज्ञानक विवेचन सँ स्पष्ट होइछ होइछ जे उपनिषद श्रीमद्भवगीता, सांख्यदर्शन, नाथ सम्प्रदाय ओ निर्गुण काव्य मे आत्मज्ञान आ ब्रह्मज्ञान रूपें माननलनि अछि। हिनक कहब छनि जे ई ``आत्मज्ञान ताकरे ओ ब्रह्मज्ञान" कहलनि अछि जाहिसँ सांसारिक मोह-माया-भोग नहि प्राप्त होयत। गोस्वामी तुलसीदासक पद के अनुरूप :-

वाक्यज्ञान अत्यंत निपुण, भव पार पाबइ कोई
निसिगृहमध्य दीप की बतिन्ह तम निवृत्त नहि होई।"

पंचमदास : लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समकालीन संत छलाह। हिनका प्रसंगमे मात्र एताबे सूत्र भेटैत अछि जे ओ राधाकृष्णक लीला वर्णन पद लिखैत छलाह। हिनकर दरिभंगा जिला अन्तर्गत वास छलनि मुदा गामक नाम स्पष्ट नहि भेट सकल। हिनक एकटा पद प्राप्त भेल अछि डॉ. फुलेश्वर मिश्र शोध पोथी संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं पेज-27 सँ यथा -

पलना गढ़ि ला दे, बढ़ैया-भैया मोर।
जैसो श्याम सुन्दर है मेरो तैसो बनैयो कोर
---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ----
मन अभिलाष पुराओगे मेरी, इच्छा पुरेहों मैं तोर
पंचमदास जशोदा भुलैहैं झूलिहें नन्द किशोर।

मंगलदास - गोस्वामी लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समयमे मिथिलाक अन्तार्गत संत साहित्यक विकास अत्यधिक भेलै। संत मंगलदास हुनके समकालीन छलाह ओ घुमक्कड़-फक्कड़ संतक एकटा पद कतेक मार्मिक अछि :-

पावक, पवन, पानी जैसे जरसी वरसानी
मानो मेघ घहराती सब धरती दलमलानी
जाको बेग भारी है
---- ---- ---- ---- ---- ---- ----
जै विश्वकर्मा के एसी महल अटारी है।
---- ---- ---- ---- ---- ---- ----

ऐसो सरकारी घुएँकारी, रेलगाड़ी है
मंगलदास तैयार है।

सेवादास : प्रमुख संत रूपें गंगापुर बैनी स्थानक महंथ छलाह। (उग्रानन्द-भंवरदास-गंगाराम दास-किशुनदास सेवादास-आत्माराम दास रामरिख जी - बालकदास - लक्ष्मण दास - श्यामदास - रामदास) आदि एहि संप्रदायक संत भेलाह आ हिनका लोकनिक दुईगोट मठ `बघनगरी एवं नरघोघी अछि। हिनका लोकनिक वेसी पद प्राप्त नहि होइछ। यथा - रामाश्रयी शाखाक सीता जीक आधार बना लिखैत छथि -

आज मैया सियाजी बनी छवि भारी
रति सतकोटि अनंग लजावत सोचि-सावित्री विचारी।

---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ---- ----

सोहत सखि समेत फुलवारी आये अवध विहारी।
सेवादास छवि देखि अलौकिक, मोहे राम निहारी।।

मैथिली ``संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण`क विषयगत`` शोध प्रबंधक अन्तर्गत अंतिम ओ बारहम अध्याय ``आधुनिक कालमे संत साहित्यक दशा ओ दृष्टि`` प्रसंग अपन अध्ययन ओ अनुशीलनक क्रममे हम एहि अंतिम अध्याय मे किछु एहनो संत लोकनिक चर्चा कयल, जिनकर नाम प्राय: सामान्य जन बिसरि गेल छथि। एहि संत सभहिक योगदान समकालीन मिथिला ओ मैथिली संत साहित्यक लेल अनुपम अछि। मैथिली संत साहित्यक इतिहास अत्यंत प्राचीन सिद्ध साहित्ये सँ आरंभ भेल। तात्पर्य भेल वज्रयानी शाखाक ओ सिद्धाचार्य जे अपभ्रंश सँ चलैत दोहाकोश - चर्यापद, विभिन्न लोक देवी-देवताक ओ ज्योतिरीश्वर संग होइत हम अभिनव जयदेव महाकवि विद्यापति सँ अध्यावधि पं. शिवनाथ मिश्र `शिव` ओ संत मैथिली पुत्र `प्रदीप` धरिक संत सभहिक ओ हुनक रचनाके अध्ययन-मनन कयल। सन्त काव्यक परंपरा तत्वत: ओहि काव्य रचना पद्धतिक दिशि संकेत करैत अछि जे संतक रचना किंवा कही हुनक साहित्य समाजक मूल प्रवृति पर आश्रित रहैत अछि। समयक संग वैदिक काल सँ चलल मिथिलाक संत साहित्य समाजक उत्थान-पतनक अवसरक साक्षी बनैत अछि। मध्यकालीन हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष-समन्वयक युगमे अपन सांस्कृतिक विरासतमे वैचारिक एवं भावनात्मक सृजनक नव परिस्थिति सभक अनुरूप नव चेतनाक संपर्क संग अध्यात्मिक पृष्ठभूमिक अन्तर्गत ``संतमत सत्संग नामक सम्प्रदायक विकास सेहो होमय लागल। एहि प्रसंगमे संत गोस्वामी तुलसी दास लिखैत छथि -

संत हृदय नवनीत समाना।
कहा कविन्ह पै कहा न जाना।
निज परिताप द्रबहिं नवनीता।

पर दु:ख द्रवहि संत सपुनीता।

संतक हृदय नवीनता, कोमलता सँ भड़ल रहैत छनि से कहब ओ स्वयं तापके माने दुख दर्द के अन्तर्निहित करैत दुख-संतापके सहैत समाजके शीतलता प्रदान करैत छथि।

संत मिथिलामे ओहि समय सँ विद्यमान छथि जहिया भाषा पर कोनो व्याकरण शास्त्रक नियंत्रण नहि छलैक। काव्य रूपक लेल कोनो छन्द नियमक सृष्टि नहि भेल रहैक, संतक काव्य स्वच्छंद गतियें अग्रसर होइत छल। जाहिमे काव्य सौष्ठव प्रदर्शित करबा लय कोनो रस वा अलंकार वा साहित्य शास्त्रीय आवश्यकता नहि बुझल जाइत रहैक। पश्चात् व्याकरण, पिंगल आ काव्यकला से क्रमिक पाँछा पड़ल जा रहलैक अछि। पश्चात संतक रचनामे शास्त्रीय पद्धतिक पद्य एकटा पृथक परंपरा रूपे सेहो चलि पड़ल। खासकऽ मिथिलाक विशिष्टता एहिठाम संतक उत्थान कही तऽ शिष्ट साहित्यसँ भेल जकरा समाजक वा सभ्यलोक अधिक अपनाओल। समाजमे बेसी प्रतिष्ठा भेटय लागल आओर स्वभाविकत: प्रवृत्ति प्रतिविम्बित कारणे साधारण जन सेहो प्रवृति कयल जे श्रृंखला आइयो धरि विकास कय रहल अछि। संत ज्ञान-विज्ञान गंभीरता के संग संसारके लोक-रहस्यवादी धार्मिक साहित्य मूलत: काव्य परंपरा मे मिथिलाक संत लोकनि कोनो एक सम्प्रदाय मे नहि अपितु विभिन्न श्रोतामे ई धारा अदौकाल सँ प्रवाहित रहल अछि आ एकरा वेगवाहिनी स्रोत सतत् अक्षुण्ण रहतैक।

एतद् संत साहित्यक काव्य सर्जनाक प्रक्रिया मिथिला ओ मैथिली साहित्यमे जारी अछि जे आधुनिक कालमे आधुनिक काव्य समानान्तर काव्यधाराक रूपमे मान्यता पयबा मे आधुनिक मैथिली भक्ति रसमे संत काव्यक क्षमता के स्वीकार करबाक बाध्यता अछि।

●●●

संदर्भित ग्रंथ

1. मिथिलाक शाश्वत सधाना - उपेन्द्रठाकुर, पेज-14।
2. मिथिलाक सामाजिक इतिहास - पं. गोविन्द झा, पेज-47।
3. संतअङ्क - गीताप्रेस, पेज-42 गीताव्यास स्वामीजी श्री विद्यानन्द जीक आलेख सँ लेल अछि।
4. साहेबरामदास रचित गीतावली (पूर्वोक्ति) पद सं.-1 दोसरठाम एहि पदक प्रसंगहि प्राप्त होइत अछि अठारवहीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास लेखक डॉ. शंकरदेव झा, पेज-196।
5. साहेबरामदास रचित गीतावली (पूर्वोक्ति) पद सं.-14 दोसरठाम एहि पदक प्रसंगहि प्राप्त होइत अछि अठारवहीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास लेखक डॉ. शंकरदेव झा, पेज-197।
6. अठारहवीं शताब्दी की मिथिलाक इतिहास लेखक डॉ. शंकरदेव झा, पेज-206 एवं मुनीश्वर राय मनीश (पूर्वोक्ति-208, पृ.43-44।
7. जी.ए. ग्रियर्सन (पूर्वोक्त-249) पृ.-20 एवं अठारवहीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास, पेज-225 एवं 241 मे लिखल एतय वर्णित अछि।
8. वालगोविन्द झा व्यथित (पूर्वोक्ति 234) गीत संख्या 106, पृ.40 अठारहवीं शताव्दी की मिथिला का इतिहास - लेखक डॉ. शंकरदेव झा, पेज-224।
9. मिथिलाक शाश्वत साधना, पेज-17, लेखक - डॉ. उपेन्द्र ठाकुर।
10. हठयोग प्रदीपिका 4/55 एवं संत साहित्य की समझ-नन्दकिशोर पांडेय, पेज-186।
11. मिथिलाक इतिहास डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, पेज-232।
12. मिथिलाक साहित्यिक सां. उत्कर्ष संतकवि लोकनिक अवदान - संपादक देवनारायण साह, साहित्य अकादेमी, पेज-63।
13. मिथिलाक साहित्यिक सां. उत्कर्ष संतकवि लोकनिक अवदान - संपादक देवनारायण साह, साहित्य अकादेमी, पेज-83।
14. गीतावली - परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति, जमशेदपुर, पेज-171, पद सँ 543।
15. साहेबरामदास मोनोग्राफ - साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
16. मिथिलाक साहित्यक सांस्कृतिक उत्कर्षमे संतकवि लोकनिक अवदान संपादक -

देवनारायण साह, प्रकाशक साहित्य अकादेमी, पेज - 42 एवं 43।

17. चट्टोपाध्याय एवं दत्त : भारतीय दर्शन, पेज26 एवं संत कबीर के राम पुस्तक सँ संत मेंही दर्शन अध्यायक, पेज35, संपादक डॉ. महेश्वर प्रसाद सिंह।

18. To us it is clear Brahma means reality which grows, breathes and swells, Indian Philosophy, Page -164.

19. महर्षि मेंही दास पदावली पृ.14 तृतीय संस्करण।

20. रान्त कबीर के राम - प्रकाशक बि.हि. ग्रंथ अकादेमी, पटना - डॉ. महेश्वर प्रशाद रिंह, पेज-100।

21. संत परमहंश मेंहीदास महाराजक विनय पत्रिका सार सटीक पृ.-22, भागलपुर, सप्ताम् संस्करण सं.-2026, सं. कबीर के राम, पेज-100।

●●●

श्रोत-ग्रंथ

1. खुशीलाल झा लक्ष्मीनाथ गोसाईं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2000 ई.।
2. मैथिली भाषा : सर्वेक्षण आ विश्लेषण (डॉ. अशोक कुमार झा, पृ.55)
3. मैथिली सहित्यक रूपरेखा संपादक डॉ. बासुकीनाथ झा, पृ.55।
4. शताब्दीक संधि बेलामे मैथिली साहित्यक उत्कर्ष संपादक मधुकान्त झा।
5. `मिथिला मिहिर` पत्रिकाक मिथिलाँक (1936 ई.)
6. विद्यापति कालीन मिथिला - प्रो. राधाकृष्ण चौधरी चौखम्वा संस्कृत सीरिज वाराणसी द्वारा प्रकाशित।
7. हिन्दी सन्त साहित्य का केन्द्रविन्दु, डॉ. सन्तनारायण उपाध्याय।
8. सरस माधुरी - संकलन पं. कृष्णचन्द्र झा।
9. विश्व साहित्य कोष, पृ. - 274।
10. हिन्दी काव्यमे निर्गुण सम्प्रदायक प्रस्तावना डॉ. पीताम्बर दत्त, बड़वाल।
11. गीतावली - प्र. परमहंसक लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति।
12. सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाई - डॉ. फुलेश्वर मिश्र।
13. सन्तमत का सरभंगी सम्प्रदाय - डॉ. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना 1959।
14. संतवाणी संग्रह, भाग-1।
15. गोरखवानी, संपातक - डॉ. पीताम्बर दत्त, बड़बाल, प्रयाग, तृतीय संस्करण।

●●●

उपसंहार

``मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषण`` बिषय पर शोध कार्य करवा लय निवेदन स्वीकार कय लेल गेल आ हम अपन कार्य करवा लय आगू बढ़लहुँ तऽ अध्यात्म जगतसँ जुड़ल महात्मा, भक्त, बाबाजी, ऋषि-मुनि, त्यागी आदिक नाम सुनि ओहीमे ``संतक`` नाम ढुका देल जाइत छलैक से जखन अध्ययनक मूल धरि पहुँचलहुँ आखिर ``संत`` आ हुनकर साहित्य की अछि? मैथिली भाषा साहित्यमे एहि विषय पर कार्य तऽ भेल छलैक मुदा संतक भाव जखन ग्रहण कयल, तखन अनुभव भेल ओ अध्यात्म जगत सँ सम्पृक्त समाजक कल्याणार्थ ईश्वरक संग तादात्म्य संबंध बनबैत छथि तकरा धर्म-शास्त्र विषय सँ लेल गेल आ साहित्यक मूल अवधारणासँ अलग बुझल गेलैक। धर्मक असमानताक भाव मे साहित्यिक भावना कें अवघात करतैक, साहित्यके धर्म-शास्त्र विषयक मानि लेल जायत समग्रता पर, प्रश्न उठतैक मुदा संतक भावना आ हुनकर साहित्यमे समाजक लेल सर्वधर्म संभावक, संदेश रहैत अछि। संत समाजक बीच आवश्यक रूपें एकता ओ समग्रता कायम करैत छथि। तें हमर अपन विषयक प्रति विशेष जे संत साहित्य धर्मशास्त्र नहि, मानवीय मूल्यक विषय अछि।

संत साहित्यक अध्ययनक क्रममे `शोध` शब्द बड़ सारगर्भित, जे अध्ययन कए नापि-तौल कऽ अपन अनुभूतिक गहीरगर शास्त्रीय मार्गक, अनुशरण करैत भावक प्रवाहमे स्पष्ट होइत अछि जे `संत` ओ होइत छथि जे जिनकामे अपन स्वाभाविक जन्मजात सहज, लोक-संग्रही, सात्विक वृत्तिक कारणे समाज देश वा कही विश्वक मात्र लेल नैतिक आ परमार्थिक लोकमंगलक कामना करैत अपन उदात् नैतिक चरित्र जे अनेकानेक लोभ आदिके त्यागि कय, प्राण संकटोमे राखि कय जे पुण्य पथ सँ विचलित नहि होइथ, से भेलाह संत। महाभारतक उद्योग पर्वमे कहल गेल छैक जाहिमे अध्यात्म आस्थाक परिचय देल गेल अछि। यथा : -

नाहं कामान्न संरंमान्न द्वेषान्नर्थकारणात।

न हेतुबादाल्लोभादवा धर्म जम्हा कथंचन।।

आशय काम-क्रोध द्वेष, धन-लोभ, कलह अथवा अन्य कोनो प्रकारक संबरण सँ विरत जे अपन धर्म के नहि छोड़ि सकैत छथि से भेला संत। ओ धर्म मात्र अपन खास नहि, सम्पूर्ण मानव समाजक अर्थमे अछि।

दोसरठाम संतक प्रसंगमे लिखल अछि संत सत्य स्वरूप, नित्य सिद्धि वस्तुक साक्षात्कार करैत सच्चिदानन्द पर ब्रह्म स्वरूप के अपना हृदयमे प्रतिष्ठित करैत छथि। ताहि द्वारे जे ब्रह्मज्ञ ब्रह्मदर्शी आ ब्रह्मसंस्थ छथि, वएह ``संत`` कहबैत छथि।

तेसर मानव हृदय परमात्मासँ सम्पर्क साधवाक लेल व्याकुल रहैत अछि, इएह व्याकुलता ओकर रहस्य कें उद्घाटन करवाक वास्ते दू मार्ग के अक्तियार करैत अछि - 1. काव्य, 2. धर्म। संत तत्वदर्शी आ कवि सौन्दर्यान्वेषी ``सत्यम् शिवम् सुन्दरमक`` महत्व वृहद सौन्दर्यान्वेषी आ

तत्वदर्शी बेजाय एके भेल। सौन्दर्य अपन कोमल भाव कें अन्तरात्मामे प्रवेश भला पर सत्यक द्वारि खुजेत अछि जे परमात्माक मार्ग दिश लय जाइत छैक। Scho penhauer नामक आलोचक अपन पोथी "parergaund paralipomena" मे लिखैत छथि - "काव्य जगतमे उपनिषदके समान आत्माके उन्नति करयवला आ शांति प्रदान करयवला कोनो दोसर ग्रंथ नहि अछि, हमरा जीवनमे एहिसँ खूब शांति भेटैत अछि आ मृत्युक समय सेहो अहीसँ शांति भेटैत अछि। इएह शांति आत्मशांतिक मार्ग जे संत प्रवृत आ ओहि हृदयसँ प्रस्फुटित भाव शब्द रूपें निःसृत भेल वएह भेल साहित्य।

अतएव विषय प्रविध अध्ययन ओ अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे मैथिली संत साहित्यक अध्ययन अन्यान्य भाषा साहित्यक संत साहित्यसँ भिन्न अछि। ओना कहबै तऽ समस्त भारतीय साधना ओ उपासना पद्धतिक उद्‌भव एकहि स्रोत सँ भेल अछि परंव संस्कृति ओ अध्यात्मिक आचरण मिथिलाक भिन्न रहलैक अछि। अहिठाम संतक जे सात्वत् भाव रहल अछि ओ भागवत सम्प्रदाय साधना पक्षमे अनन्य देवी-देवताक भक्ति साधनाक पश्चात् परमात्मोपसानाक स्थान पर आोत्मापासनाक महत्वक संग श्रद्धाक स्थान पर भक्ति ग्रहण करैत अछि। कलान्तरमे निरीश्वरबादक स्थापना होइतहि मिथिलामे सनातन धर्मक वैष्णव संत अपन लोकभाषा मैथिलीक माध्यमे धरातल पर उतरलाह जे सर्वसाधारण जनताक अपेक्षा ओ आकांक्षा के संतुष्ट ओ पूर्ण कयलक। साहित्यक सृजनक मूलस्रोत वैष्णव धर्मक भागवत स्वरूपक चित्रण भेल अछि।

एतद् मैथिली संत साहित्यक अध्ययन ओ विश्लेषणक अंतिम स्वरूप लग अबैत-अबैत संतक सदाचार प्रमुख रूपें अबैत अछि। पश्चात् मिथिलाक संत साहित्यक उत्स ओ साहित्यक विकास संतक भावना सँ भेल अछि जे अनुभूति गम्य तथा, भाव-गहन भेला सँ मानवी श्रृंगार जे मानवताक प्रसंग अभिव्यक्ति भेलकै अछि तकर रागानुगा भक्तिभाव एतबा विशाल ओ अपरिमेय रहल जकरा कोनो सीमा मे आबद्ध करब दुष्कर भेल। कतय सँ श्री गणेश करी एहि प्रसंग के हम विस्तृत अध्ययन करैत स्वानुभूतिक आधार पर बारह अध्याय मे विभक्त कयल। प्रत्येक अध्यायक फुट प्रिंट अध्यायक अंतिम पृष्ट पर देल गेल अछि। मात्र प्रथम अध्यायमे प्रत्येक पेजक नीचा भाग मे फुट प्रिंट लिखल अछि। बाँकी शोध प्रबंधक अध्ययनक मध्य किछु पोथी हमरा शोध कार्यमे खूब मदति केलक। तकरा हम अलग सँ श्रोत ग्रंथ नाम दय दर्शौने छी, जकर क्रम संख्या -1 सँ पुनः प्रारम्भ केने छी। संत लोकनिक उपलब्ध छाया चित्र अंतिम पेज पर देल गेल अछि।

आब हम एहि महती शोध प्रबंधक साधनामे जिनका सबहकि अमूल्य योगदान हमरा प्राप्त भेल अछि ताहिमे सर्वप्रमुख आचार्य प्रो. डॉ. श्री रामदेव झा जी भू.पू. मैथिली विभागाध्यक्ष ल.ना. मि.वि. दरिभंगा। भू.पू. मैथिली विभागाध्यक्ष ललित ना. जनता महाविद्यालय डॉ. प्रो. श्री खुशीलाल झा जी भू.पू. मैथिली विभागाध्यक्ष पटना वि.वि. डॉ. प्रो. श्री इंद्रकान्त झा जी, भू.पू.प्राचार्य मैथिली विभाग मगध वि.वि. डॉ. प्रो. श्री वासुकी नाथ झाजी आदिसँ वैचारिक मंथन कयल। ओ लोकनि

विस्मृत होइत विषय-वस्तुक प्रति सजगता संग संज्ञान दियौलनि तैं हिनका लोकनि कें कोटिश: नमन। हम विशेष रूपें इतिहासक विद्वान डॉ. श्री शंकर देव झा जी जे हमर मित्र आ हिनकहि कहला पर मैथिली `संत साहित्य` सन गंभीर विषय पर शोध करवालय प्रेरित भेलहुँ। हिनक सहयोग हमरा सतत् प्राप्त होइत रहल भाई के कोटिश: धन्यवाद। भारतीय भाषा परिषद् कोलकाताक मध्य पुस्तकालयक अध्यक्ष आदरणीय भाइ श्री वालेश्वर राय जीक योगदान कें हम नहि बिसरि सकैत छी। तैं हुनका हमर साधुवाद नमन। हम एकटा नाम आर लेबय चाहब जिनकर सहयोग प्राप्त होइत रहल मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्री योगानन्द झा जिनकर संत साहित्य पर बहुत रास कार्य कयल छनि, समय-समय पर अपन गंभीर ज्ञानक संग हमरा सहयोग कयल, हम हिनकर सतत् आभारी रहब। हम अभारी छियनि श्री नबोनारायण मिश्रजी, ग्राम कुसमौल, जिला-मधुबनीकें जे संत साहेब रामदासजीक फोटो उपलब्ध करौलनि। भारतीय भाषा परिषदक कर्मचारीकें जिनकर सहयोगक शब्दत: व्यक्त करब संभव नहि, सबकें धन्यवाद।

एहि शोध प्रबंधक क्रममे हमरा जाहि पुस्ताकालयक सहयोग प्राप्त भेल, नेशनल पुस्तकालय, अलीपुर, कोलकाता, भारतीय भाषा परिषदक पुस्तकालय, कोलकाता। कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकाता। बड़ाबाजार पुस्तकालय, कोलकाता, पटना वि.वि. पुस्तकालय। एसियेटिक सोसाइटी, पार्क स्ट्रीट कोलकाता, मिथिला वि.वि. के पुस्तलाय सबहक हम आभारी छियनि। सबके अशेष धन्यवाद।

अंतमे जिनकासँ ई सब टाइप करेलहुँ जे स्वयं मैथिली विषय सँ ऑनर्स केने छथि आ मैथिलीक चिर-परिचित पत्रिका `मिथिला दर्शन`क सहयोगी छथि श्री लखनपति झाजी`क सहयोगकें हम नहि बिसरि सकैत छी। सबसँ बेसी धन्यवाद सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र कें जे हमरा ``मैथिली संत साहित्य अध्ययन ओ विश्लेषण`` पर शोध करवाक अवसर प्रदान कयल, अशेष धन्यवाद। अंतमे एहि महती शोध प्रबंधक कार्यमे जे प्रत्येक्ष वा परोक्ष रूपें हमरा सहयोग केलनि से सब हमरा लेल स्तुत्य छथि।

।। इतिश्री।।

विद्यापतिक जन्म ई. 1350 एवं स्वर्गारोहन ई. 1450।

भवप्रीतानंद ओझा जन्म ई. 1886 स्वर्गारोहन ई. 1970

चन्दा झा जन्म ई. 1831 स्वर्गारोहन ई. 1907

साहेब रामदास जन्म ई. 1680 स्वर्गारोहन ई. 1770

स्नेहलता जन्म ई. 1909 स्वर्गारोहन ई. 1993

रांत मोदलता

शिवनाथ मिश्र शिव जन्म ई. 1906 स्वर्गारोहन ई. 1973

संत मेंही दास

संत लक्ष्मीगाथ गोसाईं
जन्म ई. 1785 स्वर्गारोहन ई. 1872